चिकित्सा चन्द्रोदय

तीसरा भाग।

स्वास्थ्यरक्षा, हिन्दी-अंगरेजी शिक्षावली, हिन्दी-बंगला शिक्षा
प्रभृति पुस्तकों के लेखक और गुलिस्तां, भर्तृहरि कृत
नीतिशतक, वैराग्यशतक और शृंगारशतक
प्रभृति अनेक पुस्तकों के
अनुवादक

बाबू हरिदास वैद्य

द्वारा लिखित

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

कलकत्ता

२०१, हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में
बाबू अमीचन्द गोलछा,
द्वारा मुद्रित।

अगस्त सन् १९२७ ई०

प्रथम बार २००० } अजिल्दका ४।)
सजिल्दका ५)

निवेदन ।

वि गत वर्ष मैंने "स्वास्थ्यरक्षा"-प्रेमियोंके तकाजे पर तकाजे आने से,एक घोर मुसीबतमें मुबतिला रहने पर भी, "चिकित्सा-चन्द्रोदय"के दो भाग ईश्वरका नाम लेकर लिख डाले । मुझे जरा भी उम्मीद नहीं थी, कि वे हिन्दी-प्रेमियोंके पसन्द आयेंगे और उन का इतना आदर होगा कि, साल भर में ही उन की कापियाँ दुष्प्राप्य हो जायेंगी और साथही अगले भागोंके लिये फिर तकाजे होंगे। जो हुआ है, आशाके विपरीत हुआ है । मेरे जैसे एक मामूली-से मामूली लेखककी लिखी पुस्तकों का इतना आदर होना, सचमुच ही आश्चर्य्य की बात है। मैं तो इसे आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र जी की कृपा और सहृदय हिन्दी प्रेमियोंकी मिहरबानी का ही फल समझता हूँ ।

आज जगदीशकी कृपासे पहले और दूसरे भागोंके नवीन संस्करण हो रहे हैं और तीसरा भाग तो पाठकोंकी सेवामें मौजूद ही है । इस भागके लिखनेको भी मुझे काफी समय नहीं मिला । पर प्रेमी पाठकों के सन्तुष्ट करनेके लिए, मैंने इसे लिखा और कई तरह की त्रुटियाँ रह जाने पर भी, शीघ्रही पूरा कर डाला । त्रुटियाँ यही हैं, कि इस भाग में, मैं अभ्रकभस्म, बङ्गभस्म, ताम्रभस्म, सुवर्णभस्म, लोहभस्म और मोतीभस्म प्रभृति के तैयार करने की विधि न लिख सका । यदि औरों की तरह लिखनेका नाम करना चाहता, तो आफत काट कर नाम कर देता ; पर चूँकि यह ग्रन्थ ऐसे लोगों के लिये लिखा जा रहा है, जो आयुर्वेद से बिल्कुल कोरे हैं और ऐसे लोग बिना अच्छी तरह समझाये चिकित्सा-

सम्बन्धी बातोंको समझ नहीं सकते। इसीसे धातुओं के शोधने, मारने और फूँकनेकी विधि चौथे भाग में लिखूँगा और इस तरह लिखूँगा, कि नितान्त अनभिज्ञ सज्जन भी, विना गुरुकी सहायताके, अनेक प्रकारके रस और धात्वादिक आसानी से तैयार कर सकेंगे।

इस भाग में अतिसार, संग्रहणी, बवासीर, मन्दाग्नि, अजीर्ण, विशूचिका, कृमिरोग, पाण्डुरोग, सोजाक, उपदंश और गठिया प्रभृति रोगोंके निदान, लक्षण और चिकित्सा, अपनी जान में, मैंने इस तरह लिखी है, कि अनाड़ी से अनाड़ी भी यदि इस ग्रन्थ में लिखी बातों को समझ समझ कर कण्ठ कर लेगा, तो सहजमें इन रोगों में फँसे हुए रोगियों को रोगमुक्त कर सकेगा। साधारण या अधकचरे वैद्य, जो केवल "वैद्य-जीवन" और "अमृतसागर" खरीद कर चिकित्सा करने लगते और प्राणियोंको बेमौत मारते हैं, इस एक ग्रन्थको पढ़कर सफलतासे चिकित्सा कर सकेंगे। क्योंकि यह ग्रन्थ विस्तार-पूर्वक और सरल से-सरल भाषामें लिखा गया है। चिकित्सा-सम्बन्धी ग्रन्थ जितने भी विस्तार से और जितनी भी सरल बोलचाल की भाषा में लिखे जायें, उतना ही अच्छा। मैंने चेष्टा तो ऐसी ही की है, पर मुझे इसमें कहाँ तक सफलता हुई है, इस का निर्णय स्वय पाठक कर लें।

मैं स्वय कोई बड़ा भारी आयुर्वेद-आचार्य्य या वैद्य-भूषण अथवा वैद्य-पञ्चानन नहीं, पर जो कुछ मुझे आता है, उस से आयुर्वेदप्रेमियोंकी सेवा करना, मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ और यही समझकर बौनेके चाँद छूने के प्रयासकी तरह दु साध्य साधन की चेष्टा कर रहा हूँ। मेरी उत्कट इच्छा है, कि लोग ज़रा-ज़रासी बातोंके लिए डाक्टरोंकी पाकिटें न भरें, अपने देशका धन सात समन्दर पार न भेजें। मुझे आशा है कि, भगवान् कृष्ण मेरी इस इच्छाको पूरी करेंगे। मैं तो उन्हींके बलसे इस ग्रन्थ को लिख रहा हूँ, वरन मेरी क्या सामर्थ्य, जो आयुर्वेद महोदधिको मथन कर, उसमें से उत्तमोत्तम अमृतोपम योग प्रभृति निकाल कर सरल साँचेमें ढाल सकूँ? अपने तई तुच्छातितुच्छ समझ कर और श्री

कृष्णचन्द्र का सहारा लेकर, जो काम आरम्भ किया जाता है, मेरी समझ में, वह पूरा हो ही जाता है। अगर आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र कृपा रखेंगे,तो चौथा भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित होगा। बहुत से पाठक अभी से पूछने लगे हैं कि, चौथे भागमें क्या होगा, इसलिये बता देनेमें कुछ हानि नहीं। चौथे भागमें प्रमेह, राजयक्ष्मा, प्रदररोग और धातु सम्बन्धी रोगों के निदान, लक्षण और चिकित्सा विस्तार से लिखी जायगी, क्योंकि आजकल १०० में ६६ पुरुषोंको प्रमेह या धातुरोग और प्राय १००में १०० स्त्रियोंको प्रदर रोगने घेर रखा है। पुस्तकान्तमें अनेक प्रकार की धातुओंको तैयार करने की विधि भी लिखी जायगी। जिस तरह यह तीसरा भाग वैद्य का पेशा करने वाले और न करने वाले दोनों ही तरहके सज्जनोंके काम का है उसी तरह चौथा भाग भी प्रत्येक मनुष्य के काम का होगा।

यद्यपि इस ग्रन्थसे मेरा स्वार्थसाधन होता है,पर इससे हिन्दी जानने वाली जनताको भी बहुत कुछ लाभ हो रहा है और होगा, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। संस्कृतसे कोरे लोग, इच्छा करने से, सहज में, अच्छे वैद्य बनकर,अपना और पराया भला कर सकेंगे। जो लोग चिकित्सा करना चाहेंगे, चिकित्सा कर सकेंगे, जो चिकित्सा न करना चाहेंगे, वे स्वय रोगोंसे बचते हुए अपने कुटुम्बका इलाज आप कर सकेंगे और ऊँट वैद्यो या क्वैको (Quacks)के धोखेमें न आयेंगे। साधारण लोगोंके इतना ज्ञान रखनेसे,अपढ़ और मूढ़ वैद्य बिना आयुर्वेद पढ़े चिकित्साकी मिट्टी पलीत न कर सकेंगे। यह लाभ क्या कम है? इन्हीं सब बातों को सामने रख कर,मैं आयुर्वेदके धुरन्धर विद्वानोंसे अतीव नम्रता-पूर्व्वक प्रार्थना करता हूँ,कि वे कृपाकर, मुझे इस काममें साहाय्य प्रदान करें। मेरे लिखे ग्रन्थो में जो दोष या त्रुटियाँ देखें, उन्हें पत्रों द्वारा लिख कर मुझे सूचित करें। आगामी संस्करणमें,उन उपकारी बन्धुओंके नाम सहित, भूल-सुधार कर दिया जायगा और मैं यावज्जीवन उनका आभारी रहूँगा। इस साहाय्य-प्रदानसे उन्हें स्वय कितना पुण्य लाभ होगा, वे स्वयँ सोच सकते हैं।

मैंने इस ग्रन्थके लिखनेमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, चगसेन, वृन्दवैद्यक और वैद्यविनोद प्रभृति कोई ३०।०० ग्रन्थों से सहायता ली है। प्राचीन ग्रन्थों के सिवा दो चार आधुनिक ग्रन्थोंसे भी थोडी-बहुत सहायता ली है। "वैद्य" मुरादाबाद और "वैद्यकल्पतरु" अहमदाबाद से भी कुछ मसाला लिया है। जिसमें "वैद्य"से तो कई मौकों पर ख़ासी मदद ली है, अत. मैं सभी ग्रन्थों के लेखकों और सम्पादक महोदयों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मैं अपने प्रेमी पाठकों को भी, उनकी गुणग्राहकता और क़दरदानी के लिए, धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकता; क्योंकि उनके उत्साह-प्रदानसे ही मैं तीन भाग लिख सका हूं। अगर हिन्दी और आयुर्वेद-प्रेमी सज्जन इसी तरह मेरा उत्साह वर्द्धन करते रहेंगे, तो मैं इस उतरती अवस्थामें, दृष्टिदोष होने पर भी, इस ग्रन्थको पूर्ण करनेकी चेष्टा करूँगा। आशा है, इष्टदेव मेरी इच्छा पूरी करेंगे। अगर मैं इस दुनिया से विदा होने के पहले, घर घर में आयुर्वेदका प्रचार देख सकूँगा, तो मेरी प्रसन्नता की सीमा न रहेगी और मरने पर मेरी आत्मा परम शान्ति लाभ करेगी।

विनीत—

हरिदास।

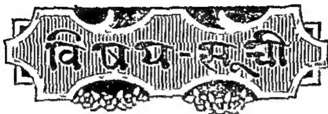


चिकित्साचन्द्रोदय

तीसरे भाग में क्या है ?

सूचना—चिकित्साचन्द्रोदय के चौथे भाग म इनको बयान होगा —

१ मूत्रकृच्छ्र २ मूत्राघात, ३ प्रमेह, ४ धातुक्षीणता, ५ बाजीकरण औषधियां, ६, स्त्रियों के प्रदर रोग, ७ बांझ स्त्रियोंकी चिकित्सा ८ बंगेश्वर, ताम्बा भस्म, अभ्रक और चन्द्रोदय—मकरध्वज प्रभृति के बनाने की सहल तरकीबें।



पहला अध्याय।

दूसरा अध्याय।

तीसरा अध्याय।

चौथा अध्याय।

पाँचवाँ अध्याय ।

छठा अध्याय ।



सातवाँ अध्याय।

आठवाँ अध्याय।

नवाँ अध्याय।

दसवाँ अध्याय।



श्रीकृष्णाय नमः।

चिकित्साचन्द्रोदय

तीसरा भाग।

पहला अध्याय

अतिसार-वर्णन।

अतिसार का निदान।

बहुत ही भारी, चिकने, रूखे, गरम, पतले, कड़े, शीतल, संयोगविरुद्ध, स्वभाव-विरुद्ध, देश-विरुद्ध और समय-विरुद्ध पदार्थों के खाने-पीने, भोजन पर भोजन करने, एक भोजन के बिना पचे दूसरा भोजन करने, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करने, स्नेह आदि कर्मों के अतियोग या मिथ्यायोग, स्थावर आदि विष खाने, डरने, शोक करने, खराब पानी पीने, अत्यन्त शराब पीने, स्वभाव और ऋतु के विपरीत आहार विहार करने, जल में बहुत देर तक रहने या खेल करने, पाखाना पेशाब प्रभृति वेगों को

ज़बरदस्ती रोकने और पक्वाशयकी दुष्ट हुई कृमियों—कीड़ों से मनुष्यों को "अतिसार" रोग होता है।

अतिसार की सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे हुए कारणों से—रस, जल, रुधिर, मूत्र, पसीना, मेद, कफ और पित्त प्रभृति पतली धातुएँ कुपित होकर, जठराग्नि या पाचकाग्नि को मन्दी करती हैं और स्वयं मल में मिल जाती हैं। पीछे गुदा में रहनेवाली अपान वायु उनको नीचे की ओर धकेलती है, तब वे नदी के वेगकी तरह गुदा में से निकलती हैं। इन सब के इस तरह निकलने को ही "अतिसार" कहते हैं।

अतिसार के पूर्वरूप।

जिसको अतिसार रोग होनेवाला होता है,—उस के हृदय, नाभि, गुदा, पेट और कूख में तोड़ने की सी वेदना होती है, शरीर दुखी-सा रहता है, गुदा की हवा रुक जाती है, मलावरोध हो जाता है, पेट फूल जाता है और खाया-पिया नहीं पचता। तात्पर्य यह है, कि अतिसार होने के पहले ये चिह्न नज़र आते हैं।

अतिसार के भेद।

अतिसार ६ प्रकार के होते हैं :—

(१) वातातिसार	(२) पित्तातिसार
(३) कफातिसार	(४) सन्निपातातिसार
(५) शोकातिसार	(६) आमातिसार

नोट—इनके सिवा रक्तातिसार, भयातिसार, शोषातिसार, रुक्षातिसार और

प्रवाहिका प्रभृति औरभी भेद हैं। रक्तातिसार में खून के दस्त आते हैं, परन्तु यह पित्तातिसारका भेद माना जाता है। भय और शोक से पैदा हुए अतिसार "आगन्तु अतिसार" कहलाते हैं। ये दोनों अतिसार वातोल्वण अतिसारों के समान होते हैं। भय और शोक से वायु शीघ्र ही कुपित होकर, इन दोनों अतिसारों को पैदा करती है। इन दोनों अतिसारों के पूर्व लक्षण न होने पर भी, ये यकायक पैदा हो जाते हैं। प्रवाहिका भी अतिसार का एक भेद है। प्रवाहिका और अतिसार में बहुत थोड़ा भेद है। इन सब के लक्षण हम आगे लिखेंगे।

वातातिसार के लक्षण।

"चरक" में लिखा है—वात-प्रकृति प्राणी अगर हवा और धूप में अधिक रहता है, बहुत ही शारीरिक परिश्रम करता है, बहुत ही रूखा, थोड़ा या एक ही तरह का रस सेवन करता है, सदा तेज़ शराब पीता है, अधिक मैथुन करता है और मल मूत्र आदि वेगों को रोकता है, तो उस की वायु कुपित होकर पाचक अग्नि को उपहत—नष्ट कर देती है। अग्नि के शान्त होने पर, कुपित वायु पेशाब और पसीनों को मलाशय में ले जाकर, उन्हें मल में मिला कर मलको पतला करके "अतिसार" पैदा करता है।

"माधव-निदान" में लिखा है,—वात से पैदा हुए अतिसार में कुछ-कुछ ललाई लिये, फेनयुक्त, रूखा, आम मिला हुआ कच्चा और थोड़ा-थोड़ा मल बारम्बार उतरता है। मल उतरते समय आवाज़ होती है और दर्द भी होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—वातातिसार वाले के पेट में दर्द चलता है, पेशाब रुक जाता है या कम होता है, आँतों में गडगड आवाज होती है, गुदा बाहर निकलती सी जान पड़ती है, कमर, ऊरु और जाँघों में थकान सी मालूम होती है; दस्त थोड़ा-थोड़ा आता है, मल में झाग और रूखापन होता है, मल की रंगत में कलाई या श्यामता होती है और दस्त होते समय वायुकी आवाज़ भी होती है।

नोट—वातातिसार रोगी के पसीने और पेशाव, अपनी-अपनी राहों से न निकल कर, जियादातर गुदा-मार्ग से ही निकलते हैं, इसी से अतिसार-रोगी को पेशाव और पसीने कम आते हैं।

पित्तातिसार के लक्षण।

"चरक" में लिखा है,—पित्त-प्रकृति वाले प्राणी अगर खट्टे, नमकीन, कड़वे, खारी, गरम और तीक्ष्ण पदार्थों को ज़ियादा खाते हैं अथवा अग्नि, धूप और गरम हवा का ज़ियादा सेवन करते हैं और क्रोध तथा ईर्षा करते हैं, तो उनका पित्त कुपित हो जाता है। कुपित पित्त, पतलेपनके कारण, पाचक गरमी को नष्ट करके, पक्काशय में जा कर,—अपने उष्णत्व, द्रवत्व और सरत्व गुणों के कारण—मल को पतला करके, अतिसार पैदा करता है।

"माधव-निदान" में लिखा है,—पित्तातिसार में पित्त की वजह से पीला, नीला और धूसर रंग का मल उतरता है तथा प्यास, बेहोशी और दाह होता है एवं गुदा पक जाती है।

"चरक" में लिखा है,—पित्तातिसार में हल्दी सा, नीला, काला, पित्त मिला हुआ और बदबूदार मल निकलता है, प्यास लगती है, दाह होता है, पसीने आते हैं, बेहोशी होती है, शूल चलते हैं और मलद्वार यानी गुदा का पाक होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—मल बदबूदार और गरम हो, दस्त ज़ोर से हों, दस्तों का रंग पीला, नीला या लाल हो तथा वह मांसके धोवन-जैसे, छिछड़ेदार हों, पसीने आवें, मूर्च्छा और दाह हो, गुदा पक जाय और ज्वर हो—ये लक्षण पित्तातिसार के हैं।

नोट—पित्तातिसार में यदि अधिकतर पित्तकारक पदार्थ सेवन किये जाते हैं, तो घोर रक्तातिसार हो जाता है। रक्तातिसार में मल-मिले खून के दस्त होते हैं।

कफातिसार के लक्षण।

भारी, मीठे, शीतल और चिकने पदार्थों के सेवन करने, अति भोजन करने, निश्चिन्त होकर दिन में सोने और आलस्य-वश होने के कारण से, कफ-प्रकृति वाले प्राणी का कफ कुपित हो जाता है और वह अपने भारी, मधुर, चिकने और शीतल स्वभाव से "अतिसार" पैदा करता है।

"माधव-निदान" में लिखा है,—कफातिसार वाले प्राणी का मल सफ़ेद, गाढ़ा, चिकना, कफ-मिला हुआ, बदबूदार और शीतल उतरता है तथा रोएँ खड़े हो जाते हैं।

"चरक" में लिखा है,—कफातिसार में चिकना, सफ़ेद, लिबलिबा, तांतूदार और थोड़ा-थोड़ा मल निकलता है। इस में प्रवाहिका, उदर, गुदा, पेड़ू प्रभृति में भारीपन, कभी-कभी बँधा मल उतरना और कभी पतला मल उतरना, रोम-हर्ष, वमन सी आती जान पड़ना, निद्रा, आलस्य, अवसाद और अवद्वेष—ये लक्षण होते हैं।

"सुश्रुत" में लिखा है,—कफातिसार में तन्द्रा, निद्रा, भारीपन, जी मिचलना या मुँह में पानी आना, अग्निमांद्य, दस्त आना और फिर भी शंका बनी रहना, सफ़ेद, गाढ़ा और कफ मिला दस्त आना, दस्तके साथ आवाज़ न होना, भोजनमें अरुचि और रोमाञ्च—ये लक्षण होते हैं।

सन्निपातातिसार के लक्षण।

"चरक" में लिखा है,—अति शीतल, चिकनी, रूखी, गरम और कड़ी चीज़ों के खाने, विषम भोजन करने, विरुद्ध भोजन करने, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करने, समय के बाद भोजन

करने, थोड़ा भोजन करने, खराब शराब पीने, दूषित जल पीने, बहुत शराब पीने, संचित मल को न निकालने, बारम्बार जुलाब लेने, अग्नि सूर्य और हवा तथा जल के अत्यन्त सेवन करने, बहुत सोने, न सोने, वेग रोकने, ऋतुओं के बदलने, ताक़त से ज़ियादा काम करने, डरने, शोक करने अथवा क्रमि, शोष, ज्वर और बवासीर से, अति दुर्बल होने के कारण, मन्दाग्नि वालों के, तीनों दोष कुपित होकर, अग्नि को अत्यन्त नष्ट कर देते और पक्काशय में जाकर "सब दोषों के लक्षणों वाला अतिसार" करते हैं।

"माधव-निदान" में लिखा है,—सन्निपातज अतिसार में सूअर की चरबी के समान या मांस के धोवन के जैसा एवं वात, पित्त और कफ के अतिसारों के लक्षणों वाला मल उतरता है। त्रिदोष से हुआ अतिसार कष्टसाध्य होता है।

"चरक" में लिखा है,—सन्निपात के अतिसार में रक्त आदि धातु अत्यन्त दूषित हो जाते हैं। इससे, दूषित धातुओंके स्वभावके अनुसार, अतिसार के रंगों में भेद होता है। शोणित—खून आदि धातुओंके बहुत ही बिगड़ जाने से पीला, हरा, नीला, मँजीठ के रंगका, मांसके धोवन-जैसा, लाल, काला, सफ़ेद, सूअर की चरबी के समान सफ़ेद, पीड़ा-सहित या पीड़ा-रहित, बहुत या थोड़ा मल निकलता है। कभी मल में गाँठें होती हैं और आम मिला रहता है और कभी पका हुआ मल आता है। रोगी का मांस, खून और बल अत्यन्त क्षीण हो जाता है, अग्नि मन्द हो जाती है और मुँहका ज़ायका एकदम से जाता रहता है। ऐसे रोग को "कृच्छ्रसाध्य" समझना चाहिये।

"सुश्रुत" में लिखा है,—जिस अतिसार में तन्द्रा हो, बेहोशी हो, अग्निमान्द्य हो, मुखशोष हो, प्यास बहुत हो, दस्तों का रङ्ग किसी एक रङ्ग का न हो, और सब दोषों के लक्षण तथा उपद्रव हों, उसे "सन्निपात-अतिसार" कहते हैं। यह कष्टसाध्य होता है, किन्तु बालक और बूढ़े का तो यह अतिसार असाध्य ही होता है।

शोकातिसार के लक्षण।

भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्र या धन प्रभृति के नाश होने से जब मनुष्य शोक करता है, तब मनुष्य की अग्नि मन्द हो जाती है। शोक के कारण आँख, नाक और गले वगैरः से गिरने वाला जल और शोक से पैदा हुई गरमी—ये दोनों, कोठेमें जाकर, मनुष्यके खून को बिगाड़ कर, उसके स्थान से चलायमान कर देते हैं, तब वह खून, गुदा की राह से, विष्ठा और दुर्गन्ध सहित या रहित, चिरमिटी के रङ्ग के समान लाल निकलता है, उसे ही "शोकातिसार" कहते हैं। यह शोकातिसार बड़ी कठिनाई से आराम होता है, क्योंकि, बिना शोक दूर हुए, केवल दवा से इसमें लाभ नहीं होता, इसी से इसको कष्टसाध्य कहते हैं।

"चरक" में लिखा है,—भय और शोक से पैदा हुए दो तरह के "आगन्तु अतिसार" होते हैं। इन दोनों के लक्षण वात-प्रधान अतिसार के लक्षणों से मिलते हैं। भय और शोक के कारण, वायु शीघ्र ही कुपित होती है। इनमें वात हरण करने वाली चिकित्सा करनी चाहिये और रोगी को प्रसन्न रखना चाहिये तथा उसे तसल्ली देनी चाहिये।

भयातिसार के लक्षण।

भय की वजह से—वात, पित्त और कफ क्षुभित होकर मल को दूषित करते हैं, तब तत्काल, विशेषकर वात और पित्त के लक्षणों वाला, गरम और पानी में तैरने वाला मल, गुदा की राहसे, प्रवाह के रूप में, बाहर निकलता है,—उसको "भयातिसार" कहते हैं। उसमें डर मिटने से रोगी सुखी होता है।

अतिसार के उपद्रव ।

सूजन, शूल, ज्वर, प्यास, श्वास, खाँसी, अरुचि, वमन, मूर्च्छा और हिचकी—ये अतिसार के उपद्रव हैं । जिस अतिसार-रोगी में ये सब लक्षण हों, वैद्य उसका इलाज न करे। लोलिम्बराज महोदय कहते हैं :—

तृट्श्वासकासज्वरशोफमूर्च्छाहिक्कान्नविद्वेषवम्यन्तिशूलैः ।
युक्तोतिसारी स्मरतु प्रसह्य गोविन्द दामोदरमाधवेति ॥

जिस अतिसार रोगी को प्यास, श्वास, खाँसी, ज्वर, सूजन, बेहोशी, हिचकी, अन्नमें अरुचि, वमन और शूल—ये उपद्रव हों, वह हठ से हे गोविन्द, हे दामोदर, हे माधव कहे। मतलब यह है कि, ऐसा रोगी नहीं जीता ।

असाध्य अतिसारों के लक्षण ।



जिसका मल पकी जामुनके समान, यकृतपिंड के समान, सूक्ष्म, घी के समान, तेल-सरीखा, चरबी और मज्जा के समान, दाल के पानी के समान, दूध और दही के समान, मांस के धोवन के समान, काला नीला और लाल रङ्ग का, तरह तरह के मिले रङ्गों का, अनेक रङ्गों का, बहुत काला, चिकना, मोर की पूँछ के चँदोये के समान, चित्रविचित्र, सघन, सड़े हुए मुर्दे की सी गन्ध के समान, मस्तक के मगज़के समान, भारी, बदबूदार, और बहुत गरम हो तथा रोगीको प्यास, दाह, अरुचि, श्वास और हिचकी हों, पसलियों और हड्डियों में शूल-पीड़ा हो, मूर्च्छा, बेचैनी और मोह हो, गुदा के आँटे पक गये हों और रोगी बकवाद करता हो—ऐसा अतिसार-रोगी असाध्य है। ऐसे मरीज़ का इलाज वैद्य को न करना चाहिये ।

*   *   *   *

जिस अतिसार-रोगी की गुदा मल निकलने के बाद भी बन्द न होती हो, रोगी क्षीण हो गया हो, शूल चलते हों, पेट पर अफारा हो, गुदा के पकाने वाले पित्त के रहने पर भी, शरीर शीतल हो और जठराग्नि नष्ट हो गई हो—उस रोगी का भी वैद्य को इलाज न करना चाहिये।

* * * * *

जिसके हाथ पैरोंकी अँगुलियाँ और सन्धियाँ पक गई हों, पेशाब रुक गया हो और मल अत्यन्त गरम हो,—वह रोगी मर जायगा।

* * * * *

जो अतिसार-रोगी, क्षय-रोगी और ग्रहणी रोगी मास और अग्नि-बल से हीन हो जाते है, वे नहीं जीते।

* * * * * *

नोट—जैसे-जैसे लक्षण ऊपर लिख आये हैं, अगर वैसे-वैसे लक्षण बालकों और बूढ़ों के अतिसारों में हों, तो उन अतिसारों को असाध्य समझना चाहिये। जवानोंको भी यदि, धातुओं के दुष्ट होने से, अतिसार हो, तो उसे असाध्य समझना चाहिये।

अतिसार-मुक्त रोगीके लक्षण।

जिस मनुष्य को पेशाब करते समय दस्त न हो, अपान वायु—गुदा की हवा—साफ निकले और अग्निदीप्त हो तथा कोठा हलका हो—उसे अतिसार से मुक्त हुआ समझो, यानी इन लक्षणों के होने पर समझलो कि, अतिसार आराम हो गया।

अतिसार में मल-परीक्षा।

बहुतसे रोगोंमें मल मूत्रके देखनेसे रोगका बहुत-कुछ निश्चय हो जाता है। खासकर अतिसारमें, मल परीक्षाकी बड़ी जरूरत रहती है। जो वैद्य यह नहीं जानता कि, किन-किन रोगोंमें कैसे दस्त होते हैं, वह

रोगीका ठीक इलाज नहीं कर सकता। जैसे; हैजेमें पतले दस्त होते हैं और अतिसारमें भी पतले दस्त होते हैं। घोर अजीर्णमें भी चाँवल के धोवन-जैसे दस्त होते हैं और हैजेमें भी चाँवलके धोवन-जैसे दस्त होते हैं। जो वैद्य इन दस्तोंका बारीक भेद न जानता होगा, वह धोखा न खायगा तो क्या ठीक इलाज कर सकेगा ? हरगिज नहीं। इसीसे हम नीचे दस्तोंके कुछ भेद लिख देते हैं। पाठक उन्हें अच्छी तरह समझकर याद कर लें :—

(१) अतिसार, संग्रहणी, विशूचिका, घोर अजीर्ण और कृमि-रोग प्रभृतिमें पतले दस्त होते हैं, पर इनके दस्तोंमें फर्क है।

अतिसार रोगमें मल पानी-जैसा पतला होता है और हैजेके भी दस्त पतले होते हैं। अतिसारके पतले दस्तोंमें मल होता है, पर हैजेके दस्तोंमें मल नहीं होता। अतिसारके दस्त लाल, पीले, काले, धूमले प्रभृति अनेक रङ्गोंके होते हैं, पर हैजेके दस्त चाँवलके धोवन के जैसे ही होते हैं। हैजेके दस्तोंमें मलका न होना और उनका रङ्ग चाँवल के धोवन का सा होना—यह खास पहचान है।

घोर अजीर्णमें भी चाँवलोंके धोवन जैसे दस्त होते हैं और हैजेमें भी वैसेही दस्त होते हैं। यद्यपि हैजेका पैदा करनेवाला अजीर्ण है, तो-भी, ऐसी दशामें, पेशावसे इन दोनोंका भेद मालूम हो जाता है, यानी हैजेमें पेशाव, बहुधा, बन्द हो जाती है।

अतिसारमें दस्त पतले होते हैं और कृमि रोगमें भी प्राय: दस्त पतले होते हैं पत्र कृमि रोगसे भी अतिसार होता है, पर कृमि रोगवालेका जी मिचलाया करता है।

अतिसारमें दस्त पतले आते हैं और संग्रहणीमें भी, पर इन दोनोंके दस्तोंमें बड़ा भेद है। संग्रहणीमें कच्चा अन्न, बिना पचे, योंका यों निकलता है। इस रोगके दस्तोंमें खूराकका कच्चा भाग रहता है। ग्रहणी नामक आँत का यह कायदा है, कि वह कच्चेको ग्रहण करती और पके को निकाल देती है, पर जब ग्रहणी खराब हो जाती है, जब ग्रहणी-रोग

हो जाता है, तब वह कच्चे अन्नको ग्रहण करती और कच्चे को ही निकाल देती है। इस रोगमें भी मरोड़ीके साथ दस्त आते हैं और बीच-बीचमें बन्द भी हो जाते हैं।

अजीर्णवालेका मल बदबूदार और ढीला होता है। पर बहुत ही बढ़े हुए अजीर्णमें मल चाँवलोंके धोवन या काँजी के समान होता है।

नोट—अलग-अलग दोषों के कोप से हुए अतिसारोंके दस्तों के लक्षण प्रत्येक प्रकारके अतिसारमें लिख आये हैं, अतः उनके फिर लिखनेकी जरूरत नहीं।

मरनेवाले रोगीका मल बहुत काला, बहुत सफेद, बहुत पीला, बहुत लाल या अत्यन्त गरम होता है। कोई कोई कहते हैं, बहुत ही बदबूदार, लाल, कुछ सफेद, काला और मासके धोवन-जैसा होता है।

जिसका मल सड़ा हुआ, बदबूदार या मोरके पङ्खके चँदोवे-जैसा होता है, वह रोगी असाध्य होता है।

नोट—काला दस्त कलेजेके रोग या पित्त के विकार से भी होता है। अनेक बार आमले, गूगल या लोहे से बनी दवाओं से भी काला दस्त होता है। काला दस्त होते ही घबराना न चाहिये, बल्कि पता लगाना चाहिये, कि क्यों काला दस्त हुआ है।

रक्तातिसार में दस्तों में खून आता है। बवासीर और रक्तपित्तमें भी गुदासे खून गिरता है। भेद यही है, कि बवासीरमें दस्त कब्जसे होता है और दस्तके पहले या पीछे धारमें खून गिरता है। रक्तपित्त रोगमें भी दस्त के आगे या पीछे धार में खून गिरता है किन्तु रक्तातिसार में, खून—आँव या मल के साथ मिल कर आता है। साफ शब्दोंमें यों समझिये कि, अगर दस्तके साथ मिलकर खून आवे, तो रक्तातिसार या पेचिश समझो। अगर दस्त कब्जसे हो और दस्तके आगे-पीछे खून गिरे तो बवासीर समझो।

नोट—अगर दस्तोंमें खून और पीप अत्यधिक गिरे, तो समझो कि कलेजा पककर आँतों में फूटा है।

अतिसार और संग्रहणीमें नाड़ी-परीक्षा।

पादे च हंसगमना करे मण्डूकसप्लवा।
तस्याग्नेर्मन्दता देहे त्वथवा ग्रहणी-गदे॥
भेदेन शान्ता ग्रहणीगदेन निर्वीर्यरूपा त्वतिसारभेदे।
विलम्बिकायां भेकगा कदाचिदामातिसारे पृथुताजडा च॥

जिसके पाँवकी नाडी हंसके समान और हाथकी नाडी मेंडकके समान चलती है, उसके शरीरमें मन्दाग्नि या संग्रहणी रोग समझना चाहिये।

संग्रहणीका दस्त होनेके बाद नाडी शान्तवेगा हो जाती है। अतिसार रोग में, दस्त होनेके बाद, नाड़ी सर्वथा बलहीन हो जाती है। विलम्बिका में नाडी मेंडक की तरह चलती है। इसी तरह आमातिसार में नाडी स्थूल और जडवत् चलती है। अतिसारमें नाडी ऐसी मन्दी हो जाती है, जैसी शीतकाल—जाडे—में जोंक हो जाती है।

नोट—नाडी देखने की तरकीबें और भिन्न-भिन्न रोगों और दोषों में नाडी की चालें कैसी होती हैं, यह विषय हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" प्रथम भागके पृष्ठ २०८—२२४ में खूब बढ़ाकर लिखा है। पाठक वहाँ देख लें। यहाँ हमने केवल अतिसार और संग्रहणी की नाडी की चालें लिखी हैं, क्योंकि आमातिसार, अतिसार और संग्रहणी तीनों दस्तों के रोग हैं, और इनमें थोड़ा-थोड़ा अन्तर है। पर ध्यान रहे, केवल नाडी-परीक्षासे रोग-परीक्षा हो नहीं सकती। देखिये, संग्रहणी और मन्दाग्निमें हाथकी नाडी मेंडक के समान चलती है, विलम्बिका और विशूचिका में भी नाडी मेंढकके समान चलती है। केवल मल, केवल मूत्र या दोनों ही के रुक जाने या इच्छा से रोक लेने पर भी नाड़ी मेंढककी चाल से चलती है। फिर भी, और परीक्षाओंके साथ नाडी-परीक्षा करना भी जरूरी है, इससे भी बड़ी मदद मिलती है।

डाक्टरी-मत से अतिसार के लक्षण।

डाएरिया के लक्षण।

अँगरेज़ी में अतिसार को "डाएरिया" (Diarrhœa) कहते हैं। एलोपैथी चिकित्सा में इस के चार भेद माने हैं :—

(१) फ्लीस डाएरिया

(२) म्योकस डाएरिया

(३) सेरस डाएरिया

(४) सिम्पेथेटिक डाएरिया

पहलेमें, पतले दस्त होते हैं, कुछ गाढ़ा और पीला मल निकलता है। दूसरे में, गाढ़ा और पतला गाँठ लेकर मल निकलता है। तीसरे में, पानी के समान पतले दस्त होते हैं। चौथे में, पतले और गाढ़े भिन्न-भिन्न रंगों के दस्त होते हैं।

साधारणतया इस रोगमें दस्त होते हैं, क्षय होती है, श्वासमें दुर्गन्ध आती है, पेट फूल जाता है और उस में पीड़ा होती है, शीत लगता है और कमज़ोरी हो जाती है। जीभ का रंग मैला सा हो जाता है।

डाएरिया के कारण।

अत्यन्त गरम खाना खाना, मिर्च वगैर: तीक्ष्ण चीज़ खाना, उपवास के बाद गरम पदार्थ खाना, क़ायदे से आहार विहार न करना, शोक और भय प्रभृति डाएरिया या अतिसारकी उत्पत्तिके कारण हैं।

बालकों को दाँत निकलने के समय, तथा गर्भवती और प्रसूता को भी यह रोग होता है।

अगर अतिसार-रोगी, पथ्य पर ध्यान न देकर, अपथ्य सेवन करता है, तो वह धीरे-धीरे दुर्बल होता जाता है, उसका चेहरा पीला हो

* इसी को वैद्यक में "पक्वातिसार" कहते हैं।

जाता है, शरीरमें सूजन आ जाती है, बेहोशी होने लगती है और जीभ सफेद हो जाती है। इस दशामें रोगीको असाध्य समझना चाहिये।

नोट—दस्तोंको शीघ्रही न बन्द करना चाहिये। अगर एकदम पतले दस्त होते हों, तो शीघ्र ही बन्द करने का उपाय करना चाहिए। चिकनी और देर में पचने वाली चीजें न खिलानी चाहियें।

डिसेण्ट्री के लक्षण।

जिसे वैद्यकमे "प्रवाहिका" कहते है,उसे ही अँगरेज़ीमें "डिसेण्ट्री" (Dysentry) और हिकमत में पेचिश कहते है। डाक्टरो ने इसके तीन दर्जे माने है।

पहले दर्जे में—म्योकसमेंबर परदे में यानी बड़े आँतो में सूजन हो जाती है, इसलिये मरोड़ो होकर पतले दस्त आते है।

दूसरे दर्जे में—ग्लामेंडस नामक पर्देमें ज़ख्म हो जाते है, इसलिये उस समय आँव और खून के दस्त आते हैं।

तीसरे दर्जेमें—वही परदा स्याह और निर्बल हो जाता है, उस समय हरे पीले वगैरः तरह-तरह के दस्त आते है।

इस रोगमें—पेटमे सूई चुभानेकी सी वेदना होती है, ज़रा-ज़रा सी देर मे पाखाने जानेकी इच्छा होती है, भूख बन्द हो जाती है, किसी क़दर प्यास लगती है, पेट पर अफारा आ जाता है और रोगी के शरीर मे बदबू आती है। ये मुख्य लक्षण है।

यह रोग अगर दवा करने पर भी दिन-दिन बढ़ता ही जावे; तो असाध्य समझना चाहिये। पहले दर्जे में यह रोग सुखसाध्य रहता है, दूसरे में कष्टसाध्य और तीसरे में असाध्य हो जाता है।

डिसेन्ट्री के कारण।

अत्यन्त गरमी, गरम और खुश्क पदार्थ, कच्चे फल, कच्चे अन्न और देर से पचने वाले पदार्थ खाना, इस रोग के कारण है। मले-

रिया से भी यह रोग पैदा होता है। जब यह रोग मलेरियासे होता है, तब यह घर-घर में फैल जाता है।

नोट—वैद्यक में "कुटजावलेह" इसकी उत्तम दवा है। इसके सिवा और भी बहुत सी दवाएँ हैं।

हिकमत से अतिसार का बयान।

इसका हिकमत में वैद्यककी तरह बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णन है। हम नवसिखिये वैद्यों की जानकारी के लिये चन्द खास-खास बातें लिखते हैं। जिसे वैद्यक में "अतिसार" कहते हैं, उसे हिकमत में "इसहाल" और "इतलाक़" कहते हैं। इस रोग में बार-बार दस्त आते हैं। इसके हम तीन विभाग करते हैं :—

(१) साधारण (२) इतलाक खूनी और (३) पेचिश।

साधारण इतलाक—अतिसार में पतले दस्त आते हैं। इसे अपने वैद्यक के वातातिसार, पित्तातिसार और कफातिसार के अन्तर्गत समझना चाहिये।

इतलाक खूनी को वैद्यक में रक्तातिसार कहते हैं। इसमें खून के दस्त होते हैं, उनका रंग किसी क़दर लाल होता। इसको "अतिसार जिगरी" भी कहते हैं। यह अतिसार कलेजेसे होता है। असल में, इसमें मांस के धोवन-जैसे दस्त आते हैं।

पेचिश को अपने यहाँ का आमातिसार या प्रवाहिका समझना चाहिये। इस रोग में, आँतों में ज़ख्म हो जाते हैं। ज़ख्मों की वजह से, मरोड़ी होकर, आँव या आँव और खून के दस्त होते हैं, साथ ही नाभि में दर्द भी होता है। इसे बोल-चाल की भाषा में "पेचिश" कहते हैं, पर हकीम लोग "ज़हीर" कहते हैं। यह रोग सादिक़ और काज़िब दो तरह का होता है।

नोट—अगर थोड़ा-थोड़ा दस्त हो और नाभि के नीचे दर्द हो, तो समझना

चाहिये कि, सुद्दा* है। रोग के पहले, कोई कच्चा अन्न या कड़ी चीज खाने या खुश्की से अन्न की नाली में सुद्दा हो जाता है। ऐसी दशा में, गाय का दूध चीनी मिलाकर, दिनमें ३।४ बार, पिलाना चाहिये। अगर बारबार हाजत हो, पर दस्त न हो तो हुक्ना* या बस्ति करनी चाहिये।

जिसमें अनाज के दाने अथवा इसबगोल-जैसी कोई चीज़ खाई जाय और वैसा ही मल निकले, उसे "सादिक़" कहते हैं। जिसमें अनाज के दाने मलके साथ न निकलें, उसे "क़ाबिज़" कहते हैं।

सादिक़ ज़हीर में दस्त रोकने वाली दवा देनी चाहियें, किन्तु क़ाबिज़ ज़हीर में, पहले ही, मल रोकने वाली दवा देना खतरे से खाली नहीं। इसमें संग्राहक या क़ाबिज़ दवा देनेसे सुद्दे पड़ने और दर्द होने का डर है। वैद्यकमें भी, आमातिसारमें मलरोधक—मल रोकने वाली—दवा देना मना है।

एक यूनानी ग्रन्थ "मीज़ान तिब्ब" मे लिखा है,—मेदे मे विकार होने, जिगरमें खराबी पहुँचने और आँतोंमें गड़बडी होने से, कितने ही प्रकार के दस्त होते हैं। हम उन सबका सविस्तर वर्णन करें, तो एक और पोथा हो जायगा, इसलिये हम अपने नौसिखिये वैद्य और गृहस्थ-भाइयोंकी जानकारी के लिए चन्द ज़रूरी बातें लिखते हैं। इन बातोंके जानने से, उन्हें रोग परीक्षा और चिकित्सामें कुछ-न कुछ मदद ज़रूर मिलेगी।

मेदे की खराबी से दस्त।

(१) अगर नजला गिरने से दस्त होते हैं, तो वह सोनेके बाद होते हैं। इस दशामें, दस्त बन्द न करके, मवाद निकालना चाहिए और साथ ही नजला मिटाने और भेजे (मस्तिष्क) को पुष्ट करनेके उपाय करने चाहिएँ।

*सुद्दा=गांठ। हुक्ना=गुदा में दवा की पिचकारी लगाना।

(२) अगर खाने-पीनेकी गड़बड़ी से दस्त हों, तो हलका और कम खाना खाना चाहिये। साथ ही पचानेका भी उपाय करना चाहिये।

(३) अगर रगों में मवाद होने से दस्त आयेंगे, तो दस्त तो बहुत आयेंगे, पर शरीर मोटा-ताजा ही रहेगा—दुबला न होगा। इस दशा में फस्द खोलना, बदन मलवाना, पसीने निकालना और लङ्घन कराना अच्छा है।

(४) अगर जिगर की कमजोरी से सफेद या हरे दस्त हों, तो जिगर और आमाशयको पुष्ट करनेवाला पथ्य और दवा देनी चाहिये।

नोट—इस हालतमें "जवारिश मस्तगी" अच्छी है।

जिगर के बिगाड़ से ६ प्रकारके दस्त होते हैं। ये जिगरका फोड़ा फूटने, जिगरके कमजोर होने, खून के अधिक होने, जिगर पर गरमी पहुँचने और जिगरमें खूनके जल जाने प्रभृति कारणोंसे होते हैं। उनमें से किसी में पीप आती है, किसी में मास के धोवन-जैसे दस्त आते हैं, किसीमें खूनके दस्त और किसीमें गाढी कीच से दस्त आते हैं।

नोट—अगर जिगरी दस्त—मास के धोवन-जैसे होते हों, तो बीजों समेत कुलफे देना अच्छा है।

अगर खूनकी अधिकता से दस्त होते हों, तो जबतक कमजोरी न बढ़े, दस्त बन्द न करने चाहिएँ। आरम्भ में फस्द खोलकर थोड़ा-थोड़ा खून निकालना और हाथ पैर और छातियोंको कसकर बाँध देना उचित है। अगर दस्त बन्द करनेकी जरूरत हो, तो कुर्स, कहरुबा और कुलफे के बीजोंका शीरा बारतङ्ग के पानीमें बना कर देना चाहिये। भोजन हलका और थोड़ा देना चाहिये।

अगर दस्त सफरावी या पित्तके होंगे, तो जिगर पर गरमी होगी। उस दशामें, बिना मवाद निकाले, दस्त बन्द करने न चाहिएँ।

अगर जिगरमें खून या और किसी मवादके जल जाने से दस्त हों, तो सफेद चन्दन, अर्क गुलाबमें घिस कर, जिगर पर लगाना चाहिये और दाहिने हाथकी फस्द असीलम खोलनी चाहिये।

अगर दस्त गाढ़े कीच से हों, तो समझना चाहिये कि, या तो जिगर

बराबर लेकर, कूट छान कर, गोलियाँ बना लो। इनमेंसे सात माशे गोलियाँ या चूर्ण खाना इस रोग में अच्छा है । इस के सिवा पेट पर चारे लगाना भी अच्छा है । जहाँ तक हो सके, इस रोग में अफीम न देनी चाहिये ।

आँतोंसे पीव आना ।

जब आँतों में मरोड़से घाव पड़ जाते हैं या पककर सूजन फूट जाती है, तब आँतोंसे गुदा द्वारा पीव आने लगती है। ऐसा रोग होनेसे पहले पेचिश या सूजन होती है।

एक प्रकार के दस्त और होते हैं। उन में कभी आँव आते हैं और कभी आँवोंके साथ खून भी आता है। इसको जहीर काबिज कहते हैं। इस रोग में ईसबगोल आदि के पिलानेसे आँव नहीं आते।

नोट—इस रोग में मल या मवाद को नर्म करनेवाली दवायें खाने और हुकने के काम में लानी चाहियें । इस रोग में गरम पानी बहुत लाभदायक साबित हुआ है। काबिज दवाएँ देने से इस रोग में रोगी के मरने का भय रहता है। इस रोग में हुकना और फाफा बहुत लाभदायक है।

अगर नीचे की आँत में, गरम सूजन से, यह रोग होता है, तो उस जगह बोझ सा मालूम होता है। इस में कभी कभी तप—ज्वर होता है और पेशाब कठिनाई से होता है।

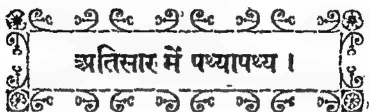
नोट—इस रोग में फस्द खोलना, कमर के नीचे पछने लगाना, थोड़ा खाना और शीतल दवाएँ लेना अच्छा है, क्योंकि इन से खून की गरमी नाश होती है।

अगर मवादका गिरना बन्द हो जाय, तो खैर, मेथी, बनफशा बाबूना और करमकल्ले के पत्ते—इनको औटा कर, पेट और गुदा को धारना चाहिये। अगर वमन हो सके तो बहुत ही अच्छा हो।

अगर गुदा में बहुत ही जियादा सरदी पहुँचने से यह रोग हो, तो उसे सेकना या गरम जल से धारना चाहिये अथवा ईंट को गरम करके उस पर बैठना चाहिये और सात माशे छालों भून कर निहार पेट—खाली पेट में फाँकने चाहिएँ।

अगर सवारी या किसी कड़ी चीज पर बैठनेसे यह रोग हो, तो "रौगन मोम" मलना चाहिये।

अगर खाली पेट में खटाई खाने से यह रोग हो गया हो, तो "मिश्री का शर्बत" पिलाना चाहिये।



अतिसार में पथ्यापथ्य।

अतिसार में अपथ्य।

अतिसार-रोगी को स्नान, नदी में घुसना, तेल की मालिश, भारी और चिकने भोजन, कसरत और अग्निका सन्ताप,—इन सबको छोड़ देना चाहिये।

अतिसार-रोगी को पसीना नहीं निकलवाना चाहिये; सुरमा प्रभृति न आँजना चाहिये, बहुत पानी न पीना चाहिये; स्नान न करना चाहिये; स्त्री-प्रसङ्ग न करना चाहिये, रातमें जागरण न करना चाहिये; हुक्का प्रभृति न पीना चाहिये, नस्य न सूँघनी चाहिये, तेलकी मालिश न करानी चाहिये, मलमूत्र आदि वेगो को न रोकना चाहिये, रूखे पदार्थ और अपनी आत्माके प्रतिकूल या विरुद्ध भोजनसे बचना चाहिये। इनके सिवा निम्न-लिखित पदार्थ भी अतिसार-रोगी को अपथ्य है — गेहूँ, उड़द, जौ, बथुआ, मकोय, चौलाकी फली, कन्दोंके साग, शहत, सेहँजना, आम, सुपारी, काशीफल या पेठा, तूम्बी, बेर, भारी अन्न और भारी जल, पान, ईख, गुड़, मदिरा, पोईका साग, दाख, लहसन, आमला, दूषित जल, दहीका तोड़, बासी पानी, नारियल, स्नेहन-कर्म, कस्तूरी, पत्तोंके साग—सूआ, पालक, मेथी वगैर., खार—जवाखार, सज्जीखार आदि दस्तावर पदार्थ, ककड़ी, खीरा, नमकीन और खट्टे पदार्थ एवं क्रोध। अतिसार-रोगीको इन सबसे परहेज करना मुनासिब है।

नोट—यों तो अपथ्य-सेवन सभी रोगोंमें हानिकारक होता है, इधर कुपथ्य सेवन किया और उधर रोग बढ़ा; लेकिन और रोगों में कुपथ्य से कभी-कभी हानि

कम होती या देर से होती है, पर अतिसार में इधर कुपथ्य सेवन किया और उधर तकलीफ बढ़ी। इसलिये अतिसार में अपथ्य से खूब ही बचना चाहिये।

अतिसार में पथ्य ।

वमन, लंघन, निद्रा, पुराने साँठी चाँवल, चाँवलों का यूष, खीलों का मांड, मसूर का रस, अरहर की दाल का रस, खरगोश, लवा, हिरन और सफेद तीतर का मांस-रस, सब तरह की छोटी मछलियाँ, तेल, बकरी या गाय का घी, दूध, दही और माठा तथा दही या दूध से निकाला हुआ मक्खन, नये केले का फल और फूल, शहत, जामुन, गजपीपर, अदरख, सौंठ, कटाई, कैथ, बेलीगरी, खट्टा और मीठा अनार, ताड़फल, पाढ़,चूका, भांग, मँजीठ, जायफल,हाउ-बेर, जीरा, कुड़ेकी छाल, धनिया,बकायन, कषैले पदार्थोंके रस, अग्नि दीपक हलके अन्न और पीनेके पदार्थ, नाभिसे दो अङ्गुल नीचे और ऊपर अर्द्ध चन्द्राकार दागना—ये सब अतिसारमें पथ्य या हितकर हैं।

नोट—पुराने अतिसार में दूध अमृत है। १ भाग दूध और तीन भाग पानी मिलाकर औटाना चाहिये, जब दूध मात्र रह जाय, पिलाना चाहिये। वातविबन्ध, मलरोध, शूलयुक्त प्रवाहिका, रक्तपित्त और प्यासवाले को दूध पिलाना अच्छा है। हिकमत में भी लिखाहै, अगर थोड़ा-थोड़ा दस्त हो और नाभिके नीचे दर्द हो, तो रोगी को गाय का दूध चीनी मिलाकर पिलाना चाहिये। वैद्य को नये पुराने अतिसारका विचार करके दूध देना चाहिये। नये अतिसारमें दूध हानिकारक है, पर बहुत पुराने में लाभदायक है।

अतिसार रोग में जल।

औटाने पर, दसवाँ भाग, सोलहवाँ भाग या सौवाँ भाग रहा हुआ पानी, शीतल होने पर, पाचन, ग्राही, अग्निदीपक और दोषों के नाश करने वाला होता है। जल जितना ही औटाया जाता है, उतनाही वह ज्वर और अतिसार वाले के हक में अच्छा होता है।

अगर अतिसार वालेको दाह और प्यास ज़ोर से हों, तो धनिया और सुगन्धवाला को जल में औटाओ। आधा पानी रहने पर उतार लो। पीछे उसी जल को छान कर और शीतल करके रोगी को पिलाओ,इससे तृषा और दाह युक्त अतिसार में बड़ा लाभ होता है।

इसी तरह सुगन्धवाला और सोंठको पानीमें औटाकर, आधा जल रहने पर उतार लो और छानकर तथा शीतल करके पीने को दो।

इसी तरह नागर मोथा और पित्तपापड़े का जल औटा कर पिलाओ अथवा नागर मोथा और सुगन्धवाला जलमें औटाकर, उस पानी को छानकर और शीतल करके पिलाओ।

अतिसारों में यवागू।

पक्वातिसार।

अरलूकी छाल, प्रियगू, मुलहटी और अनार की कोंपल—इन सब को पीसकर और दही मे डालकर पतली यवागू बना कर, अतिसार वाले को दो। इससे सब तरह के पके हुए अतिसार निस्सन्देह नाश होते हैं।

वातातिसार।

कैथ, बेल, नोनियाँ, (चाँगेरी), माठा और अनार—इनके द्वारा बनाई हुई पेया वातातिसार में हित है। पचमूल के काढ़े से पकाई हुई पेया भी वातातिसार मे हित है।

पित्तातिसार।

चन्दन, नागर मोथा, पटोलपत्र, सुगन्धवाला और सोंठ—इनके काढ़े से पकाई हुई पेया, इमली या माठे के साथ सेवन करने से, पित्तातिसार में लाभ होता है। यह पेया पाचक और सग्राहक है। धनिया, सुगन्धवाला और पाठा—इनके काढ़े से सिद्ध किया हुआ भोजन भी पित्तातिसार मे हितकारी है। साथ ही धनिया और

सुगन्धवाले के साथ औटाया हुआ जल देना चाहिये। पित्तातिसार में पहले लंघन कराने चाहियें, पीछे रोगी के मिज़ाज के माफ़िक़ यवागू, मंड या तर्पण देना चाहिये।

रक्तातिसार।

बकरी के एक सेर दूध में एक सेर पानी मिलाओ, पीछे उसमें सोंठ, कमल, सुगन्धवाला और पृष्ठपर्णी डालकर पेया बनाओ। इस पेया से रक्तातिसार में बड़ा लाभ होता है।

कफातिसार।

दुर्गन्ध करंज, त्रिकुटा, बेलगिरी, चीता, पाढ, अनार और हींग-- इनके काढे से यूष बनाकर पीने से कफातिसार नष्ट होता है।

त्रिदोषातिसार।

शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, कटाई, कटेरी, खिरेंटी, गोखरू, बेलगिरी, पाढ, सोठ और धनिया—इनके काढे द्वारा पेया बनाकर सेवन करने से त्रिदोषातिसार अथवा सब अतिसारों में लाभ होता है।

वातपित्तातिसार।

लघुपंचमूल, पीपल और धनिया—इनके काढ़े से बनाया हुआ आहार वातपित्तातिसार में पथ्य है।

वातकफातिसार।

धनिया, सोठ, नागरमोथा, सुगन्धवाला और बेलगिरी—इनका काढा पाचन और दीपन है। इस काढे के योग से पकाया हुआ आहार वातकफातिसार में पथ्य है। धनिया और सोठ के काढेमें पकाया हुआ आहार भी वातकफातिसार वाले को हित है।

कफपित्तातिसार।

शालिपर्णी, बेलगिरी, खिरेंटी और पृश्निपर्णी—इन चारोंके काढेसे

पेया बनाकर और उसमें अनार का रस तथा इमली का रस डालकर देने से कफपित्तातिसार में लाभ होता है।

भूख से हुए दस्त।

जिसे क्षुधाकी व्याकुलता से दस्त होने लगें, उसको वातनाशक दीपन औषधियों के द्वारा बनाई हुई पेया देनी चाहिये।

अतिसारमें लंघन और अन्यान्य पथ्य।

कच्चे या आम अतिसार में लङ्घन कराना सब से अच्छा है, पर लङ्घन अँधाधुन्ध न कराने चाहियें, रोगी की सामर्थ्य हो तो लङ्घन कराने चाहियें। अगर रोगी कमज़ोर हो, तो उपवास या लङ्घन न कराकर, हलका और शीघ्र-पाकी पथ्य देना चाहिये। अल्पाहार भी लङ्घन ही है। पानी में पकाया साबूदाना, अरारूट, बारली, पानी में घोला हुआ धान की खीलोंका सत्तू, और भात का माँड,—ये सब हलके पथ्य हैं। इनके देनेसे हानि नहीं। यद्यपि अतिसार में पतली चीज़ें देना मना है, पर यवागू या उपरोक्त पदार्थों की मनाही नहीं है। आमातिसार या अपक्व अतिसार वाले को लङ्घन कराकर, यवागू या यूष प्रभृति हलके पदार्थ देने चाहियें। साथ ही आमको पचानेवाली, अग्निदीपक, मल और अन्न को पचाने और मल को रोकने वाली दवा देनी चाहिये।

कफातिसार में लङ्घन और पाचन क्रिया करना उचित है।

नोट—हिंगाष्टक चूर्णमें हरड़ और सज्जीखार मिलाकर फँकाना कफातिसार रोगी को मुफीद है। अथवा हरड़, दारुहलदी, वच, मोथा, सोंठ और अतीस को १ पाव जलमें औटाकर १ छटांक जल रहने पर रोगी को दो।

यद्यपि अतिसारोंमें सब से अच्छा इलाज लङ्घन है, परन्तु पित्तातिसार और रक्तातिसार में लङ्घन कराना अनुचित और हानिकारक

है। इन दो के सिवा और अतिसारों में, रोगी में सामर्थ्य होने की हालत में, लङ्घन कराना सर्वोत्तम चिकित्सा है।

नोट—अगर लङ्घन कराने से प्यास बढ़ जाय, तो धनियाँ, सोंठ, मोथा और पित्तपापड़ या सुगन्धवाला को जल में औटा कर शीतल कर लो और छान कर वही जल थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। अथवा धनिया और बाला—इन दो को ही जल में औटाकर पीने को दो। इस जल से प्यास, दाह और अतिसार तीनों शान्त हो जाते हैं।

पक्वातिसार में पुराने बढ़िया चाँवलों का भात, मसूर की दाल, केले की तरकारी, परवल का साग, धनिया, सफ़ेद जीरा, हल्दी और सेंधानोन डाल कर दो। ज़रासा चूने का पानी डालकर दूध देना भी अच्छा है।

बहुत ही पुराने अतिसारमें केवल दूध देना ही अच्छा है। अगर पुराने अतिसार वाला चाहे तो मुरब्बा बेल, भुना हुआ कच्चा बेल, अनार, सिंघाड़े और कसेरू देना हितकारी है। इन चीज़ोंसे बल बढ़ता, तृप्ति होती और रोग भी नाश होता है। पुराने अतिसार-रोगी को ज्वर न हो, तो दही भात भी दे सकते हैं। पेचिश को तो दही भात और मिश्रीका भोजन ही, बहुधा, आराम कर देता है। पर जो पथ्य दो, वह दाह न करने वाला, हल्का और थोड़ा दो।

रक्तातिसार में बकरी का दूध बहुत ही लाभदायक है।

अतिसार की चिकित्सा में चिकित्सक के ध्यान देने योग्य बातें।

(१) अतिसार आम है या पक्व है, यानी आमातिसार है या पक्वातिसार है, इस बात का विचार किये बिना "अतिसार" की चिकित्सा हो नहीं सकती, अत. सभी अतिसारों में पहले इस

बात का निश्चय करना चाहिए कि, अतिसार आम है य पक्व है अर्थात् कच्चा है या पक्का।

नोट—अगर मल जलमें डालनेसे डूब जाय और फटा हुआ सा हो, तो समझना चाहिये कि, अतिसार आम—कच्चा है, पक्का नहीं। अगर जल में डालने से मल न डूबे, फटा हुआ सा और बदबूदार न हो तथा रोगीका शरीर हलका हो, तो समझना चाहिये कि अतिसार पक गया।

(२) आम अतिसार वालेको शीघ्र ही दस्त बन्द करने वाली—ग्राही—औषधि न देनी चाहिये, क्योंकि, बिना समय हुए, अपक्व या कच्चे मल को रोक देने से दण्डक, अलसक, अफारा, संग्रहणी, बवासीर, भगन्दर, सूजन, पीलिया, तिल्ली, गोला, प्रमेह, उदर रोग और ज्वरादि अनेक विकार हो जाते हैं।

नोट—यदि बालक और बूढ़ेको आम अतिसार हुआ हो, रोगी वातपित्त-प्रकृति वाले, धातुक्षीण वाले, कमजोर और अनेक दोषों से युक्त हों और उन के शरीरों से ढेर मल निकल चुका हो—तो ऐसे रोगियोंको, आम अतिसार होने पर भी, मल रोकने वाली—ग्राही—औषधि देकर, दस्त बन्द कर देने चाहियें, क्योंकि ऐसे रोगी आम के पचानेवाली दवा देने से मर जाते हैं। वजह यह है, कि पाचक औषधि से और भी दस्त आते हैं और रोगी कमज़ोर हो कर मर जाता है।

(३) बलवान् अतिसार में रोगी को लंघनोंके सिवा और दवा न देनी चाहिये, क्योंकि लंघनों से दोष शान्त होते और पचते हैं।

नोट—अगर एक ही समय में "ज्वर" और "अतिसार" दोनों पैदा हों, तो उस रोग को घोर "ज्वरातिसार" कहते हैं। यह रोग बड़ी कठिनाई से आराम होता है। इस ज्वरातिसार में लङ्घन न कराने चाहिएँ। हारीतने कहा है:—

न पित्तेन विना सोऽपि जायते शृणु पुत्रक।
तस्य नो लङ्घनं प्रोक्तं ज्वरे चैवातिसारके॥

हे पुत्र! सुन, बिना पित्तके ज्वरातिसार नहीं होता, इसवास्ते "ज्वरातिसारमें" लङ्घन कराना मना है।

(४) पूर्वरूप की अवस्था में प्राय सभी अतिसार आम—कच्चे या अपक्व होते हैं, इसलिये पूर्वरूप में अथवा अतिसार के आरम्भ में

"लंघन" कराना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। लंघन हो चुकने पर, हलका और पतला भोजन देना चाहिये। सुश्रुत पाचन औषधियों के योग से बनी हुई "यवागू" देने की आज्ञा देते हैं।

नोट—पीछे पृष्ठ २५।२६ में, हम अतिसार-रोगियोंके देने योग्य "यवागू" लिख आये हैं। अगर पूर्व रूप की अवस्थामें, आम अतिसार हो और साथ ही शूल और अफारा भी हो, तो रोगी को पीपल और सेंधानोन जल में मिला कर पिलाना और वमन करानी चाहिये तथा लङ्घन आदि से उपचार करना चाहिये। वमनके बाद, हलके भोजन—पञ्यूष और यवागू में पिप्पल्यादि पाचन द्रव्यों को मिला देना चाहिये। अगर इस तरकीबसे आम न शान्त हो, यानी न पके तो "हरिद्रादिक" या "वचादिक" क्वाथ पिलाना चाहिये।

(५) जिसको शूल के साथ, बहुत बार, थोड़ा-थोड़ा दस्त होता हो या दोष इकट्ठे हो रहे हों, तो "हरड़" देकर मल निकाल देना चाहिये। "चरक" में लिखा है:—

कृच्छ्र वायुहतान्दद्यादभया सम्प्रवर्त्तिनीम्।
तया प्रवाहिते दोषे प्रशाम्यत्युदरामय॥

स्वयं निकलते हुए मल की पहले उपेक्षा कर देनी चाहिये। आमातिसार में दस्त बन्द करने वाली दवा न देनी चाहिये, क्योंकि ऐसा करने से दण्डक अलसक प्रभृति अनेक रोग होने का खटका रहता है। अगर मल कष्ट से निकलता हो, तो अन्यान्य दस्तावर दवाओं की अपेक्षा "हरड़" देना अच्छा है। इस के देने से सब दोष बह जाते हैं और पेट का रोग अच्छा हो जाता है। हरड़ और पीपल दोनों को पानी में पीस, निवाया कर, पिलाने से भी दूषित मल निकल जाता है।

नोट—अगर रोगी को अत्यन्त पतले और बहुत से दस्त होते हों, तो आरम्भ में उसे क्य करानी चाहिये और इस के बाद लङ्घन और पाचन से काम लेना चाहिये।

(६) जिस रोगी की अग्नि दीप्त हो और उसे वेदना—पीड़ा-रहित, बहुत दिनोंका, अनेक रंगोंवाला पका हुआ अतिसार हो,—

उसे "पुटपाक" देकर आराम करना चाहिए। ऐसे अतिसार में "पुटपाक" खूब चमत्कार दिखाता है।

नोट—"पुटपाक" किसे कहते हैं और वह कैसे बनता है, इस बातको हमारे अनेक पाठक न जानते होंगे, इसलिये हम "पुटपाक" की विधि बतलाये देते हैं:—रोग-नाशक ताज़ा दवा लाकर, सिल पर रख कर, पीस लो। पीछे गोला सा बना, उस पर बड़ या जामुन के पत्ते लपेट कर, धागों से कस दो। इसके बाद, उस गोले पर कपड़ा लपेट, उस पर दो अंगुल मिट्टी चढ़ा दो। शेष में आरने या जंगली कण्डे सिलगा कर, आग में उस कपड़-मिट्टी किये गोले को रख कर पका लो। जब वह भुरते की तरह पक कर लाल हो जाय तब निकाल कर शीतल कर लो। शीतल होने पर, मिट्टी अलग कर, गोले को एक रेज़ी के कपड़े में रख, ज़ोर-ज़ोर से मल और दबा कर रस निकाल लो। इसी को "पुटपाक-रस" कहते हैं। इस रसकी मात्रा ६ माशे से ३ तोले तक है। इस में शहद १० माशे मिलाया जाता है। यदि चूर्ण या अर्क प्रभृति मिलाना हो, तो ६ माशे मिलाते हैं। हम अतिसार नाशक कई पुटपाक आगे लिखेंगे। पुटपाक के सम्बन्ध में हम पहले और दूसरे भागों में भी लिख चुके हैं।

(७) "सुश्रुत" में लिखा है कि, जिस रोगीकी अपान वायु बन्द हो—हवा न खुलती हो, दस्त न होते हों या रुक-रुक कर थोड़े-थोड़े होते हों, शूल—दर्द और मरोड़े चलते हों, रक्तपित्त और प्यास हो, उस रोगी को दूध पिलाना मुनासिब है। बहुत पुराने अतिसार में "दूध" अमृत का काम करता है।

नोट—तीन भाग पानी में एक भाग दूध मिला कर खूब औटाना चाहिए। इस दूध के पिलाने से अतिसार-रोगी के शेष रहे दोष या तो निकल जाते हैं या नष्ट हो जाते हैं। अतिसार में ऐसा दूध परम पथ्य समझा जाता है। वातविबन्ध, मलरोध, शूल-युक्त प्रवाहिका, रक्तपित्त और प्यास वाले को यह दूध उत्तम है। हिकमत के ग्रन्थों में भी लिखा है—अगर थोड़ा थोड़ा-दस्त होता हो और नाभि के नीचे पीड़ा हो, तो रोगी को गाय का दूध चीनी मिला कर पिलाना चाहिए। इस बात को भी याद रखना चाहिये कि, ऐसी हालत में, खूब साफ़ अरण्डी का तेल पिलाने से भी लाभ होता है। एक पाव दूध में चार या पाँच तोले अरण्डी का तेल देना चाहिये।

(८) शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, खिरैंटी,

पित्तातिसार-रोगी बलवान हो, अग्नि दीप्त हो, और दोष जियादा हों, तो दूध के साथ जुलाब देना चाहिये, इससे फिर अतिसार नहीं होता।

(१६) अगर बहुत दिनों तक अतिसार के रहनेसे गुदा कमज़ोर हो जाय, तो गुदा में कोई चिकनाई लगानी चाहिए। अगर कांच निकल आवे तो सेंक वगैरः से उसे ठीक कर देना चाहिये अथवा तेल या घी की मालिश करके उसे भीतर घुसा देना चाहिये।

(१७) यद्यपि हम लिख आये हैं कि, बिना पके और बढे हुए अतिसारको न रोकना चाहिये, तथापि इस बात को न भूलना चाहिये कि, चीण, वृद्ध, गर्भवती और बालकके बढे हुए अतिसारको तत्काल रोक देना चाहिये, अर्थात सब लोगों के बिना पके—आम अतिसार को फौरनही मत रोको, किन्तु बालक, वृद्ध, चीण और गर्भवती के बढे हुए अतिसार को फौरन रोक दो। कहा है :—

न स्तम्भयेदतीसारमपक वृद्धिमागतम्।
विना क्षीणस्य वृद्धस्य गर्भिण्या बालकस्य च।

(१८) रोगी की जीभ जरूर देखते रहो। जीभ से रोगी के आराम होने और आराम न होने का पता लग जाता है।

अगर जीभ पर मैला जमा हो, तो पाचन-शक्ति में गड़-बड़ी समझो। अगर जीभ बडी मुश्किल से बाहर निकले और फिर रोगी की इच्छानुसार भीतर न जा सके, तो समझो कि रोगी अत्यन्त निर्बल और दुखी है। अगर रोग का जोर हो और उसमें जीभ कांपे तो खतरा समझो। अगर हैजा, छोजरी और फेफड़े के रोगों में जीभ का रंग शीशा-धातु के समान हो जाय, तो खराब अलामत समझो। अगर मुँह पक जाय और जीभ शीशे के रंग की सी हो जाय, तो रोगी की मृत्यु समझो। मृत्यु-समय की जीभ खरदरी, झागदार, लकडी-जैसी कडी और गति-रहित हो जाती है। सक्रामक ज्वरो, माता, छोजरी, आँतों के रोगों और बहुत तेज चढे बुखार में जीभ सूख जाती है। जीभका कडा होना मौत की निशानी है। प्रत्येक रोग में जीभ सूख कर फिर तर होने लगे, तो समझो कि रोग आराम हो रहा है।

—•—

सामान्य चिकित्सा।

अतिसार की चिकित्सा पर सामान्य नियम।

सबसे पहले, सभी तरह के अतिसारों में, आम और पक्व अतिसार की जाँच करके दवा तजवीज करनी चाहिए। अतिसार आम—कच्चा हो तो मल रोकने वाली—ग्राही औषधि न देनी चाहिए। उधर पृष्ठ २८—३४ में लिखे हुए नियमों पर ध्यान रखकर दवा देनी चाहिये।

आमातिसार की चिकित्सा।

पथ्यादि क्काथ।

(१) हरड़, दारुहल्दी, बच, नागरमोथा, सोंठ और अतीस—इन का काढ़ा आमातिसार को नष्ट करता है।

पाठादि चूर्ण।

पाढ़, हींग, अजमोद, बच, पीपल, पीपलामूल, चव्य, और सोंठ—इन सब को कूट पीस कर चूर्ण बना लो। पीछे इस को सेंधा नोन डालकर गरम जल से पीओ। इस चूर्ण से पीड़ा-संयुक्त आमातिसार नष्ट हो जाता है।

हरीतक्यादि कल्क।

(२) हरड़, अतीस, हींग, काला नोन, बच और सेंधानोन

* * * * *

(१०) कच्ची और भुनी हुई सोंठ—अरण्ड के रस में पीस कर—, खाने से आमातिसार मय शूल के नाश हो जाता है। इसी को पुट-पाक की विधि से पका कर भी खाते हैं।

नोट—सोंठ के पुटपाक की विधि उधर पृष्ठ ३६ में लिखी है।

पक्वातिसार की चिकित्सा।

समंगादि चूर्ण ।

(११) लजवन्ती—छुईमुई, धायके फूल, मँजीठ और लोध—इन चारों के चूर्ण की एक मात्रा, शहत में मिला, चाँवलों के धोवन के साथ, सेवन करने से पक्वातिसार नष्ट होता है।

नोट—तीन तोले साफ किये हुए पुराने चाँवलों को अधकुचरा कर, पाँच छटाँक शीतल जल में, रात के समय, मिट्टी के बासन में भिगो दो, सवेरे मल छान कर जल निकाल लो और चाँवल फेंक दो। यही "चाँवलों का धोवन" या "तंडुल-जल" है। जरूरत होने से, यह जल एक घण्टा मात्र चाँवल भिगोने से भी तैयार हो जाता है।

शाल्मली वेष्टकादि चूर्ण ।

(१२) मोचरस, लोध, अनार के फल की छाल और अनार के वृक्ष की छाल—इन चारों का चूर्ण, शहत में मिला, चाँवलों के धोवन के साथ, लेने से पक्वातिसार नाश होता है।

आम्रास्थादि चूर्ण ।

(१३) आम की गुठली की मींगी, लोध, बेलगिरी और फूल-प्रियंगू—इन चारों का चूर्ण, शहत में मिला, चाँवलों के धोवन के साथ, लेने से पक्वातिसार नाश होता है।

(१) गंगाधर क्वाथ

(१४) जल-चौलाई, अनार के पत्ते, जामुन के पत्ते, सिंघाड़े के पत्ते, सुगन्ध बाला, नागरमोथा और सोंठ—इन सब का काढ़ा पीने से गङ्गा के समान बहता हुआ अतिसार भी आराम हो जाता है।

(२) गंगाधर चूर्ण

(१५) मोचरस, नागरमोथा, सोंठ, पाढ़, सोनापाठा और धाय के फूल—इन छै दवाओं को कूट पीस चूर्ण बना, मथित* के साथ, लेने से अत्यन्त वेग से होने वाले दस्त भी बन्द हो जाते हैं।

(३) गंगाधर चूर्ण।

(१६) नागरमोथा, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, धाय के फूल, और लोध—इन छै दवाओं का चूर्ण गुड़ में मिला, मथित* नामक माठे के साथ, सेवन करने से गंगा के समान वेगवाला अतिसार भी आराम हो जाता है।

(४) वृद्ध गंगाधर चूर्ण।

(१७) नागरमोथा, सोनापाठा, सोंठ, धाय के फूल, लोध, सुगन्धबाला, बेलगिरी, मोचरस, पाढ, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, आम की गुठली, लजवन्ती और अतीस—इन १४ दवाओं का चूर्ण, शहद में मिला, चाँवलों के धोवन के साथ, लेने से अतिसार, प्रवाहिका और संग्रहणी,—ये तत्काल आराम होते हैं। यह चूर्ण गंगा के समान बहते हुए दस्तों को भी रोक देता है।

अंकोल कल्क।

(१८) अङ्कोल की जड़ पीसकर चाँवलों के जल और शहद के

---

* जो दही कपड़े में छान लिया जाता है और जिसमें जल नहीं मिलाया जाता, उसे "मथित" कहते हैं।

चौंसठ सेर जल में, कलईदार कड़ाही में, औटाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। फोक को फेंक दो और छने हुए जल को फिर उसी कडाही में चढ़ा औटाओ। औटते समय उस में नागरमोथा, जवाखार, बिड़नोन, इन्द्रजौ, संचर नोन, सेंधानोन, धायके फूल और पीपर—इन आठों में से प्रत्येककी दो दो तोले पिसे-छने चूर्णको मिला दीजिये। जब गाढा होकर कलछी के लगने लगे, उतार लो और शीतल होने पर "शहद" मिला कर रख दो। इसकी मात्रा जवान के लिये १ तोले की है। इसके सेवन से दुःसाध्य अतिसार, मरोड़ी, बवासीर, संग्रहणी, भगन्दर, श्वास, प्रमेह और वमन प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं। यह भी परीक्षित है।

दाडिम पुटपाक।

(२४) साबत अनार पर बड के या जामुन के पत्ते लपेट कर डोरे से बाँध दो और ऊपर से दो दो अङ्गुल मिट्टी लपेट कर सुखा लो। पीछे जङ्गली कण्डों की आग में उसे पकाओ। जब पक जाय, निकाल कर शीतल कर लो और मिट्टी दूर कर, उसको कपड़े में रख, ज़ोर से दबा-दबा कर रस निचोड लो। इस रस में "शहत" मिला कर पीने से सब तरह के अतिसार, आम के दस्त, खून के दस्त, पतले दस्त और बदबूदार दस्त सभी आराम हो जाते हैं। मात्रा २ से ३ तोले तक है। शहद ६ माशे से १० माशे तक मिलाना चाहिये।

छिन्नादि क्वाथ

(२५) गिलोय, पाठा, खस, बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, सोंठ, पद्माख, लाल चन्दन, कुडे की छाल, धनिया, चिरायता और अतीस—इन दवाओं का काढा, शीतल करके, पीने से ज्वर, प्यास, अरुचि, दाह, ग्लानि, उबकाई, मरोड़ी और सूजनयुक्त अतिसार आराम होता है।

नोट—यह नुसखा परीक्षित है। पर हमने ऐसे ही रोगियों को दिया था, जिन को अतिसार के सिवा ज्वर, सूजन और दाह प्रभृति उपद्रव भी थे।

लौह पर्पटी ।

(२६) शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गंधक १ तोला और लौह-भस्म १ तोला तैयार रखो।

पहले पारे और गन्धकको घोटकर कज्जली बनाओ। पीछे उसमें लौह-भस्म मिला दो और घोटो। इसके बाद उस घुटी हुई कज्जली को, लोहेकी छोटीसी कड़ाहीमें डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब वह लेई सी हो जाय,उसे गरम-गरम ही केलेके पत्ते पर फैलादो और ऊपरसे दूसरा केलेका पत्ता रखकर दबा दो और गोबर से ढक दो। दो घण्टे बाद, गोबर और ऊपरका पत्ता हटा, पापड़ी सी उठालो। यही "लौह-पर्पटी" है। मात्रा ४ चांवलकी है, धीरे-धीरे मात्रा एक रत्ती तक बढ़ा सकते हो। अनुपान शीतल जल या धनिया अथवा जीरेका काढ़ा। समय,—सवेरे शाम। इससे संग्रहणी, अतिसार और मन्दाग्नि —ये रोग नाश होते हैं।

स्वर्ण पर्पटी ।

(२७) हिङ्गलूसे निकला पारा या शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, सोनेके वर्क ३ माशे और लौह भस्म ३ माशे ले लो। पहले पारे और सोनेके वर्कों को घोटो। बादमें गन्धक मिलाकर घोटो और अन्त में लौह-भस्म डाल कर घोटो। जब सब घुट जायँ, लोहे की कड़ाही में घुटे हुए मसालेको रखकर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब पतली चाशनीसी हो जाय,केलेके पत्ते पर फैलाकर, ऊपरसे दूसरा केलेका पत्ता रखकर दबाओ और ऊपर के पत्ते पर गोबर रख दो। दो घण्टेके बाद उठाकर शीशी में भर लो। मात्रा—४ चांवल से १ रत्ती तक। अनुपान—शहद। समय—सवेरे शाम।

रोग नाश—इस पर्पटी से भी अतिसार आराम होते हैं। पेट फूलना, कच्चे पक्के दस्त होना और संग्रहणी ये, सभी नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह हमारी आजमाई हुई नहीं। राजवैद्य श्रीमान् किशोरी दत्तजी शास्त्री, कानपुर, की पुस्तकसे लेकर हमारे एक वैद्य-मित्र ने आजमाई थी। आप कहते हैं कि, इसके उत्तम होने में सन्देह नहीं।

दूसरी स्वर्ण पर्पटी।

(२८) हिङ्गलूसे निकाला पारा २ तोले, शुद्ध आमलासार गन्धक २ तोले और सुवर्ण-भस्म १॥ माशे लाकर रख लो।

पहले पारे और गन्धक को खरल में डाल घोटो और कज्जली बनालो। बाद में सोने की भस्म उसी में डाल घोटो। जब तीनों एक-दिल हो जायँ, लोहे की बड़ी कटोरी या छोटी सी कड़ाही में उस घुटी कज्जलीको रख कर, कोयलोंकी मन्दी-मन्दी आग पर चढ़ा दो। जब कज्जली लेई सी पतली हो जाय, उसे पूरे केले के पत्ते पर रख कर, ऊपर से दूसरा केलेका पत्ता रख कर खूब दबा दो, पीछे उसपर गोबर रख दो। दो तीन घण्टे बाद पापड़ी सी को उठाकर शीशी में भर लो। इसके सेवन से अतिसार, संग्रहणी और क्षयरोग अवश्य नष्ट हो जाते हैं। मात्रा १ रत्ती से १ माशे तक। मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिये। अगर रोगी निर्बल हो, तो चार चाँवल भर ही देना अच्छा होगा। अनुपान—शहद, दही या नागर पानका रस। शहद के साथ देकर हमने बहुत लाभ उठाया है।

नोट—अगर स्वर्ण भस्म न हो, तो उतने ही सोनेके वर्क डालनेसे भी काम चल जायगा। यह "स्वर्ण पर्पटी" हमारी कितनी ही बार की आजमाई है। देश, काल और पात्र का विचार करके देने से यह शीघ्र ही अपना चमत्कार दिखाती है।

कुटज वाटिका।

(२९) कौरैया की जड़ को धोकर छाल निकाल लो। पीछे आग

पर उबाल कर उस का रस तैयार करो । जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो । छने हुए जलको फिर कड़ाही में डाल चूल्हे पर चढ़ाओ। जब रस ढीला सा गाढ़ा हो जाय, तब उसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पीसकर मिला दो—सौंठ,काली मिर्च,पीपर,जायफल,माजूफल, जावित्री, लोध्र, बायबिडङ्ग, मरोड़फली, नर्म बेलकी गिरी और नागकेशर—सबको मिलाकर चलाओ और झट उतार लो । बादमें चनेसमान गोलियां बना लो । सेवन-विधि—अतिसार और संग्रहणी में ये गोलियां छाछ में हींग मिलाकर उसी से देनी चाहियें। अथवा मीठे दही, सौंठ के काढ़े या घी के साथ भी दी जा सकती हैं। छोटे बालकोंको भी यह दवा बड़े कामकी है। इन गोलियों से अतिसार, संग्रहणी, पाण्डु और जीर्णज्वर—ये आराम होते हैं। पाण्डुरोग में ये गोलियां गोमूत्रके साथ दी जा सकती हैं। परीक्षित है।

नोट—कौरैयाकी छाल ५ सेर लेकर कूट लो और २५ सेर जल में औटाओ। जब सवा छै सेर जल रह जाय, उतार कर छान लो। छने हुए काढ़ेको फिर आग पर चढ़ा कर गाढ़ा करो। गाढ़ा होने पर, उसमें ऊपर लिखी हुई दवाओंका चूर्ण एक एक तोला पिसा-छना मिला दो और चला कर उतार लो। पीछे गोलियां बना लो।

जातीफलादि वटी।



(२०) जायफल ६ माशे, छुहारा ६ माशे, और शोधी हुई अफीम ६ माशे,—इन तीनोंको खरलमें डाल, पानोंके रसके साथ खूब घोटो। घुट जानेपर रत्ती रत्ती भरकी गोलियां बना लो। दिनभर में, दो या तीन गोलियां, माठेके साथ, खाने से भयानक अतिसार भी, सात दिनमें, आराम हो जाता है। परीक्षित हैं।

कर्पूरादि वटी।



(२१) शुद्ध कपूर, शुद्ध सिङ्गरफ, शुद्ध अफीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ और जायफल,—इन सबको छै छै माशे लेकर, खरलमें डाल, अदरखके रसके साथ घोटो। घुट जानेपर रत्ती-रत्ती भर की गोलियां बना लो।

इन गोलियोंके सेवनसे सब तरहके अतिसार, ज्वरातिसार, रक्तातिसार, अधिक पतले दस्त, पुराने दस्त, मरोडी के दस्त, पेट मे गुडगुड होना प्रभृति निश्चय ही आराम होते हैं। मात्रा १ या २ गोली। समय—सवेरे शाम या जब उचित समझा जाय। परीक्षित है।

नोट—ये गोलियाँ अनेक बार आज़माई है। अमीरों को ये गोलियाँ मुफ्त बाँटनी चाहिएँ।

चन्द्रकला वटी।

(३२) भुना सुहागा १ माशे, शुद्ध सिंगरफ २ माशे और अफीम ४ माशे—इनको खरलमें घोटकर, गोलमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। अगर दस्त रातको अधिक होते हो, तो एक-एक गोली "शहद" मिलाकर खिलाओ। अगर दिनमे जियादा दस्त होते हो, तो "नीबूके रस" में गोली खिलाओ। ऐसे दस्तोंके लिये ये गोलियाँ परीक्षित हैं।

विजयावलेह।

(३३) एक भाग भाँग, एक भाग जायफल और दो भाग इन्द्रजौ—इन तीनों को कूट-पीस कपड-छनकर, "शहद" मे मिला रख दो। इस अवलेह के चाटनेसे सब तरह के अतिसार नाश होते है।

बिल्वादि चूर्ण।

(३४) बेलगिरी, मोचरस, लोध, धायके फूल, आमकी गुठलीकी मींगी और अतीस—इन छहोंको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बनाकर, सेवन करनेसे, समुद्रके वेगके समान दस्त भी बन्द हो जाते है। इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है। एक खूराकमे दवा से आधी मिश्री मिला फाँक जाना चाहिये और ऊपर से दो एक घूँट जल पी लेना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—इन्हीं ६ दवाओं का अवलेह भी बनता है। एक मात्रा दवा 'शहद' में भी चाटी जा सकती है।

अतिसारगजकेसरी चूर्ण।

(३५) इन्द्रजौ, मोथा, धायके फूल, कच्ची बेलगिरी, लोध, सोंठ और मोचरस—इन सातोंको कूटपीस और छानकर चूर्ण बना लो। इसकी भी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। यह भी दवाकी मात्राको आधी मिश्री मिला कर सेवन किया जाता है और ऊपरसे दो चार घूँट जल पीना होता है।

नोट—यह नुसखा शास्त्रोक्त है। शास्त्रों में गुड़ और माठे के साथ सेवन करने की विधि लिखी है। यह भारी से भारी अतिसारों को आराम करता है। सैकड़ों बार का परीक्षित है।

खदिरादि बटी।

(३६) कत्था, सोंठ, शुद्ध अफीम, काली मिर्च, जायफल और बबूल के पत्ते—इन सबको बराबर-बराबर लेकर कूट पीस लो। दूसरी ओर बबूल की ताज़ा छाल लेकर उसका काढ़ा बना लो। खरल में ऊपरका पिसा हुआ मसाला डाल, बबूल की छाल के तैयार किये हुए काढ़े के साथ खूब घोटकर, चने-बराबर गोलियाँ बना लो। जवान आदमी एक बारमें दो गोलियाँ तक जल के साथ खा सकता है। सवेरे, दोपहर और शामको गोलियाँ सेवन करनी चाहिएँ। इनके सेवन से सब तरह के अतिसार, पेट फूल कर दस्त होना और दस्तों में दुर्गन्ध आना प्रभृति निश्चय ही आराम होते हैं। परीक्षित है।

अतिसारान्तक चूर्ण।

(३७) सौंफ, सोंठ, आम की गुठलीकी मींगी, सफेद ज़ीरा भुना हुआ, अनारके फूल, खसखसकी डोडी—ये सब बराबर-बराबर लाकर कूट पीसकर छान लो। फिर इस चूर्णके वज़नसे दूनी मिश्री पीस कर मिला दो। इस चूर्णसे सब तरहके अतिसार निश्चय ही नाश हो जाते हैं। ज़वानके लिये तीन माशेकी मात्रा है। हर दो-दो घण्टे पर एक-एक मात्रा फाँक कर, ऊपरसे दो-चार घूँट ताज़ा जल पी लेना चाहिये।

नोट—दवा के ऊपर उतनासा जल पीना चाहिये, जितने से दवा गले से नीचे उतर जाय, क्योंकि अधिक जल पीना अतिसारों में मना है। रक्तातिसार और आम-शूल के रोगों में हमने इस नुसखे की परीक्षा की है।

वैद्यक और यूनानी ।

सर्व अतिसार नाशक नुसखे ।

परीक्षित ग़रीबी नुसख़े

(३८) भाँगरे का रस दही के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं।

* * * * * *

(३९) तालमखाने दही में मिलाकर खाने से अतिसार आराम होता है। परीक्षित है।

* * * * * *

(४०) रातके समय भाँगको भूनकर "शहद" में लेनेसे नींद आती और अतिसार, संग्रहणी तथा मन्दाग्नि नाश होती है। परीक्षित है।

* * * * * *

(४१) कुरैया की छाल लाकर काढा बनाओ। जब आठवाँ भाग रह जाय, उतार कर मल छान लो और "अतीस" का चूर्ण मिलाकर पिलाओ। इससे सब तरहके अतिसार नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

* * * * * *

(४२) कौरैयाकी जडकी छाल और अतीस,—इन दोनोंको कूट-पीस कर छान लो। इस चूर्ण को शहद के साथ देनेसे भी सब तरह के अतिसार नाश होते हैं। परीक्षित है।

* * * * * *

(४३) रत्ती भर अफीम बकरी के दूध में घोल कर पीने से अतिसार और अजीर्ण नाश होते हैं।

* * * * * *

(४४) दशमूल के काढे में सोंठ मिलाकर पीनेसे अतिसार, सूजन, संग्रहणी ... [illegible] ... कफरोग और हृद्रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—सरिवन, पिथवन, कटेरी, बड़ी कटाई, गोखरू, बेल, अरणी, अरलू, (टेंटु) गम्भारी और पाडरी—यही दशमूल की दश दवाएँ हैं। पहले पाँच वृक्षों की जड़ों को "लघु पंचमूल" और पिछले पाँचों की जड़ों को "वृहत्पंचमूल" कहते हैं।

* * * *

(४५) पाढ और आम के वृक्ष की भीतरी छाल को, गायके दही में पीस कर, पीने से अतिसार, पीड़ा और दाह तत्काल आराम होता है।

* * * *

(४६) ठीकरे में ज़रा सी अफीम भून कर खाने से हर तरहका पक्वातिसार नाश होता है।

* * * *

(४७) श्योनाक की छाल और सोंठको, चाँवलों के जल के साथ, सेवन करने से पक्वातिसार नाश होजाता है।

* * * *

(४८) आम की कोंपल और कैथे के गूदे को, चाँवलों के जलमें, पीस कर सेवन करने से पक्वातिसार नाश हो जाता है।

* * * *

(४९) बबूल के पत्तों का रस पीने से सब तरह के दुस्तर और भयानक अतिसार आराम हो जाते हैं।

* * * *

(५०) धतूरे के फलों का रस पीने से सब तरह के अतिसार नाश होते हैं।

* * * *

(५१) भाँग को तवे पर भूँज कर, उसका चूर्ण, शहद के साथ, रात के समय, खाने से अतिसार, संग्रहणी, मन्दाग्नि और नींद न आने का रोग—ये सब नाश होते हैं। कई बार परीक्षा किया है।

(५२) प्याज़को कूट कर रस निकाल लेने और पीछे उसमें ज़रा सी "अफ़ीम" मिला खाने से अतिसार में अवश्य लाभ होता है।

* * * *

(५३) कुड़े या कुरैया की छाल का स्वरस पिलाने से अथवा इसी का रस पुटपाक की विधि से निकाल कर, शहद मिलाकर पीने से, निश्चय ही, अतिसार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(५४) जायफल खाने से अतिसार आराम हो जाते देखा है। अगर अतिसार के साथ प्यास, वमन और नींद न आने का रोग हो, तो वह भी आराम हो जाता है।

नोट—नींद न आती हो, तो ज़रासा जायफल घी में घिस कर पलकों पर आँज दो, फौरन नींद आवेगी। परीक्षित है।

* * * *

(५५) दो माशे जावित्री दही की मलाई या गाय के दही के साथ, सात दिन तक लगातार, खाने से भयानक अतिसार में भी लाभ होता है। आमातिसार में शीघ्र ही फायदा होता है। परीक्षित है।

* * * *

(५६) चार माशे मोचरस पीसकर और उसमें मिश्री मिलाकर खाने से पुराना अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

* * * *

(५७) सेमल की ताज़ा छाल लाकर, उसे सिल पर पीस कर, कपड़े में छान कर, रस निचोड़ लो। इस रस के पीने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

नोट—सेमल की छाल या जड़ घिस कर पिलाने से भी अतिसार नाश होता है। परीक्षित है।

* * * *

(५८) अफ़ीम १ माशे और केशर १ माशे,—दोनोंको मिलाकर

१६ गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली शहत में मिलाकर खाने से अतिसार और अजीर्ण दोनो में लाभ होता है।

* * * *

(५८) अजमोद, मोचरस, सोंठ, और धायके फूल—इन चारों को कूट-पीस कपड-छन कर, गाय के माठे के साथ, सेवन करने से सब प्रकार के दस्त आराम होते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(६०) नागरमोथा, इन्द्रजौ, बेलगिरी, पठानी लोध, मोचरस और धायके फूल—इनका चूर्ण गुड और गाय के माठे के साथ लेने से सब प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(६१) अनार दाना १६ तोला, मिस्री १६ तोला, पीपर ४ तोला, पीपलामूल ४ तोला, अजवायन ४ तोला, काली मिर्च ४ तोला, धनिया ४ तोला, सफेद जीरा ४ तोला, सोंठ ४ तोला, बंसलोचन ८ माशे, दालचीनी ८ माशे, इलायची ८ माशे और नागकेशर ८ माशे —इन सब दवाओं को कूट-पीस कपड-छन कर, बर्तन में रख दो। इस चूर्णके सेवन से सब तरह के अतिसार नाश हो जाते हैं। परी क्षित है।

* * * *

(६२) शुद्ध कुचला, अफीम और सफेद गोल मिर्च—इन तीनों को तोले-तोले भर लेकर, कूट पीस कर छान लो। इसके बाद इस चूर्ण को खरल में डालकर, अदरख के रस के साथ खूब घोटो। घुट जाने पर रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सोंठ के चूर्ण और गुड के साथ खाने से आमातिसार और हैज़ा निश्चय ही नाश होते हैं। परीक्षित है।

नोट—कुचलेके बीजों को तवे पर घी डालकर इस तरह भूनो, कि जलने न पावें।

बादमें ऊपरका छिलका उतार डालो । पीछे बीजोंको बीचों-बीचसे चीरकर, अन्दरकी जिभली निकाल डालो । इस काम के बाद कुचले को शुद्ध समझो ।

दूसरी तरकीब कुचला शोधनेकी यह है कि, कुचलेके बीजोंको गोमूत्रमें उबालकर छिलका और अन्दरकी जिभली निकाल डालो । बिना इस तरह शोधे, कुचला काममें न लाना चाहिये । यह एक प्रकारका जहर है । कायदेसे सेवन किया जाय, तो अमृत है । सम्भोग-शक्ति बढ़ाने में तो यह अव्वल दर्जे की चीज़ है ।

* * * *

(६३) शुद्ध सिंगरफ, लौंग, अफीम और मिश्री—सब को बराबर बराबर लेकर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंके दिन में तीन दफा या दो दफा, जलके साथ, लेनेसे अतिसार नाश हो जाता है ।

* * * *

(६४) शुद्ध-कपूर, अफीम और भुनी हींग—इन तीनों को पीस कर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो । एक-एक गोली सवेरे-शाम और दोपहर को या दो ही समय निगलवा कर, ऊपरसे चाँवलों का धोवन पिला दो । इससे दस्त, पेट का दर्द और कय होना —ये सब आराम होते हैं । परीक्षित है ।

* * * *

(६५) कसौंदी को जड़ ६ माशे, चार तोले चाँवलों के धोवन में पीस कर, पीने से बालक और बूढ़ोंके दस्त फौरन बन्द हो जाते हैं । वैसे यह नुसखा नये-पुराने सभी अतिसारों में फायदेमन्द है ।

* * * *

(६६) लोहेकी कटोरी या तवे पर ज़रासा "घी" डालकर, "हरड़" भून लो और उसमें से तीन या चार माशे दस्त वालेको खिलाओ, दस्तोंमें जरूर लाभ होगा । कमज़ोर रोगीको तो बहुत ही उत्तम दवा है ।

* * * *

सेर जल में औटाओ। जब आधपाव जल रह जाय, चूल्हे से उतार, मल-छान कर पिला दो। अवश्य दस्त बन्द हो जायँगे।

* * * * *

(६८) आम की गुठली की गिरी १ तोला और बेलगिरी १ तोला—दोनो को आध सेर पानी में औटाओ, जब डेढ छटाँक पानी रह जाय, उतार कर शीतल कर लो। पीछे मल-छान कर, उसमें शहद ६ माशे और मिश्री २ माशे मिलाकर पी जाओ। इससे कय और दस्त दोनों बन्द हो जाते हैं।

* * * * *

(६९) कैथ का बीज २ माशे भून कर खाने से पुराना अतिसार आराम हो जाता है।

* * * * *

(७०) गूलर का दूध १ माशे, बताशे में भर कर, ८।१० दिन खानेसे दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * * *

(७१) आमले की पत्ती, बबूल की पत्ती, और आम की पत्ती—इन तीनों को लाकर, अलग-अलग, बिना पानी डाले, सिल पर कूट-पीस कर कपडे में रस निकालो। इन तीनों पत्तों का स्वरस दो-दो माशे तैयार करके, उसमें ६ माशे शहद मिलाकर, पीने से सब तरह के दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * * *

(७२) जावित्री, जायफल, नागकेशर, लोंग और अफीम—इन पाँचों को चार चार माशे लेकर, महीन पीस कर, जल के साथ खरलकर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना, छाया में सुखा लो। फिर सफेद जीरा ४ रत्ती और सोंठ ४ रत्तीको पीस कर रखलो। इसी चूर्णके साथ ऊपर की गोली फांक जाओ और ऊपर से चार पाँच तोले शीतल जल पी जाओ। इससे भयानक प्यास वाला अतिसार एक मात्रा

में ही आराम हो जाता है। यह योग अनेक बार का परीक्षित है, कभी फेल नहीं होता।

* * * * *

(७३) छिलेहुए मसूर भून कर खाने से भी अनेक बार दस्त बन्द हो जाते हैं। मसूर की दाल रोज़-रोज खाने से पेट में गुड-गुड शब्द होना, पेट फूलना, दर्द होना और कच्चे पक्के दस्त होना— ये सब आराम होते हैं। आँतों को ठीक आर्डर में रखने में मसूर सबसे बढकर है।

* * * * * *

(७४) भुने हुए मूँग और भुने हुए चाँवल, दोनों बराबर-बराबर, लेकर काढा बनाओ। काढा हो जाने पर, उसे चूल्हे से उतार शीतल कर लो। पीछे उसमें शहद ६ माशे और मिश्री ३ माशे मिला रोगी को पिला दो। इससे प्यास, दाह, पेट की जलन और दस्त आराम हो जाते हैं।

* * * * * *

(७५) चाँवलों का माँड दिन में कई दफा पिलाने से भी दस्त आराम हो जाते हैं।

* * * * * *

(७६) बेलगिरी या कच्चे बेल को जल में उबाल कर, शहद के साथ कुछ दिन सेवन करनेसे सब तरहके अतिसार और प्रवाहिका रोग नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

* * * * *

(७७) अधपके बेल को आग में भून कर उस का गूदा, मिश्री और अर्क़ गुलाब के साथ मिला कर, सवेरे ही खाली पेट में, खानेसे सब तरह के दस्त आराम होते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(७८) बेल का मुरब्बा आमाशय-सम्बन्धी रोगों में बहुत हित-

है :—पहले बेल के फल लाकर, उनका गूदा निकाल लो और उस गूदे को हाँडी या कलईदार बर्तन में चढा, ज़रा जोश दे दो। जब गूदा कुछ गल जाय, तब उसे खाँड की चाशनी में डाल, चला दो। शीतल होने पर, अमृतबान या काँच के बर्तन में भर कर रख दो। दो महीने बाद खोलो। अगर वह अच्छी तरह गल गया हो, तो सेवन करो। इस से दस्तों में बहुत लाभ होता है।

* * * * *

(७८) बबूल के कोमल पत्ते ज़ियादा जल में पीस कर पीने से अतिसार आराम होता है।

नोट—जब गुदा की सम्बरणी वलि की कमजोरी से रोगी का पाखाना, अज्ञात अवस्था में, निकल जाय, उस समय बबूल के काढे की पिचकारी लगाना लाभदायक है। इससे आँतो में ताकत आती और आँतों की झिल्लीमें चिकनापन होता है।

* * * * * *

(८०) इलायची, जायफल, दालचीनी, सोंठ,—इनको समान भाग लेकर, सब को एकत्र पीस कर और सब की बराबर मिश्री मिला कर, ३।४ माशे की मात्रा से, दिनमें दो बार सेवन करने से अतिसार आराम हो जाते हैं। यह नुसखा अतिसार की निराम या पक्व अवस्था में देते हैं।

* * * * * *

(८१) ज़ीरा सफेद, काला ज़ीरा, छोटी इलायची, दालचीनी और घी में भुनी भाँग—प्रत्येक दवा चार चार माशे लेकर, सब को पीसो और ज़रूरत के माफ़िक़ "सेंधा नोन" मिला दो। इस में से १ माशे चूर्ण, दिन में २।३ बार, फाँकने से अतिसार आराम हो जाता है।

* * * * * *

(८२) इलायची, सौंफ और मस्तगी—इन तीनोंको समान भाग लेकर, सब की बराबर मिश्री मिला कर, खानेसे अतिसार और उपद्रव दूर होते है।

(८३) बेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, धाय के फूल, सोंठ और मोचरस,—इन को बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीस कर, चूर्ण बना लो। अथवा इन छहो दवाओंका काढा बनाकर और मिश्री मिला कर पी जाओ। इस के पीने से सब तरह के अतिसार और उपद्रव शान्त होते है। परीक्षित है।

नोट—यद्यपि हमने अनेक नुसखे लिखे हैं, और जो लिखे हैं, वे करीब-करीब आजमूदा हैं, पर जब किसी से लाभ न हो, तब "कुटजपुटपाक" जरूर तैयार करो। सब प्रकारके अतिसारों के नाश करने में "कौरैया पुटपाक" सब का राजा है। पुटपाक-विधि से रस निकाल कर और शहद मिलाकर पीने से अवश्य लाभ होता है। पुटपाक-विधि हमने इसी अध्याय में कई जगह लिखी है। पानी जितना ही जियादा औटाकर दोगे, उतना ही लाभ होगा।

यूनानी नुसखे।



(८४) मुनका बीजों समेत ७ दाने, आम की गुठली की मींगी १ दाना और अफीम ४ रत्ती—इन सब को कूट पीस कर, जल के साथ, सात गोलियाँ बना लो। हर रोज़ एक गोली खाने से दस्त बन्द हो जाते है।

* * * *

(८५) भुनी हुई सोंठ, मांई, पठानी लोध, सफ़ेद राल, धाय के फूल, इन्द्रजौ, मीठी बेलगिरी, मोचरस, आम की गुठली की मींगी, भुना खुरमा और काली मिर्च—इन ग्यारह दवाओं को कूट पीस, जल के साथ, जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे, दोपहर और शाम को, एक-एक गोली जल के साथ खानेसे अतिसार नष्ट हो जाते है।

* * * * * *

(८६) भुनी हुई भाँग, बेर की पत्तियाँ और नरकचूर—बराबर-बराबर लेकर, चने-समान गोलियाँ बना, सवेरे शाम एक-एक गोली खा जाने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

(८७) गेरू, नागरमोथा, लोध, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, और धाय के फूल—इन सातों को कूट पीस और छान लो। इस चूर्ण की मात्रा ३ से ६ माशे तक है। सवेरे, दोपहर और शाम को एक-एक मात्रा फाँक कर, ज़रासा जल पीने से सब तरह के अतिसार नष्ट हो जाते हैं।

* * * *

(८८) भुनी हुई सोंठ, भुनी हुई सौंफ और बड़ी इलायची का छिलका—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस कर चूर्ण कर लो। यह चूर्ण क़ाबिज़—ग्राही और पाचक है। सवेरे-शाम हथेली-हथेली भर चूर्ण फाँक, ऊपर से ज़रा सा जल पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(८९) मस्तगी, कालीमिर्च, बंसलोचन, अनारदाना, आम की गुठली की गिरी, मुलहटी, माईं, धायके फूल और माजू—इन ९ दवा-ओंको बराबर-बराबर लाकर, कूट पीस और छान कर, खरलमें डाल, पोस्त के डोडों के जल के साथ घोटो। घुट जाने पर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक एक टाम भर गोली साँठी चाँवलों के जल के साथ खाओ। पथ्यमें मूँग और भात खाओ। इससे अतिसार और खूनी बवासीर आराम हो जाते हैं।

* * * *

(९०) जिस तरह बालकों के दस्तों को "अतीस" आराम करता है, उसी तरह बड़ों के दस्तों को भी नाश करता है। जवान को ६ माशे से १ तोला तक "अतीस" जल में पीस कर देना चाहिये। अगर इस में मात्रा के माफ़िक़ "गुलनार" भी मिला दिया जाय, तो औरभी लाभ हो।

* * * *

(९१) रूमी मस्तगी, अनार की कली, बच, प...

को गुठली की गिरी, लोध, मुलहटी, धाय के फूल, मोचरस, कुडे की छाल, जायफल, बबूल की कली और माईं—ये सब एक-एक तोला लो। सफेद कत्था २६ तोला और कुम्हड़ेके बीजों की गिरी ५२ तोला लो—इन सब को कूट पीस कर छान लो। पीछे पोस्त के डोडोंका काढ़ा तैयार कर लो। ऊपर के पिसे-छने चूर्ण को खरल में डाल ऊपर से पोस्त के डोडों का जल डाल-डाल कर घोटो। खूब घुट जाने पर, चार चार माशे की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, सवेरे-शाम चाँवलों के धोवन के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं। ये गोलियाँ अनेक बार की परीक्षित हैं। पथ्य दही भात है।

* * * * * *

(८२) करेले के पत्तों का स्वरस ३ माशे, अनार के पत्तों का स्वरस ३ माशे और बकरी का दूध १ तोला—इन तीनों को एक मिट्टी या पत्थरके बर्तनमें मिला लो। इस रसमें रूई का फाहा भिगो-भिगोकर नाभि पर रखनेसे सब तरहके अतिसार आराम हो जाते हैं।

नोट—ईश्वर की महिमाका पार नहीं, उसने एक से एक बढ़ कर जड़ी बूटी पैदा की है। हुरहुज के बीजों का तेल नाभि पर लगाने से दस्त लग जाते हैं और वह तेल त्रिकस्थान चूतड़ों के ऊपर की तीन हड्डियों के जोड़ पर लगा देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * * * *

(८३) मोचरस, माँईं, राल सफेद, बेलगिरी, आम की गुठली की मींगी, धाय के फूल, पोस्त का डोडा और सफेद जीरा—ये सब बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस कर कपड़े में छान लो। इस में से चार माशे चूर्ण, हर दिन, काला नमक और काली मिर्च मिले गाय के माठे के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम होते हैं। परीक्षित है।

(८४) सूखे आमले, वंसलोचन, छोटी इलायची और धनिया—ये सब समान भाग लो। इन को कूट-पीस-छान कर, सब के वज़न की बराबर मिश्री मिला लो। इस में से ६ माशे सवेरे और ६ माशे शाम को सेवन करने से अतिसार और रक्तातिसार आराम हो जाते हैं।

* * * *

(८५) एक जायफल लेकर, उस में चाकू से छेद करो। उस छेद में चार रत्ती अफीम भर दो। पीछे एक कागज़ी नीबू के दो टुकड़े करके, एक टुकड़े में उस अफीम-भरे जायफल को रख दो। ऊपर से दूसरा नीबू का टुकड़ा रख कर, उस पर कपड़-मिट्टी कर दो। पीछे आरने या जङ्गली कण्डों की आग में उसे पकने को रख दो। जब पक कर लाल हो जाय, आग से निकाल कर, मिट्टी और नीबूको अलग करके, जायफलको खरल में डाल कर घोटो और १० या १२ गोलियाँ बना लो। चार-चार घण्टे पर, एक-एक या दो-दो गोली खाने से अतिसार आराम हो जाते हैं। दस्त बन्द होते ही दवा बन्द कर दो। बालक को यह दवा न देना।

* * * *

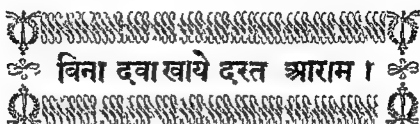
(८६) शुद्ध सिंगरफ, सुहागे की खील, जायफल, छुहारा और अफीम—ये सब समान भाग ले, इन में ज़रा सा कपूर डाल, सबको खरल में रख, पानके रसके साथ घोटो और रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना लो और धूप में सुखा कर शीशी में रख दो। एक-एक गोली चार चार घण्टे बाद, जलके साथ, खाने से अतिसार आराम हो जाता है।

* * * *

(८७) अफीम साढ़े तीन माशे, अकरकरा सात माशे, भाऊ के फल चौदह माशे, मामक चौदह माशे और सुम्बुलास १४ माशे—सब

को खरल में डाल, बबूल की गोंद के रस में घोटो और एक-एक माशे गोली बना सेवन करो, तो एक घण्टे में दस्त बन्द हो जायँगे।

नोट—ग्रन्थ में दो माशे की गोली लिखी है, पर हमारी समझ में एक मा काफी है।



विना दवा खाये दस्त आराम।

(९८) छटांक भर या आधी छटांक आँवले लाकर खूब मही पीसो, पीछे उस पीसे आमलों के चूर्णको घी में पीस कर चटनी बना लो। दस्तवाले रोगीको चित्त या सीधा सुलाकर, उसकी नाभि चारों ओर, उस घी में पिसे आमलोंका थामडा या दीवार बना दो। दीवार ज़रा ऊँची रहे तो अच्छा। दीवारके बी के गड्ढे में अदरख का स्वरस भर दो और उसे कम-से-कम घण्टे तक ऐसे ही रहने दो। रोगी लेटा रहे। इस उपाय से सम न्दर के समान बहते हुए दस्त भी आराम हो जायँगे। यह नुसर "मुजर्बात अकबरी" का है और हमारा कई बार का आजमाय हुआ है। यह दस्त बन्द करने वाली सभी दवाओं का बाद शाह है।

नोट—आमलोंको, घी न होने पर, जलमें भी पीस लेते हैं।

*   *   *   *

(९९) आम की छाल दही के तोड में पीस कर नाभि के चार ओर लगाने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं।

*   *   *   *

(१००) बडका दूध नाभि में भर देने और चारों ओर लग देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

*   *   *   *

के चारों ओर लगा दो। साथ ही जरा सी अफीम अदरख़ के रस में घोट कर, दो तीन बूँद, नाक में टपका दो। परमात्मा को दया से फौरन दस्त बन्द हो जायेंगे।

(१०२) कलौंजी के बीज ४ माशे, खतमी ४ माशे, सोंठ ४ माशे, गाव-ज़बाँ ४ माशे और मरोड़फली ४ माशे—इन सब को एकत्र कूट कर १ छटांक पानीमें पकाओ। जब आधा पानी बाकी रह जाय, तब उसमें एक तोला मिश्री डाल कर, प्रातःकाल और सन्ध्याके समय पिलाओ। इस से फौरन दस्त बन्द हो जाते हैं।

गर्भवतीके दस्तोंके लिये नुसखे।

(१०३) केवल बकरी के दूध का सेवन करने से गर्भिणी का अतिसार दूर होता है।

* * * *

(१०४) ४ माशे ईसबगोल को, २ तोला जलमें भिगो कर, थोड़ी मिश्री डाल कर, भोजन के मध्य में, खाने से गर्भिणी का अतिसार दूर होता है।

* * * *

(१०५) आम की पुरानी गुठली की मींगी, बेलगिरी, लोध और धनिया—यह चारों औषधियां समान भाग लेकर, सबका एकत्र चूर्ण बनाकर और चूर्ण की बराबर मिश्री मिला कर, उस में से ३-३ माशेकी मात्रासे, दही में मिला कर, सेवन करने से गर्भावस्था का अतिसार दूर होता है।

* * * *

(१०६) सूखे आमले, मस्तगी, धनियाँ और छोटी इलायची,—

सबको समान भाग लेकर, एकत्र पीस कर, ३-२ माशे की मात्रा, बेल के शर्बत के साथ खाने से विशेष लाभ होता है।

* * * *

(१०७) भुनी भाँग ४ रत्ती, बड़ी इलायची ६ रत्ती, जीरा १ माशे काला जीरा १ माशे, अनार दाना १ माशे, सोंठ १ माशे और धनिया ३ माशे,—इन सबको एकत्र पीस कर, इस में से दो-दो माशे गाय के मीठे मट्ठे के साथ खाने से सब प्रकार के दस्त बन्द होते और अग्नि दीपन होती है।

बाल अतिसार नाशक नुशख़े।

(१०८) कौरैयाकी जड़ और मुगलाई अरण्ड (रतनजोत) की जड़, छाछ के पानी में घिस कर, थोड़ी हींग मिलाकर, देनेसे बालक का भयङ्कर अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर बदहजमी के दस्त हों, तो खाली कौरैया की जड़ छाछ के पानी में घिसकर थोड़ी हींग मिलाकर देने से लाभ होता है।

* * * *

(१०९) अगर छोटे बालकको मरोड़ीके दस्तोंकी आशङ्का हो, तो जन्म घूँटीमें मरोड़फली घिसकर दो। अगर मरोड़ी चलती हो, तो माठे में मरोड़फली की जड़ घिस कर दो। परीक्षित है।

* * * *

(११०) काकड़ासिङ्गीका एक या डेढ़ माशे चूर्ण "शहद" के साथ देने से अतिसार आराम हो जाता है।

* * * *

(१११) बाग में पैदा हुई कपास के ताज़ा फूलों को गरम राख में भून कर, रस निकालो और बालक को पिलाओ। इस से बालक का अतिसार नाश हो जाता है।

नोट—बहुत छोटा बच्चा हो, तो माता कपासके फूलोंको मुँह में चबाकर उनका रस बालक के मुख मे डाल सकती है।

नोट—लघुब्राह्मी के पत्तोंका रस, इसी तरह निकाल कर, बालकों को पिलाने से भी बालकों का अतिसार नाश हो जाता है। लघुब्राह्मी का वृक्ष सदा गन्दी ज़मीन में रहता है और बागों में भी होता है। इसका बड़ा विस्तार फैलता है पत्ते दो दो अङ्गुल चौड़े और चूहे के कान-जैसे होते हैं। इसके ताज़ा पत्ते रोज़ सबेरे खिलाने से बालकों की जीभ का मोटापन और कड़ापन नाश होकर तुतलाना मिट जाता है।

* * * *

(११२) बालक को बारम्बार पतले दस्त होते हों, तो असल केशर के एक या दो चाँवल घी में मिला कर चटाओ। इस उपाय से दस्त बन्द हो जायँगे। परीक्षित है।

* * * *

(११३) केशर, अफीम और हींग—इन तीनों को समान-समान लेकर, पानीमें पीस कर, बाजरे-जितनी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे और शाम को माँ के दूध मे या शहद में घिसकर चटाने से बालक का बहुत पुराना अतिसार नाश हो जाता है। परीक्षित है।

* * * *

(११४) खसखस के दानोंको जलमें पीस, हलवा बना, खिलानेसे बालकों के आँव मरोड़ी के दस्तो में बहुत लाभ होता है।

* * * *

(११५) खसखस के दानों को गाय के दूधमें पीस, उसमें थोड़ा सा दूध और मिश्री मिलाकर पकाना चाहिये। जब गाढ़ी-गाढ़ी सी खीर हो जाय, तब उसे चूल्हे से उतार, शीतलकर, बालकोंको चटानी चाहिये। इससे दस्तों की बीमारी आराम हो जाती है और ताक़त आती है।

नोट—कम-उम्र बालकोंको थोड़ी खीर देनी चाहिये। चार या ६ महीनेसे नीचेके बालक को तो देनी ही न चाहिये।

(११६) सोंफ को जल में भिगो दो। ४ पहर बाद पानीको छान लो। उसमें जल से चौगुनी चीनी मिला, कलईदार बर्तन में शर्बत पका लो। इसके ज़रा-ज़रा चटाने से बालकों के दस्त, पेटका दर्द, मन्दाग्नि और पेशाब का लाल होना आराम हो जाता है।

* * * *

(११७) अनार की कली १ माशे, बबूलकी हरी पत्ती १ माशे, घी में भुनी सोंफ १ माशे, खसखस या पोस्त के दानों की राख २ माशे,—इन सब को एक में मिला, पीस कूट लो। दो-दो या तीन-तीन रत्ती यही दवा, माँके दूध में, देने से बालक के दस्त आराम हो जाते हैं। यह दवा सवेरे, दोपहर और शामको देनी चाहिये।

* * * *

(११८) बेलगिरी १ माशे और सफेद कत्था १ माशे,—दोनों को महीन पीस कर रख लो। चार-चार रत्ती माँ के दूध के साथ देने से बालक के दाँत निकलने के समय के दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(११९) अतीस चार-चार रत्ती माँके दूध में घिस कर दिन में दो या तीन बार देने से बालक के दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(१२०) बड़का दूध ६ माशे नाभि में भर देने से भी बालकके दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(१२१) आमकी छाल १ तोला लाकर, दही या सिरकेमें चन्दन की तरह घिस कर, सूँडी के चारों ओर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से बालक के दस्त बन्द होजाते हैं।

* * * *

(१२२) बेलगिरी को सोंफके अर्कमें घिस कर, बालक को चटाने से बालक के लाल हरे दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१२२) बेलगिरी, सोंठ, जायफल, नागकेशर और बड़ी इलायची—सब को बराबर-बराबर लाकर, पीस कूट कर छान लो। इस चूर्ण को खरल में डाल, ऊपर से खसखस का काढ़ा डाल-डालकर घोटो। पीछे चने-समान गोलियाँ बना लो। बालक की उम्र के मुताबिक, १ या आधी गोली, माँ के दूध में, घिस कर पिलाने से हरे और लाल दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

* * * * * *

(१२३) बेल की जड़ के काढ़ेमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे बालक का आम गिरना बन्द हो जाता है।

* * * * * *

(१२४) अलसी के भुने बीज किसी तरह भी खाने से खांसी और दस्त बन्द हो जाते हैं।



विशेष चिकित्सा

नोट—सामान्य चिकित्सा में अतिसार की एक ही दवा सब तरह के अतिसारों को आराम करती है। उस में वातातिसार है या पित्तातिसार है या रक्तातिसार है, इस तरहकी परीक्षा करनेकी आवश्यकता नहीं; पर विशेष चिकित्सामें अतिसारकी किस्म जाननी पड़ती है अर्थात् यह वातातिसार है या रक्तातिसार है इत्यादि। फिर वातातिसार का नुसखा पित्तातिसार रोगी को नहीं दे सकते। ऐसा करने से रोग के बढ़ने और रोगी की जान खतरे में पड़ने का भय है। हाँ, इस चिकित्सा से रोग आराम जल्दी होता है, पर रोग की किस्म, दोषों के अंशांशोंका जानना और फिर वैसी ही दवा तजवीज करना आवश्यक है। यह काम अच्छे अनुभवी और विद्वान् वैद्य ही कर सकते हैं।

नीचे हम वातातिसार प्रभृति प्रत्येक प्रकारके अतिसारों पर नुसखे लिखेंगे। रोग-परीक्षा में भूल न होने से हमारे लिखे नुसखे रामबाण या तीरे हदफ का काम करेंगे, पर रोगपरीक्षा ठीक होनी चाहिये। भूलसे अगर पित्तातिसार कफातिसार समझ लिया जायगा और रोगी को गरम दवा दे दी जायगी, तो "रक्तातिसार" हो जायगा—दस्तों में खून आने लगेगा, वजह यह है कि, कफातिसार में गरम दवा दी जानी चाहिये और पित्तातिसार में शीतल। जब कि उल्टी चिकित्सा होगी, तो फल भी उल्टा ही होगा। अतः हर तरह से अतिसार का भेद समझ और निश्चय करके दवा तजवीज करना अच्छा होगा। अगर ऐसा किया जायगा, तो इधर दवा दी जायगी और उधर लाभ होगा। क्योंकि हम इस पुस्तक में जो नुसखे या योग लिखने जा रहे हैं, उनमें से ९० फी सदी मुजर्रब या परीक्षित हैं, बिना आजमाये नुसखे बहुत ही कम हैं। जो अनेक बार आजमाये हैं, उन के सामने "परीक्षित है" ये दो शब्द लिखे हैं। जिन के सामने ये दो शब्द नहीं लिखे हैं, वे भी हमारे या और वैद्यों के एकाध बार के परीक्षित हैं।

वातातिसार नाशक नुसखे।

(१२५) बच, अतीस, नागरमोथा और इन्द्रजौ—इन का काढा वातातिसार नाशक है।

(१२६) इन्द्रजौ, नागरमोथा, लोध, बेलफल, आमकी गुठली और धायके फूल—इन सब का चूर्ण, सवेरेके समय, भैंस की छाछके साथ पीने से प्रबल वातातिसार आराम हो जाता है। इसको "कलिङ्गादि क्वाथ" कहते हैं। परीक्षित है।

(१२७) दुर्गन्ध करञ्ज, पीपल, सोंठ, खिरेंटी, धनिया और हरड़—इनका काढा, संध्या समय, पीने से वातातिसार अवश्य ही नाश हो जाता है।

(१२८) हालिमका चूर्ण शक्कर के साथ खानेसे बादी के दस्त आराम हो जाते हैं।

—:—

पित्तातिसार नाशक नुसखे।

(१२९) बेलगिरी, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सुगन्धवाला और अतीस—इनके काढे से आमयुक्त पित्तातिसार नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१३०) रसौत, अतीस, कुड़ेके बीज और छाल, धायके फूल और सोंठ—इन को कूट पीस कर चूर्ण बना लो। समय पर, शहतमें मिलाकर चांवलों के जल के साथ सेवन करो। इस चूर्णसे भयङ्कर पित्तातिसार नष्ट हो जाता है। यह चूर्ण अग्नि को दीप्त करता और शूल को फौरन नाश करता है। परीक्षित है।

(१३१) लजवन्ती, धायके फूल, बेलगिरी, कालानोन, विडनोन

और अनार का छिलका—इन को एकत्र पीसकर, चाँवलों के जलके साथ, शहद मिला कर, पीने से पित्त का अतिसार और पित्त का उदर रोग नाश होता है। परीक्षित है।

(१३१ क) दारुहल्दी, धमासा, बेलगिरी, सुगन्धवाला और लाल-चन्दन,—इन का काढा भी पित्तातिसार को नाश करता है।

नोट—पित्तातिसार-रोगी की गुदा में जलन प्रभृति अनेक उपद्रव हो जाते हैं, उन के उपाय और सभी ग्रन्थकारोंने पित्तातिसार के नीचे ही लिखे हैं, पर हमने गुदा की जलन, वेदना, काँच निकलना प्रभृति को आराम करनेवाले नुसखे इसी अध्याय में लिखे हैं। हां, रक्तातिसार नाशक नुसखे जरा आगे चलकर ही पृष्ठ ७२—८०में दीपन लिखे हैं।

—*—

कफातिसार की चिकित्सा।

नोट—कफातिसार में पहले लङ्घन कराने, फिर पाचन तथा आमातिसार नाशक औषधि देनी चाहिये।

(१३२) चव्य, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, कुडेकी छाल, इन्द्रजौ और हरड—इनका काढा कफातिसारको नाश करता है।

(१३३) भुनी हींग, कालानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड, अतीस और बच—इनका चूर्ण, गरम जलके साथ, खानेसे कफातिसार नष्ट होता है।

(१३४) चव्य, अतीस, कूट, कच्चे बेल का गूदा, सोंठ, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ और हरड़—इनका काढा वमन और कफातिसार नाशक है।

(१३५) हरड, चीता, कुटकी, पाठ, बच, पीपलामूल, कुडेकी छाल और सोंठ,—इनका काढा आमातिसार नाशक है।

(१३६) हरड़, नागरमोथा, सोंठ, बेलगिरी और काकडासिङ्गी—

इन के काढ़ेसे कफातिसार आराम होकर बल और वर्णकी वृद्धि होती है।

(१३७) चीता, पीपलामूल, पीपल और गजपीपल—इनके काढ़ेसे भी कफातिसार नाश होता है।

(१३८) कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, लौंग और अकरकरा—ये सब बराबर-बराबर चार-चार माशे और अफीम ८ माशे लो, पीछे इनको पीस कूट कर, अदरखके रसमें खरल करके, चने-समान गोलियाँ बना लो। दिन में दो या तीन बार एक-एक गोली खानी चाहिये। इन गोलियों से कफातिसार नाश होता है।

(१३९) सौंफ को घी में इतनी भूनो कि लाल हो जाय, पीछे उसे कूट पीसकर छान लो और बराबर की चीनी मिला लो। इसमें से सात माशे शीतल जल के साथ खाओ। इस से कफातिसार आराम होता, कोठा बलवान होता और गुदा की हवा निकल जाती है।

—*—

वातपित्तातिसार नाशक नुसखे।

(१४०) कायफल, मुलेठी, लोध और अनार का छिलका—इनका कल्क बनाकर, चाँवलों के जलके साथ, सेवन करनेसे वातपित्तातिसार नाश होता है।

(१४१) इन्द्रजौ, बच, नागरमोथा, देवदारु और अतीस—इन का कल्क, चाँवलों के जलके साथ, सेवन करनेसे वातपित्तातिसार आराम हो जाता है।

नोट—मल में झाग हों, खून जियादा आवे, अत्यन्त वेदना हो और अनेक रङ्ग के दस्त आवें—तो समझो कि, वातपित्तातिसार है।

और अनार का छिलका—इन को एकत्र पीसकर, चाँवलों के जलके साथ, शहद मिला कर, पीने से पित्त का अतिसार और पित्त का उदर रोग नाश होता है। परीक्षित है।

(१२१ क) दारुहल्दी, धमासा, बेलगिरी, सुगन्धवाला और लालचन्दन,—इन का काढा भी पित्तातिसार को नाश करता है।

नोट—पित्तातिसार-रोगी की गुदा में जलन प्रभृति अनेक उपद्रव हो जाते हैं, उन के उपाय और सभी ग्रन्थकारोने पित्तातिसार के नीचे ही लिखे हैं, पर हमने गुदा की जलन, वेदना, काँच निकलना प्रभृति को आराम करनेवाले नुसखे इसी अध्याय में लिखे हैं। हाँ, रक्तातिसार नाशक नुसखे जरा आगे चलकर ही पृष्ठ ७२—८०में दीपन लिखे हैं।



कफातिसार की चिकित्सा।

नोट—कफातिसार में पहले लङ्घन कराने, फिर पाचन तथा आमातिसार नाशक औषधि देनी चाहिये।

(१२२) चव्य, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, कुड़ेकी छाल, इन्द्रजौ और हरड—इनका काढा कफातिसारको नाश करता है।

(१२३) भुनी हींग, कालानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड, अतीस और बच—इनका चूर्ण, गरम जलके साथ, खानेसे कफातिसार नष्ट होता है।

(१२४) चव्य, अतीस, कूट, कच्चे बेल का गूदा, सोंठ, कुडे की छाल, इन्द्रजौ और हरड—इनका काढा वमन और कफातिसार नाशक है।

(१२५) हरड, चीता, कुटकी, पाठ, बच, पीपलामूल, कुड़ेकी छाल और सोंठ,—इनका काढा आमातिसार नाशक है।

(१२६) हरड़, नागरमोथा, सोंठ, बेलगिरी और काकडासिङ्गी—

इन के काढ़ेसे कफातिसार आराम होकर बल और वर्णकी वृद्धि होती है।

(१३७) चीता, पीपलामूल, पीपल और गजपीपल—इनके काढ़ेसे भी कफातिसार नाश होता है।

(१३८) कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, लौंग और अकरकरा—ये सब बराबर-बराबर चार-चार माशे और अफीम ८ माशे लो, पीछे इनको पीस कूट कर, अदरखके रसमें खरल करके, चने-समान गोलियाँ बना लो। दिन में दो या तीन बार एक-एक गोली खानी चाहिये। इन गोलियों से कफातिसार नाश होता है।

(१३९) सौंफ को घी में इतनी भूनो कि लाल हो जाय, पीछे उसे कूट पीसकर छान लो और बराबर की चीनी मिला लो। इसमें से सात माशे शीतल जल के साथ खाओ। इस से कफातिसार आराम होता, कोठा बलवान होता और गुदा की हवा निकल जाती है।

—※—

वातपित्तातिसार नाशक नुसखे।

(१४०) कायफल, मुलेठी, लोध और अनार का छिलका—इनका कल्क बनाकर, चाँवलों के जलके साथ, सेवन करनेसे वातपित्तातिसार नाश होता है।

(१४१) इन्द्रजौ, बच, नागरमोथा, देवदारु और अतीस—इन का कल्क, चाँवलों के जलके साथ, सेवन करनेसे वातपित्तातिसार आराम हो जाता है।

नोट—मल में झाग हों, खून जियादा आवे, अत्यन्त वेदना हो और अनेक रङ्ग के दस्त आवें—तो समझो कि, वातपित्तातिसार है।

वातकफातिसार नाशक नुसखे।

(१४२) वायबिडङ्ग, बच, बेलगिरी, पाढ, धनिया और कायफल —इन का काढा वायु और कफसे उत्पन्न हुए अतिसारको नाश करता है।

(१४३) कायफल, मुलेठी, लोध और अनारका छिलका—इन सब का चूर्ण बनाकर, चाँवलों के पानी के साथ, पीनेसे वातकफातिसार नाश होता है।

(१४४) चीता, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, कुड़े की छाल, इन्द्रजी और हरड—इन का काढा वातकफातिसार को नाश करता है।

नोट—दस्त पतले हों, झाग हों, आमगन्ध हो, आवाज हो, वेदना हो, आम सहित गुड़गुड़ाहटके साथ मल उतरे, तथा तन्द्रा, मूर्च्छा, भ्रम एवं क्लम हो और सन्धि, कमर, घूटने, जाँघ, पीठ और हड्डियों में शूल हो—यही "वातकफातिसार" के लक्षण हैं।

पित्तकफातिसार नाशक नुसखे।

(१४५) नागरमोथा, अतीस, सुरनहार, बच और कुडेकी छाल —इनके काढे में "शहद" डालकर पीनेसे पित्तकफातिसार नाश होता है।

(१४६) लोध, चन्दन, मुलेठी, दारुहल्दी, पाढ, सागोन, आमला और स्योनाक की छाल—इन सबको चाँवलों के जल में पीस कर गोला बना लो। पीछे पुटपाक की विधि से पका कर और आग से निकाल कर, उसमेंसे रस निकाल लो। रसको शहद मिलाकर सेवन करनेसे कफपित्तातिसार आराम होता है।

नोट (१ —पुटपाक की विधि और मात्रा वगैर पीछे के पृष्ठ ३१में लिखी है।

नोट २)—काढे के समान पतला, मन्द वेगवाला, मन्द पीड़ा युक्त, भारी, सेमल के गोंद के समान लिबलिबा, कमल के पत्ते की समान चिकना, शङ्ख के समान सफेद, लाल-लाल बूँदों सहित मल उतरे,भूख और प्यास बहुत लगे, तो "पित्तकफातिसार" समझना चाहिये।

सन्निपात अतिसार नाशक नुसख़े

(१४७) पञ्चमूल, खिरेंटी, वेलगिरी, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, पाढ़, चिरायता, सुगन्धवाला और इन्द्रजौ —इन का काढ़ा त्रिदोषज अतिसार, ज्वर, वमन, शूलके उपद्रव सहित श्वास और दुस्तर खाँसी को नाश करता है।

नोट—सामान्य रीति से, पित्तके रोग मे लघु पंचमूल और वातकफ के रोग में बृहत्पंचमूल लेना चाहिये।

(१४८) हरड़, सोंठ, नागरमोथा और पुराना गुड—ये चारों बराबर-बराबर लेकर गोलियाँ बना लो। इन चतुः सम नामक गोलियोंसे सब तरह की अतिसार, आमातिसार, अफारा, मलबन्ध, हैजा, क्रमिरोग और अरुचि,—ये सब नाश होकर अग्नि दीप्त होती है।

(१४८) नीली कुड़े की छाल १६ तोले लाकर, चाँवलो के पानी में पीस कर, गोलासा बना लो। पीछे उस गोले पर जामुनके पत्ते लपेट कर ऊपर से डोरा बाँध दो। इसके बाद उस पर गेहूँका आटा लपेट दो। इसके बाद उस पर मिट्टी का लेप कर दो। शेष में, उस गोलेको आरने कण्डोंकी आगमें पकाओ, जब लाल हो जाय, निकाल लो। पीछे शीतल होने पर, उसमेंसे दवा निकाल, कपडेमें रस निचोड लो और उस रस को "शहत" के साथ सेवन करो। इसे "कुटजपुटपाक" कहते हैं। इससे सब तरहके अतिसार, पुराने अतिसार और रक्तातिसार नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५०) कुड़ेकी छालका काढा बनाकर, कपडेमें छानकर, शीतल कर लो। पीछे उसमें काढेका आठवां भाग "अतीसका चूर्ण" मिलाकर सेवन करो। इससे त्रिदोषातिसार नष्ट होता है।

रक्तातिसार नाशक नुसखे।

नोट—ऊपर लिखे हुए अतिसारोंके सिवा 'रक्तातिसार' एक अलग अतिसार है। इस अतिसारमें खूनके दस्त होते हैं। कभी केवल खूनके दस्त होते हैं और कभी मल के साथ खून आता है। और अतिसारोंके पुराने होने पर भी खून आया करता है। यह अतिसार पित्तज अतिसार होने अथवा उस के होने के कुछ दिन पहले पित्त कुपित करने वाले पदार्थ खाने पीने से होता है। इसमें रोगी को बड़ा कष्ट होता है।

वत्सकादि क्वाथ।

(१५१) कुडेकी छाल, अतीस, बेलगिरी, नगरमोथा और खस—इन पाँचों का काढा शूल या वेदना-सहित रक्तातिसार को नाश करता है।

नोट—कोई-कोई इस काढेमें "खस" की जगह "नेत्रबाला" डालते हैं। हमारा परीक्षित है। इससे खून आंव और मरोडी तीनो आराम होते हैं। रसिक-शिरोमणि पण्डितवर लोलिम्बराज महोदय कहते हैं —

> बाले बाललता प्रवाल ललिताका शंघ्रिहस्ताधरे।
> मल्ली माल्यलसत्कुचद्विशिखरेरत्नज्वलन्मेखले॥
> चचत्कुण्डलमण्डलेविजयतेरक्तामशूलान्वितातीसार।
> कुटजाब्द बिल्वकविष दीव्यं कषाय कृत॥

हे बाले! हे षोडशी! कोमल लता के नये-नये पत्तोंके समान सुर्ख हाथ पैरों और होठों वाली! तेरे पर्वत-जैसे कुचों पर चमेली के हार पड़े हुए है, तेरे गालोंपर प्रकाशमान कुण्डल झूल रहे हैं और रत्नों से शोभायमान मेखला पडी है। ऐ सुन्दरी! कुडे की छाल,

नागरमोथा, बेलगिरी, अतीस और नेत्रबाला—इनका काढ़ा रक्त,आम और शूल वाले अतिसार को जीतता है।

रसाञ्जनादि चूर्ण।

(१५२) रसौत, अतीस, कुड़े की छाल, धायके फूल, सोंठ और इन्द्रजौ—इन छहोंको कूट-पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको शहद मिलाकर, चाँवलोंके धोवनके साथ, सेवन करनेसे "रक्तातिसार" निश्चय ही आराम होता है। यह भी हमारा परीक्षित है।

पथ्यादि चूर्ण।

(१५३) हरड़, बच, अतीस, संचर नोन, हींग और इन्द्रजौ—इनको कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे आम, मलबन्ध और गुदाके शूल-समेत रक्तातिसार नाश होता है। परीक्षित है।

कुटजादि क्वाथ।

(१५४) इन्द्रजौ, अतीस, नागरमोथा, सुगन्ध बाला, लोध, लाल-चन्दन, धायके फूल, अनार का छिलका और पाढ़—इनका काढ़ा बना कर, शीतल होने पर, उसमें "शहद" मिलाकर पीनेसे रक्तातिसार से उत्पन्न हुए दाह और शूल तथा सब तरह के अतिसार आराम होते हैं।

गरीबी नुसखे।

(१५५) अनार के कच्चे फल का छिलका और कुड़ेकी छाल—इन दोनोंके काढ़े में, शीतल होनेपर, "शहद" डालकर पीने से तत्काल रक्तातिसार आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—दोनों दवाएँ एक-एक तोले लेकर अठगुने यानी १६ तोले जल में पकाओ। जब आठवाँ भाग यानी दो तोले जल रहजाय तब मल छान और शीतल कर, उस में डेढ़ माशे शहद मिला कर रोगी को पिला दो।

(१५६) नोनी घी को शहद और मिश्रीके साथ खाने से रक्तातिसार आराम होता है।

(१५७) सफ़ेद चन्दन घिसकर उसमें शहद और चीनी मिलाकर चाँवलों के धोवनके साथ पीने से रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्यास, दाह और प्रमेह,—ये सब नाश होते हैं। परीक्षित है।

(१५८) शतावरको जलके साथ पीसकर लुगदीसी बनाकर, दूधके साथ पीनेसे रक्तातिसार नाश होता है। इस नुसख़े पर दूध पीना बहुत ज़रूरी है।

नोट—(१) शतावर के रस में चीनी मिलाकर पीने अथवा शतावर की जड़ का रस दूध के साथ पीने से रक्तातिसार निश्चय ही आराम होता है।

नोट—(२) दो तोला शतावर को आध पाव जल में औटाओ, जब एक छटाँक जल रह जाय, तब छान कर उसमे एक छटाँक बकरीका दूध मिलाकर पीजाओ। इस तरह भी ख़ून के दस्त आराम हो जाते हैं।

(१५९) काले तिलोंको सिलपर जलके साथ पीसकर लुगदीसी बना लो। पीछे जितनी लुगदी हो, उसका पाँचवाँ भाग चीनी उसमें मिला दो। उस चीनी-मिली लुगदीको दूधके साथ उतार जाओ। इस कल्क या लुगदी से रक्तातिसार फौरन् आराम होता है।

(१६०) कच्चे बेलके गूदेमें गुड़ मिलाकर खाने से रक्तातिसार, आम शूल, मलबन्ध और कृमि रोग आराम हो जाता है। इसके सिवा ख़ूनके अनेक रोग भी आराम होते हैं। मात्रा दो तोलेकी। परीक्षित है।

(१६१) जामुन, आम और आमले के नये-नये पत्ते लाकर, सिल पर पीसकर, कपड़े में रखकर रस निकाल लो। उस रस में "शहद" मिलाकर बकरीके दूधके साथ पी जाओ।

नोट—तीनों तरह के पत्तो का स्वरस वज़न मे दो तोले होना चाहिये। अगर एक मित्र-वैद्यकी रायमें तीनोंका स्वरस ६ माशे, शहद ३ माशे और बकरीका दूध एक तोला मिलाकर पीना अच्छा होगा। परीक्षित है।

(१६२) बकरीके दूधमें बेलगिरी डालकर औटाओ। औटनेपर, दूधमें मिश्री, मोचरस और इन्द्रजौ का पिसा-छना चूर्ण डालकर पी जाओ। इस योगसे रक्तातिसार नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बकरी के दूध में बेलगिरी डालकर औटाने और पीने से भी रक्तातिसार आराम हो जाता है।

(१६३) मुलेठी, काले तिल, कमलकी केशर और कमल,—इन सबको पीस कर, इनकी लुगदीमें शहद और मिश्री मिलाकर,बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे रक्तातिसार नाश हो जाता है।

(१६४) कुरैयाकी ताज़ी छाल आठ तोले लेकर अठगुने जलमें औटाओ और आठवां भाग यानी आठ तोले पानी रहने पर उतार कर छान लो। फिर अनारके फलका छिलका आठ तोले लेकर, उसी तरह ६४ तोले जल में औटाओ और ८ तोले जल रहने पर उतार कर छान लो। पीछे दोनों काढ़ोंको एक में मिलाकर औटाओ, जब गाढ़ापन आजाय, उतार लो। इसमें से एक तोले की खूराक खाकर, ऊपर से दहीका माठा पीने से रक्तातिसार निश्चयही नाश होता है।

(१६५) कुकुर भांगरेको जलमें पीसकर गोली बना लो और उसे खा जाओ। इससे आमातिसार, शूल और रक्तातिसार सब आराम होते हैं।

(१६६) नौनी घी और नागकेशर को मिलाकर खानेसे गुदासे खून गिरना बन्द हो जाता है, चाहे खूनी अतिसार से खून गिरता हो और चाहे बवासीर से। खूनी बवासीरका खून बन्द करनेमें यह नुसखा अच्छा काम देता है।

(१६७) काली मिट्टी, मुलेठी, कुड़े की छाल और इन्द्रजौ—इनको एकत्र पीसकर और शहद मिलाकर, चाँवलोंके धोवन के साथ, सेवन करनेसे रक्तातिसार या गुदासे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१६८) जामुनकी छाल अथवा आमकी छाल—इन दोनोंमेंसे किसी एककी छालको पीसकर, दूध या शहदके साथ, पीनेसे रक्तातिसार आराम होता है।

(१६९) सन-चौलाई और कच्चे बेलको पकालो। पीछे इनमें

नौनी घी मिला कर सेवन करो। इससे शूल-युक्त संग्रहणी और रक्तातिसार आराम हो जाते हैं।

(१७०) कुड़े की छाल चार तोले लेकर ३२ तोले जल में पकाओ। काढ़ा हो जाने या चार तोले जल रह जाने पर, उसमें ४ तोले अनारका रस डाल दो और फिर पकाओ। जब पकते-पकते खूब गाढ़ा हो जाय, उतार लो। शेषमें, आठ माशे माठा मिला कर पी जाओ। इससे रक्तातिसार से मरनेवाला रोगी भी बच जाता है। रामबाण है।

(१७१) मिश्री और शहद मिलाकर पीने, नौनी घी पीने या माठा पीने से, दस्त सेपहले या पीछे, खून का गिरना बन्द हो जाता है।

(१७२) चौलाईकी जड़को सिल पर पीस कर लुगदी बना लो, पीछे चाँवलों के जलमें शहद और मिश्री मिलाकर, इस जलसे उस लुगदी को खा जाओ। इस नुसखे से भी गुदा से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१७३) आठ तोले कुड़े की ताज़ा छाल को सवा सेर जल में औटाओ, जब चौथाई या पाँच छटाँक जल रह जाय, उसमें आठ तोले बकरी का दूध डाल दो और पकाओ। जब पकते-पकते केवल दूध रह जाय, उतार लो। शीतल हो जाने पर, उसमें ८ माशे "शहद" मिलाकर पी जाओ। इसको "कुटजक्षीर" कहते हैं। इससे रक्तातिसार नष्ट हो जाता है।

(१७४) प्याज़को काट कर उसका ज़ीरा बना लो और खूब घी डालो। पीछे उसे ताजा दही के साथ खाओ। इससे आम और खून के दस्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७५) ज़ीरा, धनिया और बच—तीनों को दश दश माशे लेकर, अठ गुने या २० तोले जलमें काढ़ा बनाओ। आठवाँ भाग या अढ़ाई तोले रहने पर उतार कर मल-छान लो। इसके पीने से रक्तातिसार, आमातिसार और खाँसी ये रोग आराम होते हैं।

(१७६) नीबूके रसमें अफीम मिलाकर और उसे दूधमें डालकर पीने से रक्तातिसार और आमातिसार आराम हो जाते हैं।

(१७७) अफीम ४ माशे, जायफल २ माशे, शुद्ध धतूरे के बीज २ माशे, अभ्रक-भस्म दो माशे और भुना सुहागा २ माशे—इन सबको खरल में पीस, ऊपर से मखारिणीके पत्तो का रस डालकर घोटो और चने-बराबर गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे-शाम "शहद"के साथ सेवन करने से रक्तातिसार आमातिसार और संग्रहणी—तीनों निश्चय ही आराम होते हैं। परीक्षित है।

(१७८) गेरू, कत्था, राल, गोंद, कतीरा, छिले हुए कौंचके बीज और बेलगिरी—इन सबको कूट पीस छान कर जङ्गली बेरके समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, सवेरे शाम, जलके साथ खाने से वह रक्तातिसार जिसमें सुद्दे या गाँठे नहीं होतीं आराम हो जाता है तथा आँतोंके छिल जानेसे हुआ रक्तातिसार भी अच्छा हो जाता है।

(१७९) चनों की भूसी २ तोला, कोरी हाँडी में डाल, ऊपर से दो सेर पानी डाल भिगो दो और कोई २ पहर बाद उस जल को छान कर रख लो। इस जल को रोगी को बारम्बार पिलाने से भीतर का दाह और खून के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१८०) चाँवलो के धोवन में मिश्री मिला कर पिलाने से खून के दस्त, रक्तप्रदर और भीतरी दाह नाश हो जाता है।

नोट—अकेले देने के बजाय, यदि नं० १७९ और नं० १८० में से कोई एक किसी प्रधान औषधि के साथ बीच-बीच में दिया जाय, तो अच्छा फल होगा।

(१८१) खूब पके हुए मीठे अनारका रस आधसेर लेकर और उसमें मिश्री डालकर कलईदार कड़ाहीमें पकाओ। जब लेहीके समान चाशनी होजाय, तब उसमें—वंसलोचन, छोटी इलायची, धनिया, मस्तगी, गिलोयका सत्त, अनारदाना, बेलगिरी, पोदीना, दालचीनी, जायफल और नागकेशर,—इन सबको चार-चार माशे कूट-पीस-छानकर मिला दो और चूल्हेसे नीचे उतार कर अमृतबानमें रख दो। इसका "दाडि-

मावलेह" कहते हैं। सवेरे-शाम एक-एक तोला खानेसे रक्तातिसार प्रवाहिका और मन्दाग्नि आदि रोगोंको आराम करता है। यह अवलेह रुचि बढ़ाने वाला, जठराग्नि दीपन करने वाला और हृदय को हित है।

(१८२) बेलगिरी को पुराने गुड में मिला कर खानेसे दस्तके साथ खून जाना, आम मरोडी और हवाका रुकना—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(१८३) बेलगिरी और पाढ़—दोनोंको समान भाग लेकर, चूर्ण बना लो। पीछे चूर्ण के वज़नके बराबर मिश्री मिला दो। इसमेंसे ४ माशे चूर्ण शीतल जल के साथ सेवन करने से खूनी बवासीर और रक्तामाशय आराम होते हैं।

(१८४) बेलगिरी १ तोला, धनिया १ तोला और मिश्री २ तोला—एकत्र पीस कर, छै छै माशे, सवेरे, दोपहर और शामको, शीतल जल के साथ देने से, दस्त के साथ खून गिरना और गुदा में जलन होना,—ये सब आराम हो जाते हैं।

(१८५) बेलगिरी, नागकेशर और रसौत—सबको समान भाग लेकर पीस-छान लो। चार-चार माशे यही चूर्ण चाँवलोंके धोवनके साथ लेने से रक्तातिसार, खूनी बवासीर और स्त्रियोंके श्वेत और रक्तप्रदर आराम होजाते हैं।

सूचना—बेलका कच्चा फल ही गुणकारी होता है। पकने पर वह दोषल हो जाता है; पर वह बिल्कुल बेकाम नहीं होता। पके फल से भी कितने ही रोग जाते हैं। कच्चा बेल अधिक दीपन और पाचन होता है। इस कारण आमाशय और मन्दाग्नि आदि रोगोंमें कच्चा बेल ही अधिक उपयोगी समझा जाता है। हृदय-रोग, रक्तामाशय और पित्त के रोगों में पका बेल हितकर होता है।

(१८६) पके बेलके गूदे को सुखा कर और उस में उसके बराबर सौंफ मिला कर, दोनों को एकत्र पीस कर, दोनों के वज़न के बराबर मिश्री मिला कर, शीतल जल के साथ चार-चार माशे चूर्ण फाँकने से खूनके दस्त बन्द हो जाते हैं।

हकीमी नुसखे।

(१८७) कनौचे के बीज, खुरफे के बीज, सौंफ के बीज, कमाज के बीज, खीरेके बीज, अलसी के बीज, और बीज रोहान—इनको सात-सात माशे लो और गिले अरमनी, बंसलोचन, गोंद तथा निशास्ता—ये सब एक एक तोले लो। इन सब को कूट पीस कर छान लो। शेष में इस चूर्ण में सात माशे ईसबगोल मिला कर रख लो। इसकी मात्रा जवान को ८ माशे की है। एक मात्रा खाकर, ऊपर से शर्बत खशखास पीओ। इस से गरमी के दस्त और खून के दस्त तथा सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८८) खून की दस्त होते हों, तो रोगी को "शर्बत अजबार" दो या शर्बत खशखास दो अथवा दोनों मिला कर दो। बीच बीचमें सेब या बीहका मुरब्बा भी खिला दो। इस तरह १ हफ्तेमें आराम होगा। खाने को दही भात और मिश्री दो।

नोट—अगर बुखार न हो, खाली आँव-खून के दस्त हों, तो दही, भात और मिश्री दो। ज्वर में दही भात देना अनुचित है। अनेक बार केवल दही भात और मिश्री के खाने से आँव और खूनके दस्त मिट जाते हैं, पर भात खूब बढ़िया पुराने चाँवलों का होना जरूरी है।

(१८९) मरोडीके साथ आँव और खूनके दस्त होते हों, तो शर्बत अजबार दो। इस रोगमें यह शर्बत बहुत गुणकारी है। इससे नाभिके नीचे की पीड़ा भी आराम हो जाती है। शर्बत खशखाश या बेल का मुरब्बा भी अच्छा काम देता है।

(१९०) गाय का दूध ५ तोला, मक्खन १ तोला, मिश्री ६ माशे और शहद ३ माशे—इन सबको मिलाकर पीने से दस्तों द्वारा खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१९१) आध पाव दही में १ तोला शहद मिला कर पीने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१८२) ईसबगोल की भूसी ३ माशे और शक्कर ३ माशे—दोनों को मिला कर आध पाव शर्बत या शीतल जल के साथ सेवन करनेसे बहुत पुराने खून के दस्त भी आराम हो जाते हैं।

(१८३) आम के पत्ते, आमलेके पत्ते और बबूलके पत्तोंका दो-दो माशे स्वरस निकाल कर, उसमें ६ माशे शहद मिला कर, सेवन करने से सब तरह के दस्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८४) धनिया, सौंफ, कासनी, आमले, गुलाबके फूल, छोटी इलायची, ईसबगोल की भूसी और मिश्री,—इन सब की एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण की मात्रा जवानकी २ माशे की है। सवेरे शाम और दोपहरको एक-एक मात्रा दवा जलसे उतार जानेसे आंव और खूनके दस्त निश्चय ही आराम हो जाते हैं। साथ ही पेशाब की जलन, पेशाब का लाल होना, पेट जलना और जी घबराना प्रभृति शिकायतें भी मिट जाती हैं। परीक्षित है।

(१८५) ईसबगोल चार माशे लाकर, आध पाव दूध और आध पाव जल में पकाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, उस में थोड़ी मिश्री डाल कर खाओ। इस से खून के दस्त, प्यास और दाह आदि मिटते हैं। यह खीर अत्यन्त वीर्य वर्द्धक और स्तम्भक है। इस से खूब रुकावट और धातुपुष्टि होती है।

आमातिसार या पेचिश की चिकित्सा।

आमातिसारमें क़रीब-क़रीब वही लक्षण होते हैं, जो प्रवाहिकामें होते हैं। प्रवाहिका के वर्णनमें हम इस सम्बन्धमें बहुत कुछ लिख आये हैं और आगे भी लिखा है। वहाँ पढ़ लेना चाहिये। इस बीमारी की चिकित्सा में सञ्चित मल को निकाल देना अच्छा है। अगर रोगी कमज़ोर न हो, तो दो तोले अरण्डी का तैल गरम दूधमें

अथवा सोंठ के काढे में मिलाकर दे दो। इससे मल निकल कर पेट साफ हो जायगा और फिर साधारण धारक दवा देने से भी आराम हो जायगा।

इस रोग में प्रवाहिका की तरह मरोड़े चल-चल कर दस्त होते हैं, दस्त जाते समय काँखना होता है और वहीं बैठे रहने को मन चाहता है, नाड़ी तेज़ चलती है, ज्वर भी हो जाता है, तथा जीभ पर सफेद थर जम जाता है। आमातिसार में बड़ी आँतों में सूजन हो जाती है, अस्तर लाल हो जाता है और घाव पड़ जाते हैं; जिस से पहले खून और आँव पड़ते हैं तथा पीछे पीव आती है। अगर यह रोग २१ या ३१ दिन तक रह जाय, तो फिर पुराना कहाता है। पुराना रोग बड़ी कठिनाई से जाता है।

इस रोग का इलाज हाथ में लेकर पहले रोगी का पेट देखो, कि सूजन है या नहीं। दबानेसे जहाँ दर्द हो, वहाँ सूजन समझो और वहाँ सेक करो। ज़रूरत हो, तो राई का पलस्तर धरो। इस रोग में अरण्डी के तेल का जुलाब आरम्भ में देना बहुत ही हितकर है। अफीम इस रोग में अकसीर है; पर अरण्डीके तेलसे मल निकाल कर पीछे उसका देना उचित है। अनेक वैद्य अरण्डी के दो तोले तेलमें दो तोले "शर्बत शन्तरा" मिलाकर भी देते हैं। इससे भी सञ्चित मल निकल जाता है।

गरीबी नुसखे।

(१८६) धनिया ४ माशे, सोंठ ४ माशे, नागरमोथा ४ माशे, सुगन्ध वाला ४ माशे और बेलगिरी ४ माशे—इनको एकत्र पीसकर ३० तोले जलमें पकाओ। जब ८ तोला जल रह जाय, उतारकर छान लो। इस काढे से आम पच जाता है। परीक्षित है।

(१८७) शहद के साथ हरड़ सेवन करने से गुदा के शूल-समेत आमातिसार आराम होता है।

(१९८) अफीम, शुद्ध कुचला और सफेद मिर्च,—इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर और महीन पीस कर, खरलमें डाल, अदरखका रस दे देकर घोटो। जब घुट जाय, गोल मिर्च के समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सोंठ के चूर्ण और गुड के साथ मिला कर सेवन करनेसे आम और मरोडी के दस्त या पेचिश, ये फौरन आराम हो जाते हैं। इस नुसखेसे पेट वगैरः नहीं फूलता और पुरानेसे पुराना भयानक अतिसार चार पाँच गोलियोंसे आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१९९) पाढकी जडका काढा पीने से आँव और मरोडी के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२००) चिरचिरेकी जड जलमें घिसकर पीनेसे आँव और मरोडी के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२०१) पीपल और हरड पीसकर फाँकने और ऊपर से गरम जल पीने से पाखाना साफ होता है और आमातिसार की मरोडी मिट जाती है। परीक्षित है।

(२०२) जावित्री दो माशे पीसकर दही की मलाई या दही में मिलाकर खाने से, सात दिन में, भयानक से भयानक आमातिसार एवं और प्रकार के अतिसार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२०३) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, हींग, कुड़ेकी छाल और चीता,—इन छहोंका काढा बनाकर पीनेसे आमातिसार नष्ट हो जाता है।

नोट—इन्हीं छहों दवाओं को कूटपीस छानकर कर, चूर्ण बना लो। गरम जल, शराब अथवा धान की काँजीके साथ इस चूर्णके सेवन करने से पचकर आमातिसार नाश हो जाता है।

(२०४) धनिया दो तोले लेकर काढा बनाओ और मिश्री मिला कर पी जाओ। इससे पेचिश में अवश्य लाभ होता है।

(२०५) धनिया २ तोला और सौंफ २ तोला—दोनों को घी में भूनकर, २ तोला मिश्री मिला दो और दिनमें ३।४ बार छै छै माशे

फांको; ऊपर से ज़रा सा जल पीलो। इस नुसख़े से आमातिसार, पेचिश, भीतरी जलन और मामूली खाँसी—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२०६) सौंफ को ज़रा भूनकर और उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर, दिनमें ४।५ बार, फाँकने से आँव और मरोड़े के दस्त आराम होते हैं। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है। परीक्षित है।

(२०७) चिरचिरेके बीजोंको पानी के साथ भाँगकी तरह पीसकर लुगदी सी बनालो और उसे चाँवलों के धोवन में घोल कर पी जाओ। इससे भी पेचिश और आँव मरोड़ी नाश होती है। परीक्षित है।

(२०८) अफीम, जायफल, लौंग, केशर और कपूर—सब बराबर-बराबर लेकर जलके साथ घोट कर दो दो रत्ती की गोलियाँ बनालो। हरवार सवेरे शाम एक-एक गोली, गरम जल के साथ, लेने से आम-राचसी, आमातिसार और हैज़ा,—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२०९) पीपल और हरड़ का चूर्ण फाँक कर, ऊपर से गरम जल पीने से आमातिसार की पीड़ा मिट जाती है। परीक्षित है।

(२१० पीपल, मँजीठ, नागरमोथा और काकड़ासिंगी, चारों समान समान लेकर चूर्ण बनालो। एक या दो माशे चूर्ण "शहत" में देने से बालकों का अतिसार, ज्वर, खाँसी और वमन नाश होते हैं। परीक्षित है।

(२११) जावित्री का चूर्ण २ या २॥ माशे, दही की मलाई या गाय के दही में मिलाकर, ७ दिन, खाने से भयानक से भयानक अतिसार आराम होता है। आमातिसार और अन्य अतिसार सभी पर यह नुसखा लाभदायक है। परीक्षित है।

(२१२) सौंफ के पानी में गेहूँ का आटा भिगोकर सानो और रोटी बनाकर खाओ। इससे पेचिशमें बहुत फायदा होता है।

(२१३) खस-खस के बीज महीन पीस कर और दही में मिला कर खानेसे आँव या मरोड़ेके दस्त आराम हो जाते हैं।

(२१४) गाय के माठे में सोंठ, सेंधानोन और काली मिर्च पीस कर मिलाने और पी जाने से पेचिश या आमातिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२१५) गुड़ चार तोले और सोंठ दो तोले,—इन दोनों को पीस-कूटकर मिला लो। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक। इसके सेवनसे पेचिश या आमातिसार आराम होता है।

(२१६) आम की छाल उतार कर, उसके ऊपर की काली-काली छाल फेंक दो और भीतर की पीली-पीली छाल ले लो। इस छाल को पानी में घिस कर और ज़रा सा जल मिला कर पी जाओ। इस दवा से ३ दिन में पेचिश या आम मरोड़के दस्त आराम हो जाते हैं।

नोट—इस दवा को जल में घोलते ही पी जाना चाहिये। देर करने से जम जाती है, फिर पीने लायक नहीं रहती। बहुत क्या—एक सेकण्ड में ही खराब हो जाती है।

(२१७) फालसे की जड़, जौकुट करके, रातके समय, एक हाँडी में भिगो दो; सवेरे उसे मल छान कर, उसका लुआब निकाल लो। एक तोला "साबत ईसबगोल" फाँक कर, ऊपरसे इस फालसेकी जड़ के लुआब को पी जाओ। इससे पेचिश ५।६ दिन में फौरन आराम हो जाती है।

(२१८) साफ अफीम और साफ चूना बराबर-बराबर लेकर, मसूर या मिर्चके दाने के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली जल के साथ निगल जाने से आमातिसार या सादिक ज़हीर यानी पेचिश आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—एक बार इस नुसखे से हमने एक असाध्य रोगीको आराम किया है। कितनी ही दवाएँ देकर जब हार गये, शेष में निराश होकर यही गोली दी। इससे रोगी की आँतोंका सड़ा हुआ मल निकल गया और रोगी को चैन आगया। जिस रोगी को क्षण-भर चैन न पड़ता था, वह एक दस्त होते ही सुख से सो गया। एक दस्त में कोई दो अढ़ाई सेर मवाद निकला।

(२१९) साढे चार माशे खजूर पीस कर और दही में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२०) अनार की पत्तियाँ पीस कर और एक प्याले जल में घोलकर पीने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२१) कतीरा रात को पानी में भिगोकर और सवेरे ही चीनी मिलाकर पी जाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२२ लिसोढे की कोंपलें पीस कर और गोली सी बनाकर खा जाने से पेचिश आराम हो जाती है

(२२३) सुपारीकी राख दहीमें मिलाकर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२४) सफेद जीरा पीस कर और दही में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

नोट—सफेद जीरा भूँज कर और दही में मिला कर खाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(२२५) माजू ४ भाग, अफीम २ भाग, और अजवायन १ भाग,—इन सब को कूट छान कर चने-समान गोलियाँ बनाकर, रोज सवेरे १ गोली खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२६) पीसी हुई मुल्तानी मिट्टी—बिहीदाने और ईसबगोल के लुआब में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

पहले बिहीदाना १ तोले और ईसबगोल १ तोले लाकर, कोरी हाँडी में रात को भिगो दो। सवेरे रेशमी के कपड़े में मल छान कर लुआब निकाल लो। पीछे उसमें ६ माशे मुल्तानी मिट्टी मिला कर पी जाओ। परीक्षित है।

(२२७) सुडो और सौंफ बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीस कर, फिर दोनों के वजन के बराबर मिश्री मिलाकर, जलके साथ, सेवन करने से आमातिसार आराम होता है।

२२८) सुहागे की खील २ माशे, ...

४ रत्ती—सब को जल के साथ खरल कर, एक एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। हर दिन, सवेरे-शाम, एक-एक गोली, जल के साथ, सेवन करने से आमातिसार या बिना आम का अतिसार दोनो आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२२९) बेल के कच्चे फल को आगमें भून कर खाने से दस्त और मरोडी आराम होते हैं।

(२३०) बेलगिरी और आम की गुठलीकी मींगी—दोनों समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमें से ४ माशे चूर्ण शीतल जल या चाँवलों के माँड के साथ सेवन करने से आमातिसार और ऐंठनी आराम होती है।

नोट—बेलगिरी और अदरख—दोनो समान ले कर पीस लो। पीछे खाँड की चाशनी में मिला कर अवलेह बना लो। ऊपर से ज़रा सी छोटी इलायची पीस कर मिला दो। इस अवलेह से आमातिसार के कारण बन्द हुई भूख खुल जाती है।

(२३१) बेलकी जड और सौंफ चार-चार माशे लेकर, पाव भर जल में पकाओ। जब १ छटाँक जल बाकी रहे, तब उतार कर छान लो। फिर इसमें डेढ़ तोला मिश्री डाल कर पी जाओ। इससे आम शूल और ज्वरातिसार आराम होते हैं।

(२३२) यदि आमातिसार में मल थोडा-थोडा और दिक्कत से निकले और मरोडी हो, तो बडी हरड का बकल ४ माशे, दाख ४ माशे, सौंफ ४ माशे और गुलाबके फूल ४ माशे,—इन सबको १ पाव जलमें औटाकर, चौथाई पानी रहने पर मल-छान कर पिलाओ। इस से कोठा हल्का हो जाता है।

(२३३) छोटी हरड ४ माशे और छोटी पीपर ४ माशे, दोनों को एकत्र कर १ छटाँक जल में पीस कर, कुछ गरम कर के पीनेसे एकाध दस्त साफ आ जाता है। आमातिसार वाले को आरम्भ में यह नुसखा देने से लाभ होता है।

(२३४) धनिया, सौंठ, कच्ची बेलगिरी, खस और नागरमोथा—इन

का काढा शूल-युक्त आमातिसार को नाश करता तथा ज्वर को भी आराम करता है। यह दीपन और पाचन है। परीक्षित है।

(२३५) पीपल, पीपला मूल, गजपीपल, चीता, सौंठ, अतीस, और कालानोन,—इन सबको मिलाकर दो तोले ले लो। पीछे कूट पीस कर ज़रा सी भुनी हींग मिला दो और सेवन करो। इससे एकाधा दस्त हो कर आम और पेट का दर्द शान्त होता है।

नोट—अगर पेट में पीड़ा या अफारा हो तो उत्तम हींग, सेंधानोन, पीपलका चूर्ण, कालीमिर्चका चूर्ण और सोंठका चूर्ण—समान भाग लेकर जल डाल कर, एकत्र पीसो और पेट पर लेप कर दो। इस उपायसे पेटका अफारा और पीड़ा निश्चयही शान्त हो जाती है। जरूरत पड़नेसे इस लेपको अवश्य लगाना चाहिये। अनेक-बार देखा है कि, इस लेपसे रोते रोगी हँसने लगते हैं।

अथवा

अलसी की पतली पुलटिशमें ज़रासा कपूर डाल कर, पेट पर बाँधो। इससे शूल, अफारा और वेदना सब उपद्रव नाश हो जाते हैं।

(२३६) २० माशे मरोड़फली पानी में भिगोकर और मल कर खिलाने से पेचिश आराम होती है।

(२३७) काली जीरी ४ तोले, हरड़ ४ तोले और हालो १ तोले—इन सब को "घी" में भून कर पीस लो। उधर खाँड की चाशनी बना कर, उस पिसे मसाले को चाशनी में मिला दो और ऊपर से ६ माशे मस्तगी भी मिला कर रख दो। खूराक २ तोला। रोज़ सवेरे शाम सेवन करने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२३८) कीकरका गोंद, ईसबगोल, तुख्म रीहाँ और निशास्ता,—सबको समान भाग लेकर, पीस कूटकर रखलो। मात्रा २ से ४ तोले तक। पेचिशको मुफ़ीद है।

नोट—ईसबगोल को छोड़ कर और सब को कूटो पीसो, ईसबगोल सदा साबत ही काममें लिया जाता है, यह कूटा पीसा नहीं जाता।

(२३९) छोटी हरड़ और सोंफ—दोनोंको "घी" में भूँज कर पीस

लो और मिश्री मिला कर १ तोला रोज़ खाओ। यह नुसख़ा पेचिश के लिए मुफ़ीद है।

(२४०) बेलगिरी १ तोला, कुरैयाकी छाल २ तोला, सौंफ १ तोला छोटी हरड़ १ तोला, ईसबगोल ६ माशे और मिश्री ३ माशे—ये सब लेकर रक्खो। सबसे पहले ३ तोले हरड "घी" में भून लो। ईसबगोल को छोड कर, ऊपर की सब दवाओं को कूट पीस लो। इसके बाद घीमें भुनी हरडको पीस कर उन्हींमे मिला दो। शेष में, ईसबगोलको भी मिला दो। मात्रा ७ माशे से १ तोले तक। सवेरे-शाम खानेसे आम और खून के दस्त, मरोडी और पेचिश—ये रोग निश्चय ही आराम होते हैं।

(२४१) सोंठका चूर्ण ५ तोले लेकर, उसे "घी"मे सान कर गोला बनाओ। उस गोले पर अरण्डीके पत्ते लपेट कर डोरा बाँधो। इसके बाद उस पर दो-दो अँगुल मिट्टी चढाओ और सुखा लो। शेष में उसे जङ्गली कण्डों की आग में पकाओ। जब पक जाय, निकाल लो। मिट्टी और पत्ते अलग कर भीतर से सोंठ को निकाल कर रख लो। इस सोंठके चूर्णमेंसे ४ या ६ माशे लेकर, उसमें मिश्री मिला लो और सवेरे-शाम खाओ। इस पुटपाक से आमातिसार निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—शुण्ठी पुटपाक की विधि हम ऊपर लिख आये हैं। सिर्फ लपेटने के पत्तों में भेद है और सब एक ही बात है। आमातिसार या पेचिश वालो को यह पुटपाक रामबाण है।

प्रवाहिका की चिकित्सा।

नोट—आमातिसार, आमाशय या प्रवाहिकाको साधारण लोग पेचिश या आँवलोहू या मरोडीके दस्त कहते हैं। इन सबमें ध्यान देने योग्य अन्तर है। प्रवाहिकाके सम्बन्ध में ऊपर हिदायतें लिख आये हैं, पर ऊपर हम डाक्टरी और यूनानी मत का

दिग्दर्शन कराना भूल गये और उक्त दोनों मतों की हिदायतें चिकित्सक के लिये हैं बडी लाभदायक। डाक्टर हकीमोंने प्रवाहिका के सम्बन्धमें बहुत सी नयी और उपयोगी हिदायतें बडी खोजसे लिखी है,जो हमारे वैद्यक-शास्त्रमें नहीं है। नौसिखिये वैद्यों को उन हिदायतो को खूब समझ कर उन के अनुसार काम करना चाहिये। उन से उन्हे चिकित्सा मे अवश्य बडी सहायता मिलेगी।

प्रवाहिका पर वैद्यक, हिकमत और डाक्टरीकी हिदायतें।



इस रोग में मल के साथ थोडा-थोडा कफ निकलता है। पहले बदबूदार, चिकना और चिपकता हुआ कफ-मिला मल निकलता है, पीछे खून भी आने लगता है। इसके बाद ज्वर, प्यास, भूख न लगना, ऐंठनी चलना प्रभृति लक्षण नजर आते हैं। पाखाने जाते समय बारम्बार कांखना पडता है। इसीसे इसे "प्रवाहिका" कहते हैं।

खुलासा यो समझिये कि,पेटमें ऐंठनी होकर जो बारम्बार सादा या गुलाबी रङ्ग का आम-मिला दस्त होता है, उसी को "प्रवाहिका" कहते हैं। इस मे जब आम के साथ खून आता है, तब इसे "रक्त प्रवाहिका" कहते हैं। हिन्दी में "आम रक्त" (आमलोही के दस्त), बङ्गभाषामें "आमाशय" या "रक्तामाशय," अँगरेज़ीमें "डिसेण्ट्री" और हिकमत में "पेचिश" कहते हैं। जब रक्त या खून ज़ियादा आता है, तब रक्तातिसार कहते हैं। रक्त प्रवाहिका में गुदा के ऊपर आँतोंमें अनेक घाव हो जाते है, इसी वजहसे आमके साथ खून गिरता है। किसी-किसी रोगीको पहले कई दिन कब्ज़ रहता है। उसके बाद यह रोग उत्पन्न होता है। किसी-किसी को पहले साधारण अतिसारके समान पतले दस्त होकर, पीछे खाली आँव गिरता है। ३।४ दिन आँव मिला दस्त होने के बाद, आँव के साथ खून भी दिखाई देता है और क्षण-क्षण में आँव और लोहू दस्तमें आता है, पेटमें ऐंठनी होती है, दस्त जाते समय ज़ोर करना पडता है और यही दिल चाहता हैं कि, बैठे रहें। इसके पहले दर्जेमें पतले दस्त मरोड़ी देकर आते हैं, दूसरे

दर्जेमें आँव और खूनके दस्त आते हैं। तीसरे दर्जेमें हरे पीले और स्याह दस्त आते हैं, भूख नाश हो जाती और रोगी कमज़ोर हो जाता है।

नोट—आमातिसार छोटी आंत में और प्रवाहिका स्थूल आँत में होती है। आमातिसार में अनेक प्रकार के द्रव पदार्थ अपक्व मल के साथ निकलते हैं, किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या या खून-मिला कफ निकलता है। जाहिरा दोनों समान ही मालूम होते हैं, पर दोनों में यह विशेष अन्तर है।

कभी-कभी आमके साथ थोडा-थोडा या जियादा ज्वर आता है, नाडी जल्दी-जल्दी चलती है और जीभके ऊपर सफेद मलाई सी जम जाती है। ज्यों-ज्यों रोग पुराना होता जाता है, त्यों-त्यो आँव और खून ज़ियादा-ज़ियादा गिरता है। साथ ही ऐंठन और पीडा भी बढने लगती है। आरम्भमें बडी आँतों में सूजन होती है। इसी से उन की तह लाल हो जाती है और पीछे लम्बे-लम्बे या गोल-गोल घाव हो जाते हैं। आँव और खूनके पुराने होनेके बाद पीप गिरने लगती है।

इस का इलाज प्राय: अतिसार की तरह ही किया जाता है, लेकिन कभी-कभी इस का खास इलाज भी किया जाता है। हमने उधर आमातिसार,रक्तातिसार और पेचिश पर नुसखे लिखे हैं। फिर भी, पाठकोंके सुभीतेके लिये, खास खास नुसखे इसको आराम करने वाले फिर लिखते हैं :—प्रवाहिकाके इलाजमें भी पक्व और अपक्व का विचार, अतिसार के लक्षणो के अनुसार, करना होता है।

अगर पहले अत्यन्त कब्ज होकर रोग हुआ हो या मल-परीक्षा करने पर आँव के साथ मल की छोटी-छोटी कडी गाँठें नज़र आवें, तो पहले रोगीको साफ अरण्डी का तेल २ तोला, थोडे गरम दूध में, दो। जब जमा हुआ कठिन मल निकल जायगा, तब मामूली धारक औषधि से आराम हो जायगा।

अगर साधारण उपाय करनेसे लाभ न हो, दस्त ज़ोरसे होते रहें, ज्वर हो, नाडी तेज़ीसे चलती रहे और दर्द हो तो समझो कि, आँतों में अभी तक सूजन और घाव हैं। उस दशामें "कुटजाष्टक क्वाथ" दो।

अनार के पत्तों का या अनार के कच्चे फलका रस अथवा कुरैया की छाल का काढ़ा इस रोग में बहुत अच्छा है, पर रोगके आरम्भ में कुरैया की छाल न देनी चाहिये।

पेट का दर्द आराम करने के लिए तारपीन का तेल पेट पर मलना चाहिए।

तीन माशे मैगनेशिया एक छटाँक सौंफके अर्कमें घोल कर, चार-चार घण्टे के अन्तर पर, ३।४ बार, सेवन कराने से २।३ दस्त हो जायँगे और पीछे रोग जल्दी आराम होगा। ये उपाय आज़मूदा है।

इस रोगमें यानी आमातिसार, आमाशय, रक्तातिसार, रक्तामाशय अथवा प्रवाहिका रोग में रेंडी के तेल का जुलाब अमृत का काम करता है।

छोटी हरड़ या सोंठ २ तोला लेकर काढ़ा बना लो। काढ़ा होजाने पर, उसमें अरण्डीका तेल दो तोला मिलाकर पिलादो। इस उपाय से बहुधा यह रोग आराम हो ही जाता है, बशर्ते कि रोग के शुरूमें ही यह उपाय किया जाय। इसमें मल निकल जाता है, दस्त साफ हो जाता है और ऐंठनी बन्द हो जाती है। अगर एक दिन अरण्डी का तेल देने से मल न निकले, तो एक दिन बीच में देकर फिर अरण्डी का तेल दे सकते हो। पर ध्यान रहे, सोंठके काढ़ेमें रेंडी का साफ तेल देनेसे वायु नाश होकर दस्त साफ होता है।

आमातिसार, रक्तातिसार या प्रवाहिका अथवा पेचिशवाला स्नान न करे, हवा या सर्दी में न रहे, खाट पर आराम से पड़ा रहे। इन रोगोंके रोगियोंको दूध चाँवल या दालका पानी देना चाहिये। पुराने रोग में अगर ज्वर आदि न हो, तो भैंस का दही या माठा देना अच्छा है।

आमाशय या आमातिसार में अफीम बड़ी उपकारी चीज़ है। हिंगाष्टक चूर्ण के साथ १ गेहूँ के दाने बराबर अफीम मिला कर रात को खाकर सो जाने से बहुत लाभ होता है। लेकिन अरण्डी के

तेल द्वारा मल निकाल कर, रोगी को अफ़ीम देनी चाहिये । बिना अरण्डी का तेल दिये अफ़ीम देना हानिकारक है, क्योंकि अफ़ीम उल्टी मल को रोकती है ।

ग़रीबी नुसख़े ।

(२४२) बेलगिरी, गुड़, लोध, तेल और कालीमिर्च—इन सबको एकत्र कर के अवलेह बनाओ । इस से प्रवाहिका तत्काल नाश होती है ।

(२४३) धायके फूल, बेरके पत्ते, कैथका रस, शहद और लोध—इन सब को मिला कर दही के साथ सेवन करने से प्रवाहिका नष्ट हो जाती है ।

(२४४) तेल, घी, दही, शहद, मिस्री, सोंठका चूर्ण और राब—इन सब को एकत्र करके पीने से प्रवाहिका आराम हो जाती है ।

(२४५) पीपल या काली मिर्चों का कल्क दूध के साथ पीने से बहुत दिनो की प्रवाहिका २ दिनो में आराम हो जाती है ।

(२४६) "कुटजावलेह" के सेवन से प्रवाहिका में बड़ा उपकार होता है, इसके बनाने की विधि पहले लिख आये हैं ।

(२४७) सफ़ेद राल और मोचरस प्रत्येक चार चार रत्ती लेकर, एकत्र पीसकर, दूध के साथ, तीन-तीन घण्टे पर, देने से प्रवाहिकामें खूब जल्दी फ़ायदा होता है । परीक्षित है ।

(२४८) कुड़े के जड़ की छाल १ तोला और अनार के फल का छिलका १ तोला—दोनो का काढ़ा बना लो । शीतल हो जाने पर, उस में ६ माशे "शहद" मिला कर सेवन करनेसे आंव-खूनके दस्त या प्रवाहिका सहज में आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(२४९) कच्ची इमली के पेड़ की छाल दो माशे लेकर घोल या माठे के साथ पीस कर, दिन में २।३ बार, सेवन करने से प्रवाहिका नष्ट होती है ।

(२५०) कुरैयाकी छाल, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सुगन्धवाला, मोचरस, बेलगिरी, अतीस, और अनारका बक्कल—प्रत्येक तीन-तीन माशे लेकर आध सेर जलमें पकाओ। आध पाव पानी रहनेपर उतार लो, इस को दिन में ३ बार पीने से ज्वर-सहित या ज्वर-रहित आमरक्त और रक्तातिसार आराम होता है। परीक्षित है।

(२५१) बेल का कच्चा गूदा और मिश्री आम रक्त की उत्तम दवा है। अगर खून ज़ियादा गिरता हो, तो इसमें २ माशे नागकेशर मिला दो। परीक्षित है।

नोट—बेल का गूदा—गुड़ और दहीमें देनेसे आमातिसार निश्चय ही शान्त हो जाता है।

(२५२) मोचरस और नागकेशर प्रत्येक दो-दो माशे लेकर, ६ माशे शहद में मिला कर, देने से आमरक्त या रक्तातिसार में बहुत खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२५२क) गायके दूधमें उतनाही जल मिलाकर औटाओ, जब दूध मात्र रह जाय,मिश्री मिलाकर पीओ। इससे रक्तपित्त और प्रवाहिका रोग नाश हो जाते हैं।

(२५३) सफेद राल का चूर्ण और चीनी समान-समान लेकर मिला लो। इसमें से दो-दो माशे चूर्ण दिन में २।३ बार खाने से बहुत लाभ होता है। आमातिसार या प्रवाहिका पर परीक्षित है।

(२५४) जायफल १ तोला, जावित्री १ तोला, लौंग १ तोला, मोचरस १ तोला, बड़की कोंपल १ तोला, अफीम ६ माशे और शुद्ध सिंगरफ १ तोला—इन सब को पोस्त के छिलकों के काढ़े में घोटकर मटर-समान गोलियाँ बना लो। दिनमें तीन-चार दफे एक-एक गोली मिश्री के शर्बत या मिश्री-मिले चाँवलों के धोवनके साथ सेवन करने से पुराना अतिसार, प्रवाहिका, रक्तातिसार और संग्रहणी प्रभृति आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२५५) बेलगिरी १ तोला, आधपाव बकरी के दूध और पाव भर

जल में पकाओ। जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, उसे कपड़ेमें छान, थोडी मिश्री मिलाकर पीजाओ। इस से रक्तातिसार और प्रवाहिका आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२५६) एक तोला तुलसी के पत्तों के रस में ज़रासी मिश्री डाल कर सन्ध्या-समय सेवन करने से पुराना आमाशय और रक्तामाशय या प्रवाहिका आदि रोग आराम हो जाते हैं।

(२५७) सेमल के फूल के ऊपर के वक्कल को, रात के समय, जल में भिगोकर, सवेरे उस जलको छान कर, उसमें ज़रा सी मिश्री डाल कर, पीने से रक्तातिसार, प्रवाहिका, मलवद्धता और शूल आदि उपद्रव-युक्त आमाशय आराम होता है।

शोकातिसार और भयातिसार की चिकित्सा।

शोकातिसार और भयातिसार के लक्षण वातातिसार की तरह होते हैं। इन अतिसारोंमें रोगीका शोक दूर करना और उसे तसल्ली देनी चाहिए एवं वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिए।

अत्यन्त शोक होने से शोकातिसार पैदा होता है, उसी तरह अत्यन्त भय लगने से भयातिसार होता है। इन में चिरमिटी की तरह लाल खून-मिला मल निकलता है अथवा केवल खून गिरता है। अगर खून के साथ मल होता है, तो उस में बड़ी बदबू आती है, और खाली खून होता है तो उस में गन्ध नहीं आती। अगर रोगी का शोक या भय दूर न किया जाय, तो आराम होना अतीव कठिन है। इस की चिकित्सा वातातिसार के समान की जाती है। फिर भी यहाँ एक नुसखा लिखे देते हैं,—

(२५८) पियवन, बरियारा, बेलगिरी, नीलकमल, सोंठ, धनिया,

वायविडङ्ग, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, अम्बष्ठा और कुरैया की छाल—इन सब को बराबर-बराबर दो-दो या अढाई-अढाई माशे लेकर, एक कोरी हाँडी में, काढ़े की विधि से काढ़ा बना कर छान लो। शेष में कालीमिर्च पीस कर और मिला कर पीजाओ। इस से शोकातिसार नाश होता है।

छर्द्यतिसार की चिकित्सा।

(२५८) आमकी गुठलीकी गरी १ तोला, और बेलगिरी १ तोला—इन दोनों के काढ़े में शहद और मिश्री मिला कर पीने से भयङ्कर छर्द्यतिसार यानी वमनवाला अतिसार आराम होता है।

नोट—आध सेर जलमें काढ़ा बनाओ। जब डेढ़ छटाँक जल रह जाय, उतार कर शीतल करो, और मल-छान कर उसमें ६ माशे शहद और ३ माशे मिश्री मिला पी लो।

(२६०) भुने हुए मूँगोंके काढ़ेमें—खील, शहद और मिश्री मिला कर पीने से वमन, अतिसार, ज्वर, प्यास, दाह और भ्रम ये सब नाश होते हैं।

(२६१) फूलप्रियङ्गु, रसौत, और नागरमोथा,—इनके चूर्ण में शहद मिला कर, चाँवलों के धोवन के साथ सेवन करने से प्यास, अतिसार और वमन—ये सब नाश होते हैं।

(२६२) बेलगिरी और गिलोय प्रत्येक चार-चार माशे लेकर पाव भर जल में पकाओ। जब १ छटाँक जल बाक़ी रहे, उतार कर छान लो। इस काढ़े से वमन और अतिसार नष्ट हो जाते हैं।



विष, कीड़े या बवासीर के अतिसार की चिकित्सा।

कल्याण अवलेह।

(२६३) मिश्री, धायके फूल, लोध, पाढ, स्योनाक, पीपल, मंजीठ, मोचरस और कमल-केशर—इनको बराबर-बराबर लेकर और अवलेह बनाकर सेवन करने से विष, बवासीर और क्रमि-दोष से पैदा हुए अतिसार आराम होते हैं। इस का नाम "कल्याण अवलेह" है।

अजीर्णजन्य अतिसार की चिकित्सा।

(२६४) एक तोले जायफल को पीस कर, गुड़में मिलाकर, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। आध-आध घण्टे में एक-एक गोली खाकर, ऊपर से गरम जल पीने से अजीर्ण या बदहज़मी से हुए दस्त अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—नीबू के रस में जायफल घिसकर चाटने से दस्त साफ हो जाता है।

(२६५) चूने के पानीमें मिश्री मिलाकर पिलाने से बदहजमी या भारी चीज़ खाने से हुए दस्त आराम हो जाते हैं।

(२६६) कपूर, अजवायनका फूल और पिपरमिण्टका फूल,—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर एक साफ शीशी में रख दो। बारह घण्टोंमें ये गलकर पानी हो जायेंगे। इसीको "अमृतधारा" या "सुधा-धारा" कहते हैं। इस के ८।१० बूँद चीनी में देने से अजीर्ण के दस्त आराम हो जाते हैं। गृहस्थों के लिये यह अमृत है।

नाभि सरक जाने के कारण से हुए अतिसार की चिकित्सा।

(२६७) नकछिकनी की राख १ तोला, अजवायन १ तोला और सोंठ १ तोला—इन तीनों को पीस कूट और छानकर, इस में २ तोले पुराना गुड़ मिलाओ और जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो। एक गोली १ माशे "घी" के साथ खानेसे नाभि टलने से हुए दस्त फौरन बन्द हो जाते हैं।

(२६८) फिटकिरी १ तोला और माजूफल १ तोला—दोनों को महीन पीस, सिरके में मिला, नाभि पर लगा, ऊपर से कपड़ेकी पट्टी कस कर बाँध दो, तो नाभि टलने से हुए दस्त आराम हो जायँगे।

जमालगोटा खाने से हुए दस्तोंका इलाज

(२६९) तीन माशे कतीरा पीसकर और दही में मिलाकर खाने से जमालगोटे के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२७०) पिसी हुई सुपारी ३ माशे, दहीमें मिलाकर, खानेसे जमालगोटे के दस्त मिट जाते हैं।

शोथातिसार की चिकित्सा

(२७१) पुनर्नवा, इन्द्रजौ, पाढ़, बेलगिरी, अतीस, नागरमोथा, और कालीमिर्च—इन का काढ़ा पीने से शोथातिसार नाश होता है। यानी सूजन सहित दस्तों का रोग आराम हो जाता है।

ज्वरातिसार नाशक नुसखे।

उत्पलाष्टक क्वाथ।



(२७२) पृश्निपर्णी, खिरेंटी, बेलगिरी, धनिया, सोंठ और कमल—इनका काढ़ा बना कर और खट्टा करके पीने से ज्वर और अतिसार नष्ट होते हैं। इसे "उत्पलाष्टक क्वाथ" कहते हैं।

कणादि क्वाथ।

(२७३) पीपल गज-पीपल, और खीलों का काढ़ा बनाकर, शहद और मिश्री डाल कर पीने से ज्वर, अतिसार और प्यास,—ये सब आराम होते हैं। इसे "कणादि क्वाथ" कहते हैं।

नागरादि क्वाथ

(२७४) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, चिरायता और इन्द्रजौ—इन का काढ़ा सब तरह के ज्वरों और भयानक अतिसार को नाश करता है। इसे "नागरादि क्वाथ" कहते हैं।

गुडूच्यादि क्वाथ।

(२७५) गिलोय, अतीस, धनिया, सोंठ, बेलगिरी, नागरमोथा, सुगन्धवाला, पाढ, चिरायता, इन्द्रजौ, लाल चन्दन, खस और पित्त-पापड़ा—इन के काढ़े में, शीतल होने पर, "शहद" डाल कर पीने से ज्वर सहित अतिसार, ओकारी, प्यास, दाह, अरुचि और वमन ये सब नाश होते हैं।

व्योषाद्य चूर्ण।

(२७६) त्रिकुटा, इन्द्रजौ, नीम की छाल, चिरायता, भांगरा, चीता, कुटकी, पाढ, दारुहल्दी, अतीस और वच,—इनको बराबर-

बराबर एक-एक तोला लेकर, सबकी बराबर ११ तोला कुड़ेकी छाल लो। सबको पीस कूटकर चूर्ण कर लो। इसका नाम "व्योषाद्य चूर्ण" है। इसको चाँवलोंके पानी या शहद के साथ सेवन करने से ज्वरातिसार, कामला, संग्रहणी, गुल्म, प्लीहा, प्रमेह, पीलिया और सूजन ये सब आराम होते हैं। यह पाचन, मल रोकनेवाला, अग्नि-दीपन करने वाला, प्यास और अरुचिको नष्ट करनेवाला है।

कर्पूर रस ।

(२७७) कपूर, शुद्ध सिंगरफ, नागरमोथा, इन्द्रजौ और जायफल—इन सबको बराबर २ लेकर, अदरखके रसमें घोटकर, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके जलके साथ सेवन करने से ज्वरातिसार, संग्रहणी, अतिसार, रक्तातिसार—आराम होते हैं। परीक्षित है।

कर्पूरादि वटिका

(२७८) उधर पक्वातिसार में लिखी हुई "कर्पूरादि वटिकाओं" के सेवन करने से ज्वरातिसार, केवल अतिसार, रक्तातिसार और छहों तरह की संग्रहणी आराम हो जाती है। देखो पृष्ठ ४५ परीक्षित है।

ग़रीबी नुसखे ।

(२७९) कमल, अनार की छाल और कमल की केसर—इन का चूर्ण बना कर, चाँवलों के जल के साथ पीने से ज्वरातिसार नाश होता है।

(२८०) बेलगिरी, सुगन्धवाला, चिरायता, गिलोय, नागरमोथा और इन्द्रजौ—इन का काढ़ा पाचन है। इस से सूजन-सहित ज्वरातिसार नाश होता है।

(२८१) सोंठ, अतीस बेलगिरी, गिलोय, नागरमोथा और इन्द्र-

जौ—इनका काढा पाचन है। इस काढे से सूजन-सहित ज्वरातिसार नाश होता है।

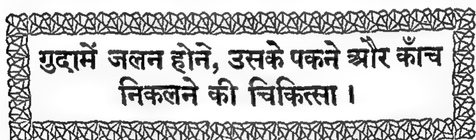
(२८२) दशमूल के काढे में एक तोले भर "सोठ का चूर्ण" डाल कर पीने से ज्वर, अतिसार और सूजनयुक्त संग्रहणी—ये सब आराम होते हैं।

(२८३) इन्द्रजौ, देवदारु, कुटकी और गज-पीपल—इन के काढे से ज्वरातिसार नाश होता है। विशेषकर दाह नाश होता है।

(२८४) गोखरु, पीपल, धनिया, बेलगिरी, पाढ और अजवायन—इन के काढे से ज्वरातिसार और दाह नाश होता है।

(२८५) लजवन्ती, धाय के फूल, नागकेशर और नीले कमल—इन को एकत्र पीस कर, चाँवलों के जल के साथ, सेवन करने से ज्वरातिसार शान्त होता है।

नोट—ज्वरातिसार नाशक नुसख़े एवं ज्वरातिसार की चिकित्सा-सम्बन्धी नियम "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ ५२५—५२६ में लिखे हैं।



गुदामें जलन होने, उसके पकने और काँच निकलने की चिकित्सा।

नोट—अगर बहुत दस्त होनेके कारण, पित्त से, गुदामें दाह या जलनहो अथवा गुदा पक जाय, तो गुदा को दवाओं के काढे से धोना अथवा उस पर दवा के काढे को सींचना अथवा कोई लेप करना चाहिये।

(२८६) पटोल-पत्र और मुलेठी का काढा बना कर और शीतल करके, उस जल से गुदा को धोना और उसी को गुदा पर सींचना चाहिये।

(२८७) गुदा में दाह हो और वह पक गई हो, तो बकरी के दूध में मिश्री और शहद मिला कर पीना चाहिये और उसी से गुदाको सींचना चाहिये।

(२८८) चूहे का मास पका कर, उसका बफारा गुदा को देना चाहिये। इस बफारे से बहुत दस्तों के कारण हुआ गुदा का दर्द आराम हो जाता है।

(२८९) गेहूँ के आटे में पानी मिला कर उसे पकाना चाहिये और घी मिलाकर उसका गोला सा बनाकर, उससे गुदा पर सुहाता-सुहाता सेक करना चाहिये। इससे भी गुदा का दर्द मिट जाता है।

(२९०) अगर दस्तोंके कारण काँच बाहर निकल आवे, तो उस पर घी या तेल प्रभृति लगाकर, उसे भीतर घुसा देना चाहिये। इसके बाद चूहे के मास को काँजीमें पका कर, उसे अरण्ड के पत्ते पर रख कर, उसीसे धीरे-धीरे गुदा को सेकना चाहिये।

(२९१) घोंघे का मास पका कर, उस में तेल और नमक डाल कर, उस से गुदा को बफारा देना चाहिये, मगर बफारा देने से पहले गुदा पर "घी" मल देना चाहिये। इस उपाय से काँच निकलना फौरन बन्द हो जाता है।

(२९२) चूहेकी चरबीका गुदा पर अच्छी तरह लेप करनेसे काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(२९३) गुदभ्रंश या काँच निकलनेके रोगमें "चांगेरी घृत" सर्वोत्तम है। इस घीके पीने से काँच निकलने का रोग निश्चय ही आराम हो जाता है।*

* बनाने की तरकीब—चौपतिया खट्टी लूनिया (चांगेरी) ला कर उस को पीस कर, कपड़े में छान कर १ सेर रस निकाल लो। चांगेरी का रस निकालते समय जल न मिलाओ। बेर वृक्षकी जड़ का काढ़ा १ सेर तैयार कर लो। खट्टा दही १ सेर लाकर रख लो। सोंठ अढाई तोले और जवाखार अढाई तोले,—दोनों को पीसकर लुगदी बना लो। पीछे १ पाव घी और ऊपरकी सब चीजें कड़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ, जब पकते-पकते घी मात्र रह जाय, उतार लो। यही "चांगेरी घृत" है। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है।

नोट—घी या तेल तैयार करने में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, उन सबको आगे के पृष्ठ—१२५ के फुट नोट में देख लीजिये।

(२८४) कमलिनी की कोंपलें लाकर सुखा लो। सूखने पर पीस-कूट कर महीन कर लो। इस चूर्ण में मिश्री मिलाकर खाने से, कुछ दिनोंमें, काँच निकलना अवश्य ही बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कमल और कमलिनी के पत्तों का चूर्ण मिश्री मिलाकर खाने और चूहे की चरबी का गुदा पर लेप करने या चूहे का मांस पका कर उससे गुदा को सेकने से अवश्य ही गुदा की सब शिकायतें मिट जाती हैं। अनेक बार परीक्षा करके देखा है।

(२८५) चूहा और दशमूल—इन को बराबर-बराबर ले कर काढ़ा बना लो और इन्हीं को बराबर-बराबर लेकर पीस कर लुगदी भी बना लो। पीछे कड़ाही में लुगदी रख कर, काले तिलोंका तेल और काढ़ा भर दो। पीछे चूल्हे पर रख कर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। तेल मात्र रह जाने पर उतार लो और शीतल होने पर छान कर बोतलमें भर लो। इस तेलके लगानेसे गुदभ्रंश—काँच निकलना और भगन्दर दोनों आराम हो जाते हैं।

(२८६) अगर किसी स्त्रीको काँच निकल आवे, तो वह "हुरहुज" के फूल लाकर रस निकाल ले। पीछे उसे हाथों में मल कर, गुदा के मुख पर वही हाथ रक्खे। ३।४ दिन ऐसा करने से अवश्य लाभ होता है—यानी गुदभ्रंश या काँच निकलना आराम हो जाता है।

नोट—हुरहुज को सूरजमुखी का फूल भी कहते हैं। यह सदा सूरजके सामने रहता है।

(२८७) पुरानी चलनी का चमड़ा जला कर, उस को राख गुदा पर बुरकने से काँच निकलना बन्द हो जाता है। अथवा लिहसोड़े को जला कर, उसकी राख गुदा पर बुरकने से भी लाभ होता है, पर दवा छिड़कनेसे पहले गुदा पर तेल लगा देना ज़रूरी है।

(२८८) अपना पेशाब एक बर्त्तन में रख ले। पीछे पाखाने से निपट कर, उसी पेशाब से गुदाको धोवे और उसके बाद पानी से धोवे। इस तरह ३।४ दिन करने से काँच निकलने का रोग, विशेष कर बालकों को काँच निकलना आराम हो जाता है।

नोट—अतिसार रोग में भी बहुत दस्त आने से,कांच निकलने का रोग हो जाता है। पर दोनो हालतों में इलाज एकसा ही किया जाता है। देखने में आया है, बालकों को अतिसार होने के बाद, ये रोग अकसर हो जाता है। स्त्री और कमज़ोर को ये रोग जियादा होता है।

(२९९) बबूल की फली और पत्ते तथा धाय के फूल—इन को औटाकर काढ़ा बना लो। इसी काढ़े से आबदस्त लेने और इसी काढ़े में, रोज़, कुछ देर बैठने से काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(३००) आम के पत्ते, जामुन के पत्ते और छाल—इन को जौ-कुट कर काढ़ा बनाओ और उस काढ़े से गुदा को धोओ। इस तरह करने से भी कांच निकलना बन्द हो जाता है।

(३०१) अगर गुदा सूज गई हो, सूजन के कारण भीतर न जाती हो, तो गुदा पर "गुलरोगन" मलो और रोगीको सुहाते-सुहाते गरम जल में बैठाओ। गुल रोगन अत्तारों के यहाँ मिलता है।

(३०२) बकरीके सुमकी राख, माजू, अनार के फूल, अनारकी छाल और भुनी हुई फिटकरी—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस और छान कर, गुदा पर बुरको। इस से काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(३०३) अण्डे की सफेदी गुदा पर, भीतर और बाहर, लगाने से गुदा की सूजन और पीड़ा शान्त होती है।

(३०४) जौ का आटा, मसूर का आटा और अण्डे की सफेदी—इनको "रोगनगुलमें" मिलाकर लेप करनेसे गुदाकी सूजन और पीड़ा वगैर में निश्चयही फायदा होता है।

(३०५) अगर दस्तवाले रोगीकी गुदामें जलन हो, काँच निकलती हो, प्यासका ज़ोर हो, पैरोंमें आग सी लगती हों, तो चनो के छिलके २ तोले, धनिया ३ माशे, सौंफ की जड़ ६ माशे और कासनीकी जड़ ६ माशे,—इन सबको एक बड़ी कोरी हाँडीमें भरकर ऊपर से ताज़ा पानी भर दो। इस ठिलिया में पहले एक छेद उसी तरह कर लेना, जिस तरह कि, शिवजीके ऊपर रक्खे जानेवाले घड़े में

करते है। फिर उस छेद में एक कपडेका टुकड़ा इस तरह लगा देना कि, उसमें से बूँद-बूँद पानी गिरता रहे। इस घडिया के नीचे दूसरी हाँडी रख देना। नीचे की हाँडी में पानी बूँद-बूँद गिरेगा। उसमें से ही रोगीको, जब-जब प्यास लगे, पानी पिलाना। इस जलसे पतले दस्त लगना, प्यास और जलन प्रभृतिमें बडा लाभ होता है। परीक्षित है।

परमावश्यक पश्नोत्तर।

प्र०—(१) अतिसार आराम हो जाने के क्या लक्षण हैं ?

उ०—

विनोत्सर्गम्भेन्मूत्र तथा वायु प्रवर्त्तते।
कोष्ठे लघुत्व दीप्तोऽग्निर्गतस्तस्योदरामय ॥

अगर पेशाब करते समय पाख़ाना न होता हो, अधो वायु—गुदाकी हवा—खुलती हो, कोठा हलका हो और अग्नि दीप्त हो, तो समझो कि अतिसार चला गया।

वृन्द महोदयने भी कहा है —

दीप्ताग्नेर्लघु कोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामय ।
ज्ञेयः कार्य्यो विरक्त ■ सत्तद्दोषकरे पदे ॥

अगर अतिसार-रोगी की अग्नि प्रबल हो जाय और कोठा हलका हो जाय, तो समझो कि, उदरविकार शान्त हो गया। लेकिन, फिर भी कुछ दिनो तक, अतिसार पैदा करने वाले और वातादि दोषोंको बढ़ाने वाले पदार्थोंसे रोगी को अलग रखो।

प्र०—(२) आमातिसार और प्रवाहिका में क्या भेद है ?

उ०—स्थूल दृष्टि से देखने पर इन दोनो में बाहर से समानता मालूम होती है, पर बारीक नजर से देखने पर, विशेष अन्तर जान पड़ता है। आमातिसार छोटी आँत में होता है; किन्तु प्रवाहिका स्थूल आँत में, कफ के सञ्चित होने से, होती है। आमातिसार में अनेक प्रकार के द्रवरूप पदार्थ अपक्व या कच्चे, मल के साथ, निकलते है, किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या ख़ून-मिला कफ निकलता है जब वायु कुपित होकर स्थूल आँत की श्लेष्म कला में सञ्चित हुए कफ को बलपूर्वक खींच कर मल के साथ, मल-मार्ग से, निकलता है, तब कहते है "प्रवाहिका" रोग है। प्रवाहिका को अँगरेजी में डिसेण्ट्री कहते है।

प्र०—(३) रक्तातिसार और रक्तार्श में क्या भेद है, खासकर दस्तों में ?

उ०—रक्तातिसार क्षुद्र अन्त्र (आँत) में उत्पन्न होता है, किन्तु रक्तार्श गुदा की वलि या आँट में। रक्तातिसार में प्राय मल के साथ ख़ून गिरता है, किन्तु रक्तार्श में मलके साथ मिल कर बहुत कम गिरता है। रक्तार्श या ख़ूनी बवासीर में मल के पहले या पीछे ही ख़ून गिरा करता है। दोनो रोगोंके ख़ूनमें अधिक अन्तर नहीं पाया जाता, पर रक्तार्श में ख़ून कुछ अधिक लाल और चमकदार होता है।



संग्रहणी-वर्णन।

ग्रहणी की सम्प्राप्ति।

अतिसारे निवृतेऽपि मन्दाग्नेरहिताशन।
भूयः सन्दूषितो वह्निर्ग्रहणीमभिदूषयेत॥

अतिसार* के आराम हो जाने पर भी,+ मन्दाग्नि वाले के अपथ्य सेवन करने से, जठराग्नि दूषित होकर, ग्रहणी‡ को दूषित करती है।

खुलासा यह है, कि अतिसार रोग के आराम हो जाने पर भी, अगर मन्दाग्नि वाला मनुष्य कुपथ्य सेवन करता है, बदपरहेज़ी करता है, तो जठराग्नि खराब हो जाती है। वही बिगड़ी हुई जठ-

* अतिसार और संग्रहणी में यही भेद है कि, अतिसार में पतली धातुएँ निकलती हैं और संग्रहणी में बँधा हुआ मल निकलता है। यह भी याद रखना चाहिये कि, संग्रहणी, अतिसार और बवासीर—इन तीनों रोगों के हेतु—कारण समान हैं।

+ बिना अतिसार हुए भी संग्रहणी रोग हो जाता है। कोई-कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि, अतिसार रोग आराम नहीं होता कि, बीच में ही संग्रहणी रोग हो जाता है।

‡ अन्नको ग्रहण करनेके कारणसे ग्रहणी कहते हैं। ग्रहणी एक आँत है। ग्रहणी के खराब हो जानेसे अन्न अच्छी तरह नहीं पचता—बारम्बार आम मिला हुआ मल गुदासे निकलता है।

करते है । फिर उस छेद में एक कापडेका टुकडा इस तरह लगा देन कि, उसमें से बूँद-बूँद पानी गिरता रहे । इस घडिया के नीचे दूसरं हाँडी रख देना। नीचे की हाँडी में पानी बूँद-बूँद गिरेगा। उसमें र ही रोगीको, जब-जब प्यास लगे, पानी पिलाना। इस जलसे पतले दस्त लगना, प्यास और जलन प्रभृतिमें बडा लाभ होता है। परीक्षित है।

परमावश्यक पश्नोत्तर।

प्र०—(१) अतिसार आराम हो जाने के क्या लक्षण हैं ?

उ०— विनोत्सर्गम्भवेन्मूत्र तथा वायु प्रवर्त्तते।
कोष्ठे लघुत्व दीप्तोग्निर्गतस्तस्योदरामय ॥

अगर पेशाब करते समय पाखाना न होता हो, अधो वायु—गुदाकी हवा—खुलती हो, कोठा हलका हो और अग्नि दीप्त हो, तो समझो कि अतिसार चला गया।

वृन्द महोदयने भी कहा है —

दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामय ।
ज्ञेय काप्यों विरक्त स तत्तद्दोपकरं पदे ॥

अगर अतिसार-रोगी की अग्नि प्रबल हो जाय और कोठा हलका हो जाय ; तो समझो कि, उदरविकार शान्त हो गया। लेकिन, फिर भी कुछ दिनों तक, अतिसार पैदा करने वाले और वातादि दोषोंको बढ़ाने वाले पदार्थोंसे रोगी को अलग रखो।

प्र०—(२) आमातिसार और प्रवाहिका में क्या भेद है ?

उ०—स्थूल दृष्टि से देखने पर इन दोनों में बाहर से समानता मालूम होती है ; पर बारीक नज़र से देखने पर, विशेष अन्तर जान पडता है। आमातिसार छोटी आंत में होता है, किन्तु प्रवाहिका स्थूल आंत में, कफ के सञ्चित होने से, होती है। आमातिसार में अनेक प्रकार के द्रवरूप पदार्थ अपक्व व कच्चे, मल के साथ, निकलते हैं, किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या खून-मिला कफ निकलता है जब वायु कुपित होकर स्थूल आंत की श्लेष्म कला में सञ्चित हुए कफ को बलपूर्वक खींच कर मल के साथ, मल-मार्ग से, निकलता है, तब कहते हैं "प्रवाहिका" रोग है। प्रवाहिका को अँगरेजी में डिसेण्ट्री कहते हैं।

प्र०—(३) रक्तातिसार और रक्तार्श मे क्या भेद है, खासकर दस्तों में ?

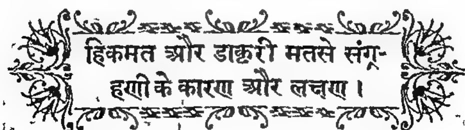
उ०—रक्तातिसार क्षुद्र अन्त्र (आंत) में उत्पन्न होता है, किन्तु रक्तार्श गुदा की बलि या आँट में। रक्तातिसार में प्राय मल के साथ खून गिरता है, किन्तु रक्तार्श में मलके साथ मिल कर बहुत कम गिरता है। रक्तार्श या खूनी बवासीर में मल के पहले या पीछे ही खून गिरा करता है। दोनों रोगोंके खूनमें अधिक अन्तर नहीं पाया जाता, पर रक्तार्श में खून कुछ अधिक लाल और चमकदार होता है।

कर दूषित हो जाते हैं, तब वही ग्रहणी को दूषित कर देते हैं। दूषित ग्रहणी कच्चे और पके मल को, गुदा की राह से, नीचे गिरा देती है। उस समय पीड़ा होने लगती है, मल कभी पतला आता है और कभी गाढ़ा आता है और उसमें बदबू आया करती है। जब ऐसे लक्षणों वाला रोग होता है, तब वैद्य उसे "ग्रहणी"* कहते हैं।

संग्रहणी की परीक्षा के लिये जानने योग्य लक्षण।



ग्रहणी कच्चे अन्न को ग्रहण करती है, इससे पीछे पेट फूल कर कच्चे दस्त होते हैं। दस्त होते ही रहें, यह नियम नहीं। कभी कुछ दिनों तक दस्त बन्द रहते हैं और फिर होने लगते हैं। कभी एक दो दस्त होते हैं और कभी बहुतसे होते हैं। खाया हुआ अन्न पच गया हो या पच रहा हो, तब पेट फूलता है, फिर भोजन करनेसे शान्ति होती है। ऐसी शका होती है, मानो तिल्ली बढ़ गई हो, वायुगोला हो या छाती में कोई रोग हो। अनेक बार बारम्बार पतला या सूखा और कच्चा दस्त आवाज के साथ होता है। शरीर गलने और खून उड़ने लगता है। अन्त में, शरीर में शोथ या सूजन होकर प्राणी बातें करता-करता मर जाता है। अनेक बार संग्रहणी के दस्तों में राध लोहू वगैर भी गिरते हैं। मरोड़ीके दस्तों कीसी, पर उससे कुछ कम, ऐंठनी होती है, पेट कटता है एवं बारम्बार दस्त होते और बन्द होते हैं।



हिकमत और डाक्टरी मतसे संग्रहणी के कारण और लक्षण।

हिकमत वाले संग्रहणी को जरब कहते हैं। यह रोग पाचन-शक्ति

* आमवायु का संग्रह होने से संग्रहणी कहते हैं। संग्रहणी ग्रहणी की अपेक्षा अधिक भयङ्कर रोग है।

राग्नि, आमाशय और पक्वाशयके बीचमें रहने वाली, पित्तधरा नामक छठी कला—ग्रहणी—को बिगाड कर "संग्रहणी" रोग पैदा करती है ।* किन्तु जो मनुष्य अतिसार के आराम हो जाने पर भी, दोष और आत्माके प्रकृतिस्थ होने तक, विरेचन—जुल्लाबके समान परहेज़ करता है, बदपरहेजी नहीं करता, उसे संग्रहणी रोग नहीं होता ।

अन्नका अधिष्ठान "अग्नि" है । अग्नि अन्नको ग्रहण करती है, इसी से उसे "ग्रहणी" कहते हैं । यह अग्नि नाभिके ऊपर रहती और कच्चे यानी बिना पके हुए अन्नको धारण करती एव पके हुए को नीचे गिरा देती है । ग्रहणीका बल अग्नि ही है और वह अग्नि के ही आश्रय से रहती है, इसलिये अग्निके खराब होनेसे ग्रहणी भी खराब हो जाती है ।

नोट—ग्रहणी एक आँत का नाम है । इस का काम है, कच्चे अन्न को ग्रहण करना और पके हुए को गुदा की राह से बाहर निकाल देना । उसी ग्रहणी नामक आँत मे जब कुछ दोष हो जाता है, तब वह ग्रहणी-आँत कच्चे अन्न को ग्रहण करती और बिना पकाये कच्चे को ही गुदा के बाहर निकाल देती है, यानी कच्चे दस्त होने लगते हैं ।

ग्रहणी रोग के सामान्य लक्षण ।

जब वात, पित्त और कफ—ये तीनो दोष अलग-अलग या मिल

* एक विद्वान ने संक्षेप में इस तरह लिखा है :—

षष्ठी कला पित्तधरा मता या पक्वाशयामाशय मध्यगा ताम् ।
वदन्ति वैद्य ग्रहणीं प्रदुष्टा मुञ्चेदपक्व बहुशो हि भुक्तम् ॥

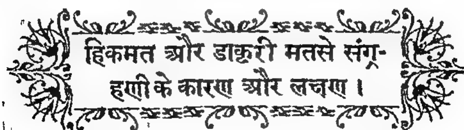
आमाशय और पक्वाशय के बीच मे छठी पित्तधरा कला है । उसे ही वैद्य ग्रहणी कहते हैं । वह कुपित होकर खाये हुए अन्नादि पदार्थों को प्राय कच्चा ही निकाल देती है ।

"चरक" में लिखा है, कि कोठेमे अग्नि के रहने का स्थान है, वह अन्न को ग्रहण करता है, इसलिये उस स्थान को ग्रहणी कहते हैं । यह ग्रहणी बिना पके हुए अन्नको ग्रहण करती और पके हुए को नीचे गिरा देती है । इस ग्रहणी में जो अग्नि रहती है, वह भी ग्रहणी कहलाती है । अग्नि दूषित होनेसे मन्दी हो जाती है, इस से उसका स्थान ग्रहणी भी दूषित हो जाता है ।

कर दूषित हो जाते हैं, तब वही ग्रहणी को दूषित कर देते हैं। दूषित ग्रहणी कच्चे और पक्के मल को, गुदा की राह से, नीचे गिरा देती है। उस समय पीड़ा होने लगती है, मल कभी पतला आता है और कभी गाढ़ा आता है और उसमें बदबू आया करती है। जब ऐसे लक्षणों वाला रोग होता है, तब वैद्य उसे "ग्रहणी"* कहते हैं।

संग्रहणी की परीक्षा के लिये जानने योग्य लक्षण।

ग्रहणी कच्चे अन्न को ग्रहण करती है, इससे पीछे पेट फूल कर कच्चे दस्त होते हैं। दस्त होते ही रहें, यह नियम नहीं। कभी कुछ दिनों तक दस्त बन्द रहते हैं और फिर होने लगते हैं। कभी एक दो दस्त होते हैं और कभी बहुतसे होते हैं। खाया हुआ अन्न पच गया हो या पच रहा हो, तब पेट फूलता है, फिर भोजन करनेसे शान्ति होती है। ऐसी शंका होती है, मानो तिल्ली बढ़ गई हो, वायुगोला हो या छाती में कोई रोग हो। अनेक बार बारम्बार पतला या सूखा और कच्चा दस्त आवाज़ के साथ होता है। शरीर गलने और खून उड़ने लगता है। अन्त में, शरीर में शोथ या सूजन होकर प्राणी बातें करता-करता मर जाता है। अनेक बार संग्रहणी के दस्तों में राध लोहू वगैर भी गिरते हैं। मरोड़के दस्तों कीसी, पर उससे कुछ कम, ऐंठनी होती है, पेट कटता है एवं बारम्बार दस्त होते और बन्द होते हैं।



हिकमत और डाक्टरी मतसे संग्रहणी के कारण और लक्षण।

हिकमत वाले संग्रहणी को ज़रब कहते हैं। यह रोग पाचन-शक्ति

* आमवायु का संग्रह होने से संग्रहणी कहते हैं। संग्रहणी ग्रहणी की अपेक्षा अधिक भयङ्कर रोग है।

के नाश होने से होता है। इस रोग में रोगी को बारम्बार दस्त आते हैं। जब यह रोग बढ़ जाता है, तब जो कुछ खाया जाता है, वह कच्चा ही, गुदा-द्वारा, निकल जाता है।

डाक्टरी पुस्तकोंमें लिखा है,—संग्रहणी रोग, जिसे डाक्टर क्रॉनिक डिसेण्ट्री या क्रॉनिक डायरिया कहते हैं, अजीर्ण और अतिसार से पैदा होता है। विशेष कर, अतिसार का अच्छा इलाज न होने से यह रोग पैदा होता है। इस रोग में, कभी-कभी १०।५ दिन के लिये दस्त बन्द हो जाते और फिर होने लगते हैं। जब यह रोग कुछ दिनों का हो जाता है, तब इसमें बुखार भी बराबर बना रहता है। इस रोग में आम-मिला हुआ मल उतरता है और दस्त होते समय आवाज़ होती है।

नोट—कितने ही डाक्टर लिखते हैं, भारी चीजें खाने और शरीर के दुर्बल होने से भी संग्रहणी रोग होता है।

होमियोपैथी वाले कहते हैं,—इस रोग के शुरू में जो लक्षण नज़र आते हैं, पुराना होने पर वे बदल जाते हैं। स्थान बदलने अथवा जलवायु के परिवर्तन से अक्सर यह रोग चला जाता है। इस रोग के बढ़ने से, इसके साथ, औरभी बहुत से रोग पैदा हो जाते हैं और रोगीके मरनेकी नौबत आ जाती है। होमियोपैथी वाले इस रोगमें कुछ दिनों तक फास्फोरस सेवन कराना अथवा रसटक्स या पलसेटिला देना हितकर समझते हैं।

नोट—वैद्यक-शास्त्रमें जिसे आमातिसार कहते हैं, साधारण लोग उसे ही मरोड़ी के दस्त कहते हैं। आमातिसार और अतिसार जब पुराने हो जाते हैं, तब उन्हींको संग्रहणी कहते हैं। असल में, ये एक ही रोग हैं, पर अवस्था-भेद से इनके अलग-अलग नाम हैं। मतलब यह, पुराने आमातिसार या मरोड़ी के दस्तों को संग्रहणी कहते हैं। जिन कारणों से तेज़ मरोड़ी के दस्त होते हैं, उन्हीं कारणों से संग्रहणी होती है, अथवा तीव्र मरोड़ीके दस्त मिटने पर, मन्दाग्निवाला अगर अपथ्य पदार्थ या मिथ्या आहार विहार सेवन करता है, तो उसे दस्तों का रोग फिर हो जाता है। इसी फिर हो जाने वाले दस्तों के रोग को पुरानी मरोड़ी या संग्रहणी कहते हैं।

ग्रहणी रोग के पूर्वरूप ।



जब ग्रहणी रोग होने वाला होता है, तब ये लक्षण नज़र आते हैं :—प्यास, आलस्य, ताक़त का कम होना, अन्न पचते समय आग सी जलना और अन्न का देर में पचना तथा शरीर का भारी होना ।

ग्रहणी रोग की क़िस्में ।



(१) वातज ग्रहणी (२) पित्तज ग्रहणी (३) कफज ग्रहणी (४) सन्निपातज ग्रहणी ।

और भी भेद ।



ग्रहणी के दो भेद औरभी हैं —

(१) संग्रहणी। (२) घटीयंत्र ।

नोट—वैद्यक-शास्त्र में ग्रहणी और संग्रहणी में बहुत थोड़ा भेद बतलाया गया है। ग्रहणी जब 'आमवायु' का संग्रह करती है तब उसे "संग्रहणी" या संग्रह ग्रहणी कहते हैं। ग्रहणी से संग्रहणी बहुत भयङ्कर है।

वातज ग्रहणी होने के कारण ।



कड़वे, चरपरे, कसैले, बहुत रूखे और शीतल पदार्थ खाने, संयोग-विरुद्ध भोजन* करने, भोजन पर भोजन करने, बहुत खाने, एक भोजन के पचे बिना दूसरा भोजन करने, उपवास करने, थोड़ा खाना खाने, बहुत रास्ता चलने, मलमूत्र आदि वेगों के रोकने† और अत्यन्त मैथुन करने से वात कुपित होकर, अग्निको दूषित करके, वातज ग्रहणी रोग पैदा करता है ।

* देखो पहला भाग पृष्ठ २८६-२८८
† देखो पहला भाग पृष्ठ ३४४-३५१

वातज ग्रहणी के लक्षण।

बादी की ग्रहणी वाले को अन्न बड़े कष्ट से पचता है और उसका पाक खट्टा होता है, शरीर खरदरा या कड़ा सा हो जाता है, कंठ और मुख सूखते है, भूख और प्यास लगती हैं, आँखोंके सामने अँधेरा आता है, कानों में आवाज़ होती है, पसवाडे, जाँघ, पेड़् और कन्धो में दर्द होता है, हैजा हो जाता है, यानी गुदा और मुँह दोनो राहों से कच्चा अन्न निकलता है, हृदय में वेदना होती है, शरीर दुबला हो जाता है, जीभ का स्वाद जाता रहता है, गुदा में कतरनी की सी पीडा होती है, मीठा प्रभृति सब रसों के खाने की इच्छा होती है, मन में ग्लानि होती है, अन्न पचने के बाद पेट फूल जाता है, भोजन करने से सुख मालूम होता है, पेट में वायु-गोला, हृदयरोग और तिल्ली की आशंका होती है, वात के योग से खाँसी और श्वासकी पीडा होती है ; बहुत देरमें, बडे कष्ट से, पतला—सूखा—थोडा—कच्चा, आवाज़ के साथ, झागोंदार मल उतरता है।

पित्तज ग्रहणी होने के कारण।

चरपरे, कड़वे, दाहकारक, खट्टे और खारादि पदार्थों के सेवन करने से बढा हुआ पित्त, जठराग्नि को उसी तरह नष्ट कर देता है, जिस तरह गरम पानी आग को नष्ट कर देता है।

नोट—अगर कोई यह शङ्का करे कि, पित्त तो स्वयं अग्नि के गुणों वाला है, वह अग्नि को कैसे नष्ट कर सकता है ? उसे यह जवाब देना चाहिये कि, जिस तरह गरम जल, अग्नि के गुणों वाला होने पर भी, अग्नि को भिगो कर नष्ट कर देता है; उसी तरह पित्त भी, अग्नि के गुणो वाला होने पर भी, जठराग्नि को नष्ट कर देता है।

पित्तज ग्रहणी के लक्षण।

जठराग्नि के नष्ट होने से मनुष्य पीला पड जाता है। उसके अजीर्ण से नीला, पीला और पतला मल उतरता है, अत्यन्त खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं, छाती और गले में जलन होती है, अन्न पर अरुचि रहती और प्यास का ज़ोर होता है।

कफज ग्रहणी होने के कारण।

भारी, अत्यन्त चिकने और शीतल आदि पदार्थ खाने, अत्यन्त मैथुन करने, भोजन पर भोजन करने और खाना खाते ही तत्काल सो रहने से कफ कुपित होकर जठराग्नि को नष्ट कर देता है। उस समय कफज ग्रहणी पैदा हो जाती है।

कफज ग्रहणी के लक्षण।

कफ से जठराग्नि के नष्ट होने पर, खाया हुआ अन्न कष्ट से पचता है, हृदय में पीडा होती है, उबकाइयाँ आती हैं, वमन और अरुचि होती है, मुख कफ से लिहसा रहता है, मुख का स्वाद मीठा रहता है, खाँसी आती है, बारम्बार थूक निकलता है, जुकाम रहता है, छाती जकडी रहती है, पेट भारी और पत्थर सा रहता है; डकारें दूषित और मीठी-मीठी आती हैं, ग्लानि होती है, स्त्री-प्रसंग की इच्छा नहीं होती, विष्ठा पतली, कच्ची, कफ मिली हुई और भारी निकलती है, ताकत नहीं रहती, पर शरीर पुष्ट दीखता और आलस्य बना रहता है।

त्रिदोषज ग्रहणी के निदान और लक्षण

वातकी, पित्त की और कफ की ग्रहणी के जो निदान—कारण

और लक्षण लिख आये हैं, वे सब निदान और लक्षण मिलें, तो उसे त्रिदोषज ग्रहणी समझना चाहिये ।

ग्रहणी के भेद

ग्रहणी के दो भेद होते हैं:—(१) संग्रहणी, (२) घटीयन्त्र ।

संग्रहणी

अगर पन्द्रह दिन में, ३० दिन में, दस दिन में या रोज़ ही पतला गाढ़ा, थोड़ा, चिकना, कमर की पीड़ा समेत, कच्चा, बहुत लिबलिबा, आवाज करके और थोड़ी वेदना के साथ मल उतरे, आँतें गूँजें, आलस्य हो, कमज़ोरी हो और ग्लानि हो, तो "संग्रहणी" समझनी चाहिये। यह रोग दिन में कुपित होता और रात में शान्त रहता है। संग्रहणी आम-वात के संग्रह से होती है, बहुत मुश्किल से जानी जाती है, बड़ी कठिनता से आराम होती है और बहुत समय तक रहती है।

नोट— १) यह दिनमें कोप करती और रातको शान्त रहती है। यह इस व्याधि का प्रभाव है।

नोट— २)ग्रहणी और संग्रहणी में यही भेद है, कि जब ग्रहणी "आम वायु"का संग्रह करती है,तब उसे संग्रहणी कहते हैं। ग्रहणी की अपेक्षा संग्रहणी भयङ्कर है।

घटीयन्त्र ।

इस रोग में नींद बहुत आती है, पसलियों में दर्द होता है, जिस तरह रहँट के घड़े से पानी निकलते समय आवाज़ होती है, उसी तरह इस में मल निकलते समय "घगघग" आवाज़ होती है। इसे "घटीयंत्र" कहते हैं। यह असाध्य ग्रहणी रोग है। इसके होने पर मरण होता है।

संग्रहणी रोग में पथ्यापथ्य।

अपथ्य ।

फस्द वगैर. से खून निकलवाना, रात में जागना, बहुत सा पानी पीना, स्नान करना, स्त्री-प्रसंग करना, मलमूत्रादि वेगों को रोकना, नस्य सूँघना, अञ्जन लगाना, पसीना निकालना, बफारा लेना, धूमपान करना, मिहनत करना, विरुद्ध भोजन करना, धूप या आग सेवन करना, गेहूँ, लोबिया, उड़द, जौ, पोई, बथुआ, मकोय, मटर, तूम्बी, सहँजना, कन्द, पान, ईख, बेर, कच्चे-पक्के आम, ककड़ी, खीरा, सुपारी लहसन, धानकी काँजी, दूध, गुड़, दही का पानी, नारियल, कटेरीका फल, पत्तों के साग, गोमूत्र, कस्तूरी, दाख, खटाई, नमकीन रस, भारी अन्नजल, पूआ, पूरी, और मङ्गौड़ी—ये सब संग्रहणी वाले को त्याग देने चाहियें।

पथ्य ।

सोना, वमन करना, लंघन करना, पुराने साँठी चाँवल, खीलों का माँड, मसूर, अरहर और मूँग का यूष, गाय का मक्खन-निकाला-हुआ दही, बकरी का दही, दूध से निकाला मक्खन, बकरी का दूध, दही और घी, तिल का तेल, मदिरा, शहद, कमल का कन्द, मौलसरी, दोनों तरह के अनार नये फल, केले के फूल, फल, नयी बेलगिरी, सिंघाड़े, चूके का साग, भाँग, कैथा, कुड़ेकी छाल, जीरा, कसेरु, छाछ—माठा, चौपतिया, जायफल, जामुन, धनियाँ, कुचला, बकायन, मँजीठ, अफीम, हिरन या तीतर का मांसरस, सब तरह की छोटी मछली, सब तरह के कषैले पदार्थों का रस, नाभि से दो अँगुल नीचे हटकर तथा रीढ़ की जड़ में, अर्द्ध चन्द्रमा के

सट्टा, गरम लोह से दागना, आब-हवा बदलना, समुद्रकी सैर करना और माठा पीना,—ये सब सग्रहणी रोग में पथ्य है।

संग्रहणी रोग मे पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, और सोंठ) आदि से सयुक्त हलका अन्न और पेया आदि अग्नि को दीपन करने वाले पदार्थ तथा माठा—ये सब हितकारी है।

कैथ, बेलगिरी, चाँगेरी (नोनिया या चूका) माठा और अनार के द्वारा सिद्ध की हुई यवागू आम को पचाती और मल को बाँधती है।

नोट—ज्वर और अतिसारमें यवागू" परम पथ्य है। देखिये, दूसरे भागके पृष्ठ ७९—८०।

मूँग का यूष, हल्का और दस्त रोकने वाला मास का रस, धनियाँ, जीरा और सेंधानोन,—इन से मिले हुए तक्र—माठे को "षड्यूषण" कहते हैं। यह "षड्यूषण" ग्रहणी रोग में हितकारी है।

ढाकके बीज, चीता, चव्य, बिजौरेकी केशर, हरड़, पीपल, पीपलामूल, पाढ, धनिया और सोंठ—इन सबको एक-एक तोले लेकर, एक सेर जलमें पकाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे, इस काढे के द्वारा यवागू पकाकर रोगी को दो। यह "यवागू" कफज सग्रहणी-रोगी को अत्यन्त हितकारी है।

नोट—यूष, मासरस या अन्य पथ्य पदार्थ बनानेकी विधि के लिए "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग का ७७—८६ पृष्ठ देखिये।

माठा सग्रहणी में अत्यन्त हितकारी है, इसलिये नीचे हम माठे के भेद और गुण प्रभृति लिखते है—

सुश्रुत आदि मुनियो ने माठे या तक्र के चार भेद कहे हैं:—
(१) तक्र, (२) घोल, (३) मथित, (४) उदश्वित।

जो मलाई-युक्त दही बिना जलके मथा जाता है, उसे "घोल" कहते हैं। जो मलाई निकाल कर, बिना जल के मथा जाता है, उसे "मथित" कहते हैं। जो दही चौथा भाग जल डाल कर मथा

जाता है, उसे "तक्र या माठा" कहते हैं। जो दही आधा जल डाल कर मथा जाता है, उसे "उदश्वित" कहते हैं।

घोल—वातपित्त नाशक है। मथित—कफपित्त नाशक है। उदश्वित—कफकारक, बलदायक, श्रमविनाशक और परम हित-कारक है।

तक्र या माठे के गुण।

तक्र—मलरोधक, कषैला, खट्टा, मधुर, अग्नि दीपन करनेवाला, हल्का, उष्णवीर्य, बलकारक, हृष्य, तृप्तिकारक और वातनाशक होता है। आठ प्रकार के दहियों के अनुसार ही उनके तक्रों में गुण होते हैं।

तक्र—ग्रहणी आदि रोगों में पथ्य है। हलका होने के कारण मलरोधक है, अम्ल और सान्द्र होने के कारण वात-विनाशक है। तत्कालका मथा हुआ तक्र दाहकारक नहीं होता, पाकमें मधुर होता है, किन्तु अन्त में पित्त को कुपित करता है। कषैला, उष्ण विकाशी और रूखा होने के कारण वह तक्र कफ को भी दूर करता है।

जिसमें से सारा ही घी निकाल लिया गया हो, वह माठा पथ्य और विशेषकर हल्का होता है। जिसमें से थोड़ा सा घी निकाला गया हो, वह माठा भारी, वीर्यवर्द्धक और कफ नाशक होता है। जिसमें से कुछ भी घी न निकाला गया हो,वह माठा भारी, गाढा, पुष्टिकारक और बल बढाने वाला होता है।

रोग विशेष में तक्र विशेष।

वात रोग मे—खट्टे माठे मे सेंधानोन डालकर सेवन करना चाहिये।
पित्त रोग में—मट्टा और मीठा माठा मिश्री मिलाकर पीना चाहिये।

कफ रोग में—माठे में जवाखारादि और त्रिकुटे का चूर्ण डाल कर पीना चाहिये। संग्रहणी और अतिसार में—घोल नामक माठे में हींग, जीरा और सेंधानोंन मिलाकर पीना चाहिये। यह घोल वातनाशक, रुचिकारक, पुष्टिदायक, बलकारक और बस्ति की पीड़ा को शान्त करने वाला है।

पीनस, श्वास और खाँसी प्रभृति में—औटाया हुआ माठा पीना चाहिये। कच्ची छाछ कोठे के कफ को तो दूर करती है, किन्तु कंठ में कफ पैदा करती है, इसीलिये पीनस और श्वास प्रभृति में पकाई हुई छाछ पीनी चाहिये।

तक्र की तारीफ



न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धा प्रभवन्ति रोगा।
यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहु॥

तक्र सेवन करने वाला कभी रोगी नहीं होता। तक्र से नष्ट हुए रोग फिर कभी नहीं होते। जिस तरह स्वर्ग में देवताओं के लिये अमृत सुखदाई है, उसी तरह पृथ्वी पर मनुष्यों के लिये माठा हितकारी है।

तक्र की मनाही



गरमीके मौसम में, घाव वाले रोगी को, दुर्बल को, मूर्च्छित को, भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगी को माठा न देना चाहिये।

किसका माठा उत्तम होता है?



गाय का दही—उत्तम, बलकारक, पाक में मधुर, रुचिकारक,

पवित्र, अग्निदीपक, चिकना, पुष्टिकारक और वातनाशक होता है। सब तरह के दहियों में गाय का दही उत्तम होता है, इसलिये गाय के दही का माठा भी उत्तम होता है।

भैंसका दही—अत्यन्त चिकना, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्वादुपाकी, अभिष्यन्दि, वृष्य और भारी होता है तथा रुधिर को दूषित करता है। भैंस के दही का माठा भी इन्हीं गुणोंवाला होता है।

बकरी का दही—उत्तम, मल-रोधक, हलका, त्रिदोषनाशक, अग्नि को दीपन करने वाला, तथा श्वास, खाँसी, बवासीर, क्षय और कृशता में हितकारी है। बकरी का दही, श्रेष्ठ और ग्राही—काबिज—होने के कारण, ग्रहणी रोग में अत्यन्त हितकारी है।

संग्रहणीवालों को गाय का माठा अमृत है।



संग्रहणी वालों के हक़ में गाय का माठा अमृत है, क्योंकि माठा दीपन, पाचन, हल्का और पथ्य है। माठे का पाक मधुर होता है, इसलिये वह पित्त को कुपित नहीं करता, माठा कषैला, गरम, रूखा और सन्धियों को शिथिल करनेवाला होने से कफ में भी हितकारी है। स्वादिष्ट, खट्टा और सान्द्र होने की वजह से वात में हितकारी है। माठा तत्काल गुण करता और दाह नहीं करता। "वङ्गसेन" में लिखा है —

> ग्रहणीरोगिणां तक्रं ग्राहि लघु दीपनम्।
> सेवनीयं सदा गव्यं त्रिदोषशमनं हितम्॥
> दुःसाध्यो ग्रहणी दोषो भेषजैर्नैव शाम्यति।
> सहस्रशोऽपि विहितैर्विना तक्रस्य सेवनात्॥
> यथा तृणचयं वह्निस्तमांसि सविता यथा।
> छिन्दन्ति ग्रहणी रोगं तथा तक्रस्य सेवनम्॥

संग्रहणी वाले को तक्र—माठा मलको रोकनेवाला, हलका और

अग्नि दीपक है। इसलिये संग्रहणी-रोगियो को सदा गाय का माठा सेवन कराना चाहिये। गायका माठा अत्यन्त हितकारी और त्रिदोष शमन करनेवाला है।

दुःसाध्य संग्रहणी बिना माठा सेवन किये, हज़ारों दवाओंसे भी, आराम नहीं होती, अर्थात् माठा सेवन करने से दुःसाध्य संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

जिस तरह तृण-समूह को अग्नि और अन्धकार-समूह को सूर्य नष्ट करता है, उसी तरह संग्रहणी रोग को तक्र या माठा नष्ट करता है।

भिन्न-भिन्न रङ्ग की गायों का दूध भिन्न-भिन्न रोग-नाशक।

रोगी के तक्र पीनेके लिये उत्तम गायें रखनी चाहियें। गायों के दूध के गुण उन के रङ्गों के अनुसार होते हैं :—

पीले रङ्ग की गाय का दूध वातनाशक होता है। सफ़ेद रङ्ग की गायका दूध पित्तरोग नाशक होता है। लाल गायका दूध कफनाशक होता है। काली गाय का दूध त्रिदोष नाशक होता है।

गायों के चराने की विधि।

गायों को ऐसे वन में चराना चाहिये, जहां बहुत से वृक्ष और लता न हों। चराने के बाद उन्हें विश्राम कराना चाहिये और पीछे साफ निर्दोष जल पिलाना चाहिये। गायो को धीरे-धीरे चराना चाहिये। अगर गायो को उत्तम चारा और उत्तम जल मिलेगा, तो उन का दूध भी उत्तम होगा। अगर गायें दूषित चारा और दूषित जल पावेंगी, तो उनका दूध भी दूषित होगा।

रोगानुसार दूध औटाने और जमाने की विधि।



वात-रोगमें कच्चा दूध लेना चाहिये। पित्त-रोग मे दूधको ज़रा औटाकर उतार लेना चाहिये। कफ के और त्रिदोष के रोगमें दूधको ऐसा औटाना चाहिये कि, सेर का तीन पाव रह जाय, केवल एक पाव दूध जले। औटाये हुए दूध को ज़रा सी खटाईसे जमा देना चाहिये। दही गाढा जमाना चाहिये। पीछे ज़रासा जल डालकर, रई से मथकर, घी निकाल लेना चाहिये।

संग्रहणी नाशार्थ तक्र-सेवन-विधि।



तक्र और सोठका चूर्ण-इनको एकत्र मिलाकर, रोज़, सेवन करना चाहिये। अगर तक्र के सेवन करने और अन्न के छोड़ने से कमज़ोरी हो, शरीर रूखा हो, मूत्र और नेत्रोंमें सफेदी हो, तो ज़रासी चिकनाई यानी घी समेत तक्र पीना चाहिये। कुछ दिन बाद-नवनीत—मक्खन, समेत तक्र पीना चाहिये।

तक्र, नौनी घी और सोठ—इन तीनों को मिला कर पीना चाहिये। धीरे-धीरे क्रम से अन्न को घटाना चाहिये और उसी हिसाब से माठे को बढाना चाहिये। तक्र को यहाँ तक बढाना चाहिये, कि अन्न बिल्कुल छूट जाय, केवल तक्रका ही आहार रह जाय। जब-जब भूख और प्यास लगे, तब-तब सोंठका चूर्ण मिला हुआ तक्र पीना चाहिये।

जब इस तरह तक्र सेवन किया जाय, तब बहुत परिश्रम—मिहनत, बहुत बोलने, मैथुन और क्रोध से परहेज़ करना चाहिये। इस तरह तक्र सेवन करने से संग्रहणी शीघ्र ही इस तरह नष्ट हो



जाती है, जिस तरह जूआ खेलने वाले की लक्ष्मी शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

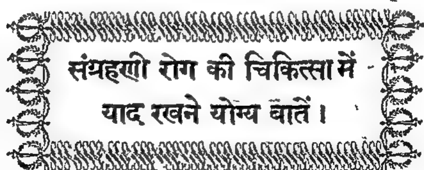
जब संग्रहणी आराम हो जाय, तब अन्न सेवन करना चाहिये। आराम होने पर एकदम अन्न न बढ़ा देना चाहिये। जिस तरह पहले अन्न को घटाया था, उसी तरह क्रम-क्रम-से माठा त्याग करना चाहिये और अन्न को बढ़ाना चाहिये।

संग्रहणी में तक्र को क़ायदे से सेवन करना चाहिये। संग्रहणी के नाश करनेके लिये तक्रसे बढ़कर और दवा नहीं है। यद्यपि संग्रहणी में तक्र हितकारी है, तथापि बेक़ायदे सेवन किया हुआ तक्र साक्षात् कालकूट विष के समान है।

नोट—(१) केवल सोंठ के चूर्ण को माठे के साथ सेवन करने से संग्रहणी निश्चयही आराम हो जाती है।

(२) चीते का चूर्ण माठेके साथ सेवन करने से संग्रहणी आराम हो जाती है।

(३) हरड़ के वृक्ष की छाल, माठेमें पीसकर, सेवन करने से आम और रक्त-युक्त संग्रहणी आराम हो जाती है।



संग्रहणी रोग की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) संग्रहणी रोग की, लंघनों से तथा अग्नि की दीपन करने वाली अतिसार की औषधियों से, अजीर्ण की तरह, चिकित्सा करनी चाहिये। इस रोगमें भी दोषोंकी सामता और निरामताका, अतिसार की तरह, खयाल रखना चाहिये और अतिसार की तरह ही सामता और निरामताको समझना एवं अतिसारमें लिखी हुई तरकीबों से ही आम को पचाना चाहिये।

(२) अग्नि दीपक पञ्चकोल-(पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ) युक्त अन्नपान, तक्र—माठा, पेया, यवागू, मण्ड और यूषादिक हलके अन्न ग्रहणी रोग में सदा देने चाहियें। अग्नि-दीपक पदार्थ संग्रहणी में परम हितकारी होते हैं।

(३) वातज संग्रहणी के पक जाने पर, उसे दीपन औषधियों से सिद्ध किये घृतों अथवा ऐसे ही क्वाथ वगैर से जीतना चाहिये। "शुण्ठी घृत," "वृहत् चांगेरी घृत" अथवा "शुण्ठादि क्वाथ" प्रभृति वातज संग्रहणी में अच्छा काम करते हैं।

(४) पित्तज संग्रहणीमें—जठराग्निको दूषित करनेवाले पित्त को, विरेचन और वमन के द्वारा, शान्त करना चाहिये। इसके बाद हलके, मल को रोकने वाले, अग्निको दीपन करनेवाले; किन्तु दाह न करने वाले, पदार्थ सेवन कराने चाहियें। पित्तज संग्रहणी में "रसाञ्जनादि चूर्ण" अच्छा काम करता है।

(५) कफज संग्रहणी वाले को तीक्ष्ण औषधियोंसे वमन करानी चाहिये तथा नमकीन, खट्टी, कड़वी और खारी द्रव्यों से क्रम-पूर्व्वक जठराग्नि को दीपन करना चाहिये। "पथ्यादि चूर्ण" माठे के साथ सेवन करनेसे तथा पीछे पृष्ठ ११४में लिखी हुई "यवागू" सेवन कराने से कफज संग्रहणीमें निश्चय ही लाभ होता है।

(६) जीर्ण हुआ आम या संग्रहणी रोग साधारण उपायों से आराम नहीं होता। चिकित्सक को पुरानी संग्रहणी में बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। संग्रहणी में रोगी का जठर इतना ख़राब या दूषित हो जाता है कि, साधारण खाना भी उसे नहीं पचता। संग्रहणी वाले की हालत एक बच्चे की सी हो जाती है। अतः संग्रहणी रोग यदि आराम करना हो, तो रोगी को वैद्य बालक समझ ले और बालक समझ कर उसे हल्के-से-हल्का पथ्य—खाना वगैर दे।

(७) संग्रहणी-रोगी के लिये माठा अमृत है। माठा ही उसकी

जीवन-रक्षा कर सकता है। वैद्यको चाहिये कि,उसे दवा और भोजन दोनो के एवज में माठा ही सेवन करावे। भुनी हींग, भुना जीरा और सेंधानोन मिलाकर माठा लगातार पिलाये जाना परम हितकारी है। संग्रहणी-रोगीको छाछसे भोजनके समान बल रहता है और अग्नि तेज़ होती है। जब अग्नि तेज़ हो जाय, तब उसे पुराने चाँवल प्रभृति हलके भोजन देनेमें हानि नहीं। हमने देखा है कि, जिनके शरीर में खून और मासका नाम भी नहीं रहा था,जिनमें केवल हाड-ही हाड दीखते थे, जिनको डाक्टरो ने असाध्य कह दिया था, वे रोगी कितने ही महीनो तक, विश्वास और श्रद्धा के साथ, एकमात्र छाछ सेवन करनेसे चङ्गे हो गये। संग्रहणी-जैसे भयङ्कर रोगकी महर्षियोंने अनेक उत्तमोत्तम महौषधियाँ लिखी है, और वे उपकारी भी हैं, पर छाछ से सब का दर्जा नीचा है। इधर मरणशय्या पर पडा, जीवनसे निराश रोगी माठा सेवन करने लगता है और उधर उस का रोग घटने और नया खुन जमा होने लगता है।

(८) लाई चूर्ण, दुग्धवटी, ह्रीबेरादि क्काथ, षड्यूषण, जातीफलादि चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, कनक रस,चन्द्रकला चूर्ण, ग्रहणी कपाट रस और ग्रहणी वज्र कपाटरस—ये सबसंग्रहणी पर रामवाण हैं। हमने इनके बनाने और सेवन करनेकी विधि आगे पृष्ठ १३२-१४३ में लिखी है। यो तो संग्रहणी-नाशक हजारों नुसखे हैं, पर उपरोक्त नुसखे हमारे आज़माये हुए है और प्रसिद्ध भी हैं। इनको उचित अनुपान और पथ्यके साथ सेवन करनेसे संग्रहणी निश्चयही नाश हो जाती है।

(९) माठा पीना, आबहवा बदलना, दरिया या समुद्र की सैर करना,—इस रोग में परम हितकारी है। जियादा नहाना, ज़ियादा पानी पीना, चिकने पदार्थ खाना, जागना और मिहनत करना हानि कारक है।



विशेष चिकित्सा।

नोट—चिकित्सा दो तरह की होती है — (१) सामान्य, और (२) विशेष। सामान्य से विशेष चिकित्सा अच्छी है, क्योंकि वह अपना फल शीघ्र दिखाती है; पर उस चिकित्सामें दोषोंके अंशांशकी कल्पना करनी पड़ती है। किन्तु यह काम हर किसी का नहीं, विद्वान् और अनुभवी वैद्य ही दोषों का ठीक अन्दाजा कर सकते हैं और जो वैद्य रोग के निदान और लक्षणों से दोषों के अंशांशों की कल्पना कर लेते हैं। फिर दोषोंके अनुसार ही दवा तजवीज करते हैं, उन्हें निश्चय ही सफलता मिलती है।

वातज ग्रहणीकी चिकित्सा।

(१) पंचकोल का यूष, अनारका रस और चिकने पदार्थ वातज ग्रहणीमें हितकारी है।

(२) कैथ, बेलगिरी, चूका, माठा और अनार—इनमें बनाई हुई यवागू आमको पचाती और मलको बाँधती है।

(३) सोंठ, कुड़ेके बीज, पीपल, बटाई, कटेरी, चीता, सारिवा, पाढ़, जवाखार और पाँचों नमक—इनका चूर्ण गरम जल या काँजी अथवा गायके दहीके साथ सेवन करनेसे अग्नि बढ़ती और कोठे की वायु दूर होती है।

नोट—पाँचों नमकों के नाम आगे पृष्ठ १२६में लिखे हैं।

(४) धनिया, अतीस, सुगन्धबाला, अजवायन, नागरमोथा, सोंठ, खिरेंटी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी और बेलगिरी—इनका काढ़ा दीपन और पाचन है।

(५) अजवायन, सोंठ, पोंपर, कालो मिर्च, सेंधानोन, सफेद जीरा, काला जीरा और भुनी हींग—इन आठोंके चूर्णको "हिंग्वष्टक चूर्ण" कहते हैं। इस चूर्णको "घी" में मिलाकर, पहले ग्रासमें रखकर, खानेसे अग्नि दीप्त होती और वात नाश होती है।

(६) चीता पीपलामूल, जवाखार, सज्जीखार, काला नोन, सेंधानोन, विरिया सञ्चरनोन, रेहगवां नोन, समन्दर नोन, सोंठ, मिर्च, पीपर, भुनी हींग, अजमोद और चव्य—इनको एकत्र पीस-छान कर, बिजौरे नीबूके रसमें अथवा अनारके रसमें मिला कर गोलियाँ बना लेनी चाहियें। ये गोलियाँ आमको पचाती और अग्निको दीपन करती हैं।

नोट—वातज संग्रहणी परिपक्व हो जाय, तब दीपन औषधियों के द्वारा सिद्ध किये हुए घी से चिकित्सा करनी चाहिये।

(७) सोंठ, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, गोखरू, पीपल, धनिया, बेलगिरी, पाढ और अजवायन—इन सबका पिसा हुआ चूर्ण चार तोले लो। शुद्ध गायका घी ६४ तोले लो। चँगेरी या नोनिया अथवा चूकेका स्वरस २५६ तोले (३ सेर, २ छटाँक, १ तोले) लो और २५६ तोले दहीकी छाछ लो। शेषमें सबको पीतलकी कलईदार कडाहीमें चढाकर, मन्दाग्निसे पकाओ। जब पतले पदार्थ जलकर घी मात्र रह जाय, उतार लो। इस "वृहत् चांगेरी घृत" के सेवनसे सब तरहके कफ-वात रोग, सब तरहकी बवासीर, सब तरहकी संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, प्रवाहिका, गुदभ्रंश—काँच निकलना, और अफारा ये सब नाश हो जाते हैं।

(८) सोंठको सिलपर जलके साथ पीसकर, पीछे उस लुगदी और घीको कडाहीमें पकाने से जो घी तैयार होता है, उसे "शुण्ठी घृत" कहते हैं। यह घी वात को अनुलोमन करता तथा संग्रहणी, पीलिया, तिल्ली और ज्वरको नाश करता है।

नोट—अगर सोंठ की पिसी लुगदी ४ तोले हो, तो घी १६ तोले लो और जल

६४ तोले लो। इन सब को मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार लो॥।

॥ कल्क की औषधियों से चौगुना घी लेना चाहिये। उस घी से चौगुना दूध, गोमूत्र या काढ़ा प्रभृति लेना चाहिये। पीछे सबको मिलाकर, चूल्हे पर चढ़ाकर, मन्दाग्नि से पचाना चाहिये। जब पतले पदार्थ दूध, जल, मूत्र या काढ़े प्रभृति जल जायें, केवल घी या तेल रह जाय, तब चूल्हे से उतार कर, छान कर रख लेना चाहिये।

घी या तेलके पकने की परीक्षा यह है कि, जब घी के सब झाग शान्त हो जायँ, तब घी को सिद्ध हुआ समझना चाहिये, किन्तु तेल पर जब झाग आने लगें, तब तैलको सिद्ध हुआ समझना चाहिये।

घी या तेलके कल्कको आग पर डालने से आवाज न हो, तथा उसे अङ्गुलियोंके पोरुओं पर लगा कर मलने से बत्ती सी बन जाय, तब समझ लेना चाहिये कि, घी या तेल अच्छी तरह पक गया।

घी तेलका पाक तीन तरह का होता है—१) मृदु, (२) मध्यम (३) खर। नस्य-कर्म के लिये मृदुपाक उत्तम होता है। सब कामों के लिये मध्यम पाक उत्तम है। मालिश के लिये खरपाक श्रेष्ठ है।

घी या तेल अधिक पाक होने से यदि जल जायँ, तो दाह करते हैं और कच्चे रह जायें तो अग्नि मन्द करते हैं।

कल्क से चौगुना घी या तेल लेना चाहिये। घी या तेल से चौगुना काढ़ा लेना चाहिये। दूध, दही स्वरस अथवा माठा डाल कर घी या तेल बनाना हो तो घी या तेल का आठवाँ भाग कल्क डालना चाहिये। जिस घी तेल में कल्क न हो, उसे पतले पदार्थों से सिद्ध करना चाहिये।

घी,तेल, गुड़ प्रभृति बनाने हों तो एक ही दिनमें न बनाने चाहियें। पहले दिन इनकी दवाओं को भिगो देना चाहिये। दूसरे दिन घी तेल आदि तैयार करने चाहियें।

काढ़े की दवाएँ चौगुना पानी डाल कर औटानी चाहिये। जब चौथाई जल रह जाय, काढ़ा उतार लेना चाहिये। गुड़्च आदि नरम दवाओं में चौगुना जल डालना चाहिये। अमलतास आदि कड़ी दवाओं में अठगुना जल डालना चाहिये। पद्माख आदि बहुत ही कड़ी दवाओं में १६ गुना जल डालना चाहिये।

कल्कका उत्तम पाक होने के लिये घी या तेल से चौगुना पानी डालना चाहिये।



(९) सोंठके कल्क और दशमूल के काढे के साथ जो घी पकाया जाता है, वह सूजन, संग्रहणी, और आमवातको नष्ट करता है।

नोट—अगर सोंठ का कल्क ४ तोले हो, तो घी १६ तोले और दशमूल का काढ़ा ६४ तोले लेना। पीछे सब को मन्दाग्नि से पका लेना।

(१०) सोंठ, गिलोय, नागरमोथा और अतीस—इनको बराबर-बराबर लेकर, काढा बनाकर, वातज संग्रहणीमें देनेसे निश्चय ही लाभ होता है। यह नुसखा आमातिसार और आम युक्त संग्रहणी में, जिसमें पहले मल और पीछे आम निकलता हो अथवा आम-मिला मल निकलता हो, परम लाभदायक है। इससे अग्नि भी बढ़ती है। यह आरम्भमें ही दिया जा सकता है। परीक्षित है।

पित्तज ग्रहणीकी चिकित्सा।

(११) रसौत, अतीस, इन्द्रजौ, कुड़ेकी छाल, सोंठ और धायके फूल,—इन सबको एकत्र पीसकर,शहद और चाँवलों के पानीके साथ, सेवन करनेसे पित्तकी संग्रहणी, बवासीर, रक्तपित्त और अतिसार नष्ट होता है। परीक्षित है। इसको "रसाञ्जनादि चूर्ण" कहते हैं।

(१२) रसौत, अतीस, इन्द्रजौ, कुड़ेकी छाल और धायके फूल—इनके चूर्ण को शहद और चाँवलों के जल के साथ लेने से पित्तकी संग्रहणी आराम होती है। इसको भी "रसाञ्जनादि चूर्ण" कहते हैं।

नोट—यह नुसखा अनेक बार का परीक्षित है। इसमें और ऊपरके में भेद इतना ही है, कि इस में सोंठ नहीं है। इस में सोंठ छोड़ कर ५ दवाएँ हैं और उस में सोंठ समेत ६ हैं।

(१३) कुटकी, रसौत, सोंठ, धायके फूल, हरड़, इन्द्रजौ, नागर-मोथा, कुड़े की छाल और भाँगरा—इनका काढा अत्यन्त बढ़ी हुई गुद-शूल-युक्त पित्तज संग्रहणीको आराम करता है। इसका नाम "तिक्तादि क्काथ" है। परीक्षित है।

(१४) पाढ, इन्द्रजौ, चीता और सोंठ—इनका काढा पित्त-कफसे पैदा हुई संग्रहणी तथा सब तरह के शूलको नाश करता है। इनका चूर्ण बनाकर, गरम जल के साथ, सेवन करनेसे भी वही लाभ होता है।

(१५) पाढ, अतीस, इन्द्रजौ, कुडे की छाल, नागरमोथा, कुटकी, धायके फूल, रसौत और बेलगिरी—इनके चूर्णको "शहद" मिलाकर, चाँवलोंके जलके साथ, सेवन करनेसे प्रवाहिका, रक्तातिसार, गुदाकी पीड़ा, संग्रहणी और बवासीर—ये रोग नष्ट होते हैं।

नोट—इस नुसखे में सोंठ और मिला दे, तो दस दवाइयां हो जाती हैं। इसको "नागरादि चूर्ण" कहते हैं। इसके सेवनसे पित्तकी संग्रहणी, रुधिरकी बवासीर, गुदा की पीड़ा और प्रवाहिका आराम हो जाती है। यह नुसखा बिना सोंठ और सोंठ दोनों तरह परीक्षा किया हुआ है। हर हालत में, यह नुसखा शहद और चाँवलों के जल के साथ ही सेवन किया जाता है।

चार तोले चाँवलोंको अधकचरा करके (आटा सा न हो जाय), ३२ तोले जलमें, २ घण्टे तक, भिगोकर छान लेना चाहिये। यही चाँवलोंका पानी है।

(१६) चिरायता, कुटकी, सोंठ, मिर्च, पीपर, नागरमोथा और इन्द्रजौ—ये सब एक-एक तोले लेने चाहियें। चीते की छाल दो तोले लेनी चाहिये और कुडेकी छाल १६ तोले लेनी चाहियें। पीछे सबको एकत्र करके, कूट पीस छान कर, चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको "भूनिम्बादि चूर्ण" कहते हैं। इस चूर्णको पुराने गुड़ और शीतल जलके साथ लेनेसे संग्रहणी, गोला, कामला, पीलिया, ज्वर, प्रमेह, अरुचि और शरीरका पीलापन आराम हो जाता है।

नोट—पुराने गुड़को शीतल जलमें घोल कर छान लेना चाहिये। यही गुड़का शर्बत है। इस का स्वाद और रंग गुड़ के जैसा ही होता है। "भूनिम्बादि चूर्ण" खाकर ऊपरसे यही गुड़ का शर्बत पीना चाहिये।

(१७) पाढ, बेलगिरी, चीता, त्रिकुटा, जामुन, अनारका छिलका, धायके फूल, कुटकी, अतीस, नागरमोथा, हल्दी, चिरायता और इन्द्रजौ,—ये सब एक-एक तोले लेने चाहियें और १२ तोले कुड़ेकी छाल

लेनी चाहिये। पीछे सब को एक जगह करके, कूट-पीस छान कर, चूर्ण बना लेना चाहिये। इस चूर्ण को शहद और चाँवलो के जलके साथ सेवन करने से ज्वर, अतिसार, वमन, संग्रहणी, दाह, शूल अरुचि, और अग्निमन्दता—ये सब नाश होते हैं।

(१८) आम की गुठली की मीगी, सोंठ, अतीस और कुडे की छाल—बराबर-बराबर लेकर, आम के पत्तो के रस में, २ दिन, घोटो और शीशी में रख दो। इस को मिश्री मिलाकर खाने से पित्त की संग्रहणी, ज्वरातिसार और तेज़ी से खून का गिरना—ये सब आराम होते हैं। मात्रा ४ से ६ माशे तक। समय—सवेरे शाम।

कफज ग्रहणी की चिकित्सा।

(१८) सोंठ,नागरमोथा और बायविडङ्ग—इनके चूर्णको माठा या गरम पानीके साथ सेवन करनेसे कफकी संग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है।

(२०, हरड, पीपल, सोंठ और चीता—इनका चूर्ण माठे के साथ सेवन करने से कफकी संग्रहणी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) केवल सोंठ का चूर्ण माठे के साथ सेवन करने से शूलयुक्त कफ की संग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) पीपल, पीपलामूल, जवाखार, सज्जीखार, पाँचों नमक, बिजौरा नीबू, हरड, रास्ना, कचूर, कालीमिर्च और सोंठ—इन सब को बराबर-बराबर ले कर चूर्ण बना लेना चाहिये। इस चूर्ण को मन्दोष्ण जल के साथ, सवेरे के समय, नित्य, सेवन करने से कफ की संग्रहणी आराम हो जाती है। साथ ही बल, मांस और जठराग्निकी वृद्धि होती है।

(२) त्रिकुटा, आम की छाल और कुडे की छाल—इनको एकत्र

पीसकर, चाँवलों के पानी के साथ, सेवन करने से संग्रहणी, कामला, पीलिया, प्रमेह, अरुचि, अतिसार, गोला, सूजन और ज्वर—ये नाश हो जाते हैं।

(२४) थूहर की लकड़ी १६ तोले, तीनों नमक १२ तोले, बैंगन १६ तोले, आक ८ तोले, बेलगिरी ८ तोले और चीता ८ तोले—इन सब को एकत्र करके आग में जला लो। पीछे बैंगनोंका रस निकाल कर, उस रस में इस जले हुए मसालेको मिलाकर गोलियाँ बना लो। भोजन के बाद, इन गोलियों के खाने से भोजन शीघ्र ही पच जाता है और संग्रहणी आराम हो जाती है। इस के सिवा श्वास, खाँसी, बवासीर, विशूचिका, प्रतिश्याय—जुकाम और हृदय-रोग में ये गोलियाँ विशेष रूप से फायदा दिखाती हैं। इन को "वार्ताकु गुटिका" या "बैंगन की गोलियाँ" कहते हैं।

नोट—जहाँ तीन नमक लिखे हों, वहाँ सेंधा, सञ्चल और बिड़नोन लेना चाहिए।

(२५) सज्जी, जवाखार, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, मिर्च, पाँचों नोन, भुनी हींग और अजवायन—इन १५ दवाओं को लेकर, कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। पीछे अम्लवेत, बिजौरा, नीबू और झड़बेरी का रस निकाल लो। उसी रस में इस चूर्णको खरल करके रोगी को खिलाओ। इससे कफवातज संग्रहणी और बवासीर निश्चय ही आराम होती है। यह चूर्ण अग्नि दीपन करने और अन्न पचाने में अपना सानी नहीं रखता। परीक्षित है।

नोट—पाँचों नमकों के नाम ये हैं —सेंधा, सञ्चल, बिड़, समन्दर और काँच नमक।

(२६) सौ पीपलों को महीन पीसकर और शहद में मिलाकर, एक घड़े में लेप कर दो। पीछे उस घड़े में अगर की धूनी दो। इस के बाद, उस घड़े में ४ सेर शहद और ४ सेर पानी भर दो। इसके भी बाद उस घड़े में निम्नलिखित चीजों को डाल दो —वायबिडङ्ग ८ तोले, पीपल १६ तोले, मसनोचन ४ तोले, नागकेशर १ तोले, काली-

मिर्च १ तोले, दालचीनी १ तोले, इलायची १ तोले, तेजपात १ तोले, कचूर १ तोले, सुपारी १ तोले, अतीस १ तोले, नागरमोथा १ तोले, रेणुका १ तोले, एलुआ १ तोले, तेजबल १ तोले, पीपलामूल १ तोले और चीते की छाल १ तोले।

घड़े में सब चीज़ों को डालकर, उसका मुँह बन्द करके और मुद्रा देकर, १ मास तक, उसे रक्खा रहने दो। १ मास पूरा होने पर, घड़े को खोल कर, दवा को मात्रा से सेवन करने से मन्दाग्नि दीप्त होती है, विषमाग्नि समान होती है तथा हृदय-रोग, पीलिया, संग्रहणी, कोढ, बवासीर, सूजन, ज्वर और वातकफ के रोग नष्ट होते हैं। इस को "मध्वारिष्ट" कहते हैं।

नोट—शीशी पर काग लगा कर, उसे मिट्टीसे अथवा कभी-कभी गुड़ और चूनेसे और कभी-कभी शहद और चूने से बन्द कर देते हैं, इसी को "मुद्रा" कहते हैं। मतलब यह है, घड़े पर सराई रखकर, उसकी सन्धियों को मिट्टी और कपड़े से अथवा मिट्टी, रूई, राल और लोहे के मैल को खूब कूटकर लुगदी सी बनाकर, उसी लुगदी से, पुटीन लगाने की तरह, बन्द कर देने को भी मुद्रा कहते हैं। मुख ऐसा बन्द करना चाहिये, जिस से साँस न निकले।

(२७) बेलगिरी, श्योनाक, कुम्भेर, पाढल, अरणी, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, गोखरू, कटेरी, बड़ी कटेरी, हल्दी, जीवक, ऋषभक और चीता,—इन चौदह दवाओं को बीस-बीस तोले ले आओ। पीछे इन को ६४ सेर जल में डाल कर पकाओ। जब १६ सेर जल रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे इस छने हुए काढे में ३२ तोले पुराना गुड़ और ३२ तोले शहद मिला दो। इस के बाद फूलप्रियगू ४ तोले, मँजीठ ४ तोले, वायबिडङ्ग ४ तोले, मुलेठी ४ तोले, पीपल ४ तोले और सफेद लोध ४ तोले—इन छहोंको पीसकर मिला दो। शेषमें, घड़ेका मुख अच्छी तरह से बन्द करके, मुद्रा देकर, १५ दिन तक ज़मीन में गाड़ रखो। इस के बाद निकाल लो। इस को "दशमूल आसव" कहते हैं। यह आसव अग्नि को दीपन करता, रक्तपित्त, अफारा, कफ, हृदयरोग, पीलिया और शरीर की ग्लानि को नाश करता है।

नोट—आसव और अरिष्ट का भेद ऊपर के दोनों नुसखों से सहज में समझ सकोगे।

(२८) कालीमिर्च, सोंठ, पीपर, लौंग और अकरकरा—इन में से प्रत्येक को साढे तीन-तीन माशे लो और अफीम सात माशे लो। सब को कूट-पीस छान कर खरलमें डालो, साथ ही अफीम भी डाल दो और अदरख का रस दे-देकर घोटो। घुट जाने पर, चने-समान गोलियाँ बाँधो। एक-एक गोली सवेरे-शाम देने से कफ के दस्त और संग्रहणी आराम होती है।

सन्निपातज ग्रहणीकी चिकित्सा।

(२९) बेलगिरी, मोचरस, नेत्रवाला, नागरमोथा, इन्द्रजौ और कुडे की छाल—इन छहों को बकरी के दूध में डाल कर पकाने से जो दूध तैयार होता है, उस दूधके सेवन करने से सन्निपातज ग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है। परोक्षित है।

(३०) नागरमोथा, अतीस, बेलगिरी और इन्द्रजौ–इनको समान-समान लेकर, महीन कूट पीस और छान कर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको "शहत" में मिला कर चाटनेसे त्रिदोषजन्य संग्रहणी आराम हो जाती है। इसका नाम "मुस्तकादि चूर्ण" है।

नोट—सामान्य चिकित्सा में दोषों के अंशांश की कल्पना नहीं करनी पड़ती, केवल रोगकी पहचान करनी पड़ती है। दोषों के अंशांशकी कल्पना करनेकी अपेक्षा रोग को पहचानना सहज है। यह संग्रहणी रोग है, ऐसा जानना सहज है, पर वातज है या पित्तज है अथवा कफज है, इस में कितने अंश वातके, कितने पित्त के और कितने कफ के हैं, यह जानना बहुत कठिन है। सब वैद्य ऐसा कर नहीं सकते; इसीसे आचार्य्योंने सामान्य चिकित्सा लिखी है —

अंशांशं यत्र दोषाणां विवेक्तुं नैवशक्नुयात्।
साधारणीं क्रिया तत्र विदध्यात् चिकित्सक ॥

जहाँ वैद्य दोषों के अंशांशको न जान सके, वहाँ साधारण चिकित्सा करे। वही साधारण चिकित्सा हम आगे लिखते हैं —

सामान्य चिकित्सा

संग्रहणी नाशक नुसखे

जातीफलादि चूर्ण ।

(२१) जायफल, लौंग, इलायची, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, कपूर, सफेद चन्दन, सफेद तिल, बंसलोचन, तगर, आमले, तालीसपत्र, पीपल, हरड़, कलौंजी, चीता, सोंठ, बायबिडंग और कालीमिर्च—इन बीसों दवाओं को एक-एक तोले ले लो और धुली भाँग बीस तोले ले लो। कुल चालीस तोले माल को पीस कूट कर छान लो। पीछे इस चूर्ण की बराबर ही चालीस तोले मिश्री मिला लो और एक अमृतबान या चौड़े मुँह की साफ शीशी में भर कर रख दो। इस को "जातीफलादि चूर्ण" कहते हैं। इस के सेवन करने से संग्रहणी, खाँसी, श्वास, अरुचि, क्षय, और वातश्लेष्म का जुकाम—ये सब आराम होते हैं।

मात्रा और सेवन विधि—इस चूर्ण की मात्रा "शार्ङ्गधर" और "भावप्रकाश" में १ कर्ष या १ तोले की लिखी है। अगर रोगी को १ तोले की मात्रा खिलाई जाय, तो ४ माशे भाँग १ मात्रामें आती है। इतनी भाँग का बर्दाश्त करना सब किसीका काम नहीं है। हाँ, अँधाधुन्ध

भाँग पीने की आदत वाला बेशक बर्दाश्त कर सकेगा। थोडी भाँग पीनेवालों या कतई न पीनेवालोंके लिये तो सङ्कट खडा हो जायगा। इसलिये भाँग न पीने वालो को पहले १ माशे की मात्रा से यह चूर्ण आरम्भ कराना चाहिये। १ माशेकी मात्रा में कोई २॥ रत्ती भाँग आवेगी। अगर नशा न चढे, सह जाय, तो फिर बढाते जाओ और चार माशे तक बढाओ। इस की १ खूराक शहद के साथ चटानी चाहिये। संग्रहणी में सवेरे शाम दोनो समय इसे दे सकते हो। परीक्षित है।

नोट—संग्रहणी राजयक्ष्मा और खाँसी में इसे हमने आजमाया है। राजयक्ष्मा और खाँसी वालोंको हम सन्ध्या-समय इसे चटा कर ऊपरसे गरम दूध मिश्री मिला कर पिलाते थे। बडी अच्छी चीज है। इसकी मात्रा कभी अधिक न देनी चाहिये। बादी सरदी के जुकाम में एक मात्रा चटाकर गरम दूध पिलाना चाहिये।

(२) जातीफलादि चूर्ण।

(३२) जायफल, बायबिडङ्ग, चीता, तगर, तालीस-पत्र, सफेद चन्दन, सोंठ, लौंग, कलौंजी, कपूर, हरड, आमला, काली मिर्च, पीपर, बंस-लोचन, तज, तमाल-पत्र, सफेद इलायची और नागकेशर इन सबको एक-एक तोला लो। शुद्ध भुनी भाँग २८ तोले और मिश्री ४७ तोले लो। सबको कूट पीस छान कर रख लो। तीन या चार माशे चूर्ण माठे के साथ सेवन करो। इससे संग्रहणी नाश होती है।

नोट—यह भी "जातीफलादि चूर्ण" है। दालचीनी और सफेद तिल प्रभृति दो तीन औषधियों का इस मे और हमारे लिखे जातीफलादि चूर्ण में भेद है और कुछ नहीं। संग्रहणी में माठा हर तरह उपकारी है, इस में संशय नहीं। माठे का अनुपान सबसे अच्छा है। देवास-निवासी मैम्बर मोतीलाल किशनलालजीने भी इसे माठे के साथ ही देने की राय दी है। उन का आजमाया हुआ नुसखा है, अवश्य उपकारी होगा, इसी से हमने लिखा है।

(१) लाई चूर्ण।

(३३) शुद्ध गंधक १ तोला और शुद्ध पारा आधा तोला लेकर, दोनों को खरल में डालकर खरल करो। जब कजली तैयार हो जाय, उस में सोंठ, कालीमिर्च और पीपल का चूर्ण ३ तोले, पाँचों नोन १॥ तोले, भुनी हींग १ तोले, स्याह जीरेका चूर्ण १ तोले, सफेद ज़ीरे का चूर्ण १ तोले और सबसे आधी यानी ४॥ तोले भाँग मिला दो। इसी को "लाई चूर्ण" कहते हैं।

सेवन विधि—तीन माशे चूर्ण माठे के साथ या बेल के गूदे के साथ सेवन करना चाहिये। यह संग्रहणीमें परम हितकारी है। आजकल के से दुर्बल आदमियों को १ या १॥ माशे की मात्रा देनी चाहिये। जो बहुत ही कमज़ोर हों, उन्हें और भी कम मात्रामें यह दवा देनी चाहिये।

(२) लाई चूर्ण।

(३४) गन्धक १ तोला, शोधा हुआ पारा ६ माशे, इन की उत्तम कजली कर लो। पीछे इस में निम्नलिखित चीज़ें महीन पीस कर मिला दो :—सोंठ १ तोला, मिर्च १ तोला, पीपर १ तोला, सेंधानोन १॥ तोला, सञ्चल नोन १॥ तोला, विडनोन १॥ तोला, औदभिद नोन १॥ तोला, समन्दर नोन १॥ तोला, अजमोद २ तोला, भुना ज़ीरा २ तोला, भुनी हींग २ तोला, भुना सुहागा २ तोला, स्याह ज़ीरा २ तोला और भुनी भाँग ८ तोला—इन सब के मिलाते ही चूर्ण तैयार हो जायगा।

यह चूर्ण अग्नि दीपन करता तथा सब तरह की संग्रहणी और ... को आराम करता है। इन रोगों के सिवाय बवासीर, शूल,

क्षमिरोग और प्रबल यक्ष्माको निश्चय ही आराम करता है। यह चूर्ण रसायन, बुद्धि को प्रकाश करने वाला और अनेक रोगोंको नाश करने वाला है। परीक्षित है।

सेवन विधि—शास्त्र में इस की मात्रा ४ माशे की लिखी है। परन्तु हमने इसे १ माशेसे २ माशे तक रोगियोंको दिया और अच्छा फल पाया। इस की १ मात्रा माठे के साथ अथवा जभीरी नीबूके रस के साथ सेवन करनी चाहिये।

नोट—इस चूर्ण और ऊपर के लाई चूर्णमें विशेष भेद नहीं है। हमने इस चूर्ण को इसी रीतिसे बनाया और आजमाया है। संग्रहणी रोगमें यह चूर्ण और जाती-फलादि चूर्ण अव्यर्थ महौषधि है। ८० की सदी रोगी इन से आराम होते हैं।

कनक रस।



(३५) शुद्ध सिंगरफ, कालीमिर्च, शुद्ध गन्धक, पीपल, शुद्ध सुहागा, शुद्ध वत्सनाभ विष और शुद्ध धतूरे के बीज—इन सबको "भाँग के रस में" पूरे तीन घण्टों तक खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लेनी चाहियें। इस को "कनक रस" कहते हैं। इस रस से संग्रहणी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

सेवन विधि—बलाबल देखकर चौथाई या आधी गोली देनी चाहिये।

नोट—गन्धक, पारा, वत्सनाभविष, धतूरेके बीज और सिंगरफ वगैर: के शोधने की तरकीबें चि० च० दूसरे भाग के अन्त में लिखी हैं।

चित्रकादि वटिका।



(३६) चीता, पीपलामूल, जवाखार, पाँचोंनोन, त्रिकुटा, भुनी हींग, अजमोद और चव्य—इन सब को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलो। पीछे बिजौरे नीबू के रस में या अनार के रस में खरल करके गोलियाँ

बना लो। इनका नाम "चित्रकादि बटिका" है। आरम्भ में देने से ये गोलियाँ आम को पचातीं और जठराग्नि को दीपन करती हैं।

चन्द्रकलाचूर्ण।

(३७) चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, मिर्च, पीपल,—इन सातों को एक-एक तोले लो। कुड़े की छाल १६ तोले लो और चीते की छाल २ तोले लो। सब को मिलाकर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को १ मात्रामें दूना पुराना गुड़ मिलाकर, शीतल जलके साथ खानेसे पीलिया, ज्वर, अतिसार, संग्रहणी, अरुचि, वायुगोला, और प्रमेह नाश हो जाते हैं। इसका नाम "चन्द्रकला" चूर्ण है। परीक्षित है।

महाकल्याण गुड़।

(३८) पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, धनियाँ, वायबिडंग, अजवायन, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजमोद, नील, जीरा, सेंधानोन, रेहगवाँ नोन, समन्दरनोन, कालानोन, विरिया सचर-नोन, अमलतास का गूदा, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, कलौंजी, सोंठ और इन्द्रजौ—इन में से प्रत्येक को एक एक तोला लो। दाख १६ तोले लो, निशोथ ३२ तोले लो, गुड़ २२० तोले लो, तिलों का तेल ३२ तोले लो और आमलों का रस ३ सेर लो।

सब को मिलाकर, क़लईदार कड़ाही में डाल कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। अग्नि का बलाबल विचार कर, हर दिन, गूलर के फल के बराबर, आमले के बराबर अथवा बेर के बराबर खाओ। इसको "महा कल्याण गुड़" कहते हैं।

इस गुड़ के सेवन करने से सब तरह के ग्रहणी रोग, बीस प्रकार के प्रमेह, उरोघात, जुकाम, कमज़ोरी, मन्दाग्नि और सब तरह के

ज्वर नाश होते हैं। पीलिया, रक्तपित्त, मल की रुकावट, धातुक्षीण, अवस्थाक्षीण, स्त्री से क्षीण, क्षय से क्षीण और बाँझ स्त्री—इन सब को यह गुड परम हितकारी है।

कूष्माण्ड कल्याण गुड़

(३८) अच्छा पका हुआ पेठा लाकर छील लो और उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। बाद में तोल कर पाँच सेर पेठे के टुकड़े ले लो। ताम्बे की कड़ाही या देगची में २ सेर घी डालकर मन्दी-मन्दी आग लगाओ। जब घी आ जाय, तब पेठे के टुकड़े डाल दो और खूब मन्दी-मन्दी आग लगने दो।

पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, धनिया, वायविडङ्ग, सोंठ, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजमोद, इन्द्रजौ, ज़ीरा, सेंधानोन—इन सब को चार-चार तोले लो। निशोथ ३२ तोले, तिल का तेल ३२ तोले, गुड़ अढ़ाई सेर और आमलोंका स्वरस ३ सेर ले लो। सबको मिलाकर क़ायदे से पकालो। जब तक कलछी से न लगने लगे, मन्दी-मन्दी आग से पकाते जाओ। जब कलछी के लगने लगे, उतार लो। इसका नाम "कुष्माण्ड कल्याण गुड" है।

सेवन विधि—हर रोज़ अग्नि का बलाबल विचार कर, गूलर के समान, आमले के समान, अथवा बेर के समान यह "गुड" सेवन करना चाहिये। यह गुड सब तरह के ग्रहणी रोग, कोढ़, बवासीर, भगन्दर, ज्वर, अफारा, हृदय-रोग, वायुगोला, उदर-रोग, विशूचिका, कामला, पीलिया, बीस प्रकार के प्रमेह, वातरक्त, विसर्प, दाद, राजयक्ष्मा, हलीमक, वातपित्त और समस्त कफ के रोगों को दूर करता है। रोगक्षीण, आयुक्षीण और स्त्री-प्रसङ्ग से क्षीण पुरुषों के लिये यह गुड परम हितकारी है तथा बाँझ स्त्री को पुत्र देने वाला, वीर्य्य पैदा करने वाला, बलकारक, पुष्टिकारक और अवस्था को स्थापन करने वाला है।

ग्रहणी कपाट रस ।

(४०) रूपे की भस्म, मोती, सुवर्ण-भस्म और लोहा-भस्म—इन चारोंको एक-एक भाग लो। शुद्ध गन्धक २ भाग और शुद्ध पारा ३ भाग लो। पीछे इन सबको खरल में डालकर खरल करो। इसके बाद, खरल किये मसाले को कैथे के रस में घोटकर, हिरनके सींग में दाब-दाब कर भर दो। इसके बाद, उस सींग पर कपड-मिट्टी करके, आरने कण्डो की मध्यम अग्नि दो, जब शीतल होजाय, निकाल लो।

उसे फिर खरल में डालकर खिरेंटी के रस की ७ पुट दो। इसके बाद भाँगे के स्वरस में ३ भावना दो। उसके बाद लोध, अतीस, नागरमोथा, धाय के फूल, इन्द्रजौ और गिलोय के स्वरस में तीन-तीन भावना दो। जिस दवा का स्वरस न निकले, उसका काढा बनाकर, उस में इस रसको घोटो। जब सूखने पर आवे, तब एक-एक माशे की गोलियाँ बना लो। इसी को "ग्रहणी कपाट रस" कहते हैं।

इसकी १ गोली काली मिर्च के चूर्णके साथ "शहद" में मिला कर सेवन करने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी रोग नाश होते तथा अग्नि दीप्त होती है।

ग्रहणी वज्र कपाट रस।

(४१) पारे की भस्म, अभ्रक-भष्म, शुद्ध गन्धक, जवाखार, शुद्ध सुहागा, अरनीकी जड और बच—इन सातों को बराबर-बराबर लेकर पीस लो। पीछे एक दिन अरनी के रस में खरल करो, एक दिन जँभीरी नीबू के रस में खरल करो और तीसरे दिन भाँगरे-के रस में खरल करके गोला बनालो।

उस गोलेको सुखा कर, लोहे की कड़ाही में रखकर, ऊपर से

मिट्टीका सरावा रख कर ढक दो और कड़ाही तथा सरावे की सन्धियों को कपड़-मिट्टी से बन्द कर दो। पीछे कड़ाही चूल्हे पर रखकर, नीचे मन्दी-मन्दी आग चार घड़ी या १ घण्टा ३६ मिनट तक लगाओ, पीछे चूल्हे से कड़ाही को उतार लो। जब कड़ाही शीतल हो जाय, गोलेको निकाल लो। इसके बाद गोलेके वज़न के बराबर अतीस का चूर्ण और मोचरस का चूर्ण मिला दो और खरल में डाल कर, कैथे के रस की सात पुट और भाँग के रस की सात पुट दो। इसके बाद उसे धाय के फूलों के रस में घोटो। उसके बाद इन्द्रजौ के रस में, उसके बाद नागरमोथा के रस में, उसके बाद लोध के रस में, उसके बाद बेलफल के रस में और शेष में गिलोय के रस में घोटो। जब लगुदी ज़रा गोली रहे, तब चार-चार माशे की गोलियाँ बना लो। इसको "ग्रहणी वज्र कपाट रस" कहते हैं।

जिसे संग्रहणी रोग हो, उसे यह रस मद्य के साथ देना चाहिये और उसके ऊपर तत्काल चीता, सोंठ, बिड़नोन, बेलगिरी और सेंधानोन—इन पाँचोंका चूर्ण गरम जलके साथ खिलाना चाहिये। इससे सब तरह की संग्रहणी आराम हो जाती है।

संग्रहणी कपाट रस

(४२) शुद्ध गंधक, शुद्ध पारा, अभ्रक-भस्म, शुद्ध सिंगरफ, खार, जायफल, बेलगिरी, मोचरस, सिहोसुहरा, अतीस, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, धाय के फूल, घी में सिकी हरड़, कैथ, अजमोद, चीते की छाल, अनारदाना, इन्द्रजौ, शुद्ध धतूरे के बीज, गजपीपल और अफीम—इन सब को समान-समान ले लो। पहले गंधक और पारे को घोट कर कज्जली बनालो। इसके बाद उसमें अभ्रकभस्म, सिंगरफ और खार मिला कर घोटो। उधर शेष दवाओं को कूट पीस कर चूर्ण बनालो। चूर्ण तैयार होने पर, खरल की दवाओं में चूर्ण को मिलाकर, पोस्त के

डोडों का रस ऊपर से डाल-डाल कर घोटो, जब घुट जाय, काली-मिर्च के समान गोलियाँ बना, छायामें सुखालो।

रोगनाश—इस रस से अतिसार और संग्रहणी रोग नाश होते हैं। अनुपान दही या माठा अथवा बेल का अर्क। मात्रा—४ चाँवल से १ रत्ती तक। समय—सवेरे शाम।

कपित्थाष्ट चूर्ण।

(४३) कैथा का गूदा ८ तोले, मिश्री ६ तोले, अनार दाना ३ तोले, इमली ३ तोले, बेलगिरी ३ तोले, धाय के फूल ३ तोले, अजमोद ३ तोले, पीपल ३ तोले, काली मिर्च १ तोले, ज़ीरा १ तोले, धनिया १ तोले, पीपरामूल १ तोले, नेत्रवाला १ तोले, साभर नोन १ तोले, अजवायन १ तोले, दालचीनी १ तोले, इलायची के दाने १ तोले, तेजपात १ तोले, नागकेशर १ तोले, चीते की छाल १ तोले और सोंठ १ तोले,—इन सबको कूट-पीस कर चूर्ण कर लेना चाहिये। इसका नाम "कपित्थाष्ट चूर्ण" है। इसके सेवन से कण्ठ के रोग, अतिसार, संग्रहणी, क्षय और गुल्म आराम होते हैं।

वृहत् दाड़िमष्टक।

(४४) अनारदाना ३२ तोले, मिश्री ३२ तोले, पीपल ४ तोले, पीपरामूल ४ तोले, अजमोद ४ तोले, काली मिर्च ४ तोले, धनिया ४ तोले, ज़ीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, बंसलोचन १ तोले, दालचीनी ८ माशे, तेजपात ८ माशे, इलायची के बीज ८ माशे और नागकेशर ८ माशे—इन सबको कूट-पीस कर चूर्ण कर लेना चाहिये। इसको "वृहत् दाड़िमष्टक" कहते हैं। इसके सेवन करने से अतिसार, क्षय, गुल्म, संग्रहणी, कण्ठरोग, मन्दाग्नि, पीनस और खाँसी—ये रोग आराम हो जाते हैं।

चपलावटी।

(४५) शोधा हुआ कुचला ३माशे और लौंग १माशे—इनको खरल में डालकर, अदरख के रस में घोटकर, चने-बराबर गोलियाँ बना लो। हर बार एक गोली शहद में मिला कर चटाने से संग्रहणी, आम मरोड़ी के दस्त और शीत-ज्वर नाश होते हैं। परीक्षित है।

लवणभास्कर चूर्ण। ✓

(४६) समन्दर नोन ८ तोले, सञ्चर नोन ५ तोले, विड नोन २ तोले, सेंधा नोन २ तोले, धनिया २ तोले, पीपल २ तोले, पीपरा-मूल २ तोले, काला ज़ीरा २ तोले, तेजपात २ तोले, नागकेशर २ तोले, तालीसपत्र २ तोले, अमलवेत २ तोले, कालीमिर्च १ तोले, ज़ीरा १ तोले, सोंठ १ तोले, अनारदाना सूखा ॥ तोले, दालचीनी ६ माशे और इलायची के बीज ६ माशे—इन को कूट-पीसकर चूर्ण कर लो।

इसका नाम "लवण भास्कर चूर्ण" है। इसकी मात्रा ४ माशे की है। इसके सेवन से वातकफ से होने वाला गोला, तिल्ली, उदर-रोग, बवासीर, संग्रहणी, मन्दाग्नि, दस्तकब्ज़, सूजन, शूल, श्वास, खाँसी, आम वात प्रभृति रोग आराम होते हैं। इस से अग्नि तेज़ होकर, भोजन पचता है। यह चूर्ण दही के पानी, दही की मलाई, माठा और शराब वगैर. से सेवन किया जाता है। गायकी छाछ के साथ लेने अथवा सौंफ के अर्क़ के साथ लेने से संग्रहणी और मन्दाग्नि रोग आराम होते हैं। गरम जल के साथ लेने से दस्त साफ होता है।

हंस पोटली रस।

(४७) कौड़ीकी भस्म, सौंठ, मिर्च, पीपर, भुना सुहागा, शुद्ध सींगिया विष, शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारा—इन सब को बराबर-बरा-

बर लेकर, नीबू के रस की भावना देकर, एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। इन में से एक गोली काली मिर्च और घी के साथ सेवन करने से संग्रहणी रोग आराम होता है। पथ्य—माठा और भात। इसका नाम "हंस पोटली रस" है।

नोट—मात्रा बलाबल देखकर देनी चाहिये। हमारी रायमें रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ ठीक होंगी। हमने यह रस "रसेन्द्र चिन्तामणि" से लिया है। उस में बड़ी तारीफ लिखी है, हमारा आजमाया नहीं है। सौंखिया और पारा वगैर के शोधनेकी तरकीबें "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भाग के अन्तमें लिखी हैं।

शम्भुनाथ रस।

(४८) शुद्ध हरताल, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध हिंगलू, शुद्ध संखिया, शुद्ध सुहागा, शुद्ध बच्छनाग और फिटकरी—ये सब एक एक माशे, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और शुद्ध अफीम ये सब सात-सात माशे लो।

जो दवाएँ कूटने-पीसने लायक हों, उन्हें कूट-पीस लो। फिर गन्धक और पारे की काजली करके, यानी खरल में घोट कर अलग रख लो। इसके बाद सब को एक जगह कर लो और खरल में डाल कर, सात दिन भाँग के रस में घोटो। फिर सात दिन निगुड के रस में, फिर सात दिन नीम के रस में और फिर सात दिन धतूरे के रस में घोटो। इस तरह २८ दिन तक घुटाई हो जाने पर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

पुरानी संग्रहणी में बारम्बार ज्वर चढ आता है और बहुत ही भयङ्कर संग्रहणी में तो कभी ज्वर उतरता ही नहीं। ऐसी दशा में इस "शम्भुनाथ रस" की गोलियाँ, अदरख के रस में, लेने से ज्वर बहुत जल्दी हलका हो जाता है तथा दस्त भी बन्द हो जाते हैं।

कफहरिहर रस।

(४८) कॉफी, चाय, सोंठ, काली मिर्च, पीपर, कोको, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, खाने के काम में आने वाला पीला रङ्ग और अफीम—

सबको बराबर-बराबर लेकर,कूट-पीसकर छान लो और शीशीमें रख दो। इसके उचित अनुपानसे देनेसे खांसी, कफ,दम, शीत ज्वर, अतिसार, संग्रहणी और हृद्रोग आराम होते हैं। मात्रा २ रत्तीकी है।

दुग्ध वटी।

(५०) अफीम १॥ माशे,शुद्ध वच्छनाग विष १॥ माशे,लोहभस्म ५, रत्ती और अभ्रक भस्म ६ रत्ती—सबको एकत्र दूधमें घोट कर, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। सबेरे शाम एक-एक गोली दूध के साथ सेवन करनेसे सूजन सहित पुरानी संग्रहणी, विषम ज्वर,अनेक तरह की सूजन, मन्दाग्नि और पाडु रोग आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

सूचना—जब तक ये गोलियाँ सेवन करो, नमक और जल कृतइ छोड़ दो। खाने और पीने के लिये केवल दूध को काम में लाओ। प्यास लगनेपर भी दूध ही पीओ। जब तक इस तरह पथ्य पर चल सको, अच्छी बात है। खूब लाभ होगा।

अहिफेनादि वटी।

(५१) अफीम २ माशे, जायफल १ माशे, शुद्ध सुहागा १ माशे, अभ्रक भस्म १ माशे और शुद्ध धतूरेके बीज १ माशे—इन सबको खरल में डालकर, ऊपर से प्रसारिणी के पत्तोंका रस दे देकर घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से आमातिसार, रक्तातिसार और संग्रहणी में अवश्य लाभ होता है। प्रत्येक वार १ गोली शहद में मिलाकर देनी चाहियें। परीक्षित है।

नोट—गर्भवती को अफीम या अफीम-मिली दवा कभी न देनी चाहिये।

दूसरी दुग्धवटी।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठा विष, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म,

लौहभस्म, शुद्ध हरताल, शुद्ध सिंगरफ, सेमर का खार और अफीम —इन सब को एक-एक माशे लेकर, खरल में डाल, दूध से घोटो और आधी-आधी रत्ती की गोलियाँ बना लो।

सेवन विधि—इन गोलियोंके सेवन करनेसे सूजनवाली संग्रहणी में निश्चय ही फायदा होता है। विशेष कर, पुरानी संग्रहणी में इन गोलियों से बहुत लाभ होते देखा है। पर इन गोलियोंके सेवन करने में इस बात का पूरा विचार रखना चाहिये, कि रोगी नमक और पानी भूल कर भी न पावे। प्यास लगे तोभी पानी की जगह दूध देना चाहिये। अगर दूध से रोगीका जी जब जाय, तो दूध और भात देना चाहिये। अगर पानी बिना रोगी रहे ही नहीं, हज़ार बार कहने पर भी पानी ही पानी चिल्लावे, तो गरम पानी देना चाहिये, मगर बहुत थोड़ा।

(५२) सज्जीखार, जवाखार, खारीनोन, कालानोन, सैंधानोन, सोंठ मिर्च, पीपल, चव्य, अजमोद, चीता, पीपलामूल, भुनीहींग, ज़ीरा और सौंफ—इन १५ दवाओं को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लेना चाहिये। इस चूर्ण को निवाये जल, अथवा झड़बेरी के काढ़े के साथ अथवा माठे के साथ सेवन करने से हृदयरोग, भूख न लगना, वायुगोला, बवासीर और संग्रहणी—ये रोग आराम हो जाते हैं। और दवाओंसे यह दवा उत्तम है। परीक्षित है।

(५३) बादाम की गिरी, नारियल की गिरी, छुहारा, जायफल चरस और अफीम—ये सब बराबर बराबर ६।६ माशे ले लो। चरस को घी में भूनकर, शेष सब के साथ मिलाकर, कूट-पीसकर, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। प्रत्येक दिन एक गोली चाँवलों के पानी के साथ खिलाने से संग्रहणी आराम हो जाती है। सात दिन तक यही गोलियाँ खिलानी चाहियें। खाने को पुराने चाँवल का भात वगैर हल्का भोजन देना चाहिये। एक हकीम साहब इसे अपना आज़माया हुआ नुसखा बताते हैं।

(५४) कपूर, शोधा हुआ सिगरफ, अफीम, नागरमोथा, इन्द्र-जौ और जायफल—इन को एक-एक माशे लेकर, अदरख के रस में घोटकर, मटर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों से सब तरह की संग्रहणी और अतिसार तथा ज्वरातिसार नाश होते हैं। परीक्षित है।

(५५) शुद्ध सुहागा २ माशे, शुद्ध सिगरफ २ माशे और अफीम ४ माशे—इन को खरल में डालकर, जल के साथ घोटो और काली मिर्च के समान गोलियाँ बना लो। अगर रात को दस्त ज़ियादा होते हों, तो शहद के साथ एक-एक गोली रोगीको खिलाओ। अगर दिन में ज़ियादा दस्त होते हों, तो नीबू के रस के साथ गोली खिलाओ। इन गोलियोंके कुछ दिन सेवन करने से सब तरहकी संग्रहणी और वायु शान्त होती है।

(५६) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, नीमका गोंद, शुद्ध भाँग, ब्रह्म-दण्डी—ऊँटकटारी के पत्ते शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और अफीम—ये सब चीज़ें ६।६ माशे ले लो और कूट-पीस कर छान लो। इसके बाद, दो रत्ती फी तोले के हिसाब से, नौ रत्ती कस्तूरी मिला कर, उसे शीशी में रख दो। यह चूर्ण सब तरहकी सरदी और दस्तों की बीमारी में अच्छा है। मात्रा १ से २ रत्ती तक।

गरीबी नुसख़े।

(५७) काली मिर्च १ तोला, चीते की जड़ की छाल १ तोला और सेंधा नोन एक तोला—इन तीनों को कूट पीस छानकर चूर्ण बना लो। इस में से ३ माशे चूर्ण माठामें डाल कर पीने से संग्रहणी, मन्दाग्नि, बवासीर, गुल्म और उदर रोगों में लाभ होता है। परीक्षित है।

(५८) दशमूल और सोंठ का काढ़ा बनाकर पीने से संग्रहणी,

सूजन, अतिसार, खाँसी, अरुचि, कण्ठ-रोग और हृदय रोग आराम होते हैं। सूजनवाली पुरानी संग्रहणी में परीक्षित है।

(५८) हींग, जहरमोहरा-खताई, मिर्च और अफीम—सब चीज़े बराबर-बराबर लें, खरलमें डाल, घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली नीबू के रस के साथ सेवन करने से संग्रहणी और सब तरह के उदर रोग नाश होते हैं।

(६०) शीतल-चीनी १ तोला, बड़ी इलायची १ तोला और सोना गेरू १ तोला—इन सब को कपास के पत्तों के रस में घोटकर, बेरके बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली, जलके साथ लेने से संग्रहणी आराम होती है। परीक्षित है।

(६१) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, लौंग, आक की जड़ की छाल और अफीम—इन सब को कूट पीस छान कर शीशी में रख दो। इसके सेवन से खाँसी, दम, कफ, अतिसार, संग्रहणी और कफ-पित्त के रोगों में बड़ा लाभ होता है। मात्रा १ से २ रत्ती तक।

(६२) कच्चे बेल का गूदा और सोंठ का चूर्ण बराबर-बराबर लेकर और उनमें दूना पुराना गुड़ मिलाकर, उनको लुगदी सी कर लेनी चाहिये। इसको बलाबल अनुसार सेवन करके, ऊपर से माठा भोजन करनेसे, अत्यन्त उग्र संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

(६३) बेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सुगन्धवाला और मोचरस—इनको बकरी के दूध में डालकर, दूध को पकाकर, तीन दिन तक, पीने से अत्यन्त बढ़ी हुई, बहुत पुरानी, आम और रुधिर—खून वाली असाध्य संग्रहणी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—चार तोले सब दवायें लेकर, ३२ तोले दूध में डाल देनी चाहियें और दूध से चौगुना १२८ तोले (१ सेर १० छटाँक) जल भी उसमें मिला देना चाहिये। पीछे मन्दाग्नि से दूध को पकाना चाहिये। जब सब पानी जल जाय, केवल दूध मात्र रह जाय, उतार कर छान लेना चाहिये। पीछे वही दूध पीना चाहिये

(६४) चीता, चव्य, बेलगिरी और सोंठ—इन चारों को बराबर-

बराबर लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को खाने से दुखदायी संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

(६५) कालानोन, चीते की छाल और कालीमिर्च—इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को माठे के साथ सेवन करने से बवासीर, संग्रहणी, वायुगोला, उदर-रोग, तिल्ली और भूख का न लगना—ये सब नाश हो जाते हैं।

नोट—यह चूर्ण लगातार सेवन करने से उक्त रोगों में बड़ा लाभ दिखाता है। जल्दबाजी न करनी चाहिये। कालेनोनके स्थान में सांभरनोन भी लेते हैं।

(६६) तीन माशे आम के फूल, महीन पीस कर, बासी जल के साथ पीने से संग्रहणी जाती है।

(६७) चार या छै माशे राल, छै माशे गुड़ या चीनीमें मिलाकर, खाने और ऊपर से बकरी का दूध पीने से संग्रहणी नाश होती है।

(६८) बबूलका गोंद नौ माशे, आधपाव शीतल जलके साथ, ३ दिन, खानेसे संग्रहणी जाती है।

नोट—अगर दस्त जियादा होते हों, तो इसी गोंदकी १ खूराकमें ३ माशे "ईसबगोल" मिला कर खाने से संग्रहणी फौरन चली जाती है।

(६९) खजूरकी फल ६ माशे, गायके दो तोले दही के साथ खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७०) ६ माशे कतीरा रात को आधपाव जल में भिगो दो और सवेरे मल कर, उसमें एक तोला शक्कर मिलाकर, खाजाओ। इससे भी संग्रहणी चली जाती है।

(७१) लिहसौढे की तीन माशे नर्म-नर्म पत्तियाँ पीस कर खाने से संग्रहणी जाती है।

(७२) सफेद जीरा आधा तोला, गाय के दो तोले दहीमें मिला कर, खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७३) तीन दाने चिकनी सुपारीकी राख, दो तोला गायके दही में, खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७४) काली मूसली ६ माशे, खूब महीन पीसकर, आध पाव गाय की छाछ के साथ पीने से संग्रहणी जाती रहती है।

(७५) दो तोले मसूर १५ तोले जल में भिगो दो और पीछे काढा बनाओ। जब तिहाई जल रह जाय, उसमें ६ माशे बेलगिरी मिला दो। जब वह गल जाय, उतार कर छान लो और शीतल करके पीलो। इससे संग्रहणी, पीलिया, कामला, आम, और कोख का दर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

(७६) अफीम और केशर "शहद" में घिसकर एक चाँवल भर देने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी नाश हो जाते हैं।

(७७) दो माशे भाँगको भूनकर, ३ माशे शहतके साथ चाटनेसे संग्रहणी नाश हो जाती है।

(७८) माठे में सोंठ और कालानोन डालकर पीने से संग्रहणी नाश हो जाती है।

नोट—ग्रहणी रोगमें, मल न उतरने की हालत में, कालानोन और अजवायन बराबर-बराबर लेकर और पीसकर, तीन-तीन माशे फांक कर, गरम जल पीनेसे दस्त साफ होता है। अथवा सेंधानोन गाय के घी में मिला कर सेवन करने से भी मल पतला होकर निकल जाता है।

(७९) अफीम १ माशे और सीपका चूना १ माशे,—दोनोंको पानी में पीस कर, मसूरके दाने-समान गोलियाँ बनालो। सवेरे शाम, एक-एक गोली खाने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी रोग आराम हो जाते हैं।

(८०) काली मूसली का चूर्ण छाछ में अथवा चाँवलोंके धोवनमें मिलाकर पीनेसे संग्रहणी नाश हो जाती है, पर ऊपरसे छाछ मिला कर भात खाना जरूरी है। परीक्षित है।

—※—

त्याज्य संग्रहणी रोगी।

वृद्धस्य शोफयुक्तस्य गतवह्निबलस्यच।
ग्रहण्यार्त्तस्य भिषजा क्रिया त्याज्या यशोर्थिना॥

यश चाहने वाला वैद्य ऐसे संग्रहणीवालेका इलाज न करे, जो बूढ़ा हो,जिसके सूजन आरही हो और जिसकी पाचन-शक्ति नष्ट हो गई हो।

संग्रहणी और अतिसार में भेद।

बङ्गसेन प्रभृति अनेक ग्रन्थों के अनुवादक "वैद्य"-सम्पादक, पण्डितवर श्रीमान् शङ्करलाल हरिशङ्करजी लिखते हैं :—

"अतिसार शरीरकी जलीय धातुके क्षुब्ध होनेसे उत्पन्न होता है, पर संग्रहणी शरीर की ग्रहणी कलाके दूषित होनेसे उत्पन्न होती है। यद्यपि अतिसार और संग्रहणी दोनों ही अन्त्र-सम्बन्धी—आँतों के रोग हैं, किन्तु संग्रहणीमें ग्रहणी कलाके दूषित होनेसे अर्थात् ग्रहणी नामक आँतकी ग्राहिणी शक्तिके ह्रास होनेसे परिपाक यन्त्र खराब हो जाता है, लेकिन अतिसार में सम्पूर्ण देह की जलीय धातु के क्षुभित होने से परिपाक-यन्त्रकी क्रिया खराब होती है—यन्त्र में कुछ विकृति नहीं होती। इसके सिवाय, अतिसार में पतला मल उतरता है, किन्तु संग्रहणी में ऐसा कोई नियम नहीं है। संग्रहणीमें कभी गाढ़ा, कभी बँधा हुआ और कभी पतला मल उतरता है।

आमातिसारमें पेटमें शूल, ऐंठनी, शरीर में भारीपन और बेचैनी आदि जो लक्षण होते हैं,वे संग्रहणीमें नहीं होते। संग्रहणी में भी पेट और आँतों में पीड़ा होती है, परन्तु आमातिसार की अपेक्षा बहुत कम। आमातिसार में क्षुधा—भूख एकदम कम हो जाती है, पर संग्रहणी में ऐसा नहीं होता। संग्रहणी में कभी-कभी अत्यन्त भूख

लगती है और सब प्रकार के रसों को सेवन करने की इच्छा बलवती होती है। आमातिसार में अनेक प्रकार की धातुएँ अपक्व—आमयुक्त —मल के रूप में निकलती हैं, परन्तु संग्रहणी में केवल अपक्व या पक्व मल ही निकलता है। इस के सिवा, संग्रहणी में आमातिसारकी समान मलमें विविध वर्णता, आम गन्धि आदि लक्षण भी नहीं होते।

नोट—अतिसार, आमातिसार और संग्रहणी एवं प्रवाहिका और आमातिसार तथा रक्तार्श और रक्तातिसार प्रभृति इन कई रोगोंमें अन्तर जरूर है, पर वह अन्तर बड़ी बारीक नजरसे जाना जाता है, इसीसे हमने इनका अन्तर खूब खुलासा करके लिख दिया है। प्रवाहिका और आमातिसार का अन्तर उधर अतिसार-वर्णन के अन्तिम पृष्ठमें लिख आये हैं। संग्रहणी और आमातिसारका अन्तर ऊपर लिखकर दिखाया है। वैद्यक-सीखने वालोंको यह अन्तर खूब अच्छी तरह समझ-समझकर हृदयङ्गम कर लेना चाहिये, जिस से रोग-परीक्षा या मर्ज की तशखीश में भूल न हो। वैद्य का पहला और मुख्य काम रोग-परीक्षा ही है। रोग-परीक्षा ठीक होनेसे ही चिकित्सामें सफलता हो सकती है। इन भेदों को तथा औरभी बहुतसी जानने योग्य बातों को आगे हम "प्रश्नोत्तर" के रूपमें भी दिखलाते हैं।

परमावश्यक प्रश्नोत्तर।

प्र० (१) संग्रहणी और अतिसार किस तरह होते हैं?

उ०—संग्रहणी ग्रहणी नामक आँत के खराब होने से होती है, पर अतिसार शरीर की जलीय धातु के क्षुब्ध होने से होता है।

प्र० (२) क्या अतिसार और संग्रहणी दोनोंही आँतोंके रोग नहीं हैं?

उ०—बेशक, दोनों ही आँतों के रोग हैं।

प्र० (३) अगर दोनों ही आँतों के रोग हैं, तो भेद क्या है?

उ०—संग्रहणी में परिपाक-यन्त्र खराब हो जाता है, पर अतिसार में परिपाक-यन्त्र खराब नहीं होता, उसकी क्रिया मात्र खराब होती है।

प्र० (४) संग्रहणी और अतिसार के दस्तों में क्या भेद है?

उ०—अतिसार में पतला मल उतरता है, किन्तु सग्रहणी में ऐसा कोई नियम नहीं है। सग्रहणी में कभी गाढा, कभी बँधा हुआ और कभी पतला मल उतरता है। कभी दस्त बन्द हो जाते हैं और कभी फिर होने लगते हैं।

प्र० (५) सग्रहणी और अतिसार के लक्षणों मे क्या भेद है?

उ०—अतिसारमें पेटमें दर्द, मरोडी, ऐंठनी, शरीरमें भारीपन और बेचैनी आदि लक्षण होते हैं, सग्रहणी में भी पेट और आँतों में पीडा होती है, परन्तु अतिसार की अपेक्षा बहुत कम।

प्र० (६) अतिसार में तो भूख एकदम से मारी जाती है, क्या संग्रहणीमें भी भूख नहीं लगती?

उ०—आमातिसारमें भूख बन्द हो जाती है, खानेका नाम भी बुरा लगता है, पर सग्रहणी में कभी कभी बडी भूख लगती है और रोगी तरह तरहके मीठे खट्टे आदि रस खाना चाहता है।

प्र० (७) सग्रहणी और आमातिसार के मल में क्या भेद है?

उ०—आमातिसारमें अनेक प्रकारकी धातुयें अपक्व (आमयुक्त) मल-रूप में निकलती हैं, परन्तु सग्रहणी में केवल अपक्व या पक्व मल ही निकलता है। इस के सिवा, सग्रहणी में आमातिसार की तरह मल में विविध रङ्ग और कच्ची दुर्गन्धि आदि लक्षण नहीं होते।

प्र० (८) आमातिसार और प्रवाहिका के मल में क्या अन्तर है?

उ०—आमातिसारमें अनेक प्रकारके पतले पदार्थ कच्चे मलके साथ निकलते हैं, किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या खून मिला कफ निकलता है।

प्र० (९) प्रवाहिका और सग्रहणीको अङ्गरेजीमें क्या कहते हैं?

उ०—प्रवाहिका को डिसेन्ट्री और सग्रहणी को क्रॉनिक डिसेन्ट्री कहते हैं।

प्र० (१०) वैद्य को कैसे संग्रहणी-रोगीका इलाज न करना चाहिये?

उ०—बूढ़े, पाचन शक्ति नष्ट हो जानेवाले और सूजन वाले संग्रहणी-रोगी का इलाज करने से वैद्य की बदनामी होती है।

प्र० (११) क्या वृद्ध मनुष्यकी संग्रहणी आराम नहीं होती?

उ०—बेशक, बूढ़ेकी संग्रहणी आराम नहीं होती। यदि हो भी जाती है, तो जड़ से आराम नहीं होती। कहा है:—

॥ वृद्धस्य नूनं ग्रहणीविकारो हन्त तनू नो विनिवर्त्ततेच॥

बूढ़े का ग्रहणी रोग हरगिज नहीं जाता। यदि दैवयोग से चला भी जाता है, तो निर्मूल नहीं होता।

प्र० (१२) अतिसार आराम होने पर संग्रहणी कैसे हो जाती है?

उ०—अतिसार आराम हो जाने पर भी यदि मन्दाग्नि वाला मनुष्य कुपथ्य सेवन करता है, तो अग्नि, दूषित होकर, ग्रहणी को दूषित कर देती है। ग्रहणी के दूषित होने से संग्रहणी हो जाती है।

प्र० (१३) इस रोग का नाम संग्रहणी क्यों रखा गया है?

उ०—क्योंकि यह ग्रहणी नामक आँत के दूषित होने से होती है।

प्र० (१४) क्या ग्रहणी रोग और संग्रहणी रोग में कुछ भेद है?

उ०—हाँ, भेद है, जब ग्रहणी आम वात का संग्रह करती है, तब ग्रहणी रोग को संग्रह ग्रहणी या संग्रहणी कहते हैं।

प्र० (१५) ग्रहणी रोग भारी है या संग्रहणी?

उ०—ग्रहणी से संग्रहणी भयङ्कर है।

प्र० (१६) क्या संग्रहणी में नित्य एक नियम से दस्त नहीं होते?

उ०—नहीं, संग्रहणी में पन्द्रह दिन में, महीने भर में, दस दिन में अथवा नित्य पतला, गाढ़ा, थोड़ा, चिकना, कच्चा, आवाज और थोड़ी वेदना के साथ मल उतरता है।

प्र० (१७) संग्रहणी दिन में कुपित रहती और रात को शान्त रहती है, इसका क्या कारण है?

उ०—सग्रहणी दिन में कुपित रहती और रात में शान्त रहती है, यह व्याधि का प्रभाव है।

प्र० (१८) संग्रहणी के सिवा ग्रहणी रोग का और भी कोई भेद है ?

उ०—हाँ, घटीयन्त्र।

प्र० (१९) घटीयन्त्र नाम क्यों पड़ा ?

उ०—जिस तरह रहँट के घड़े में से पानी निकलते समय 'घग घग" आवाज होती है उसी तरह "घटी यन्त्र" रोग में, मल उतरते समय, "घग-घग" आवाज आती है, इसीसे उस का नाम "घटी-यन्त्र" रखा गया है।

प्र० (१९) क्या घटीयन्त्र रोग असाध्य है ?

उ०—हाँ, घटीयन्त्र असाध्य ग्रहणी रोग है। उसके शरीर में व्याप्त होने पर मृत्यु ही होती है।

प्र० (२०) क्या सग्रहणी में भी अतिसार की तरह सामता और निरामता—कच्चापन और पक्कापन होता है ?

उ०—हाँ, संग्रहणी में भी अतिसार की तरह कच्चेपन और पक्के-पन का खयाल करना पड़ता है। अतिसार की तरह ही आम को पचाना होता है।

मतलब यह है, कि सग्रहणी रोगकी भी अपक्व अवस्थामें यानी कच्चे रहने की हालतमें मल रोकने वाली दवा न देनी चाहिये। अपक्व अवस्थामें पाचक दवा और पथ्य देना चाहिये। जब आम पच जाय, तब दस्त रोकने वाली दवा देनी चाहिये। आम पचानेके लिये सामान्य चिकित्सामें लिखी "चित्रकादि गुटिका" देना अच्छा है। अथवा धनिया, अतीस, नेत्र-वाला, अजवाइन, नागरमोथा, सोंठ, बरियारा, सरवन, पिथवन और बेलगिरी—इन दस दवाओं का काढ़ा पिलाना चाहिये। इस काढ़ेसे आम पच कर अग्नि तेज होती है। अथवा सोंठ, नागरमोथा, इलायची और गिलोय—इन चारों का काढ़ा देना चाहिये। आम पचाने के लिये ये तीनों नुसखे परीक्षित हैं।

प्र० (२१) ग्रहणी रोग में आम को पचाने के लिये क्या पथ्य देना चाहिये ?

उ०—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, और सोंठ—इनसे बनायी पेया और तक्र देना चाहिये। कैथा, बेलगिरी, पट्टी नोनिया, छाछ और अनार के रस से पकाई यवागू आम को पचाती और गाढ़ा करती है।

प्र० (२२) सग्रहणी रोग में कौन-कौन चीज़ें हितकारी हैं ?

उ०—अग्नि-दीपक पञ्चकोल—पीपल,पीपलमूल, चव्य, चीता और सोंठ—से बना हुआ अन्न पान, छाछ, पेया, यवागू,मण्ड और यूष प्रभृति हलके अन्न सग्रहणी में हितकारक हैं।

प्र० (२३) पेया और यवागू आदि बनाने की विधि कहाँ लिखी है ?

उ०—"चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग में।

प्र० (२४) वातज, पित्तज और कफज सग्रहणी में क्या अन्तर है ?

उ०—(१) बादी की सग्रहणी में बहुत देर में और बड़े कष्ट से पतला, सूखा और कच्चा मल निकलता है (२) पित्त की सग्रहणी में पीला, बहुत ही गर्म और बदबूदार मल निकलता है। (३) कफकी सग्रहणी में चिकना सफेद और कफ-मिला मल उतरता है।

नोट—वातज संग्रहणी में पहिले मल और पीछे आँव निकलता है। कभी-कभी निरन्तर आँव-मिला मल भी निकलता है।

प्र० (२५) वातज, पित्तज और कफज संग्रहणी रोग में कौन कौन से नुसखे शीघ्र फलप्रद हैं ?

उ०—वातज में पृष्ठ १२६ का अन्तिम नं० १० शुण्ठादि क्काथ अच्छा है। पित्तज में पृष्ठ १२६ के नं ११ और १३ रसाञ्जन चूर्ण और तिक्तादि क्काथ अच्छे हैं। कफजमें पृष्ठ १२८ का नं० २० पथ्यादि चूर्ण अच्छा है।

प्र० (२६) आमतौर पर भयानक सग्रहणी में कौन-कौन से नुसखे अच्छे हैं ?

उ०—एक ही दवा सभी रोगियोंको आराम नहीं कर सकती ; चाहे वह कैसी ही अच्छी क्यों न हो। फिरभी, सग्रहणीरोगमें जातीफलादि चूर्ण, कनक रस, लाई चूर्ण, ग्रहणीकपाट रस, ग्रहणी वज्रकपाट रस, हंस पोटली रस और लवण भास्कर चूर्ण आदि उत्तम दवाएँ हैं। हमने अनेक रोगी "लवण भास्कर चूर्ण"को छाछके साथ सेवन करा कर और जलके स्थानमें केवल सौंफका अर्क पिला कर आराम किये हैं। हम पहिले बहुधा "लवण भास्कर" ही दिया करते हैं। अगर कोई रोगी इस से आराम नहीं होता, तो कनकरसादि देते हैं। अगर सूजन भी होती है, तो बहुधा "दुग्धवटी" या "दशमूल का काढा" सौंठ डालकर देते हैं। अगर पुरानी संग्रहणी होती है, तो "लौहपर्पटी" या "स्वर्णपर्पटी" भी देते हैं। गरीबों के लिये हमने गरीबी नुसखे लिखे हैं। ध्यान रक्खें, जितने नुसखे लिखे हैं, वे सब हमारे आजमूदा हैं। पर ध्यान रखकर, अतिसार की तरह सग्रहणी में भी, अपक्व आमकी दशामें दस्त बन्द करनेवाली दवी न देनी चाहिये। पहले चित्रकादिवटी प्रभृतिसे आम पचाना चाहिये, इसके बाद दस्तबन्द करनेवाली दवा देनी चाहिये।

प्र० (२७) सग्रहणी में, पुरानी हो जानेपर, बहुधा बारम्बार ज्वर चढ़ आता है या चढा ही रहता है, उस दशा में कौन सी दवा देनी चाहिये जिस से ज्वर भी हलका पड़े और दस्त भी बन्द हो जाये ?

उ०—उस हालत में *"शम्भुनाथ रसकी गोलियाँ"* अदरख के रस में देने से ज्वर हल्का होता और दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

प्र० (२८) गरीबों के लिये सग्रहणी में सर्वोत्तम दवा क्या है ?

उ०—गरीबों के लिये, पहले लिखी हुई विधि से, एकमात्र माठा सेवन कराना सब से अच्छा है। अथवा "सामान्य चिकित्सा" में लिखे गरीबी नुसखे देने चाहियें।

प्र० (२९) क्या माठा पित्त को कुपित नहीं करता ?

उ०—नहीं।

प्र० (३०) पुरानी संग्रहणी में रोगी के लिए क्या देना चाहिये ?

उ०—रोगी का बलाबल, रोग की अवस्था और दोषों का विचार करके "दुग्ध वटी" "स्वर्णपर्पटी या "लौहपर्पटी" देनी चाहियें। ये परीक्षित हैं। पुरानी संग्रहणी में शोथ या सूजन आदि उपद्रव हों, तो "दुग्धवटी" अच्छा काम देती है। अगर ज्वर चढ़ा रहता हो, हलका न पड़ता हो, तो संग्रहणी वाले को "शम्भुनाथ" रस देना अच्छा है। पुरानी ग्रहणी में "चाँगेरी घृत" देना भी अच्छा है। बिल्व तेल का सेवन भी हितकारी है।

नोट—"स्वर्ण पर्पटी" प्रभृति बनानेकी विधि अतिसारमें लिखी हैं। वहीं अतिसार के अध्याय में संग्रहणीनाशक और भी नुसख़े लिखे हैं। इस बात को न भूलना चाहिये कि, अतिसार नाशक अनेक नुसखे संग्रहणी को भी नाश करते हैं। जैसा रोग हो, जरा विचार कर, वैसी ही दवा देनी चाहिये। अतिसार और अर्श रोग में लिखे हुए घी तेल आदि चिकने पदार्थ ग्रहणी रोग में लिये जा सकते हैं, क्योंकि इन तीनों रोगों के कारण—हेतु समान ही हैं।

नोट—दुग्ध वटी हमने दो तरह की लिखी है। दोनों ही अच्छी हैं। पर सूजनके ज़ोर अधिक होनेकी दशा में पिछली अच्छी है।

प्र० (३१) अगर ग्रहणी या संग्रहणीमें मल न निकले, तो क्या करना चाहिये?

उ०—कालानोन और अजवायन बराबर-बराबर लेकर, पीस कूटकर छान लो। फिर इस चूर्णमें से तीन-तीन माशे चूर्ण गरम जल के साथ फँकाओ। इस से कड़ा मल निकल आयगा।

प्र० (३२) संग्रहणी रोगी को सब से अच्छा पथ्य क्या है?

उ०—सब तरह के ग्रहणी रोगों में एकमात्र माठा सर्वोत्तम है, इस के सिवा ग्रहणी रोग में कैथ का गूदा, बेल का गूदा और अनार का छिलका—इन सबको दो-दो तोले लेकर और अन्दाजसे दहीका माठा लेकर, यवागू बनाकर खिलाना भी अच्छा पथ्य है।

प्र० (३३) क्या अतिसार और संग्रहणी में कम जल पीना अच्छा है?

उ०—बेशक, अतिसार, संग्रहणी और मन्दाग्नि एवं सूजन प्रभृति

रोगों में कम जल पीना अच्छा है। बहुत जल पीने से ये रोग निश्चय ही बढ़ते हैं।

प्र० (३४) क्या अतिसार और संग्रहणीमें शीतल जल भी मना है?

उ०—हाँ, सग्रहणी, अतिसार, नवीन ज्वर, अफारा, वायुगोला और जुकाम प्रभृति में शीतल जल देना मना है।

नोट—"चरक" में लिखा है,—अत्यन्त पित्त कोप के दाह, भ्रम, प्रलाप और अतिसारयुक्त ज्वरों में गरम जल न देना चाहिये। इन में गरम जल देने से भ्रम, प्रलाप और अतिसार अत्यन्त बढ़ जाते हैं।

प्र० (३५) अतिसार और संग्रहणी में अगर शीतल जल मना है, तो कैसा जल देना चाहिये?

उ०—दाह, अतिसार, पित्त, रुधिर-विकार, पीलिया और पित्त के रोगों में जल को औटाकर शीतल कर लेना चाहिये और फिर वही जल, रोगी को, थोड़ा थोड़ा बहुत प्यास लगने पर देना चाहिये। कहा है—

दशांश षोडशांशं वा शतांश वा श्रृतं जलम्।
सुशीतं पाचन ग्राही दीपन दोषनाशनम्॥
यथा यथाश्रृतं तोयं ज्वरातिसारिणो भवेत्।
दीपन पाचनं ग्राही आरोग्य च तथा तथा॥

दसवाँ भाग, सोलहवाँ भाग अथवा सौवाँ भाग रहा औटाया जल, शीतल होने पर, पाचन, ग्राही—काबिज़ और अग्निदीपन करनेवाला होता है। जल जितना ही अधिक औटाया जाता है, उतना ही वह ज्वरातिसार वाले को अधिक गुणों वाला, आरोग्य प्रदान करने वाला, दीपन, पाचन और ग्राही होता है।

दस्त के रोगियों को आरोग्योदक यानी सेर का पाव भर जल भी अच्छा होता है। यह सदैव पथ्य है। यह मलको रोकनेवाला, अग्निको दीपन करनेवाला, पाचक और हलका है तथा अफारा, शूल, बवासीर, सूजन और वायुगोला प्रभृति को नाश करने वाला है।

नोट—हमने जल के सम्बन्ध में यहां इतना लिखा दिया है। फिर भी, जल को किस तरह औटाना, उसे ढक्कन देकर औटाना या बिना ढक्कन, रात का औटाया सवेरे और सवेरे का औटाया रात को देना या न देना, कहाँ का पानी लेना प्रभृति विषयों को जानने के लिए "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ १११—१२१ तक जरूर देख लें।

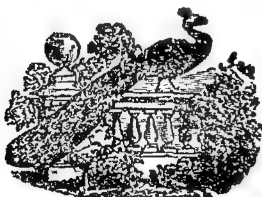
प्र० (३६) अगर अतिसार-रोगी को कोई भी पथ्य पदार्थ न पचे, तो क्या दिया जाय ?

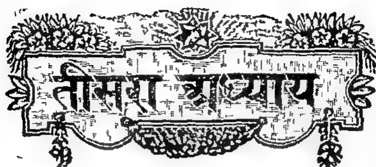
उ०—हारीत कहते हैं —

क्षीणे ज्वरातिसारे च सामे च विषमज्वरे ।
मन्दाग्नौ कफमाश्रित्य पय.फेन प्रशस्यते ॥

क्षीण, ज्वर, अतिसार, आम ज्वर, विषम ज्वर और कफप्रधान मन्दाग्नि में "दुग्ध फेन" या दुग्ध के झाग" देना अच्छा है।

जब जीर्ण ज्वरी या अतिसार रोगीको कुछ भी नहीं पचता, उसकी अग्नि एकदम मन्दी हो जाती है , तब "दूध के झाग" देकर रोगीके प्राण बचाये जाते हैं। संग्रहणी रोगी को तो जितना ही हलका पथ्य दिया जाय उतना ही अच्छा। दुग्धफेन तैयार करने की विधि 'चिकित्सा चन्द्रोदय' दूसरे भाग के "पथ्यापथ्य वर्णन" में लिखी है।





अर्श-वर्णन ।

अर्शकी सम्प्राप्ति ।

वातादिक दोष—वात, पित्त और कफ—चमडा, मास और मेदको दूषित करके, गुदा में जो मास के अङ्कुर उत्पन्न करते है, उनको ही अर्श या ववासीर कहते है ।

नोट—गुदा में होनेवाले मस्सों को ही अर्श या ववासीर नहीं कहते हैं । मशहूर तो गुदा की ववासीर ही है , लेकिन अर्श या मस्से गुदा के सिवा नाक, कान, नाभि और लिङ्ग मे भी होते है, यह सुश्रुत का मत है । लिङ्ग की सुपारी पर छोटे-छोटे लाल-लाल अङ्कुर से पैदा हो जाते है, उनको लिङ्गार्श' और नाकमें होने वालो को "नासार्श" कहते है । कायचिकित्सक गुदा में होने वाले मस्सो को ही ववासीर कहते है , दूसरो को वे अधिमास कहते है , क्योकि नाक और लिङ्ग प्रभृति में जो अर्श होती है, उसमें पूर्व रूप के लक्षण नहीं मिलते ।

अर्श या ववासीर का स्थान ।

ऊपर लिख आये है कि, गुदा में जो अङ्कुर या मस्से होते हैं, उन्हीं को अर्श या ववासीर कहते हैं । ये मस्से गुदा की प्रवाहिणी, सर्जनी और ग्राहिणी या सम्वरणी नाम की तीनों वलियों मे होते हैं ।

जो गुदा के बाहरी भाग में होते हैं, उनको बाह्यार्श और जो भीतरी भाग में होते हैं, उनको आभ्यन्तरार्श कहते हैं। भीतरी अर्श से बाहर की अर्श सुखसाध्य है।

नोट—मनुष्य की गुदा में तीन आंटे होते हैं। उन्हीं को संस्कृत में आवर्त्त या वलि कहते हैं। एक आंटा ऊपर, दूसरा नीचे और तीसरा बीच में होता है। ऊपर के आंटे को "प्रवाहिणी" कहते हैं, उसका काम मल और हवाको बाहर निकालना है। बीच के आंटे या वलि का नाम सर्जनी है। उसका काम मल और पवन को बाहर पटक देना है। तीसरे आंट का नाम ग्राहिणी या सम्वरणी है। उसका काम, मल और हवाको बाहर निकाल कर, गुदा को ज्यों की त्यों कर देना है। पहली और दूसरी वलियों का प्रमाण डेड़-डेड़ अङ्गुल है, और तीसरी ग्राहिणी वलिका प्रमाण १ अङ्गुल है। बाकी आधे अङ्गुल में गुदा-द्वारका जो हिस्सा है, उसे गुदा का ओठ कहते हैं। इन तीनों आंटों में ही अर्श या बवासीर अथवा मस्से होते हैं।

आयुर्वेदानुसार अर्श के भेद।

शास्त्रमें छे प्रकार की अर्श या बवासीर लिखी है:—

(१) वातज।　　　　(२) पित्तज।
(३) कफज।　　　　(४) सन्निपातज।
(५) रक्तज।　　　　(६) सहज।

नोट—आयुर्वेद में छे प्रकारकी बवासीर लिखी है, लेकिन हिकमत में खूनी और बादी—दो तरहकी ही लिखी हैं और सर्व साधारण भी दो तरहकी ही कहते हैं।

अर्श या बवासीर के सामान्य लक्षण।

साधारणतया अर्श या बवासीर में क़ब्ज़,अजीर्ण, पाखाना सख्ती से होना और उस समय दर्द होना तथा खून गिरना,—ये लक्षण होते हैं। खून किसीके दो-चार बूंद गिरता है,किसीके दो चार तोले और किसी-किसीके २०।४० तोले तक। जब बीमारी ज़ोर पर होती है, तब उकडू बैठने या पेशाब करने के समय भी खून गिरने लगता है,इसीसे किसी-किसी की धोती पीछेसे खूनसे तर हो जाती है।

वातज अर्शके कारण ।

जो मनुष्य कड़वा, कसैला, चरपरा, रूखा, ठण्डा और बहुतही हल्का भोजन करता है, बहुतही थोड़ा खाता है, भोजनके समय भोजन नहीं करता, तेज़ शराब पीता है, बहुतही ज़ियादा स्त्री-प्रसंग करता है, उपवास या व्रत करता है, ठण्डे देशमें रहता है, जाड़ेमें गरम नहीं रहता, अधिक दण्ड-मुद्गर फिरता और कसरत करता है, शोक करता और हवा तथा धूपमें फिरता है,—उसका वायु कुपित होकर, "वातज बवासीर" उत्पन्न करता है ।

नोट—हारीत मुनिने नमकीन और विदाही पदार्थोंका सेवन, मलमूत्र और हवा का रोकना प्रभृति कारण वातज अर्श के अधिक लिखे हैं ।

वातज अर्शका समय ।

वातज बवासीरके पैदा होने या ज़ोर पकड़नेका समय हेमन्तकाल या जाड़ेका मौसम है ।

वातज अर्शके लक्षण ।

वायुकी अधिकतासे गुदाके अंकुर या मस्से सूखे होते हैं । उनसे स्राव नहीं होता यानी खून वगैरः नहीं गिरता, परन्तु एक तरहकी पीड़ा होती रहती है । इस बवासीरके मस्से मुरझाये हुए, काले, लाल, टेढ़े, कठोर, खरदरे, बाँके, तीखे, फटे मुँहके, कदूरी, बेर, खजूर या कपासके फलोंके जैसे होते हैं । ये एकसे नहीं होते, कोई सरसोंके समान और कोई कदम्बके फूलों-जैसे होते हैं । सिर, पसवाड़े, कन्धे, कमर, जाँघ और पेड़ूमें वेदना होती है । छींक और डकार नहीं आती, हृदय पकड़ासा मालूम होता और पेट भारी रहता है । अरुचि, खाँसी, श्वास, कानोंमें आवाज़ होना, कभी अमका पचना

और कभी न पचना और भ्रम,—ये उपद्रव होते है । इस बवासीर-वालेके पत्थर-समान कड़ा, थोड़ा,आवाज़के साथ,वातकी प्रवाहिकाके लक्षणों वाला, शूल-सहित, झागदार और चिकना दस्त धीरे-धीरे होता है। इस बवासीर वालेके चमड़े का रङ्ग तथा पाखाना, पेशाब, आँखें और मुख ये कालेसे हो जाते हैं । वायु-गोला, तापतिल्ली और अष्ठीला नामक वायुकी गाँठ—इन रोगोंके उपद्रव इस वातज अर्श में होते है ।

पित्तज अर्शके कारण ।

जो मनुष्य कड़वा, खट्टा और नमकीन रस ज़ियादा सेवन करता है, अधिक दण्ड-कसरत करता है, आगके सामने या धूपमें रहता है, बहुत मिहनत करता है, गरम देशमें रहता है, क्रोध करता है, शराब पीता है, पराया धन या उन्नति देखकर जलता है, दाह-कारक और गरम पदार्थ खाता-पीता है—उसको "पित्तकी बवासीर" होती है ।

पित्तज बवासीरका समय ।

पित्तकी बवासीर गरमीके मौसममें होती या ज़ोर करती है ।

पित्तज बावासीर के लक्षण ।

पित्त की बवासीर वाले के मस्सों के मुँह नीले, लाल, पीले और सफेदी लिये होते है। उन मस्सों से महीन धार में खून चूता और खून में बदबू आती है । मस्से महीन, कोमल और शिथिल होते हैं। उनका आकार तोते की जीभ, कलेजा और जोक के मुख के समान होता है । देहमें दाह होता है , गुदा पक जाती है ; ज्वर, पसीना, प्यास, मूर्च्छा,अरुचि और मोह ये उपद्रव होते हैं । मस्सों

से पतला-पतला खून चूता है और कभी-कभी वे पक जाते हैं। नीला पीला या लाल रंगका मल-भेद होता है। रोगीका चमड़ा,नाखून और नेत्र वगैरः हरतालके समान हरे, पीले और हल्दीके जैसे हो जाते हैं।

कफज बवासीर के कारण।



जो मनुष्य मीठे, चिकने, शीतल, खारी, खट्टे और भारी पदार्थ खाता है, व्यायाम—मिहनत नहीं करता, दिन में सोता, गद्दे-तकियों पर पड़ा रहता, पूरब की हवा खाता, शीतल देश में रहता, शीतकालमें अपने तई गरम नहीं रखता और चिन्ता को पास नहीं आने देता,—उसे "कफकी बवासीर" होती है।

कफकी बवासीर का समय।



कफ की बवासीर शीतकाल और शीत प्रधान देश में ज़ोर करती या पैदा होती है।

कफज बवासीर के लक्षण।



इस बवासीरवाले के मस्से महामूल यानी गहरी जड़वाले,कठिन, मन्दी-मन्दी पीड़ा करनेवाले, सफ़ेद, लम्बे, मोटे, चिकने, कड़े, गोल, भारी, स्थिर, गाढ़े, कफ से लिहसे और मणि के समान साफ चमकदार होते हैं। उनमें खुजली बहुत होती और वह प्यारी लगती है। मस्से करील या कटहर के काँटों के समान अथवा गाय के थनों के सदृश होते हैं। उनकी वजह से पेट में अफारा तथा गुदा,मूत्र-स्थान और नाभि में पीड़ा होती है। श्वास, खाँसी, खाली ओकारी, अरुचि, पीनस, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, शीत-ज्वर, नपुंसकता, अग्निमान्द्य, अतिसार और संग्रहणी आदि रोग होते हैं। प्रवाहिका के लक्षण-युक्त कफ मिला चर्बी की तरहका बहुतसा मल आता है।

मस्सों में से खून नहीं गिरता। गाढ़ा मल होने से भी मस्से नहीं फूटते। शरीर का रंग चिकना और पीला होता है। नाखून और मल-मूत्र आदि भी चिकने और पाण्डु वर्ण—पीले से होते हैं।

द्वन्द्वज बवासीर के कारण।

दो दो दोषों के कारण और लक्षण मिलें, तो द्वन्द्वज बवासीर समझनी चाहिये।

त्रिदोषज बवासीर के कारण।

अलग-अलग वातादि दोषों की बवासीरों के जो कारण लिखे हैं, वे सब त्रिदोष की बवासीर के कारण हैं। सहज बवासीर के लक्षण इस से मिलते हैं।

सन्निपातज और सहज बवासीर के लक्षण।

जिस में वात, पित्त और कफ की बवासीरों के लक्षण एकत्र मिलें, वही त्रिदोषज या सन्निपातज बवासीर है। इसके जो लक्षण हैं, वही सहज बवासीर के लक्षण हैं।

सहज अर्श के लक्षण।*

अगर माँ या बाप को बवासीर हो और पुत्र के जन्म-समय में उनके द्वारा अर्श रोग पैदा करनेवाले आहार विहार सेवन किये गये हों, तो उनकी वजहसे पुत्रको भी बवासीर हो जाती है। उसी को "सहज अर्श" कहते हैं। इस रोगमें मस्से कठोर, लाल-रंगके या पीलेसे

*सहज या स्वाभाविक अर्श को सर्वसाधारण जन्म की या खानदानी बवासीर कहते हैं। यह असाध्य समझी जाती है।

होते हैं और उनका मुख भीतर की तरफ रहता है। इस रोगवाला दुबला, कम खानेवाला, मन्दी आवाज़वाला और क्रोधी होता है। उस के सारे शरीर में नस-जाल दीखता है। उसके आँख, कान, नाक और सिर में पीड़ा रहती है, पेट में गुड़गुड़ाहट की आवाज़ होती है, आँतें गूँजती हैं तथा अरुचि और मन्दाग्नि आदि उपद्रव भी होते हैं। अगर रोगी के शरीर में वायु की अधिकता होती है, तो सहज बवासीर में वातज अर्श के, अगर पित्त की अधिकता होती है तो पित्तज अर्श के, और कफ की अधिकता होती है तो कफज अर्श के लक्षण भी मिलते हैं।

रक्तार्श के कारण।

पित्तज अर्श के जो कारण हैं, वही सब कारण रक्तार्श या खूनी बवासीर के हैं, अर्थात् जिन कारणों से पित्त की बवासीर होती है, उन्हीं कारणों से खून की बवासीर होती है।

रक्तार्श के लक्षण।

रक्तार्श में मांस के अङ्कुर या मस्से चिरमिटी के समान लाल-लाल और बड़ के अङ्कुरों-जैसे होते हैं। कड़ा मल निकलने से मस्से दब जाते हैं और उनसे गरम और खराब खून निकलता है। खून के बहुतायत से गिरने के कारण, मनुष्य वर्षाकाल के मेंडक के समान पीला हो जाता है। चमड़ा कठोर हो जाता, नाड़ी शिथिल चलती, खट्टी और शीतल चीज़ों की इच्छा से रोगी दुखी रहता है। रोगी हीनवर्ण, बलहीन, उत्साह-रहित और पराक्रमशून्य हो जाता है एवं सारी इन्द्रियाँ व्याकुल हो जाती हैं। दस्त में रूखा, कड़ा और काला मल निकलता है। अपान वायु—गुदाकी हवा—नहीं निकलती,—ये लक्षण रुधिर या खून की बवासीर के हैं।

वातानुबन्धीय रक्तार्श।

रक्तज अर्श के साथ वातज अर्श के लक्षण प्रकाशित होने से उसे "वातानुबन्धीय रक्तार्श" कहते हैं। अगर रक्तज बवासीरमें वात का अनुबन्ध होता है, तो मस्सों से खून थोड़ा, लाल और झागदार निकलता है। कमर, जाँघ और गुदामें दर्द होता है। अगर कमज़ोरी ज़ियादा हो जाय और रूखापन भी हो—तो समझो कि, रक्तार्शमें वात या वायुका सम्बन्ध है।*

कफानुबन्धीय रक्तार्श।

जिस रोगी को शिथिल, सफेद, पीला, चिकना, भारी और शीतल दस्त हो, खून गाढ़ा, तांतुदार, पीला और बुलबुलेदार निकले और गुदा बबूले-युक्त और गीली सी मालूम होती हो, तो समझो रक्तार्श से कफका सम्बन्ध है।

नोट—पित्तके अनुबन्ध की खूनी बवासीर के लक्षण इस वजहसे नहीं लिखे कि, रक्त और पित्त के लक्षण प्राय एक से होते हैं।

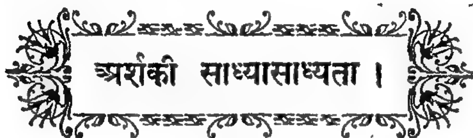
बवासीरके पूर्वरूप।

अगर अन्न अच्छी तरह न पचे, वह कूखमें रहा आवे, देहमें दुर्बलता हो, कूखमें अफारा हो, अग्निमन्द हो, डकार बहुत आवें, जाँघोंमें पीड़ा हो, दस्त थोड़ा-थोड़ा हो, संग्रहणी और पाण्डुरोगके से लक्षण नज़र आवें और उदर-रोगकी शंका हो, तो समझो कि, इस मनुष्यके बवासीर रोग होगा।

* वातानुबन्धीय रक्तार्श का सीधी भाषामें यह मतलब है कि, बवासीर तो खून के कुपित होनेसे हुई हो, पर उसमें वायुके कुपित होनेके भी लक्षण हों। इसी तरह कफानुबन्धीय रक्तार्श का सीधी भाषामें यही मतलब है कि, बवासीर तो खूनसे हुई हों, पर उस का कफ से सम्बन्ध हो, यानी उस में कफ की बवासीर के लक्षण भी पाये जाते हों।

शङ्का—केवल गुदा में दोषो के कुपित होने से बवासीर रोग होता है, फिर रोगी की सारी देह दुर्बल और काली कैसे हो जाती है ?

उत्तर—गुदा के तीन आँटों में मस्से पैदा होने से पांच प्रकार के वायु, पाँच प्रकार के पित्त और पाँच प्रकार के कफ कुपित होते हैं। इस से बवासीर रोग अनेक प्रकारके दुःख और व्याधियाँ करके, सारी देह को दुर्बल और काली कर देता तथा कृच्छ्रसाध्य और कष्टसाध्य हो जाता है।



सुखसाध्य अर्श के लक्षण।

जो बवासीर बाहर के आँटे मे होती है, जिसमें तीन मे से किसी एक दोष की प्रधानता होती है और जो एक वर्ष से कम की होती है, वह बवासीर सुखसाध्य होती है, यानी आसानी से आराम हो जाती है।

कृच्छ्रसाध्य अर्श के लक्षण।

जो बवासीर दो दोषों से पैदा होती है, जो दूसरे आँटे में होती है, जिसे पैदा हुए एक साल हो जाता है, वह बवासीर कृच्छ्रसाध्य होती है, यानी कठिनाई से आराम होती है, पर आराम हो जाती है, बशर्ते कि वैद्य अनुभवी और विद्वान् हो तथा रोगी और परिचारक-रोगीकी सेवा-शुश्रूषा करने वाला—वैद्यकी आज्ञा पर चलने वाले हों।

जो बवासीर बाहरके आँटे में दो-दोष-प्रधान होती है और दूसरे आँटे में एक दोष प्रधान होती है, वह भी कृच्छ्रसाध्य होती है।

याप्य अर्श के लक्षण

अगर बवासीर तो असाध्य हो, पर रोगी की उम्र बाकी हो, वैद्य औषधि, परिचारक और रोगी जैसे होने चाहिएँ वैसे ही हों * और रोगी की जठराग्नि प्रदीप्त हो, तो उसे "याप्य" समझना चाहिए यानी वह बड़ी-बड़ी कठिनाइयों से किसी तरह आराम हो जायगी अगर इसके विपरीत बवासीर असाध्य हो, रोगी की उम्र बाकी न हो, रोगी और परिचारक वैद्यकी आज्ञा पर चलने वाले न हों, जैसे दवा दरकार हो वैसी दवा प्रस्तुत न की जा सके तथा रोगीकी अग्नि कतई मारी गई हो, उससे कुछ भी खाया न जाता हो, भूख लगती ही न हो, तो वैद्यको वैसे रोगीका इलाज हाथ में न लेना चाहिये, क्योंकि ऐसे रोगीसे शेषमें बदनामी ही होगी।

---

* वैद्य, रोगी, औषधि और रोगीकी सेवा करनेवाला—ये सिद्धि प्राप्त करनेके लिये 'चिकित्साके चार पाद' हैं। अगर ये चारों ठीक हो, तो कदाचित आराम हो सकता है।

वैद्य—जिसने गुरु से शास्त्र पढ़ा हो, दूसरे वृद्ध वैद्य की चिकित्सा देखी हो, आप को स्वयं अनुभव हो, जिसका इलाज करता हो वही आराम हो जाता हो, पवित्र रहने वाला और साहसी हो तथा उत्तमोत्तम औषधियाँ और रसादिक तैयार रखता हो, जिसकी बुद्धि तेज हो, जो बुद्धिमान और लोक-व्यवहार जानने वाला हो, प्रिय और सत्य वचन बोलने वाला और धर्मात्मा हो, वही वैद्य अच्छा होता है। ऐसा वैद्य असाध्य को साधन कर सकता है। जो वैद्य मैले वस्त्रों वाला कड़वा बोलने वाला, अभिमानी और बिना बुलाये रोगी के यहाँ जाने वाला हो, वह वैद्य निकम्मा होता है।

रोगी—उम्रवाला, बलवान, साध्य धनवान, ज्ञानी, आस्तिक और वैद्य की आज्ञा मानने वाला रोगी अच्छा होता है।

औषधि—उत्तम स्थान में पैदा हुई, शुभ दिन में उखाड़ी गई, थोड़ी सी देने से बहुत गुण करने वाली, उत्तम सूरत और उत्तम रसवाली औषधि अच्छी होती है।

परिचारक—नयी उम्र का जवान, ताकतवर वैद्य की आज्ञानुसार काम करने वाला, रोगीका भला चाहने वाला और आलस्य-रहित परिचारक अच्छा होता है।

असाध्य अर्श के लक्षण ।

जो बवासीर जन्म से होती है, जो तीनों दोषों से होती है और तीसरे या अन्त के आंटेमें होती है, वह असाध्य होती है , यानी वह आराम नहीं हो सकती,

हारीत मुनि कहते है —

बाह्यत सुखसाध्य स्यान्मध्ये कष्टेन सिध्यति ।
असाध्योऽन्तर्वली जातो गुदजो भिषजांवर ॥

गुदाके बाहर और भीतर तीन बलि या आंट होते है। यही तीनों आंट बवासीर के स्थान हैं। उन्हीं में मस्से होते हैं। बाहर के आंट की बवासीर सुखसाध्य, बीचके आंटेकी कष्टसाध्य और गुदा की अन्तिम बलिवाली असाध्य होती है।

गुदा के बाहरी आंट के मस्से वैद्य को दीख सकते हैं, अत वह उन्हें क्षार प्रभृति से जलाकर या तेल मरहम आदि से गलाकर आराम कर सकता है , पर भीतर के आंटों के मस्से दीखते नहीं , वहां दवा लगायी जा नहीं सकती, इससे वह सहज में आराम हो भी नहीं सकते।

और भी साध्यासाध्य के लक्षण ।

उपद्रव-रहित बवासीर साध्य है और उपद्रव-सहित-असाध्य है।

बवासीर के उपद्रव ।

हारीत लिखते है,—अगर हाथ, पाँव,मुख, नाभि, लिंग और गुदा में सूजन और शोथ हो, ज्वर हो,श्वास हो, अँधेरी आवे, वमन होती हों, मोह—बेहोशी हो, हृदय में दर्द हो, पसली में शूल हो, अरुचि हो, मल की रुकावट या कब्ज़ हो अथवा अतिसार हो तो समझो कि,बवासीर-रोगी नहीं बचेगा , क्योंकि ये बारह उपद्रव है। ऊपर लिख आये हैं, कि सोपद्रव यानी उपद्रव-सहित बवासीर आराम नहीं हो सकती।

उपद्रवोंके कारण असाध्यता।

"माधव निदान"में लिखा है:—जिसके हाथ, पैर, गुदा, नाभि, मुख और फोतोंमें सूजन हो, हृदय और पसवाड़ोंमें पीडा हो, इन्द्रियों और मनमें मोह हो, वमन होती हो, अङ्गोंमें वेदना हो, ज्वर चढ़ा हो, प्यासका ज़ोर हो, गुदा पक गई हो, यानी उस पर पीले-पीले फोडे हो गये हों, अरुचि हो, शूल चलते हों, खून ज़ोरसे गिरता हो, सूजन और अतिसार हो—वह रोगी असाध्य है। उसे बवासीर नाश करके छोड़ेगा।

"वैद्यविनोद" में लिखा है :—

शोफातिसारौ वमिरंगसादस्तृष्णा ज्वरोऽरोचक वह्निमान्द्यम्।
गुदस्यपाकौ हृदयेतिशूलो ह्यर्शोविकारी विजहाति जीवम्॥

सूजन, अतिसार, वमन, अङ्गोंकी शिथिलता, प्यास, ज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि, गुदाका पकाव और हृदयमें दर्द—ये लक्षण जिस बवासीर वालेमें हों, वह निश्चयही मर जाता है।

अर्श के अरिष्ट लक्षण

जिस बवासीर वाले के हाथ, पैर, मुख, नाभि, गुदा, फोते, हृदय और पसवाड़ों मे सूजन या वरम हो, वह नहीं बचेगा। जिस बवासीर रोगीके हृदय और पसवाड़ोंमें शूल चलते हों, बेहोशी हो, वमन होती हों, सारे शरीर में दर्द हो, ज्वर और प्यास का ज़ोर हो और गुदा में ज़ख्म हों—वह रोगी मर जायगा।

जिस रोगी को प्यास बहुत हो, अन्न पर रुचि न हो, शूल चलते हों, मस्सों से बहुत ही ज़ियादा खून गिरता हो, शरीर में सूजन हो और दस्त लगते हों,—वह अर्श रोगी मर जायगा।

डाक्टरी मतसे अर्शके कारण और लक्षण।

ऐलोपैथिक मत।

बहुत घोड़े की सवारी करने, बारम्बार दस्तावर दवा सेवन करने तथा पेशाब की इन्द्रिय की पीड़ा से अर्श या बवासीर रोग होता है।

गुदा के नीचे जो ख़ून को बहाने वाली नाड़ी—नस है, उसी में किसी प्रकार व्यतिक्रम या गड़बड़ होने को "बवासीर" कहते हैं।

बवासीर दो तरह की होती है :—

(१) इण्टरनैल=भीतर की=आभ्यन्तरार्श।

(२) ऐक्सटरनैल=बाहर की=बाह्यार्श।

और भेद।

(१) ख़ूनी। (२) बादी।

ख़ूनी बवासीर।

अगर सुर्ख़ रंगके मस्से होकर ख़ून पड़ता हो, तो उसे "ख़ूनी बवासीर" कहते हैं। अगर पीड़ा, खाज और सूजन ज़ियादा हो, तो उसे "बादी बवासीर" कहते हैं। दस्त की कब्ज़ियत, इसका प्रधान लक्षण है।

होमियोपैथी मत।

अनेक लोगों का विश्वास है कि, निकम्मे बैठे रहने या दस्तकब्ज़ होने से बवासीर होती है। इस में गुदा के ऊपर या भीतर मस्से हो जाते हैं। उन में से कभी-कभी ख़ून निकलता है। इस रक्तस्राव या ख़ून गिरने के लिये कोई समय नियत नहीं है जब चाहे गिरने लगता है।

हिकमत के मतसे बवासीर।

"इलाजुल गुर्बा" में लिखा है:—बवासीर दो तरहकी होती है:—
(१) खूनी बवासीर (२) बादी बवासीर।

जिस में गुदा के किनारों पर मस्सों की अधिकता होती है और उन में से खून गिरता है, उसको खूनी बवासीर कहते हैं।

जिस में मस्से नही होते, पर पेट में कराकर होता है और खून नहीं गिरता, उसे बादी बवासीर कहते हैं।

एक और हकीम साहब कहते हैं* कि, गुदा की बवासीर दो तरह की होती है :—(१) खूनी, और(२) सूखी। जिसमें एक या कम-ज़ियादा मस्से होते है और उनसे खून पडता है,वह खूनी होती है। सूखी से खून नहीं पडता, परन्तु रोगी को तकलीफ़ होती है।

यह रोग हर स्त्री पुरुष को होता है। जब तक आहार विहार ठीक रहता है, यह रोग दबा रहता है, लेकिन ज्योंही खाने पीने वगैर. में गडबड होती है, यह कोप कर उठता है। खुश्की की वजह से बवासीर कोप करती है। जब बवासीर साधारण होती है, तब कभी-कभी कब्ज होता है, लेकिन जब इसका कोप हो जाता है,

* आपका कहना है कि, बवासीर हाथ,पाँव नेत्र,नाक,मुँह और गुदा ६ स्थानों में होती है। जिस के हाथ में होती है, वह कुछ न कुछ करता ही रहता है, निचला नहीं बैठता। जिस के पैर मे होती है, वह चलता ही रहता है, एक जगह उसका दिल नहीं जमता। जिसकी नाक मे होती है, उसकी नाक बहती रहती है। जिस के मुँह मे होती है, वह कभी चुप नहीं बैठता। अगर कोई बातें करने वाला नहीं होता, तो आप ही अपने-आपसे बातें करता रहता है। जिस के नेत्रो मे होती है, उसकें नेत्र लाल और दबे स रहते हैं।

हारीत स्पष्ट लिखते हैं कि, बवासीर गुदा, नाक, कान, मुँह, नेत्रों के कोनों और योनि के बीच में होती है। अन्यत्र लिङ्ग में होना लिखा है। चर्मकील भी एक प्रकार की बवासीर है जो चमडे पर होती है।

तब मस्सोंसे खून जारी हो जाता है। यहाँ तक खून गिरता है, कि रोगी के शरीरमें खून रहताही नहीं। रोगी एकदम कमजोर हो जाता है।

बवासीरकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) हारीत मुनिने कहा है कि, वातव्याधि, प्रमेह, कोढ़, बवासीर, भगन्दर, पथरी, मूढ़ गर्भ और उदर रोग—ये आठ महाव्याधियाँ हैं। ये स्वाभावसे ही दुश्चिकित्स्य हैं। अगर इन महा रोगोंके साथ बलक्षय, मांसक्षय, श्वास, प्यास, शोष, वमन, ज्वर, मूर्च्छा, अतिसार और हिचकी प्रभृति हों, तब तो इनके आराम होनेका खयाल करना भी भूल है। जो वैद्य यशकी इच्छा रखता हो, जो अपनी नामवरी चाहता हो, वह ऐसे रोगियोंका इलाज हाथमें न ले, यानी अगर बवासीर रोगके साथ ज्वरादिक उपद्रव न हों, वह नयी और बाहरकी हो, तब तो सुखसाध्य समझकर, इलाज हाथ में ले; पर फिर भी सावधानी और चतुराईसे काम करे, क्योंकि सुखसाध्य होने पर भी, अनाड़ी वैद्यके लिये वही कष्टसाध्य है।

(२) अगर वैद्य पूर्ण शास्त्रज्ञ और अनुभवी हो, उसने दूसरे वृद्ध वैद्योंकी चिकित्सा देखी हो और आप भी चिकित्सा की हो, जिस के पास नाना प्रकार के चूर्ण, गोली, क्षार, लेप, धूप और अवलेह प्रभृति हों, जो शस्त्र-क्रिया और क्षार-कर्ममें दक्ष हो, वही बवासीरका इलाज करनेका साहस करे। अनाड़ी वैद्य मस्सों को काट तो देते हैं, पर जब खूनकी धारा बहने लगती है, तब घबरा जाते हैं और उनसे कुछ करते-धरते नहीं बनता। अगर उस समय कोई दूसरा अनुभवी वैद्य नहीं होता, तो रोगी को बिना मौत मरना पड़ता है। इसलिये बवासीर-नाशक पूरा सामान होने पर और उसके इस्तेमाल की पूरी विधि जानने पर ही, बवासीर-रोगी पर हाथ डालना चाहिये।

(३) अगर बवासीर याप्य हो, यानी कठिनसे आराम होनेवाली हो और आपको इलाज करना ही हो, तो यह देख लो कि, रोगी तुम्हारी आज्ञा ईश्वरकी आज्ञाकी तरह मानेगा या नहीं। अगर रोगीका आपमें विश्वास हो, वह आपकी आज्ञा पालन करे तथा धनवान और उदार हो और उसकी टहल करनेवाला उसका सच्चा शुभचिन्तक, आपकी आज्ञा अनुसार चलनेवाला और निरालसी हो, आप जैसी भी कीमती दवा बनाना चाहो, रोगी उसके लिये बिना आनाकानी धन दे सकता हो, तो आप ऐसी बवासीरका इलाज करो, कोई हानि नहीं, आपको ईश्वर-कृपासे सिद्धि मिलेगी। अगर रोगी और रोगीको टहल करने वाला—इन ऊपरके हुए लक्षणोंके विपरीत लक्षणों वाले हो, तो भूलकर भी इलाज हाथमें मत लो।

(४) जिन कारणोंसे रोग होता है, उन कारणोंके बन्द किये बिना रोग आराम नहीं हो सकता। हज़ार उत्तमसे उत्तम अमृत-समान दवा दो, कोई लाभ न होगा। मसलन, सदा बैठे रहने, बहुत देरमें हज़म होनेवाले या अत्यन्त रूखे पदार्थ खाने, धूपमें फिरने और शराब पीने प्रभृतिसे बवासीर रोग होता है। अगर रोगी इन सबको छोड न देगा, तो उसे कभी आराम न होगा, इसलिये चतुर वैद्यको दवा देनेसे पहले, रोगके कारण जानने चाहियें, और कारण जानकर रोगीसे उनके त्याग देनेकी ज़ोरसे हिदायत कर देनी चाहिये। अगर रोगी दवा भी न खाय, लेकिन अपथ्यको त्याग कर पथ्य सेवन करे, तो बिना दवाके ही आराम हो सकता है। अगर आराम भी न होगा, तो रोग की बढती तो रुक हो जायगी। बहुतसे वैद्य जो दवा तो दिये जाते हैं, पर रोगीको ऐसे-ऐसे उपदेश नहीं देते, उसे रोगके बीज कारण के छोडनेकी सलाह नहीं देते, उन्हें निराश होना पडता है। जिसे शराब पीनेसे बवासीर हुई है, वह जब तक शराब न छोडेगा, बवासीर कैसे आराम होगी?

(५) ध्यान रखो, बवासीर, अतिसार और संग्रहणी,—ये तीनों रोग

प्राय परस्पर कारण हैं और ये तीनोंही गुदामें होते हैं। जब अग्निमन्द हो जाती है, तब ये बढते हैं, इसीलिये बवासीरकी चिकित्सा अग्निमान्द्य रोगकी तरह की जाती है, क्योंकि अग्निके बलवान होनेसे ही बवासीर रोग नष्ट हो जाता है। उत्तम प्रकारसे बनाया हुआ हल्का,जल्दी हजम होनेवाला, चिकना भोजन और नियमित व्यायाम या मिहनत अर्श में हितकारी है। तेल, लालमिर्च, राई, सरसो आदि अत्यन्त तीक्ष्ण पदार्थ हानिकर हैं। तरकारियों में ज़मीकन्द और फलोंमें अरण्ड काकडी या अरण्ड खरबूज़ा अच्छे हैं। माठा तो बवासीर का काल और इस भूमण्डल का अमृत ही है। जिस दवा और पथ्यसे बवासीर-रोगीको दस्त साफ होता रहे, अग्नि-दीप्त होती रहे, भूख बढे, हवा खुलती रहे और पेट हल्का रहे— वही दवा और पथ्य बवासीर-रोगी को बताना चाहिये।

बवासीरके साथ मलावरोध या क़ब्ज़की शिकायत लगी हुई रहती है और बवासीर रोग मन्दाग्निकीही एक क़िस्म है। जब अन्न अच्छी तरह नहीं पचता और उसका प्रथक्करण नहीं होता, तभी बवासीर होती है। हकीम लोग भी कहते हैं कि, बवासीर मेदेकी कमज़ोरीसे होती है ,अत वही काम करने चाहिएँ,जिनसे मेदा बलवान हो,भूख बढे और दस्त रोज़ साफ होता रहे। अगर वैद्य रोगी को दस्त साफ करने और भूख बढानेवाली दवा न देगा या इसके लिये और उपाय न करेगा, तो उसका रोगी आराम न होगा।

(६) बवासीरकी चिकित्सा चार प्रकारकी होती है, यानी औषधि, क्षार, शस्त्र और अग्निसे बवासीर की चिकित्सा की जाती है। बुद्धिमान वैद्यको लेप, स्वेद और भोजन प्रभृतिसे बवासीर जीतनी चाहिये। हारीत मुनि कहते है कि, लेप बत्ती और स्वेदन प्रभृतिसे बाहर के आँटे की बवासीरको नष्ट करना चाहिये। बीचके आँटेवाली कोअस्त्र-शस्त्रसे जीतना चाहिये और अन्तिम आँटेवाली यानी भीतर की बवासीरको दवाओंसे नाश करना चाहिये। जैसे —

(क) अगर मस्से बाहर दीखते हों,तो सेंहुड़के दूधमें हल्दीका चूर्ण मिलाकर, एक बूँद उसमें से मस्से पर लगाना चाहिये।

(ख) तोरईकी जड पीस कर मस्सोंपर उसका लेप करनी चाहिये।

(ग) रूईके डोरे पर हल्दीका चूर्ण लगाकर, उस पर सेंहुडका दूध बरम्बार लगाना चाहिये। इसके बाद उसी डोरेसे मस्सेको बाँध देना चाहिये। इस तरह मस्सा कटकर गिर पड़ेगा।

(घ) "कासीसादि तेल" मस्सों पर लगाना चाहिये। मस्से नाश करनेके लिए यह तेल और "वृहत् कासीसादि तेल" रामबाण हैं। बनानेकी विधि बवासीर नाशक नुसखों में लिखेंगे।

नोट—हमने लेप वगैरःके दो तीन नमूने दिखाये हैं। सब तरहके बवासीर नाशक नुसखे आगे लिखेंगे।

डाक्टर लोग भी भीतरी बवासीर में, सलफर आफ आयरन एक ग्रेनको एक औन्स जलमें मिलाकर, गुदामें, उसकी पिचकारी देते हैं। अगर मस्से बाहर होते हैं, तो उनपर काष्टिक लोशन लगाते हैं अथवा हेनोमिलिस लोशनसे उन्हें धोते हैं। अगर मस्सोंमें जलन होती है, तो गरम जलसे उन्हें धोते हैं। पुल्टिश या पोस्तके डोडोंसे उन्हें सेकते हैं। जौंक लगवाकर खराब खून निकलवा देते हैं। भीतरके मस्सोंको नाइट्रिक एसिड से जला देते हैं और बाहरके मस्सोंको नश्तरसे काट देते है। चीर फाड करना कोई बच्चोंका खेल नहीं है,जो इस काममें सिद्धहस्त हों, उन्हें ही चीर-फाड करनी चाहिये।

(७) बवासीर रोगीकी बवासीर नाश करनेवाली, बल बढ़ानेवाली, रक्तपित्तको शान्त करनेवाली और वायुको कुपित न होने देने वाली चिकित्सा करनी चाहिये। बवासीर रोगमें पहले पाचन औषधि देनी चाहिये,इसके बाद दूसरी दवा देनी चाहिये, यानी जिस उपाय से अग्नि-बल बढे और वायु अनुलोम हो,वही उपाय करना चाहिये।

नोट—होमियोपैथी वाले सब तरह की बवासीरों में पहले कास्टर आयल या अरयडी के तेल का जुलाव देकर कोठा शुद्ध करते हैं, तब और दवा देते हैं। वह कहते हैं, इस तरह यह रोग जल्दी जाता है।

(८) बवासीर के मस्से बहुत ही फूले हों और उनकी वजह से बड़ी तकलीफ़ हो, तो दिन में दो बार, पाँच पाँच तोले, अलसी का तेल पिलाओ। इस उपाय से दस्त खुल कर होंगे और मस्से मुरझा-जायेंगे। परीक्षित है।

(८) बवासीर रोगीकी चिकित्सा यदि दस्तपतले होते हों, तो वातातिसार की तरह और यदि मल गाढ़ा हो तो उदावर्त्त की तरह करनी चाहिये। अगर बवासीरमें खून बहुत गिरता हो, तो रक्तपित्त के समान और कब्ज़ हो तो विबन्धनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

(८) अगर बवासीरसे खून गिरता हो,तो वैद्यको फौरनही खून बन्द न करना चाहिये। अगर खराब खून न निकलेगा—रुक जायगा, तो वह गुदामें पीड़ा, अफारा और रक्त-विकारके रोग पैदा कर देगा, लेकिन अगर खून बन्द न करनेसे रोगीकेप्राणनाशकी सम्भावना हो, तो फ़ौरन ही खून बन्द कर देना चाहिये। वङ्गसेन ने कहा है—

रक्तार्शं सामुपेक्षेत रक्तमादौ स्रवेद्भिषक्।
दुष्टास्रे निगृहीते हि शूलानाहासृगामयाः॥

खूनी बवासीर में पहले ही खून को बन्द नहीं करना चाहिये, क्योंकि खून बन्द करने से शूल, आनाह और रुधिर-विकार उत्पन्न होते हैं।

(१०) वैद्यको रोगी के लिए तक्र या माठा अवश्य सेवन कराना चाहिये, क्योंकि माठेसे नाश हुए मस्से फिर नहीं होते। माठेसे बल, वर्ण और अग्निकी वृद्धि होती है तथा शरीरके स्रोत शुद्ध होकर उनमें अच्छी तरह रसका सञ्चार होता है और सैकड़ों कफवात के विकार नष्ट होते हैं।

(११) ऊपर हम लिख आये हैं कि, डाक्टर लोग जोंक लगवाते हैं। हमारे यहाँ भी जोंक लगवाने की आज्ञा है। कहा है—

शस्त्रैर्वापि जलौकाभिः प्रोच्छूनकठिनार्शसि।
शोणितं मन्थितं दृष्ट्वा हरेत्प्राणं पुनः पुनः॥

गुदाके अङ्कुर कड़े और सूजन-युक्त हों तथा उनमें खून जमा हो गया हो, तो शस्त्र या जोंकों द्वारा बारम्बार ख़ून निकालना चाहिये।

सब तरह की गुदा की बवासीरों में, वहाँ का ख़ून, जोंकों द्वारा, उसी समय निकलवा देना चाहिये, जिस से रोग फिर न हो जाय।

(१२) अर्श, अतिसार और सग्रहणी—ये तीनों एक दूसरेसे होते हैं, यानी अर्श से अतिसार और अतिसार से सग्रहणी अथवा अतिसार से से अर्श। इनमें अग्नि ही खास कारण है। जब अग्नि तेज़ रहती है, ये रोग दबे रहते हैं, पर अग्नि के निर्बल होते ही उखड़ आते हैं। अत. इन तीनों के इलाज में विशेषकर अग्नि की रक्षा करनी चाहिये। वायु को अनुलोम करने वाले और अग्नि का बल बढ़ाने वाले अन्न पान और औषधियाँ अग्नि बढ़ाने को देनी चाहियें।

(१३) जो बवासीर थोड़े दिनों की पैदा हुई हो, जिस में थोड़े दोषों के लक्षण और उपद्रव हों, उसको औषधि-साध्य समझो, यानी ऐसी बवासीर दवा खिलाने से आराम हो जाती है।

जो बवासीर मृदु, फैली, जमीसी, गाढ़ी और आगे से ऊँची हो, उसको क्षार-साध्य समझो, यानी वह क्षारसे आराम हो जाती है।

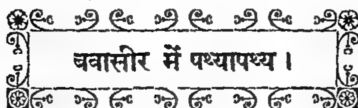
जिस बवासीर के मस्से कर्कश, कठिन, मोटे, मज़बूत और कठोर हों, उसकी चिकित्सा अग्निकर्म से की जाती है।

जिस बवासीरके मस्से पतली जड़ वाले, आगेसे उठे हुए और चेपदार हों, उसकी चिकित्सा शस्त्र या नश्तर से होती है।

- वात और कफ की बवासीर की चिकित्सा क्षार और अग्नि द्वारा की जाती है।

पित्तरक्तसे पैदा हुई बवासीरकी चिकित्सा केवल क्षारसे की जाती है।

क्षार-कर्म और अग्नि-कर्म प्रभृति उसे करने चाहियें, जिसे इनका पूर्ण अभ्यास हो। अगर जलाने या क्षार-कर्म करने से दाह पैदा हो जाय, तो उस जगह "सौ बार के धोये घी" का लेप करना चाहिये। इस लेप से फ़ौरन जलन मिटकर शान्ति होती है।



पथ्य ।



पुराने चाँवलों का भात, मूँग या चने की दाल,कुलथी की दाल, शालि चाँवल, साँठी चाँवल, बथुवा, सौंफ, परवल, करेला, तोरई, ज़मीकन्द, सरसों की डाँकल, गुड़, तक्र, छोटी मूली, कच्चा पपीता, केले का फूल, दूध, घी, मक्खन, मिश्री, किशमिश, अगूर, पका बेल, छोटी इलायची, जौ, लहसन, जीवन्ती, चूका, आमले, सञ्चर नोन, कैथा, सरसोंका तेल, काँजी, मदिरा, सौंठ, हरड़,कङ्कोल,ऊँटका मूत्र, मिलावे, गोमूत्र और माठा,—ये सब पथ्य हैं।

जुलाब लेना, खून निकालना, तेज़ाब या चारसे मस्से जलाना, अग्निकर्म करना या दागना, शस्त्र-कर्म करना या चीरना फाड़ना, लेप करना, बफारे लेना और धूनी लेना,—ये सब भी बवासीर में हितकारी हैं :—

वात नाशक और अग्निकारक अन्न पान बवासीर में हितकारी है। वृन्दने कहा है —

यद्वायोरानुलोम्याय यदग्निबलवृद्धये।
अन्नपानौषधं सर्वं तत्सेव्यं नित्यमर्शसि ॥

बवासीर रोग में वायु को अनुलोमन करने वाले और अग्निबल बढ़ाने वाले अन्न, जल और औषधियाँ सेवन करनी चाहिये।

बवासीर और संग्रहणी में माठा सब से अच्छा पथ्य और रोग नाशक है। वृन्द ने कहा है —

विड्विबन्धे हितं तक्रं यवानीविडसंयुतम्।
न विरोहन्ति गुदजाः पुनस्तक्रसमाहताः ॥

अजवायन और बिडनोन मिली 'छाछ' मल के विबन्ध नाश हितकारी है। गुदा के रोग छाछ से नष्ट होकर, फिर पैदा न होते।

एक भाग बढ़िया पुराने चाँवल और दो भाग धुली मूँगकी द मिलाकर, पतली खिचड़ी बनाने और उस में "ताज़ा घी" डाल खाने से दस्त-कब्ज़ वाले को बहुत फायदा होता है। खु मिटने से मल ढीला होकर आसानी से निकल आता है, इसलि बवासीर-रोगी को पुराने चाँवलों की खिचड़ी लाभदायक है।

नोट—बिनौले की गिरी फाँककर,ऊपरसे दूध पीने से मल फूल जाता है। य यह फकी मुञ्जिसकी तरह मलको फुलाती और पकाती है। इसके बाद जुलाब दस्त सहजमें हो जाते हैं।

पथ्य।

पिट्ठी, उड़द, दही, सेम, भारी पदार्थ, भुने-हुए पदार्थ, सि हुए पदार्थ, घीया, धूप या आगकी तपत, पूरबकी हवा, मल, मू और अपान वायु प्रभृतिका रोकना, घोड़े हाथी वगैरः की सवारी स्त्री-प्रसङ्ग और कड़े आसन पर बैठना—ये सब बवासीर रोगीको अप या हानिकारक हैं।

अनूप देशके पशु-पक्षियोंका मांस, मछली, तिलकी खली, मैदा पदार्थ, टेंटी, बेलगिरी, पोईका शाक, तूम्बी या कद्दू, पका आ धूपमें फिरना, नदीका पानी पीना, वमन, गुदामें पिचकारी लेन (वस्ति कर्म), उज्जैनके पूरब-पश्चिम बहनेवाली नदियोंका जल विरुद्ध पदार्थ, उकरू बैठना,बारबार जल पीना, दिनमें सोना, अत्यन्त भोजन, भारी अन्न, कलई और तेज़ाब प्रभृति लगाना,—ये स अपथ्य हैं।

अतिसार और बवासीर रोग में वायु और अतिसार पैदा करने वाले तथा अग्नि-बल नाश करने वाले पदार्थ भूलकर भी न दें

चाहियें, क्योंकि अग्निबलके नष्ट होनेसे ही तो बवासीर, अतिसार और संग्रहणी रोगोंकी वृद्धि होती है। कहा है:—

अर्शो विकारा प्रायेण ये परस्पर हेतव ।
अर्शा सि चातिसारश्च ग्रहणी रोग एवच ॥
तेषामग्निबले हीने वृद्धिर्वृद्धे परिक्षय ।
तस्मादग्निं समारक्षेपदेषु त्रिषु विशेषत ॥

बवासीर, अतिसार और ग्रहणी रोग—ये तीनों परस्पर एक दूसरेको पैदा करनेवाले हैं, अर्थात् जिसे इनमेंसे एक रोग होगा, उसे शेष दो भी हो सकते हैं। अग्निबलके नाश होनेसे बवासीर, अतिसार और संग्रहणी रोग बढ़ते हैं और अग्निबलके बढ़नेसे ये तीनों नष्ट हो जाते है, अतः इन तीनों रोगोंमें अग्निबलकी रक्षा करनी चाहिये।

नोट—अगर बवासीर रोगमें खून बहुत जियादा गिरता हो,तो "रक्तपित्त" रोगकी तरह पथ्यापथ्य पालन करना चाहिये। कहा है —

यत्पथ्य यदपथ्य च यद्यन्ते रक्तपित्तिनाम्।
रक्तार्शो रोगिणा तत्तदपि विशाद्विशेषत ॥

रक्तपित्तमें जो चीजें पथ्य और अपथ्य हैं, वह बवासीरवाले को भी खूनी पथ्य और अपथ्य जाननी चाहियें ⊛।

रक्तपित्त रोग में पथ्य।

⊛ पुराने चांवल, मूँग, चना, अरहर, मोंठ, गाय या बकरीका घी दूध, भैंसका घी, कटहर, चिरौंजी, केले की फली, जल-चौलाई, परवल, * दरस, पुराना पेठा, ताड़-फल, अड़ूसा अनार, खजूर, सौंफ, नारियल की गिरी, कसेरु, सिंघाड़े, कैथ कमल, फालसे, तरबूज, खीलों का सतू दाख, मिश्री, शहद, ईख, शीतल जल, झरने का जल, १०० धारका धोया घी, शीतल हवा, चन्दन लगाना, चांदनी मोती, हीरा, पन्ना, केले के भीतरके पत्ते या कमल के पत्ते की शय्या रेशमी कपड़े बागीचा, कमल वाला तालाब सुन्दर गाना शीतल रेत और कपूर प्रभृति आहार विहार "रक्त-पित्त" रोगी को पथ्य है।

रक्तपित्त में अपथ्य।

कसरत-कुश्ती, पैदल चलना, धूपमें फिरना, मलमूत्रादि वेगोंको रोकना, चपलता करना हाथी घोड़े पर चढ़ना पसीना निकालना हुक्का पीना मैथुन करना क्रोध करना, गुड़ बैंगन तिल उड़द सरसों, दही, कूए का जल पान मदिरा, लहसन सेम, विरुद्ध भोजन चरपरे पदार्थ, खट्टे नमकीन और दाहकारक पदार्थ रक्तपित्त वालेको अपथ्य हैं।

विशेष चिकित्सा।

नोट—पहले हम सामान्य चिकित्सा न लिखकर ' विशेष चिकित्सा" लिखते हैं। इसमें दवा देनेवालेका फर्ज है कि वह बवासीर की किस्म को समझ कर दवा दे, यानी यह देखे कि बवासीर वातज, पित्तज या कफज है अथवा खूनी बवासीर है। इस तरह परीक्षा करके दवा देने से फौरन आराम होगा। इसके आगे हम "सामान्य चिकित्सा" लिखेंगे। जो इस तरह बवासीर का निर्णय न कर सकें, उन्हें सामान्य चिकित्सा ही करनी चाहिये।

—*—

वातज बवासीर की चिकित्सा।

(१) आकके पीले पत्ते और पांचों नमक,—इनको तेल और खटाई में पीस कर, मिट्टी के कुल्हड़े में भरकर, ऊपर से सराई रख कर, कपड़-मिट्टी कर दो और गजपुट में फूंक दो एवं स्वांग शीतल होने पर निकाल लो। इस खार को मद्य अथवा गरम जल के साथ सेवन करने से "वातज बवासीर" आराम होजाती है। बादी बवासीर के लिये यह योग रामबाण है। परीक्षित है।

पित्तज बवासीरकी चिकित्सा।

(२) काले तिलों का चूर्ण, नागकेशर और मिश्री—सब को पीस कर, मक्खनमें मिला कर खानेसे "पित्तज बवासीर" आराम होती है। परीक्षित है।

(३) सुगन्धवाला और सोठको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस कर छान लो। इसकोएक माला चाँवलोंके जलमें पीस कर और शहद मिला कर पीने से पित्त की बवासीर नाश हो जाती है।

नोट—पित्तज बवासीर में पहले जुलाब देकर दवा देना अच्छा है।

कफज बवासीरकी चिकित्सा।

(४) अदरख का काढा नित्य-नित्य पीने से कफज बवासीर चली जाती है। परीक्षित है।

नोट—अदरख के अभाव में सोंठ ले सकते हैं।

(५) चीता, छाजबेर, हींग और नमक—इन चारो को कूट-पीस कर, माठा में मिला कर पीने से कफज बवासीर आराम होती है। परीक्षित है।

(६) पञ्चकोल का काढा पीने से कफज बवासीर शीघ्र ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—पीपल पीपलामूल, चव्य, चीता और सोठ—इन पाँचो को "पञ्चकोल" कहते हैं।

रक्तार्श-चिकित्सा।
खूनी बवासीरका इलाज।

कुटजाद्य घृत।

(७) इन्द्रजौ, कुड़े की छाल,नागकेशर,नील कमल,लोध और धाय के फूल—इनके कल्क द्वारा "घी" पकाकर, सेवन करने से खूनी बवासीर सय पीडा के जाती रहती है।

कुटज लेह।

(८) कुड़े की छाल साढे बारह सेर लेकर, एक मन चौदह सेर

जल में औटाओ। जब आठ सेर जल रह जाय, उतार कर छान लो। इसके बाद खाली काढ़े को फिर चूल्हे पर चढ़ाकर औटाओ। जब गाढ़ा हो जाय, नीचे लिखी चीज़ों का चूर्ण उसमें मिला दो:— शुद्ध भिलावे ८ तोले, वायबिडङ्ग ८ तोले, त्रिकुटा ८ तोले, त्रिफला ८ तोले, रसौत ८ तोले, चीते की छाल ८ तोले, इन्द्रजौ ८ तोले, वच ८ तोले, अतीस ८ तोले, बेलगिरी ८ तोले पुराना गुड़ २॥ सेर, घी १ सेर और शहद एक सेर। सबको मिला कर अमृतबान में रख दो।

मात्रा ६ माशे की। अनुपान शीतल जल, माठा, या बकरी का दूध। इस "कुटजलेह" के सेवन करनेसे खूनी बवासीर, रक्तपित्त और रक्तातिसार अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

गरीबी नुसखे।

(९) लाल चन्दन, चिरायता, धमासा और सोंठ—इनका काढ़ा रक्तार्श या खूनी बवासीर को नाश करता है।

(१०) दारुहल्दी, खस और नीम की छाल—इनका काढ़ा भी खूनी बवासीर को नाश करता है।

(११) नौनी घी और तिलोंको मिला कर खाने से खूनी बवासीर नाश हो जाती है।

(१२) नागकेशर, मिश्री और नौनी घी—इन तीनों को मिला कर खाने से खूनी बवासीर नष्ट होती है।

(१३) चूका, नागकेशर और कमल—इनके द्वारा खीलों की पेया बना कर पीने से खूनी बवासीर आराम हो जाती है।

(१४) खिरेंटी और पिठवन के द्वारा पेया बना कर पीने से खूनी बवासीर आराम हो जाती है।

(१५) लजवन्ती, कमल, मोचरस, लोध और चन्दन—इनको बकरी के दूध में औटाकर पीने से खूनी बवासीर जाती रहती है।

(१६) अतीस, कूड़े की छाल, इन्द्रजौ और रसौत—इनके चूर्ण

को शहद में मिलाकर, चाँवलों के जल के साथ लेने से खूनी बवासीर नाश हो जाती है।

(१७) नागकेशर और मिश्री छै छै माशे लेकर, नौ माशे ताज़ा मक्खन में मिला कर, सवेरे शाम, खाने से ७ दिन में खूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) काले तिल १ तोले, तोले भर मक्खन में मिला कर सवेरे ही, रोज़, खानेसे ८ दिन में खूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—दो तोला मक्खन में बिना छिलको के तिल मिलाकर खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(१९) सूरन या ज़मीकन्द का भुरता बनाकर, दहीके साथ, रोज़-रोज़, खानेसे खूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२०) जगली गोभी की तरकारी घी में पकाकर और सेंधानोन डालकर, रोटी के साथ,८ दिन खाने से छहों प्रकार की बवासीर चली जाती है। परीक्षित है।

(२१) कमल-केशर २ माशे, नागकेशर २ माशे, शहद ३ माशे, चीनी २ माशे और मक्खन ६ माशे—सबको मिलाकर, रोज़, खाने से खूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) महा नीम के बीज ११ और शक्कर ६ माशे मिलाकर, जल के साथ रोज़ रोज़ फाँको। इस दवा से खूनी बवासीर ज़रूर नाश हो जाती है।

(२३) माजूफल१ तोला,बसलोचन ६ माशे,छोटी इलायची के बीज ६ माशे, कत्था सफेद ६ माशे, मूली के बीज ६ माशे, रसौत ६ माशे और तज्जरीक की छाल ५ तोले—सब को कूट पीस कर छानलो और पानी के साथ खरल करके जगली बेर के समान गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लो। हर दिन, सवेरे एक गोली, पानीके साथ खाने से खूनी बवासीर आराम हो जाती है।

(२४) चिरचिरे के बीज चाँवलों के धोवन में पीस कर पीने से खूनी बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२५) माठा में पीपल का चूर्ण डाल कर पीने से बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२६) विदारीकन्द और तिलों का चूर्ण, शहत और दूध के साथ, पीने से खूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) छिले हुए, बिना छिलको के, काले तिल १ तोले लेकर, पीस लो और ६ माशे चीनी मे मिलाकर फाँक जाओ और ऊपर से १ छटाँक बकरी का दूध पीओ, फौरन बवासीर का खून बन्द होगा। दूध में सब को मिलाकर पीने से भी लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—कोई कोई काले तिलो की पिट्ठी में बराबर की मिश्री मिलाते हैं।

(२८) कमल का नरम पत्ता पीसकर, मिश्री के साथ, खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

(२९) सवेरे ही बकरी का दूध पीने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

(३०) रसौत ७ माशे, बीज समेत मुनक्के १४ माशे और कतीरा ७ माशे—सब को कूट पीस छान जगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। हर सवेरे एक गोली खाओ और ऊपर से दो ग्रास रोटी के "घी" के साथ खाओ। इससे बवासीरका खून बन्द हो जायगा।

(३१) मुचकन्द के फूल महीन कूट पीस और छान कर, चीनी और घी में डाल कर हलवा बनाओ और १ तोला खाओ। इससे खूनी बवासीर आराम हो जायगी।

(३२) एक नारियल के ऊपर का छिलका लेकर जलाओ और उसकी राख के बराबर शक्कर मिलाकर, तीन खूराक बनाओ। इसकी एक-एक खूराक रोज़ सेवन करने से बवासीर का खून बन्द हो जायगा, परन्तु एक वर्ष तक मैथुन नहीं करना चाहिये।

(३३) जली हुई इसबन्द और जले हुए गेहूँ बराबर-बराबर लेकर

पीस लो। इसमेंसे ६माशेकी मात्रा, दो तोले घीके साथ, खाओ। इससे बवासीर के दस्त बन्द हो जायेंगे।

(३४) निरमली जलाकर और उसमें थोड़ी सी शक्कर मिलाकर खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

(३५) इमली के चीयों की राख, दहीके साथ, खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है। मात्रा १ से २ माशे तक।

(३६) गेरू और खड़िया मिट्टी बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इसमें से आधा दाम, रोज़, दही और चाँवलोंके साथ, खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

(३७) ज़मीकन्द के टुकड़े-टुकड़े करके छाया में सुखा लो। फिर छील-छील कर और कूट छानकर एक दाम नित्य सवेरे ही खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

(३८) कुरैया की छाल, गोपीचन्दन, नागकेशर और रसौत—बराबर-बराबर लेकर कूट पीस छान लो। हर दिन ८ माशे फाँकने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

(३९) कमल की केशर, शहत, ताज़ा मक्खन, चीनी और नागकेशर—सबको एक में मिलाकर खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(४०) करीलकी जड़ लाकर, छाया में सुखाकर, जौकुट कर लो और तीन सेर पानी में औटाओ। जब आध सेर जल रह जाय, उतार कर पानी छान लो। पाव भर जल सवेरे और पाव भर साँझ को पीओ। इस तरह ७ या १० दिन करने से बवासीर का खून बन्द हो जायगा और मस्से गल जायँगे।

(४१) आम की कोंपल पानी में पीस छान कर, थोड़ी शक्कर मिलाकर पीने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

(४२) दो तोले कसौंधी आध पाव जलमें पीस छान कर और २।३ माशे गेरूका चूर्ण मिलाकर पीने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

(४३) गैंदे की पत्तियाँ ६ माशे से एक तोले तक और काली मिर्च २ माशे से ३ माशे तक, एकत्र कर लो और पीस छान कर पी जाओ। इससे बवासीर का खून बन्द हो जायगा।

(४४) सूखे या हरे गूलर पानीमें पीस कर और मिश्री मिला कर पीने से खूनी बवासीर, खूनी अतिसार और खूनी वमन और मासिक खून का ज़ियादा गिरना आराम हो जाता है।

(४५) कुलफ़ा का साग, दही के साथ, खाने से बवासीर का खून बन्द होता है।

(४६) दही की मलाई और माठा बहुत दिनों तक सेवन करने से खूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(४७) ककोड़े की गाँठ का चूर्ण चीनी के साथ फाँकने से खूनी बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(४८) करेलों का रस अथवा करेलेके पत्तों का रस निकाल लो। उसमें से २ तोला रस १ तोला मिश्री मिला कर सात दिन तक सवेरे ही पीओ। इससे खूनी बवासीर निश्चय ही शान्ति हो जाती है। कोई प० नरोत्तमजी शर्मा इसे अपना आज़माया हुआ लिखते हैं।

(४९) कुड़ेकी छाल, कुड़ेकी जड़, कमल-केशर, खैर की जड़ और धव की जड़—इन सबको दो तोला लेकर, दूध में पकाओ और दूधके बराबर पानी मिला दो। दूध मात्र रहने पर मल छानकर पीओ। इससे खूनी बवासीर नाश होती है। ११दिन तक पीना चाहिये।

(५०) माजूफल ८ दाने,सज्जी तीन माशे और आम के पत्ते ६ नग—इनको कूट पीस कर, तमाखू की तरह चिलम में रख कर पीने से खूनी बवासीर आराम हो जाती है।

(५१) मक्खन और काले तिल मिलाकर खाने से खूनी बवासीर नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(५२) केवल नागकेशर को पीसकर और मक्खन में मिलाकर खाने से खूनी बवासीर नाश होजाती है। परीक्षित है।

(५३) गायके दहीको कुछ चला कर, बिना "घी" निकाले माठा पीने से शीघ्र ही खूनी बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(५४) करेले के पत्तों या फलोंका रस निकाल कर, उसमें चीनी मिलाकर पीनेसे खूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(५५) कुकरौंदे के पत्तों के २ तोले रस को १ तोले गाय के घी में मिला कर, सात दिन, पीने से खूनी बवासीर आराम हो जाती है। पर इस के साथ कव्वे के पङ्ख, मोर के पङ्ख या चमगादड़ की लैंडी—इन तीनों में से जो मिले, उसी की धूनी गुदा मे सात या चौदह दिन तक देते रहनेसे निसय ही बड़ा फायदा होता है। विनायक रामचन्द्रजी इसे अपना परीक्षा किया हुआ नुसखा बताते हैं।

सामान्य चिकित्सा।

हमारा परीक्षित दन्त्यरिष्ट।

(५६) दन्तीकी जड़ ८ तोले और दशमूलकी दवाएँ आठ-आठ तोले, हरड़ ८ तोले, बहेड़ा ८ तोले, आमला ८ तोले और पुराना गुड़ २॥ सेर—इनको लाकर तैयार रखो।

पहले दन्ती और दशमूलकी दसों दवाओं को कूट कर ६४ सेर जल में पकाओ। पकते-पकते हरड़ बहेड़े आमले का पिसा-कूटा चूर्ण इसमें मिला दो। जब जलते-जलते चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो और उसमें वही गुड़ मिला कर, घीकी चिकनी हांडी में भर कर, मुँह बन्द करके १ मास तक ज़मीनमें गाड़े रहो, और पीछे

निकाल कर काम में लाओ। मात्रा ८ माशे से डेढ तोले तक। बवासीर के आराम करने में यह अरिष्ट रामवाण है।

नोट—कोई जमीनमें गाडते हैं और कोई इसी तरह घरमें रखते हैं।

अभयारिष्ट ।

(५७) हरड १ सेर, आमले २ सेर, कैथकी गिरी आधसेर, इन्द्रायण ४ तोले, बायबिडङ्ग ८ तोले, पीपर ८ तोले, लोध ८ तोले, काली मिर्च ८ तोले और एलुआ ८ तोले—इन सब को कूट कर सवा छै मन जल में औटाओ। जब १मन १२॥ सेर जल रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे इस में पच्चीस सेर पुराना गुड मिलाकर, घी के चिकने बर्तन में १ मास तक रखा रहने दो। इसकी मात्रा १ तोले से १॥ तोले तक है। इसके सेवन से बवासीर, सग्रहणी, अग्निमान्द्य, हृद्-रोग, तिल्ली, कोढ, सूजन वगैर नष्ट होते और बलवीर्य बढता तथा कृमिरोग, कामलवात, क्षय और ज्वर नाश होते हैं।

कल्याण लवण ।

(५८) शुद्ध भिलावे, त्रिफला, दन्ती की जड और चीता—सब को बराबर-बराबर लेकर और इन सबके वज़न से दूना सेंधा नोन लेकर रखो। इन सबको कूट-पीस कर, नारियलके खप्परमें भर दो और जङ्गली कण्डोकी आगमें मन्दाग्नि से पकाओ। पक जाने पर उतार कर रख लो। यह नमक बवासीर रोगियोंको बडा प्यारा और हितकारी है।

समशर्कर चूर्ण ।

(५९) सोंठ ७ तोले, पीपल ६ तोले, काली मिर्च ५ तोले, नागकेशर ४तोले, तेजपात ३ तोले, इलायची १ तोले, और मिश्री २६ तोले,—सबको एकत्र मिला कर रख दो। इस चूर्ण की मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है। अनुपान जल है। इससे बवासीरमें खूब लाभ होता है।

व्योषाद्य चूर्ण।

(६०) त्रिकुटा, चीता, शुद्ध भिलावे, वायविडङ्ग, तिल और हरड़,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो और चूर्णके वज़न के बराबर गुड़ मिला दो। इसके सेवन करनेसे बवासीर, सूजन, विष-दोष, कोढ़, मन्दाग्नि और कृमिरोग आराम होते हैं। मात्रा ३ से ६ माशे तक। अनुपान जल।

(१) मरिचादि चूर्ण।

(६१) काली मिर्च १ तोला, पीपल २ तोला, सोंठ ३ तोला, चीता ४ तोला और ज़मीकन्द १६ तोला—सब का चूर्ण करके, गुड़ के साथ सेवन करने से बवासीर नाश होती है। मात्रा ६ माशे। अनुपान गरम जल।

(२) मरिचादि चूर्ण।

(६२) काली मिर्च, पीपल, सेंधानोन, सफ़ेद ज़ीरा, कूट, बच, हींग, सोंठ, वायविडङ्ग, हरड़, चीतेकी जड़ और अजवाइन—इन सब को दो-दो माशे लेकर पीस-कूट और छान लो। फिर इस में चार तोले पुराना गुड़ मिला दो। इसकी मात्रा ४ से ६ माशे तक है। इस चूर्ण से भी बवासीर नाश हो जाती है।

पर्पटी रस

(६३) शुद्ध पारा १ तोला और शुद्ध गन्धक १ तोला—दोनोंको खरलमें डालकर खूब घोटो। जब चमक न रहे, एक दम काली कजली हो जाय, उसमें ३ माशे घी और चार तोला बोल मिला दो। सब को लोहे के कलछे में पकाओ, जब लेई सी पतली हो जाय, चूल्हे से उतार कर केलेके पूरे पत्ते पर फैला दो और ऊपर से दूसरा केलेका पत्ता रखकर, खूब दबाओ; ताकि पपड़ी सी हो जाय। जब पपड़ी सी

शीतल हो जाय, उसे शीशी में रख दो। इसके लगातार कुछ दिन सेवन करने से, सब तरह की बवासीर और उनकी वेदना दूर हो जाती है। परीक्षित है। मात्रा चार चाँवल भर।

जातीफलादि वटी।

(६४) जायफल, लौंग, पीपल, सेंधानोन, सोंठ, शुद्ध धतूरेके बीज, शुद्ध सिङ्गरफ और शुद्ध सुहागा—इन को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस छान कर महीन कर लो। पीछे इस चूर्ण को जामुन के अर्क में घोट कर रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इनके खाने से सब तरह की बवासीर निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—अगर जामुन का अर्क न मिले, तो नीबू के रस में घोट सकते हो।

आर्द्रकावलेह।

(६५) गुड़ २॥ सेर और अदरख २॥ सेर—दोनों को क़लईदार देगची या मिट्टी की हाँडी में पकाओ। जब अवलेह के समान गाढ़ा हो जाय, उसमें—अजवाइन २ तोला, नागरमोथा २ तोला, धनिया २ तोला, दालचीनी २ तोला, तमाल पत्र २ तोला, इलायची २ तोला, ज़ीरा २ तोला और लोहभस्म २ तोला,—इन सबका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और थोड़ासा "घी" भी मिला कर चलाओ और आग से उतार लो। जब शीतल हो जाय, उसमें थोड़ा सा असली शहद मिलाकर अमृतबान या काँच के बर्त्तन में रख दो। इसका नाम "आर्द्रकावलेह" है। यह बोपदेव ने लिखा है। इसके सेवन से बवासीर, शूल, खाँसी, क्षय, जुकाम और गुल्म रोग में खूब लाभ होता है। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है।

बृहत्सूरण मोदक।

(६६) सूखे ज़मीकन्द का चूर्ण १६ तोले, चीतेकी जड़की छाल ८ तोले, सोंठ ४ तोले, काली मिर्च २ तोले, त्रिफला ४ तोले, पीपला-

मूल ४ तोले, तालीसपत्र ४ तोले, शुद्ध भिलावे ४ तोले, वायबिडङ्ग ४ तोले, मुलेठी ८ तोले, विधारा के बीज १६ तोले, दालचीनी २ तोले, और इलायची २ तोले—इन सबको कूट-पीस छान कर चूर्ण बना लो। जितना चूर्ण हो, उस से दूना "पुराना गुड" मिलाकर लड्डू बना लो। काम और धनकी इच्छा करने वाले पुरुष को यह लड्डु सेवन करने चाहिये। जो मनुष्य इन लड्डुओं को सेवन करते हैं और इन पर भारी और पुष्ट भोजन नहीं करते, उनके अनेक उपद्रवों को यह लड्डू शान्त कर देते हैं। इस योगराजके प्रभाव से पहले अगस्त्य ऋषि को भस्माग्नि हो गई थी और भीमसेन को भस्मानल हो गया था। इसी से वे दोनो अत्यन्त भोजन करते थे। ये लड्डू अग्नि और बल बढाने मे राम बाण है। यह शस्त्र, क्षार और अग्नि कर्म के बिना ही बवासीर को नाश कर देते हैं। इनके सेवन से सूजन, श्लीपद—हाथी-पाँव, कफवातकी सग्रहणी, हिचकी, श्वास, खांसी,राजयक्ष्मा और प्रमेह नाश हो जाते है। बवासीर नाश करना तो इनका प्रधान कर्म है। यह मैथुन शक्ति के बढानेवाले और रसायन है।

नोट—इसमें त्रिफला ४ तोले लिखा है। कोई-कोई त्रिफले की तीनों चीजें चार चार तोले लेते हैं। कोई-कोई मुलेठी की जगह मूसली डालते हैं। ऐसा ही ठीक है। हमने इसी तरह परीक्षा की है। बवासीरकी यह प्रसिद्ध दवा है।

सूरण वटक।

(६७) सूखे ज़मीकन्द का चूर्ण ३२ तोले,चीते के जडकी छाल १६ तोले, सोंठ ४ तोले और काली मिर्च २ तोले—सब को कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। फिर चूर्णके वज़न के बराबर 'पुराना गुड' मिला कर गोली बना लो। इन गोलियों के खाने से छहों तरहकी बवासीर आराम होती हैं। इसके सिवा गोला, उदर रोग, हाथी पाँव और अग्निमान्द्य रोग भी आराम होते हैं। मात्रा १ तोला। अनुपान जल।

नोट—यह नुसखा शार्ङ्गधर का है । कोई कोई वैद्य जमीकन्द १६ भाग चीनी ८ भाग, सोंठ ४ भाग और मिर्च २ भाग लेते हैं ।

अगस्त्य मोदक ।

(६८) हरड़ १२ तोले, त्रिकुटा १२ तोले, दालचीनी ३ तोले, तेजपात ३ तोले और गुड़ २ तोले—इन सब को एकत्र पीसकर लड्डू बना लो । ये अगसत्य मोदक सूजन, बवासीर, संग्रहणी खाँसी, और उदावर्त्त नाशक है ।

प्राणदा गुटिका ।

(६९) सोंठ १२ तोले, काली मिर्च १६ तोले, पीपल ८ तोले, चव्य ४ तोले, तालीसपत्र ४ तोले, नागकेशर २ तोले, पीपलामूल ८ तोले, तेजपात ७ माशे, छोटी इलायची १ तोले, सफेद जीरा १ तोले, काला जीरा १ तोले, दालचीनी १ तोले, खस १ तोले और अजमोद १ तोले—इन सब को कूट-पीस कर छान लो । पीछे इस चूर्ण में १२० तोले या १॥ सेर "पुराना गुड़" मिला कर ६।६ माशेकी गोलियाँ बना लो । मात्रा ६ माशे से १ तोले तक । समय—भोजन के पहले या पीछे । अनुपान पानी ।

इन गुटिकाओं के सेवन करने से सहज बवासीर, खूनी बवासीर, वात, पित्त और कफ की बवासीर, सन्निपात की बवासीर, पानात्यय रोग, मूत्रकृच्छ्ररोग, बालरोग, गलग्रह, विषम ज्वर, पित्तज्वर, पाण्डु रोग, कृमि रोग, हृदय-रोग, गुल्म, शूल, वमन, अतिसार, कामला और हिचकी ये सब आराम होते हैं ।

सूचना ।

(१) अगर इन्हें मलरोधक और पित्त की बवासीर में देना चाहो, तो 'सोंठ' की जगह 'हरड़' डालो और गुड़ के स्थान में चूर्ण से चौगुनी चीनी मिलाओ । इन्हें अम्ल-पित्त, मन्दाग्नि और गुदा के रोगों में दे सकते हैं ।

(२) कफ के रोग में अनुपान ४ तोला पीओ और पित्त के रोग में १२ तोले ।

(३) वात रोग में फलों की कांजी, धानों की कांजी, रसौदन और मदिरा का अनुपान है।

(४) पित्त के रोग में ईख का रस, दूध और शीतल जल का अनुपान है।

(५) कफ के रोगों में गरम जल और यूष का अनुपान है।

जिस तरह तेल जल में डालने से तत्काल फैल जाता है; उसी तरह अनुपान से औषधि शीघ्रही शरीर में फैल जाती है। हमने अलग-अलग अनुपान लिखे हैं। रोग में जिस दोष की अधिकता हो या जिस दोष का रोग हो, उसी के अनुसार अनुपान तजवीज करो, तो तत्काल सिद्धि मिलेगी।

भल्लातक गुड़।

(७०) २००० भिलावे लेकर १६ सेर जल में पकाओ, जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। उस छने काढ़े में ४०० तोले गुड़ डालो और उन सीजे हुए भिलावोंमें से ५०० भिलावे टुकड़े कर-कर के, उसी में डाल कर पकाओ। जब पक जायें, तब त्रिफला, त्रिकुटा, अजवायन, नागरमोथा, सेंधानोन, दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेशर—इन में से प्रत्येक का चूर्ण एक-एक तोला मिला दो। यही 'भल्लातक गुड़' है। इसमें से बलाबल देखकर हर दिन खाओ। इस गुड़ के सेवनसे कोढ़, बवासीर, कामला, संग्रहणी, पाण्डु, तिल्ली, खाँसी और भगन्दर प्रभृति रोग आराम होते हैं।*

---

* गुड़ और खांड की ६ तोले, चार तोले या दो तोलेकी उत्तम, मध्यम और हीन मात्रा होती है।

जल से भरे हुए बर्तन में गुड़ को डालो। यदि वह गुड़ जल में न डूबे, निश्चल भाव से ठहर जाय, चारों तरफ को न फैले, तथा पकते-पकते कलछी से लगने लगे, जिस से तन्तु से छूटने लगें तो गुड़ पाक हुआ समझो। यही गुड़ पाक की विधि है। जो हाथ से छूने और मलने से नरम हो जाय, जो गन्ध वर्ण और रसपूर्ण हो तथा अङ्गुलियों से मलनेसे जिस की बत्ती सी हो जाय, वह गुड़पाक अच्छा हुआ जानो। अगर भिलावे तैयार करते-करते कहीं सूजन पैदा हो जाय; तो नीचे के उपायोंसे काम लो —

(क) देवदारु, सरसों और नागरमोथा—बराबर-बराबर लेकर, मक्खन में मिला

अर्श कुठार रस।



(७१) (क) शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले,—इन दोनों को खरलमें डालकर धीरे-धीरे घोटो, जिससे पारा खरलसे निकल कर उछल न जाय। जब काजलकी समान काली और चिकनी कज्जली हो जाय, उसे निकाल कर एक काँच या चीनी के प्याले में रख लो। इसी को "कजली" कहते हैं। यह एक काम हुआ।

(ख) अभ्रक भस्म २ तोले और फौलाद लोह भस्म एक तोले,—इन दोनो को एक प्याले में मिलाकर रख लो।

(ग) वेलगिरी १ तोले, बड़ी हरड़ १ तोले, चीतेके जड़ की छाल १ तोले, सोंठ १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, पीपल १ तोले और शुद्ध जमालगोटा १ तोले,—इन सब को अलग-अलग लाकर पीसो छानो और इन पिसे-छने चूर्णोंको एक-एक तोले लेकर एक प्यालेमें अलग रखो। यह तीसरा काम हुआ।

(घ) सुहागे को आग पर फुला लो, जब खील सी हो जाये, ५ तोले उसमेंसे अलग रख लो। इसी में ५ तोले, सेंधानोन और ५ तोले जवाखार भी रख दो। पीछे इन तीनो को महीन पीस लो। यह चौथा काम हुआ।

(ङ) गोमूत्र बत्तीस तोले और थूहर का दूध बत्तीस तोले लाकर अलग रखो। यह पाँचवाँ काम हुआ।

(च) अब ऊपर की क, ख, ग, घ, ङ, में तैयार रखी, हुई सभी चीज़ों को एकत्र मिलाकर, लोहे की खूब साफ़ कड़ाही में चढ़ाकर,

---

कर, उस स्थान पर लेप करो। इस लेप से भिलावोंका विकार निश्चय ही आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(ख) मक्खन, तिल, दूध और मिश्री—इनका लेप करने से भी भिलावोंका विकार शान्त होता है। केवल घी और मिश्री के लेपसे भी लाभ होता है। परीक्षित है।

(ग) आमलों के पत्तों का रस शरीर पर मलने से भिलावे की महाव्याधि नाश होती है; पर साथ ही मिश्री और नीबू का रस पीना भी जरूरी है। परीक्षित है।

चूल्हे पर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब गाढा हो जाय उतार लो और खरलमें डालकर घोटो। घुटने पर एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। सेवन विधि—रोज़ सवेरे ही एक या दो गोली, बलाबल अनुसार, गरम जल के साथ सेवन करो। इस रस से बवासीर अवश्य नाश हो जाती है।

नोट—रसायनसार से लेकर हमने यह नुसख़ा आज़माया था दो-दो माशेकी मात्रा से हमने किसी-किसीको हानि देखी, इसी से १ माशे सेवन कराया और लाभ उठाया। यह नुसख़ा परमोत्तम है।

गरीबी नुसखे।

(७०) कड़वे नीम के पके हुए फलों का गूदा तीन माशे लेकर, छै माशे गुड़ में मिलाकर, सात दिन तक खाने से बवासीर में निश्चय ही आराम मालूम होता है। परीक्षित है।

(७१) करञ्ज, चीते की छाल, सेंधानोन, इन्द्रजौ, और अरलू की छाल—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, चूर्ण बनालो। इस चूर्ण को 'छाछ' के साथ फाँकने से खूनी, बादी और सहज बवासीर आराम होती हैं। परीक्षित है।

(७४) प्याज़के महीन-महीन टुकड़े करके धूपमें सुखा लो। सूखे टुकड़ों में से १ तोले प्याज़ लेकर, 'घी' में तलो। पीछे उसमें एक माशे तिल और दो तोले मिश्री मिलाकर रोज़ सवेरे खाओ। इस से बवासीर आराम हो जायगी। परीक्षित है।

(७५) प्याज़ के रस में घी और चीनी मिलाकर खानेसे बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(७६) कड़वे नीम के २१ पत्ते महीन पीस कर मूँग की बिना छिलकों की धोई दाल में मिला कर, गाय के घी में उस की पूरी सी बना लो। शेष में जो घी कड़ाही में रहे, उस घीको खानेसे बवासीर के मस्से गिर जाते हैं। (पूरी को खाने की दरकार नहीं, रोज़ इसी

तरह पूरी पकाकर घी निकाल लो और पूरी फेंक दो)-"समन्दर नोन" न खाना चाहिये। हाँ,सेंधानोन थोड़ासा खा सकते हो। इसके सिवा और वायु नाशक हल्के पदार्थ खाओ। पर घी रोज़ तैयार कर के, २१ दिन तक, खाना जरूरी है। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक। परीक्षित है।

(७७) गङ्गावती का रस १ तोला और घी १ तोला मिला कर खाने से बवासीर नाश होती है। परीक्षित है।

(७८) कालीमिर्च, चीते के जड़ की छाल और सेंधानोन-तीनोंको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो और शीशी में भर कर रख दो। इसमें से १॥ माशेसे ३ माशे तक चूर्ण, माठेमें मिलाकर, सेवन करने से गुल्म, मन्दाग्नि, बवासीर और संग्रहणी तथा पेट के अन्य रोगों में निश्चय ही लाभ होता है। परीक्षित है।

(७९) ढाक के पत्तों की राख २० तोला, पानी ६० तोला, सोंठ ५ तोला, काली मिर्च ५ तोला, पीपर ५ तोला, और गाय का घी ५ तोला—लाकर रखो। कलईदार कड़ाही में पानी,घी, ढाक के पत्तों की राख और सोंठ, मिर्च, पीपर का चूर्ण सबको डालकर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब पानी जल जाय, घी रह जाय, उतार कर छान लो और किसी चिकने बर्तन में रख दो। इस में से दो तोले 'घी" दस तोले 'दूध' के साथ, साँझ सवेरे, पीना चाहिये। पं० नन्दकिशोरजी प्रयाग से लिखते हैं, कि इसके सेवन से गुदा के मस्से गिर पड़ते हैं।

(८०) एलुआ ५ तोले,रसौत ५ तोले और शुद्ध गूगल २॥ तोले—इन तीनों को एक सेर मूलियों के रस में घोट कर, चने के बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली, बासी पानी के साथ, खानेसे हर तरह के मस्से,विशेष कर खूनी मस्से,आराम हो जाते हैं। परीक्षित हैं।

(८१) गर्भवती स्त्री को गर्भ की हालत में बहुधा कब्ज रहता है।

इससे ववासीर हो जाती है। अगर गर्भ रहने से पहले ववासीर होती है, तो गर्भावस्था में और भी जोर पकड़ जाती है। गर्भावस्था में पैदा होने वाली ववासीर, बच्चा जनने के बाद, अपने-आप शान्त हो जाती है। गर्भवती को ववासीर की वजह से अधिक तकलीफ हो, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहिएँ। ये उपाय आज़मूदा हैं, अवश्य लाभ दिखाते हैं।

(क) ववासीर में ऐसा उपाय करना बहुत ज़रूरी है, जिससे रोज़ दस्त साफ़ होता रहे। दो तोले मुनक्का दाख (बीज निकाल कर) एक पाव जल में औटाकर, चौथाई जल रहने पर उतार लो और मल छान कर पिला दो। इससे दस्त साफ़ होता रहेगा और गर्भवती को हानि नहीं होगी। अथवा चार माशे 'त्रिफले का चूर्ण' थोड़ी सी "मिश्री" मिलाकर खिलाओ। इससे भी दस्त साफ आता रहेगा।

(ख) माजूफल को खूब महीन पीसकर, उसमें ज़रासी अफ़ीम मिला कर, पानीमें गाढ़ा-गाढ़ा लेपसा बनाकर मस्सों पर लगा दो। अथवा रसौत को जल में पीस कर लेप करो। अथवा हरड़ को जल में पीसकर लेप करो। ये तीनों उपाय उमदा हैं। इनमें से किसी एक से काम लो।

(ग) अगर मस्सों में खुजली, दर्द और सूजन प्रभृति से बहुत कष्ट हो, तो "भाँग" को जल में पीस कर, उसकी लुगदी को 'घी' में सान कर और कुछ गरम करके, टिकिया सी बनाकर, गुदा द्वार पर रख कर बाँध दो। इससे फौरन शान्ति आवेगी।

(८२) जिससे वायु की चाल ठीक रहे, अग्नि दीपन हो और रोज़-रोज़ दस्त साफ होता रहे—ऐसी दवा और पथ्यका सेवन ही ववासीर का सच्चा और कारगर इलाज है। हम चन्द परीक्षित उपाय नीचे लिखते हैं—

(क) हर दिन बड़ी खजूर पाँच दाने और मुनक्का दाख १ तोले

लेकर—दोनोंको गाय के दूध में डालकर औटाओ, पर औटाने से पहले दूध में कुछ पानी ज़रूर मिला दो। दूध पानी को मन्दी-मन्दी आग से पकाते रहो। जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, उतार कर कपड़े में छान लो और पी जाओ। इस तरह रोज़-रोज़ करने से दस्त साफ़ आवेगा और ताक़त बढ़ेगी।

(ख) बवासीर रोगी अगर हरड़का मुरब्बा, दाख, गुलकन्द या पके अञ्जीर—इन में से कोई न कोई चीज़ रोज़ सेवन करता रहे, तो उसे बड़ा आराम मिलेगा। ये सब नरम दस्तावर चीज़ें हैं। बवासीर में रोज़ दस्त साफ़ होना परमावश्यक है।

(ग) बड़ी हरड़ को घी में भून कर, उसके बराबर बिरिया सचरनोन या बिड़नोन मिला कर चूर्ण करके रख लो। रात को सोते समय, इसमें से ३ माशे चूर्ण फांक कर ऊपर से गरम जल पी लेने से सवेरे ही दस्त साफ होगा, कोठा शुद्ध होकर वायु नीचे को खुलेगा और बड़ा आराम मालूम होगा।

(घ) काले तिल लाकर धो लो और छिलके उतार लो। पीछे उन्हें किसी बासन में रख दो। रोज सवेरे १ तोले यही तिल मक्खन और मिश्रीमें मिलाकर खाने से खूनी बवासीर की तकलीफ मिट जाती है।

(घ) घोल (बिना पानी मिला माठा) बवासीर में बड़ा हितकारी है। इसमें भुना हुआ ज़ीरा और सेंधा नोन मिलाकर, दिन में, रोज़ सेवन करने से बवासीर में बड़ा लाभ होता है।

(ङ) बन्दाल के सूखे फलको, बिना धूएँ के अङ्गारों या कोयलोंकी आग पर रख कर, पाखाने से आते ही उसकी धूनी मस्सोंको दो। ३।४ दिन ऐसा करने से बवासीर आराम हो जाती है।

नोट—बन्दाल को देवदाली या घूँघर बेल भी कहते हैं। यह लता गुर्च की लताकी तरह पेड़ पर चढ़ती है।

(८३) रसौत और कलमी शोरा—दोनों को बराबर-बराबर

लेकर, मूली के रस में घोटकर, चने-समान गोलियाँ बना लो। ह
दिन,सवेरे शाम, एक-एक गोली खाकर बासी जल पीने से खूनी श्रौ
बादी दोनो बवासीर आराम हो जाती है। अनेक बारकी परीक्षित है

मात्रा—१ से चार गोली तक है। बलाबल देखकर कम-ज़िया
देनी चाहिये।

(८४) नीमकी निबौली, रसौत और हरड़—इन तीनों क
महीन कूट और पीस छान कर खरलमें डालो और ऊपर से "अर्क
लाब" दे दे कर घोटो। घुट जाने पर तीन-तीन रत्ती की गोलियाँ ब
कर खाओ। इस दवा से बवासीर निश्चय ही शान्त हो जाती है
परीक्षित है।

(८५) पकी नीम की निबौलियाँ पुराने गुड़ में मिला कर खा
से बवासीर आराम हो जाती है।

नोट—(१) नीमकी निबौली और रसौत—दोनोंको एकत्र घी में पीसकर औ
गरमकरके,मस्सोंपर सहाता-सहाता गरम लेप करनेसे पीड़ा शान्त हो जाती है।

नोट—२) यूनानी चिकित्सा में नीम के मद की बड़ी तारीफ लिखी है। ब
सीर और भगन्दर में इस मद की पिचकारी देने से बड़ा लाभ होता है।

(८६) हरड़को घीमें भून कर और उसमें गुड़ और पीपल
चूर्ण मिलाकर सेवन करने से दस्त ठीक होता और बवासीर वा
को सुख मिलता है।

(८७) चिरचिरे की जड़ के चूर्ण में तिल और शुद्ध भिलावे
चूर्ण मिलाकर, जल या चाँवलों के धोवन के साथ, सेवन करने
अग्नि खूब बढ़ती है। यह नुसखा कोढ़ को नाश करता और बवासी
को तो जड़ से ही उड़ा देता है।

(८८) बैंगनको त्रिकुटे के काढ़े और चार में उबालो।
बाद निकालकर घी में भूनो और गुड़ के साथ खाओ और
से थोड़ासा 'माठा' पीओ। इससे अत्यन्त बढ़ी हुई बवासीर
सहज बवासीर भी आराम हो जाती है।

(८८) कांघी की पत्तियाँ २१ और काली मिर्च २१ लेकर—दोनों को पानीमें पीस, सात गोलिया बना लो। सुबह शाम एक-एक गोली खाने से खूनी और बादी दोनो बवासीर आराम होती है।

(८०) नीम के बीजो की गिरी, बकायनके बीजों की गिरी, गूगल, रसौत, एलुआ, काली मिर्च और गेरू—इन सबको पीस कूटकर खरल में डालो और ऊपर से मकोय की पत्तियों का रस डालकर घोटो और जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली खाने से खूनी और बादी, दोनों तरह की, बवासीर नष्ट हो जाती है।

८१) रसौत दो भाग, अनारकी छाल ४ भाग और गुड ८ भाग, इनको कूट छान कर गोलियाँ बनालो। सवेरे शाम, सोलह-सोलह माशे खाने से खूनी और बादी दोनो बवासीर नष्ट होती है।

(८२) कुसुम के फूल ३ माशे, जल में पीस कर, दही में खाने से खूनी और बादी दोनों बवासीर आराम हो जाती है।

(८३) काली जीरी बारह माशे लेकर, आधी कच्ची रक्खो और आधी भून लो। इसीमें से हर दिन ४ माशे, साँठी चाँवलों के पानी के साथ, खाने से खूनी और बादी दोनों बवासीरें आराम होती है।

(८४) हुलहुल के बीज १ भाग और शक्कर दो भाग मिला कर रख लो। दो माशे रोज़, सवेरे-शाम, खानेसे खूनी और बादी दोनो बवासीर आराम हो जाती हैं।

(८५) गाय का दूध आध सेर कटोरे में लेकर मुँह के पास रक्खें और एक घूँट पीवें। उसी समय, कोई दूसरा आदमी, फौरन ही, एक या आधे कागजी नीबू का रस उस दूध में टपका दे और आप झट पीजावें। एक सेकण्ड की भी देर न करें। इस से बवासीर आराम हो जाती है और तीन दिन में ही गुण नज़र आता है। परीक्षित है। बड़ा ही चमत्कारक उपाय है।

(८६) लहसन २० माशे, सज्जी २० माशे, हींग २०माशे, निबौलीकी

गिरी २० माशे और गुड़ ८० माशे—सब को एकमें मिला कर, बा-
बारह बारह माशे की गोलियाँ बनालो। सवेरे शाम एक-एक गोली
खाने से छहों तरह की बवासीर नाश हो जाती है।

(८७) बबूल की पतली फलियाँ, जिन में बीज न पड़े हों, लाकर
छाया में सुखालो। सूखने पर कूट पीस कर छान लो। पन्द्रह
दिन तक, इसमें से ६ माशे चूर्ण, जलके साथ, खाने से सब तरह की
बवासीर चली जाती है। परीक्षित है।

(८८) सीपका चूना पानी डालकर खरल मे घोटो। घुट जाने पर
जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके २१ दिन
तक खाने से बवासीर आराम हो जाती है।

(८९) हारसिंगार के बीजों की मींगी १ तोले और कालीमिर्च
३ माशे,—इन दोनों को पीसकर,जलके साथ खरल करके गोलियाँ
बना लो। एक गोली रोज़ सवेरे खाने से बवासीर निश्चय ही आराम
हो जाती है।

(१००) कुकरौंधे का स्वरस एक सेर लेकर, कलईदार कड़ाही में
औटाओ,जब गाढ़ा हो जाय,उसमें ६ माशे कालीमिर्च पीसकर मिला
दो औरजङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो और उनको छाया
में सुखा लो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली खाने से बवासीर अवश्य
नष्ट हो जाती है। मगर कम-से-कम ३ हफ़्ते ये गोलियाँ सेवन
करनी चाहियें।

नोट—अगर यही गोलियाँ सरसों के तेल में पीसकर,रोज़ गुदाद्वार पर लगायी
जायँ,तो निश्चय ही बवासीर नष्ट हो जायगी।

(१०१) करञ्ज की मींगी ३ माशे और शकर ६ माशे दोनोंको
मिलाकर,२१ दिन तक,खाने से बवासीर अवश्य नाश हो जाती है।

(१०२) निरमली के फल को जला कर, उसकी राख कर लो।
इस राखमें से ३ माशे राख लेकर और उसमें उतनी ही चीनी मिला
कर, १५ दिन तक, खाओ। यह बवासीर पर अच्छा नुसखा है।

(१०३) बबूलके फल या फूल ६ माशे लेकर, उनमें ६ माशे चीनी मलाओ और कुछ दिन लगातार खाओ। यह नुसखा भी बवासीर र उत्तम है।

(१०४) आमाहल्दी और सफेद मोम—दोनों बराबर-बराबर लेकर, बारके दाने के समान गोलियाँ बना लो। हर रोज़ सवेरे एक गोली ाकर पानी पी जाओ। १५ या २१ दिन में, खूनी और बादी, दोनों वासीरें आराम हो जायँगी।

(१०५) ज़मीकन्द को आक के पत्तों से लपेट कर, उस पर डोरा स कर बाँध दो। पीछे उस पर मिट्टी दो दो अँगुल चढाकर सुखा ो। इसके बाद, आरने उपलों की आगमें उस गोले को रख दो। ब गोला आगके समान लाल हो जाय, निकाल लो। शीतल होने पर मट्टी और पत्ते फेंक दो। इस ज़मीकन्द को तेल और नोन के साथ ाओ। इस तरह २१ दिन खाने से बवासीर अवश्य आराम हो ाती है। साथ ही वायु के विकार भी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०६) भैंसा गूगल, लहसन, नीमकी निबौली, हींग और सोंठ— इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस कर, जलके साथ घोटो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के शीतल जलके साथ लेने से बवासीर जड़ से नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१०७) नीम की निबौलियों की मींगी, बकायनकी गिरी, कच्ची इमलीकी गिरी और भैंसा गूगल—सब को पाँच-पाच तोले चार-चार माशे लो और मिश्री २१ तोले ४ माशे लो। सब को कूट पीसकर चूर्ण बना लो और फिर खरलमें घोटकर जङ्गली बेरके समान गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली खाकर ज़रासा जल पीलो। इन गोलियों से बवासीर नाश हो जाती है। परहेज़ कुछ नहीं।

(१०८) कुछ दिन लगातार मोठ की दाल खाने से बवासीर और वायु-गोले में लाभ होता और खून भी साफ होता है।

(१०८) छाछमें सेंधानोन मिलाकर पीनेसे खूनी बवासीर नष्ट होती है।

(११०) छाछ में अजवाइन और सेंधानमक मिला कर पीने से बवासीर और वायुगोला दोनों आराम हो जाते हैं।

(१११) गिलोय का सत्त मक्खन में मिलाकर खाने से बवासीर आराम हो जाती है। मात्रा ४ रत्तीसे २ माशे तक है। परीक्षित है*।

(११२) कञ्जा (करञ्ज), सोंठ, इन्द्रजौ, सोनापाठा, सेंधानोन और चीता—इनको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस और छान कर चूर्ण कर लो। इसमें से २ या ३ माशे चूर्ण, रोज़-रोज़, माठे में मिला कर पीने से रक्त सहित मस्से गिर पड़ते हैं। परीक्षित है।

---

* गिलोय के सत्त के आश्चर्य चमत्कार को देखकर हम मुग्ध हो गये। अलग अलग अनुपानों के साथ सेवन करने से यह बड़ा गुण करता है। चन्द प्रयोग हम लिख देते हैं —

(१) बवासीर में मक्खन के साथ गिलोय का सत्त खाओ।
(२) ताकतके लिये, गायके धारोष्ण दूधमें मिश्री मिलाकर
(३) अरुचि में, अनार के रस में
(४) वमन में, चाँवलों की खीलों के साथ
(५) पीलिया में,घी और शहत में या दूध में
(६) जीर्णज्वर में, घी और मिश्री के साथ
(७) दाह में, जीरे और मिश्रीके साथ
(८) पित्त ज्वर या पित्त में, बूरे के साथ
(९) ज्वर में, शहत के साथ
(१० कोढ़ में रेंडी के तेल मे
(११) क्षय रोग में, घी मिश्री और शहत मे
(१२ मन्दाग्नि में, गोरख-मुण्डी के साथ
(१३) गुल्म में, सोंठ के साथ
(१४) प्रदर में, लोध के चूर्ण में
(१५, हिचकी पर, शहत में
(१६) कमल रोग में, दाख के रस में
(१७ प्रमेहमें गायके १ पाव दूधमे,या त्रिफलेके चूर्ण और मिश्री में
(१८) वायु रोगमें, घीके साथ।

(११३) गुड के साथ हरड खाने से बवासीर फौरन नाश हो जाती । "वैद्यविनोद" में लिखा है:—

अर्शांसि नाशयत्याशु गुडयुक्ता हरीतकी

वृन्द नामक वैद्यने भी कहा है —

पित्तश्लेष्म प्रशमनी कच्छू कण्डू रुजापहा।
गुदजान्नाशयत्याशु योजिता सगुडाऽभया॥

हरड गुड के साथ सेवन करने से पित्तकफ को शान्त करती, ोढ़ और सूखी तथा मीठी खुजली को नाश करती एवं गुदा के व रोगों को आराम करती है। परीक्षित है।

(११४) चीते की जड की छाल लेकर, उसे पानी के साथ पीस र, लुगदी सी बना लो। पीछे, एक कोरी मिट्टी की हाँडी में, ीतर की ओर, उसे चारों ओर लहेस दो और हाँडी को छाया में खा लो। इसके बाद उसी हाँडी में दही जमाओ। सवेरे दही बलोकर माठा तैयार करो। इस हाँडी का माठा, बवासीर नाश रनेके लिये, कम-से-कम २१ दिन सेवन करना चाहिये। रामवाण ! कितनी ही बार परीक्षा की है।

(११५) चीता, हाऊबेर और हीग—इन तीनों को बराबर-बराबर ाकर, कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। इसमें से २।३ माशे चूर्ण माठे में मिलाकर पीने से बवासीर नाश हो जाती है।

(११६) अगर बवासीर वाले का मल बडी तकलीफ से निकलता ो, तो उसे सेंधे नमक में घी मिलाकर खाना चाहिये। इससे सहज ों पाखाना होने लगेगा।

(११७) दालचीनी, तेजपात, इलायची, साँभर नोन, त्रिकुटा, जीरा ौर कालाजीरा—इन सबको बराबर-बराबर लाकर, पीस-कूट ार चूर्ण बना लो। इस चूर्ण में से ३ से ६ माशे तक चूर्ण 'सत्तू और ही' के साथ खाने से कब्ज़ मिटता, आमशूल नाश हो जाता, रुचि ोती और बवासीर शान्त हो जाती है।

(११८) अजवायन और विरिया सचर नोन का चूर्ण,माठे के साथ सेवन करने से ववासीर वाले को आराम मालूम होता है। इससे दस्त ढीला और साफ होता तथा भूख बढ़ती है।

(११९) केवल सेंधानोन मिली हुई छाछ हर तरहकी बवासीर वालेको हितकारी है।

(१२०) सेंधानोन, पाढ़,अनारका रस और गुड़—इनको समान-समान लेकर, माठे में मिलाकर पीने से वायु और मल यथामार्ग स्थित रहते हैं। यह बवासीरमें पथ्य है।

(१२१) तिल, शुद्ध भिलावे, हरड़ और गुड़—बराबर-बराबर लेकर, पीस कूट कर गोलियां बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली खाने से बवासीर, श्वास, खाँसी, तिल्ली, पीलिया और ज्वर, ये सब नाश हो जाते हैं।

मस्से नाशक लेप।

(१२२) हल्दी और कड़वी तोरई का लेप सब तरह के मस्सों को नष्ट करता है। परीक्षित है।

नोट—इन दोनोंको कड़वे तेल में मिला कर लेप करने से और भी जल्दी आराम होता है।

(१२३) आक के पत्ते और सहँजने के पत्तों का लेप भी मस्सों के लिये अच्छा है। परीक्षित है।

(१२४) नीम और कनेर के पत्तों का लेप मस्सोंको नष्ट करता है। परीक्षित है।

(१२५) कड़वी तोया और गुड़ को, काँजी में पीस कर,लेप करने से ववासीर के मस्से नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१२६) सेंहुड़ के दूध में हल्दी का चूर्ण मिला कर, एक बूँद मस्से पर लगा देने से मस्सा नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१२७) आक का दूध, सेंहुड का दूध, तितली का पत्ता और डहर करञ्जकी छाल,—सब को बराबर-बराबर लेकर, बकरी के मूत्र में पीस कर, मस्सों पर लेप करने से मस्से गिर पड़ते हैं। इन सबकी बत्ती सी बना कर, फिर उसे तिलीके तेल में भिगो कर, गुदा में रखने से भी मस्से गिर पड़ते हैं और मालूम नहीं होता। परीक्षित है।

(१२८) बसलोचन, इलायची, कत्था और नीलाथोथा—सबको बराबर-बराबर एक-एक तोला लेकर, नीबू के रस में घोटकर, गोलियां बनालो। इन गोलियों को जल में घिस कर लगाने से मस्से गिर पड़ते हैं।

(१२९) पीपल, हल्दी, शंख, सज्जी, करञ्जवेके बीज, करञ्जवे के पत्ते, सेंधा नमक, घुंघची (चिरमिठी), नागकेशर, नागकेशर के बीच के बीज, नागकेशर की जड़, तूतिया, धतूरा, मुर्गे की विष्ठा, धतूरा, अजवायन और तोरई के बीजों का रस—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, थूहर और आक के दूध में भावना दो। शेष में गाय के दूध में भावना दो, यानी इस तरह बारम्बार उपरोक्त दूधों के साथ खरल करो या भावनादो। यह 'सिद्ध योग' है। इसका लेप करने से बवासीर ग्रन्थि, अर्बुद, नाड़ी व्रण, गण्डमाला, अपची इत्यादि अधिमांश दोष से उत्पन्न हुए विकार भी नष्ट हो जाते हैं।

(१३०) देवदाली के बीजोंकी मींगियोंको "गोमूत्र" में पीस कर, मस्सों पर लेप करने से मस्से जड़ से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१३१) थूहरका दूध मस्सों पर लगाने से बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१३२) भाँग १ तोला और अफीम १ माशे, दोनों को जलमें पीस, कपड़े पर लेपकर, ज़रा गरम करके, गुदा-द्वार पर बाँध दो। इससे बवासीर की पीड़ा तत्काल शान्त होती है। परीक्षित है।

(१३३) गन्दने का रस १ भाग निकालकर, आधे भाग मीठे तेलमें औटाओ, जब पानी जल कर तेल रह जाय, तब उस में से थोड़ा सा

तेल लेकर,उस में "गूगल" मिला कर,मस्से पर लेप कर दो। मस्सा गिर जायगा।

(१३४) हरी कनेर की जड़ पानी में पीस कर पाखाने में लेजाओ। पाखाना फिरते समय जब मस्से बाहर निकल आवें, इसमें से थोड़ी सी उनपर लगा दो। यद्यपि यह दवा बहुत ही पीड़ा करती है, पर है गुणकारी।

(१३५) खटमल को बवासीर या मस्सों पर मलने से बवासीर नाश हो जाती है।

(१३६) रूसे की पत्तियाँ छाया में सुखा कर, पीस छान कर रख लो। इसके हर दिन, चार पाँच बार, गुदा पर मलने से बवासीर आराम हो जाती है।

(१३७) नीम के हरे पत्ते कूट कर रस निकाल लो और मीठे तेल में मिलाकर औटाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार लो। इस तेलके मस्सों पर मलने से बवासीर नाश हो जाती है।

(१३८) गुदा पर सरोवर की काई मलने से मस्सों की जलन मिट जाती है।

(१३९) बीज समेत तितली की काँजी में पीसकर और गुड़में मिला कर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

(१४०) तूतिया १ माशे,मुलतानी मिट्टी ५ माशे और सिंदूर २ माशे, इन तीनोंको पीस-छान कर दो तोले मीठे तेल में मिला लो और रख लो। पाखाना जाते समय, इस में से थोड़ा सा तेल ले जाओ। जब मस्से बाहर निकलें, उन पर इसी तेल को रोज खूब मलो। इससे बवासीर आराम हो जायगी।

(१४१) आध पाव फिटकरी भून कर पीस लो और घीमें इस तरह मिलाओ, कि,गाढ़ी-गाढ़ी मलहम सी,हो जाय। दूसरी ओर सोये के बीज दो तोले पानी में पकाकर पीस लो। पहले इस लुगदी को गुदा पर बाँधो। इसके बाद वह फिटकरी की मरहम,

रूईके फाहे में लगा, उसके ऊपर रख दो। फाहे पर पान रख कर लँगोट कस दो। सात दिन तक, इसी तरह करके, रोज़, लंगोट लगाते रहो। सवेरे का लंगोट शामको खोलो और शाम का सवेरे। दवा दोनों समय ताज़ा लगाया करो। ७ दिनमें, पुरानी से पुरानी बवासीर, निश्चय ही, आराम हो जायगी। परीक्षित है।

(१४२) कलौंजी जला कर पीस लो और गुदा पर रोज़ मला करो अथवा कलौंजी की राख शहद में मिलाकर गुदापर रखा करो। इस उपाय से बवासीर आराम हो जायगी।

(१४३) हल्दी और तोरई को सुखाकर पीस लो। फिर इसमें सेंधानोन पीस कर मिला दो। शेष में सब को "गोमूत्र" में मिलाकर मस्सों पर लेप करो। इस लेपसे बवासीर के मस्से नष्ट हो जायेंगे।

(१४४) संखिया ६ माशे, आमलासार गन्धक १ तोले, हरताल १ तोले और हरड़ १ तोले लाकर रखो। पीछे इन चारों चीज़ों को पीस-कूट कर एक मिट्टी की सराई में रखो। फिर ऊपर से दूसरी सराई रखकर मुँह बन्द कर दो और कपड़-मिट्टी करके सुखा लो। पीछे सराई को चूल्हे पर रख कर, १५ मिनट तक, आग लगाओ। इसके बाद उतार लो और सराई खोल कर दवा निकाल लो। फिर तवे पर दो तोला घी डालो और उसी में सराई की दवा डालकर, ६ घण्टे तक घोटो और बाजरे के समान गोलियाँ बना लो। एक गोली नीबूके रसमें घोट कर मस्से पर लगाओ। इस लेपके लगाने से मस्से जड़से उड़ जाते हैं। छहों प्रकार की बवासीर और भगन्दर इस दवा से जड़ से नष्ट हो जाते हैं। यह दवा इस काम के लिये अव्वल दरजे की है।

(१४५) कड़वी तूम्बीको "सिरके" में महीन पीसकर गुदा-द्वार पर लेप करनेसे, शीघ्रही बवासीर नष्ट हो जाती है। कई बार परीक्षा की है।

(१४६) आक के पत्ते महीन पीस कर गुदा पर लेप करने से बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—रोज आकके पत्तोंसे गुदा पोंछने से भी बवासीर जाती रहती है।

(१४७) कुकरौंधे के पत्ते महीन पीसकर पाखाने की जगह लेप करने से बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१४८) तमाखू के पत्ते महीन पीस कर, गुदा पर लेप करने से बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१४९) सहँजने के पत्तों को महीन पीस कर लेप करने से मस्से नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५०) नीम और पीपल के पत्तों का लेप करने से मस्से नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५१) कड़वी तूम्बी और गुड़ को "सिरके" में महीन पीसकर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५२) कड़वे नीम के बीजों को तेल में तल कर, उसी तेल में पीस लो और उस में ज़रा सा "नीला-थोथा" पानी में घोल कर मिला दो। इस मरहम के लगाने से बवासीर के मस्से गल कर गिर जाते हैं। परीक्षित है।

(१५३) सफेद चिरमिटी ६ माशे, पेठेके बीज ६ माशे और ज़मीकन्द ६ माशे—इन तीनों को जल के साथ महीन पीसकर, कपड़े पर लेप करो और उसकी बत्ती सी बना लो। इस बत्ती को गुदाके भीतर २ अँगुल तक घुसाने से भीतरके मस्से और बादी बवासीर नष्ट हो जाती है, परन्तु लगातार तीन दिनों तक यह काम करना ज़रूरी है।

(१५४) बिच्छू को तेलमें तल कर, उस तेल को छान लो। उस तेल में रूई का फाहा भिगोकर गुदा-द्वारपर रखो। इस तेल से बवासीर की पीड़ा समेत बवासीर आराम हो जाती है।

नोट—कोई-कोई लिखते हैं कि, २५ बिच्छुओं को सरसों के तेल में डालकर ४० दिन तक शीशी या बर्तन को धूपमें रखो, तब बिच्छू का तेल तैयार होगा।

(१५५) माल-काँगनी की जड़ को पानी में पीस कर, मस्सों पर लेप करनेसे खूनी बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१५६) बड़ के पीले पत्ते लाकर जला लो। उनकी ६ माशे राख सरसों के तेल में मिला कर, लेप करने से मस्से नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५७) काले साँप की काँचली की राख "सरसों के तेल" में मिला कर, मस्सों पर लगाने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५८) सेंधानोन ३ माशे और देवदाली के बीज ३ माशे—दोनों को "सिरके" में महीन पीस कर, मस्सों पर लेप करने से बवासीर के सब तरह के मस्से अवश्य ही नष्ट हो जाते हैं। अनेक बार का परीक्षित योग है। यह नुसखा कभी फेल नहीं होता।

नोट—देवदाली को घूँघरबेल और बन्दाल भी कहते हैं। यह बेल गिलोय की तरह वृक्षों पर चढ़ती है।

(१५९) बाँसा, साधारण लोध, रसौत और कलिहारी की जड़—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, जल के साथ पीस कर, नाभि के चारों ओर, चार चार अंगुल तक, लेप करने से फिर कभी बवासीर नहीं होती। यह लेप बवासीर वालों के लिये मयङ्कर है।

(१५९क) माजूफल को खूब महीन पीस कर, उसमें ज़रासी अफीम मिलाकर, पानी में पीस कर, गाढ़ा-गाढ़ा लेप सा बनालो। मस्सों पर इसका लेप करनेसे बवासीर में बड़ा लाभ होता है। परीक्षित है।

(१६०) रसौत को जलमें पीस कर लेप करने से भी बवासीर नाश हो जाती है।

नोट—अगर इसके साथ-साथ रसौत और कलमी-शोरा बराबर-बराबर लेकर, मूली के रस में घोट कर गोलियाँ बना लो और सवेरे शाम एक-एक गोली खाओ, तो आराम होने में सन्देह ही क्या है? परीक्षित है।

(१६१) चीते की जड़, सुहागा, हल्दी और गुड़—चारों को समान-समान लेकर, पानी के साथ पीस कर, लेप करने से बवासीर नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—इस लेप को लगाओ और साथ ही चीते की जड़ की छाल पानीमें पीस

कर एक घड़े में लेप करो और उसी घड़े में रात को दही जमा कर, सवेरे माठा बना-कर पीओ इस तरह बराबर पीने से बवासीर निश्चय ही चली जायगी। इन उपायों से बहुत रोगी चंगे हुए हैं।

बवासीर नाशक बफारे

(१६२) भाँग की पत्तियाँ, नीम की पत्तियाँ, बकायन की पत्तियाँ, इमली की पत्तियाँ, सम्हालू की पत्तियाँ और नील की पत्तियाँ—इनको बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीस छान कर औटाओ। जब औट जाय, उतार कर गुदा को बफारा दो। इससे बवासीर नाश हो जाती है।

(१६३) बन्दाल को औटा कर, उसका बफारा गुदा को दो। बवासीर नाश हो जायगी।

नोट—बन्दाल को देवदाली या घूँघर बेल भी कहते हैं।

(१६४) हाथ पाँवों के नाखून छील कर जलाओ और बफारा दो। इससे बवासीर या मस्से नष्ट हो जायेंगे।

(१६५) अरण्ड की जड़, देवदारु, रासना और मुलहटी—इन सब को पीस कर, इनके वज़न से "चौगुना जौ का आटा" मिला कर, सब को दूध में डाल पकाओ। जब पक जाय, तब गुदा को इसका खूब बफारा दो या स्वेदन करो अथवा सेक करो। इससे मस्से नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६६) भाँग की पत्तियाँ, इमली की पत्तियाँ, नीम के पत्ते, बकायन की पत्तियाँ, सम्हालू की पत्तियाँ और नील की पत्तियाँ,—इन छहों तरह की पत्तियों को पाँच-पाँच तोले लाकर, सवा सेर जल में डाल, मिट्टी की हाँडी में, काढ़ा सा करो। जब तीन पाव पानी रह जाय, चूल्हे से उतार लो। पहले से चौड़े मुँह वाले बाँस की एक नली तैयार रक्खो। उस नली का एक मुँह हाँडी पर लगाओ और इस तरह लगाओ कि, उसकी भाफ उस नली में ही चढ़े, इधर उधर न निकले। नली का दूसरा मुँह रोगी की गुदा के सामने कर

दो। हाँडी में से जो भाफ निकले, गुदा को लगे। इस उपाय से मस्से जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं।

बवासीरके मस्सों पर बाँधनेकी औषधियाँ।

(१६७) भाँग की पत्तियाँ, गाय के दूध में पका कर, गुदा-द्वार पर बाँधो। इससे बवासीर नाश हो जाती है।

(१६८) मीठे तेल में धतूरे के फल जलाओ, जब तेल मात्र रह जाय, उस तेल को निकाल कर शीशी में रख लो। इस तेल में रुई का फाहा भिगो कर, मस्सों पर रख कर बाँध दो। इससे मस्से नाश हो जायँगे।

(१६९) कुकरौंधे के पत्तों का रस बवासीर पर मलो और उसके ऊपर उसी के पत्ते भी बाँध दो। इस तरह करने से बवासीर आराम हो जायगी।

(१७०) हरे अरण्ड के पत्ते पीस कर गुदा पर बाँधो, बवासीर आराम हो जायगी।

(१७१) सोये के बीज तीन तोले लाकर, पानी में पीस कर, टिकिया सी बना लो और उसे गुदा पर बाँध कर, ऊपर से आक का पत्ता रख कर, लङ्गोट कस लो। इस तरह ३ दिन में मस्से कट कर गिर पड़ते हैं।

नोट—आक, अरण्ड या तमाखू—इन तीनों में से किसी के भी पत्ते बाँधने से एक समान लाभ होता है।

(१७२) भाँग को जल में पीस, लुगदी सी बना लो और पीछे उसे घी में सान कर गरम करो तथा टिकिया सी बना कर गुदा पर बाँध कर लङ्गोट कस दो। इस उपाय से बवासीर का दर्द, खुजली और सूजन अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७३) कलमीशोरा ३ माशे और भुनी हुई फिटकरी ३ माशे—दोनोंको पीस कर, और साबुन के पानी में मिलाकर, बड़े बेर या पेमन्दी बेर के समान गोलियाँ बना लो। पाखाने से आकर, एक गोली गुदा में रख लो। सवेरे शाम, दोनों समय, तीन दिन तक, गोलियाँ चढ़ाते रहो। इससे कुछ कष्ट अवश्य होता है, पर यह नुसखा अकसीरका काम करता है। एक वैद्य महोदय इसे अपना आज़माया हुआ कहते हैं। हमने यह नुसखा "इलाजुलगुर्बा" से लिया है।

बवासीर नाशक काढ़े और धूनी।

(१७४) जवासे के काढे में बैठने से बवासीर नाश हो जाती और बन्द पेशाब भी खुल जाता है।

(१७५) हुलहुल की पत्तियों का काढा बनाकर, उससे पाखाने के बाद शौच करें यानी आबदस्त लें। इस तरह करने से बवासीर नाश हो जायगी।

(१७६) कचनार, जामुन और मौलसरी की छाल दो दो तोला लेकर, आध सेर पानी में औटाओ और आधा पानी रहने पर उतार लो। शीतल होने पर, उसी पानी से गुदा को धोने से बवासीर आराम हो जाती है। अच्छा नुसखा है।

(१७७) मिट्टी के बदले आक के पत्तों से गुदा को साफ करने से बवासीर आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१७८) हुक्के के पीले और सड़े हुए पानी से आबदस्त लेने से बवासीर नाश हो जाती है।

(१७९) ऊँट की खाल पर बैठने से बवासीर में बहुत लाभ होता है।

(१८०) कुचला जलाकर उसकी धूनी मस्सों को दो, इससे खून बन्द होगा और पीड़ा भी शान्त होगी। परीक्षित है।

(१८१) गिलहरी का मांस सुखा लो। सूखने पर कूट लो और

सवेरे शाम उसको आग पर डाल कर मस्सों को उसकी धूनी दो। इस धूनी से बवासीर आराम हो जायगी।

(१८२) देवदाली या बन्दाल का काढ़ा करके, उससे आबदस्त लेने से बवासीर में बेतहाशा लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—साथ ही एक तोला देवदाली महीन पीस कर ५ तोले जल में छान कर पीनी चाहिये। दोनों काम करने से अवश्य मस्से गिर पड़ेंगे।

(१८३) ६ माशे कपूर और आध पाव आमले—इन दोनों को तैयार रखो। एक मिट्टी के कुलहड़े में कोयलों की आग भर कर, ऊपर से वही कपूर और आमले डालो। रोगी को इस तरह बैठाओ कि, वह कुलहड़ा ठीक रोगी की गुदा के नीचे रहे और उससे निकला धूआँ मस्सों को लगे। ऊपर से एक चादर भी तान दो, ताकि धूआँ बाहर न जाने पावे। इस तरह कई दिन धूनी देने से बवासीर के मस्से नष्ट हो जायँगे। यह धूनी रोज़ रात को सोते समय देनी चाहिये।

(१८४) मनुष्य के बाल, आक की जड़, साँप की काँचली और साँप के दाँत, बैल का चमड़ा और छोंकरे के पत्ते—इन सब की धूप या धूनी देने से दुष्ट मस्से भी गिर जाते हैं। परीक्षित है।

(१८५) काले साँप, सूअर, ऊँट, गोदड़ और बिल्ली की चरबी को गुदा पर मलने या उनकी धूनी देने से बवासीर आराम हो जाती है,—बंगसेन।

(१८६) धावर बेल की धूनी देने से मस्से गिर जाते हैं।

(१८७) अच्छी सुरती, अच्छा चूना और अच्छा गुड़,—इन तीनों को मिलाकर, आग पर डालो और बादी बवासीर के मस्से को धूनी दो। अवश्य आराम होगा।

(१८८) बाज़ार से राल लाकर, सरसोंके तेल में उसे सान लो। पीछे बिना धूएँ की आग पर उसे रखकर, गुदा की धूनी दो। इस उपाय से खून का गिरना बन्द हो जायगा।

(१८८) गुदा को कपूर की धूनी देने से भी खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१८०) स्यारकी खाल के मोज़े पहननेसे बवासीर नाश होती है।

(१८१) कव्वे के पंख, मोर के पंख या चमगादड की लेंडी—इन तीनो में से जो मिले, उसी की धूनी गुदा में देने से ७ या १४ दिन में खूनी बवासीर नाश हो जाती है।

(१८२) मैनसिल, सोंठ, गूगल, सरसों, देवदार, पोहकरमूल, कलिहारी और सज्जीखार—इन सबको बराबर-बराबर ले, घीमें मिलाकर, गुदा के मस्सों को धूप देने से बवासीर, गुदा के रोग, भगन्दर और सड़े हुए घाव आराम होते हैं।

(१८३) सम्हालू के पत्ते, तेजपात, हरताल, सरसों का चूर्ण और देवदार—इनको समान समान लेकर घी, खाँड और शहतमें मिलाकर, धूनी देने से बवासीर, खुजली और विसर्प आदि आराम होते हैं।

(१८४) छुहारेके बीज बारीक पीसकर, उनकी धूनी देनेसे बवासीर नाश हो जाती है।

सूत बाँधकर मस्से काटनेकी तरकीबें

(१८५) हल्दीके चूर्णमें थूहरके दूधकी भावना देकर, उसमें सूत को डुबो लो और उसी सूत से मस्से को कसकर बाँध दो। इस तरह करने से मस्से और भगन्दर नष्ट हो जाते हैं।

नोट—(१) हमने इस तरह कई बार परीक्षा की और ठीक फल पाया। दो तोले हलदी को खूब महीन पीस छानकर थूहर के दूध में भिगो दो। पीछे सूत का बटा हुआ मजबूत धागा उसी में डाल दो। तीन दिन भीगने के बाद, चौथे दिन उसे छायामें सुखा लो। फिर उसी डोरेसे बवासीरके मस्से कस कर बाँध दो। ईश्वर कृपा से मस्से कटकर गिर पड़ेंगे। भगन्दरकी गाँठ भी इसके बाँधनेसे नष्ट हो जाती है।

नोट—(२) अगर रोगी को कष्ट हो, तो गरम घी चुपड दो या सौ बार का धोया घी धागे पर लगा दो। फौरन पीड़ा शान्त हो जायगी।

(१८६) थूहर का दूध, भिलावे, मालकाँगनी, त्रिफला, दन्ती, तोरई, चीता और सेंधा नमक—इन सब को एकत्र पीसकर और घी में मिला कर सूत पर लपेटो। पीछे उस सूत को खींचकर मस्सेपर बाँध दो। इस तरह करने से मस्से गलकर गिर जाते हैं।

दागकर बवासीर नाश करनेकी विधि।

(१८७) कनिष्ठका और अनामिका उँगलियों के बीच में दाग देने से बवासीर में लाभ होता है। हँसली पर दागने से भी बवासीर आराम हो जाती है। दागने के बाद, रुई पानी में भिगोकर उस जगह पर रखनी चाहिये।

नोट—लोहेकी डण्डी या ऐसी ही और किसी चीज को आग मे लाल करके उसी से दाग देना चाहिये। दाह देने से बहुत से रोग आराम हो जाते हैं। धनुर्वात, मृगी, उन्माद, चित्तविकार, बेहोशी और सन्निपात मे भौंह कनपटी और मस्तक मे दागने से लाभ होता है। नेत्र रोग और मृगी में भौंह, और कनपटी पर दागते हैं। कामला और पीलियामे पेट और ठोड़ी मे दागते हैं। उदरके सब रोगों मे पेट को दागते हैं। हृदय मे दर्द होने से हृदय को दागते हैं।

बवासीर नाशक तेल।

(१८८) नीम के बीजों का तेल निकाल कर, मस्सों पर मलने से बवासीर आराम हो जाती है।

(१८९) २५ बिच्छू सरसों के तेल में डाल कर ४० दिन तक धूप में रखो। बाद में इस तेल को मस्सों पर लगाओ, इससे पीड़ा समेत बवासीर नाश हो जायगी। परीक्षित है।

वृहत् काशीस आदि तेल।

(२००) हीराकसीस, कलिहारी, कूट, सोंठ, पीपल, सेंधा नोन, मैनसिल,

सफेद कनेर की जड़, बायबिडङ्ग, चीते की छाल, अड़ूसा, दन्ती, जमालगोटे की जड़, कड़वी तोरई के बीज, चौक और हरताल— इन पन्द्रह औषधियों को एक-एक तोले लेकर, कूट पीस कर सिल पर रक्खो और पानी डाल कर भाँग की तरह पीसो और लुगदी बना कर रख लो।

थूहर का दूध ८ तोले, आक का दूध ८ तोले, काले तिलों का तेल १ सेर और गोमूत्र ४ सेर लो। कलईदार कड़ाही के बीच में लुगदी रक्खो। ऊपर से दोनों दूध तेल और गोमूत्र डाल दो और कड़ाही को चूल्हेपर चढ़ाकर, मन्दाग्नि से पकाओ। जब तेलमात्र रह जाय, उतार लो।

तेल पकाने की और विधि।

—०%०—

पहले तेल को कड़ाही में चढ़ाकर खूब पकाकर शीतल कर लो। फिर इस पके हुए तेल में ऊपर लिखी सब दवाओं का महीन चूर्ण और आक तथा थूहर का दूध एवं गोमूत्र मिला दो और आग पर चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब गोमूत्र और दूध जल जायँ, तेलमात्र रह जाय, उतार कर शीतल कर लो और छानकर बोतल में भरदो।

नोट—यह ध्यान रहे,तेल जलने न पावे। जब लुगदी या कल्क का मसाला आग पर डालने से चट-चट शब्द न करे और झाग आने ही लगें, तब समझ लो तेल ठीक पक गया। अगर लुगदी जल जाय और साथ ही तेल भी कुछ जल जाय, वह तेल किसी काम का नहीं होता। इसलिये ज्योंही पानी जला दीखे,तेल को उतार लो।

सेवनविधि—अगर बवासीर के मस्से बाहर हों तो रोज़ कई बार इस तेल को मस्सों पर चुपड़ा करो। यदि मस्से भीतर हों, तो उँगलीमें तेल लगा कर तेलको भीतर मस्सों तक पहुँचा दो। अगर इस तरह सुभीता न हो, तो पिचकारी में भरकर पिचकारी लगवाओ। इस तेल से मस्से गिर जाते हैं और गुदा की वलियों में कोई हानि

नहीं होती। क्षार वगैर' लगाने की अपेक्षा इस तेल को लगाना उत्तम है। यह तेल बवासीर पर रामबाण है।, कोई दुर्भागा हो आराम न हो तो न हो। परीक्षित है।

क्षार से मस्से नाश करने की विधि।

क्षार से मस्से गिर तो झट जाते है, पर रोगी को तकलीफ होती है, इसी से हमारा विचार "क्षार प्रयोग" लिखने का नहीं था, पर स्वर्गीय रसायन-शास्त्री पण्डित श्यामसुन्दर आचार्य्य वैद्य महोदय ने क्षार द्वारा मस्से गिराने की एक बहुत उत्तम विधि लिखी है। उसे हम अपनी पुस्तक में लिखने का लोभ संवरण न कर सके, इसी से नीचे लिखते है :—

प्रतिसारणीय क्षार * एक तोला और गाय का घी चार तोला।

प्रतिसारणीय क्षार बनाने की विधि।

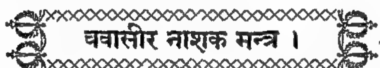
*पाव भर लोटिया सज्जी और आधसेर जिना बुझा चूना, दोनो को एक मिट्टी की नाँद में डाल कर ऊपर से दस सेर पानी भर दो। पीछे डण्डे से खूब चला दो। हाथ पैर मत लगाना, नहीं तो हाथका चमड़ा उतर जायगा। उसे पाँच दिन तक खुले मैदानमें रखा रहने दो, ताकि धूप और चाँदनी उस पर पड़ती रहे। मगर दिन में तीन चार रोज डडे से चलाना मत भूलो, नहीं तो मसाला जम जायगा।

छठे दिन नितरे हुए ऊपर के जल को लोहे की कढ़ाही में निकाल लो और भट्टी पर चढ़ाकर पकाओ। जब जलते-जलते आध सेर पानी रह जाय, इसमें "लहसन" का चार तोला स्वरस डाल दो और मन्दी आग से पकाओ। जब अन्दाजन १६ तोले पानी रह जाय, उतार लो और ठण्डा होनेदो, बस यह "प्रतिसारणीय क्षार" है। इस का रग लाल होता है और यह बहुत चिकना होता है। जहाँ लगाया जायगा ज़ख्म कर देगा। अगर थोड़ा लगाया जायगा, तो आबले या फफोले कर देगा। इस क्षार को शीशी में भर दो, पर हाथ पैर बचाना।

प्लेग की गाँठ या फोड़े की गाँठ पर,जहाँ नश्तर बिना काम न चले,इसे लगा दो। यह उन्हे फोड़ कर बहा देगा और उस जगह को स्याह कर देगा। महीना, २० दिन

दोनोको खरल में घोट कर एक-दिल करलो। इस क्षार-मिले घी को थोडा सा मस्सों पर लगाओ। ८।१० दिन में मस्से गिर जायँगे और विशेष कष्ट भी न होगा। अगर क्षारमें घी न मिलावे, तो क्षार से मस्से तो ५ मिनट में ही गिर जायेंगे, पर कष्ट बहुत होगा। इसीसे घी मिलाने की बात लिखी है।

इस क्षार के लगाने के सिवा, रात को सोते समय, ६ माशे कपूर और आध पाव आमले लेकर, एक कुलहडे में आग रख कर, उसी पर कपूर और आमले डालते जाओ और उसका धूआँ बवासीरवाले की गुदा को लगने दो। अच्छा हो, यदि रोगीके चारों ओर एक चादर तान दो, इससे धुआँ निकलकर बाहर न जायगा।



बवासीर नाशक मन्त्र।

ॐ भिभित्तिद्दिः ॐ ठः निवासिनि गरलं विषं स्वजीर्ण संभवं नानार्शं नाशय नाशय ठं ठं ठं फट् स्वाहा।"

में चमडे का रङ्ग आप ही मिल जायगा। इस के लगाने से रोगी को कष्ट होता है, पर बहुत जियादा कष्ट नहीं होता। अगर रोगी उतनी तकलीफ भी न सह सके, तो सौ बार का धोया घी लगा देना चाहिये। उस से शान्ति आजायगी।

बवासीर के मस्से बाहर हों अथवा शरीर मे कहीं मस्से हों या सफेद कोढ़का दाग हो या गजचर्म दाद हो और उस जगह को साफ करना हो, तो उसी जगह इस का लेप कर दो। यह उस जगह को साफ कर देगा और अपना घाव कर देगा। उस घाव पर गरम घी चुपडने से शान्ति आजायगी।

सूचना—इस क्षार का स्वभाव गर्म है इसलिए गर्म देश, गर्म मौसम और गर्म मिजाज का खयाल कर के और इन्हें बचा कर इसे काम में लाना। जब "बृहत् काशीसादि तेल" वगैर किसी से मस्से न गिरें, नश्तर ही लगवाना हो तब इस क्षार को लगाना चाहिये। पहले ही इसे कभी न लगाना चाहिये।

इस मन्त्र से सात बार कुशोंके द्वारा जल पढकर पीनेसे सात दिन में बवासीर नाश होती है।

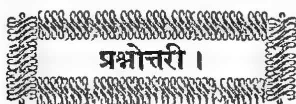
ॐ काली काली महाकाली मतरो बहुभिर्गच्छ यत्किंचिद्विहितं करु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र से सवेरे ही जल को सात बार पढकर पीने से बवासीर नष्ट हो जाती है।

ॐ काका करता करोरि करता आकर करता जो जो करता सो सो होय। हे रसना रसही से परवश विष दूर होय दुहाई लोनाचमारी की।

एक लोटेमें जल लेकर उस पर २१ बार यही मन्त्र पढकार फूँक दो। लोटेको हाथ मे रक्खो, ज़मीनपर न रखो। उस लोटे को पाखाने में ले जाओ। पाखाना फिरते समयभी लोटे को धरती पर न रखो, हाथ में ही लिये रहो। पाखाने से निपट कार उसी से आबदस्त लो। इस तरह ११ दिन करने से बवासीर नाश हो जाती है।

नोट—एक सज्जन जो परम विश्वसनीय हैं, कहते है कि, हमने ये तीनों मन्त्र अनेक बार आज़माये है, बिलकुल सच्चे हैं। पाठक परीक्षा करें और ठीक पाने पर कृपा कर हमें भी खबर दें।



प्रश्नोत्तरी।

प्र० (१) अर्श रोग का प्रचलित भाषामें क्या नाम है? अर्श किसे कहते हैं और यह कहां होता है?

उ०—संस्कृत में जिसे अर्श कहते है, प्रचलित भाषा में उसे ही बवासीर कहते हैं। गुदा में जो मस्से से हो जाते हैं, उन्हें ही अर्श या बवासीर कहते है। यह रोग गुदा की वलियों या आंटो में होता है।

प्र० (२)—अर्श रोग कितने प्रकार का होता है?

उ०—छै प्रकारका—(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज, (४) सन्निपातज, (५) सहज, और (६) रक्तज।

प्र० (३)—अर्श के सामान्य लक्षण क्या हैं ?

उ०—इस रोग में दस्त की कब्जियत रहती है भोजन नहीं पचता, मल कड़ा हो जाता है, गुदा के आँटों में मस्से हो जाते हैं, उन से कम और जियादा खून गिरता है।

प्र० (४) क्या सन्निपातज और सहज बवासीर के लक्षण एक से ही हैं ?

उ०—हाँ, जो लक्षण सन्निपातज अर्श के हैं वही सहज या जन्म की बवासीर के हैं।

प्र० (५) क्या पित्त की और रक्त की बवासीरों के कारण एक ही हैं ?

उ०—हाँ, जिन कारणों से खून की बवासीर होती है, उन्हीं कारणों से पित्तकी बवासीर होती है।

प्र० (६) वातज पित्तज, कफज, सहज और रक्तार्श के मस्सोंमें क्या भेद होता है ?

उ०—(१)वातज अर्श वालेके मस्से सूखे से होते हैं। उन से खून नहीं गिरता,पर एक तरह का दर्द होता रहता है। मस्से काले, लाल टेढ़े, कड़े, खरदरे, तीखे, फटे, गुद के और बेर खजूर या कपास के फलों-जैसे होते हैं।

(२) पित्तज अर्श वाले के मस्सों के मुख नीले, लाल, पीले और सफेदी लिये होते हैं उन में से महीन धार से खून चूता है और खून में बदबू आती है। मस्से महीन कोमल और शिथिल होते हैं।

(३) कफज अर्श वाले के मस्सों की जड़ गहरी होती है। उन में मन्दी-मन्दी पीड़ा होती है। मस्से कड़े, गोल,चिकने भारी, कफ से लिहसे और मणिके समान चमकदार, तथा करील या कटहर के काँटों-जैसे अथवा गायके थन-जैसे होते हैं।

(४) सहज अर्श वाले के मस्से कठोर, लाल रङ्ग के या पीले से होते हैं और उन का मुख भीतर की ओर होता है।

(५) रक्तार्श या खूनी बवासीर वाले के मस्से चिरमिटी-जैसे लाल और बड़के अङ्कुरों के समान होते हैं। उन से गरम-गरम खून निकलता है।

प्र० (७) बवासीर जब होने वाली होती है, तब उस के होने से पहले क्या लक्षण होते हैं ?

उ०—भोजन नहीं पचता, अग्नि मन्द रहती है, डकारें बहुत आती हैं, दस्त थोड़ा थोड़ा होता है, उदर रोग की शङ्का होती है, संग्रहणी या पीलिया के लक्षण भी नज़र आते हैं इत्यादि।

प्र० (८) केवल गुदा में दोषों के कोप करने से बवासीर रोग होता है, फिर रोगी का सारा शरीर क्यों कमजोर और कालासा हो जाता है?

उ०— गुदा के आँटों में मस्से होने से पाँचो प्रकार के वायु, पाँचो प्रकार के पित्त और पाँचो प्रकार के कफ कुपित होते हैं, इसी से सारे शरीर में नाना प्रकार के दु ख और कष्ट होते हैं।

प्र० (९)—कौनसी बवासीर सहज में आराम हो जाती है?

उ०—जो गुदा के बाहरी आँटे में होती है, जिस मे एक दोष का कोप पाया जाता है और जो एक साल से कम दिनों की होती है।

प्र० (१०)—क्या गुदा के दूसरे आँटे में और दो दोषो से होने वाली अर्श कठिनाई से आराम होती है?

उ०—हाँ, एक साल की पुरानी, दो दोषों से होने वाली और दूसरे आँटे में होने वाली अर्श बडी कठिनाई से नाश होती है।

प्र० (११) कैसी बवासीर असाध्य होती है?

उ०—तीनो दोषोंसे होने वाली, जन्मकी और गुदाके अन्तिम या तीसरे आँटे में होने वाली बवासीर असाध्य होती है। जिस बवासीरमें सूजन, मूर्च्छा और श्वास आदि उपद्रव होते है, वह भी असाध्य होती है।

प्र० (१२) कैसी बवासीर वाला निश्चय ही मर जाता है?

उ०—सूजन अतिसार, वमन, शिथिलता, प्यास,ज्वर, अरुचि, गुदा का पकाव, और हृदय में दर्द—ये लक्षण जिस बवासीर वाले में हो, वह नहा जीता।

प्र० (१३) डाक्टर लोग बवासीर के सम्बन्ध में क्या कहते है?

उ०—डाक्टर कहते हैं, निकम्मे बैठे रहने, बारम्बार दस्तावर दवा खाने, दस्त-कब्ज रहने या मूत्रेन्द्रिया की तकलीफ अथवा घोडे की बहुत सवारी करने से ,गुदा के नीचे की खून बहाने वाली नस में गडबड होने से बवासीर होती है।

प्र० (१४) साधारण वैद्यों को इलाज के सुभीते के लिये बवासीर के कितने विभाग करने चाहिएँ?

उ०—दो। (१) बादी और, (२) खूनी।

प्र० (१५) खूनी और बादी बवासीरो की क्या पहचान है?

उ०—अगर मस्से सुर्ख हो और उन से खून गिरे, तो वह खूनी बवासीर है। अगर मस्सों में पीडा, खाज और सूजन बहुत हो, तो बादी की बवासीर है। दस्त की कब्जियत बवासीर का मुख्य लक्षण है। असल मतलब यह है, खूनी बवासीर में खून गिरता है और बादी मे रोगी को पीडा होती है, पर खून नहीं गिरता।

प्र० (१६) वह कौन से तीन रोग हैं, जो परस्पर एक दूसरे के कारण है ?

उ०—अतिसार, संग्रहणी और बवासीर,—ये तीनो एक दूसरेको पैदा करने वाले हैं और तीनों ही गुदा में होते हैं।

प्र० (१७) अतिसार, संग्रहणी और बवासीर—इन तीनोंके होनेके मुख्य कारण क्या हैं ?

उ०—अग्नि का मन्दा होना। अग्नि के बलवान होने से बवासीर आदि रोग नष्ट हो जाते या घट जाते हैं और अग्नि के मन्दी होने से बढ़ जाते हैं, अत इन तीनों में अग्नि को बलवान करने वाले उपाय करने चाहियें।

प्र० (१८) खूनी बवासीर में भी गुदा से खून गिरता है और रक्तातिसार में भी गुदा से खून गिरता है, फिर कैसे जाना जाय कि, यह रक्तातिसार है या खूनी बवासीर ?

उ०—खूनी बवासीर गुदाकी बलि या आँतमें होती है और रक्तातिसार क्षुद्र आँत में होता है। खूनी बवासीर में लाल-लाल मस्से होते हैं, वह रक्तातिसार वाले के नहीं होते। रक्तातिसार में प्राय मलके साथ खून गिरता है, किन्तु खूनी बवासीर में मल के पहले या पीछे खून गिरता है। बवासीर में मल के साथ खून बहुत कम गिरता है। दोनों रोगोंके खूनमें जियादा फर्क नहीं होता, फिर भी बवासीरका खून चमकदार और खूब सुर्ख होता है।

प्र० (१९) बवासीर के इलाज में वैद्य को विशेषकर किस बात का ख्याल रखना उचित है ?

उ०—कह चुके हैं, अतिसार, संग्रहणी और बवासीर इन तीनों का मुख्य कारण मन्दाग्नि है। जब अन्न अच्छी तरह नहीं पचता, उसका प्रथक्करण नहीं होता, तभी बवासीर होती है। इसलिये वैद्य को वही काम करने चाहियें, जिनसे मेदा बलवान हो भूख बढ़े और दस्त साफ होता रहे।

प्र० (२०) बवासीर के इलाज में कौन-कौन से उपाय करने होते हैं ?

उ०—औषधि खिलाकर अग्नि तेज करनी होती है। नश्तर से, क्षार से, लेप से, धूनीसे, बफारे से अथवा ऐसे ही और उपायो से मस्सोंको गलाते या गिराते हैं ?

प्र० (२१) मस्से गिराने के उत्तमोत्तम उपाय क्या हैं ?

उ०—(१) "वृहत कासीस आदि तेल" मस्सों पर लगाओ या उँगलीमें लगा कर मस्सों तक पहुँचाओ अथवा इसी तेल की पिचकारी दो। इस तेल से गुदा के आँट खराब नहीं होते और मस्से मुरझा जाते हैं।

(२) ऊपर लिखे हुए परीक्षित लेपों में से कोई सा लेप करो अथवा बफारा दो या धूनी दो।

(३) अगर किसी तरह मस्सा न गिरे तो "प्रतिसारणीय क्षार" से मस्सा गिराओ, पर यह उपाय आखिरी है, क्योंकि इससे मस्से निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं, पर कष्ट होता है।

प्र० (२२) साधारण तौर से खूनी बवासीर में क्या करना चाहिये ?

उ०—(१) नागकेशर ६ माशे, मिश्री ६ माशे और नौनी घी ६ माशे मिलाकर सात दिन खाओ। अगर पुराना रोग हो, तो जियादा दिन खाओ।

(२) ज़मीकन्द का भुरता दही में मिलाकर खाओ।

(३) सवेरे ही बकरी का दूध पीओ।

(४) माठे में पीपल का चूर्ण मिलाकर खाओ।

(५) पृष्ठ १८६-१८६ के न० २४, २५, २६, २७ ३६ ५२, ५३, ५४ और ५५ नुसखे खूनी बवासीर वाले के लिये अच्छे हैं। यद्यपि एक दवा से सभी रोगी आराम नहीं हो जाते, पर इन नुसखों से लाभ हुए बिना नहीं रहता। हमने इनसे अनेक रोगी आराम किये हैं।

(६) नीम की निबौली, कलमी शोरा, रसौत, एलुआ और हरड़,—इनको एक-एक तोला लेकर, मूलीके रस में घोट कर, जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के खाने से एक दिनमें ही खून बन्द हो जाता है और बादी बवासीर १ मास में आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७) नीम की निबौली, बकायन के फल, रसौत शोधी हुई गूगल, बड़ी हरड़का छिलका,—इन पाँचों को दो-दो तोले लो, बड़ी पीपर एक तोले लो गुलाब के फूल ६ माशे लो और सनाय ६ माशे लो। सबको पीस-कूट और छानकर, शेषमें शोधी गूगल को मिला दो और खरलमें डाल कर "त्रिफलेके काढ़े" से घोटो। घुट जाने पर, एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। हर दिन रातको सोते समय, दो गोलियाँ खाकर गर्म दूध पी लो। इससे बवासीरकी सारी शिकायतें रफा हो जाती हैं। परीक्षित है।

सूचना—अगर आप को उपन्यास पढ़ने का भी शौक है, तो आप बंकिम बाबू और दामोदर बाबू के उपन्यास पढ़िये। उनके पढ़नेसे आप का मनोरञ्जन तो होगा ही पर साथ ही नसीहतें भी मिलेंगी, बंकिम चन्द्र के उपन्यासों की तारीफ करना सूर्यको दीपक दिखाना है। बंकिम बाबू के उपन्यासों के अङ्गरेज़ी, जरमन और फ्रेंच भाषाओं तक में अनुवाद हो गये हैं। उनके ये उपन्यास देखने काबिल हैं — (१) राजसिंह या चञ्चलकुमारी २॥), (२) देवी चौधरानी २), (३) सीता राम २।), (४) कृष्णकान्तका विल १॥), (५) रजनी १।/), (६) कपाल-कुण्डला १।), (७) युगलांगुरीय ।), (८) राधारानी ।/), (९) विषवृक्ष १॥), (१०) लोक रहस्य १।), (११) चन्द्रशेखर २)।



मन्दाग्नि वर्णन।

मन्दाग्नि के कारण।

अगर मन्दाग्नि के कारण तफसीलवार लिखे, तब तो एक बड़ा ज़बर्दस्त लेख हो जायगा। लेकिन उतना लिखने की हमारे पास गुञ्जाइश नहीं, अतः हम उसके पैदा होने के कारणों को दो भागों में बाँटते हैं, अर्थात् मन्दाग्नि रोग, मुख्य करके, दो कारणों से होता है'—

(१) मिथ्या आहार विहार।

(२) अन्य रोग।

इतने से इशारे से हमारे बहुत से पाठक नहीं समझेंगे, इसलिये हम ज़रा खुलासा कर देते हैं। हमारे आयुर्वेद-शास्त्रमें,रोगोंकी उत्पत्तिका कारण प्रायः मिथ्या आहार विहार ही अधिक लिखा है। और तो क्या, स्वयं रोगराज ज्वर भी मिथ्याहार विहारोंसे ही होते हैं। कहा है'—

मिथ्याहार विहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रया।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्नि ज्वरदा स्युरसानुगा॥

मिथ्या आहार विहार से वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष, आमाशय के जठर रस को बिगाड़ कर और कोठे के भीतर रहनेवाली अग्नि को बाहर निकाल कर, ज्वर उत्पन्न करते हैं।

वाग्भट महोदय ने भी कहा है :—

> कालार्थकर्मणां योगा हीनमिथ्यातिमात्रका:।
> सम्यक् योगश्च विज्ञेयो रोगारोग्यैककारणम्॥

काल, अर्थ, और कर्मका हीन, मिथ्या और अतियोग ही रोगोंका कारण है और इन तीनों का ठीक-ठीक या समान योग ही आरोग्य का कारण है।*

यही बात चरक ऋषिने भी कही है। इस एक वाक्यमें आरोग्यता की सच्ची कुञ्जी है। अगर लोग इस वाक्यको याद रख कर,सदा इसके अनुसार चलें, तो उन्हें रोगरूपी शत्रुओं के पञ्जों में हरगिज़ न फँसना पड़े। मतलब यह है कि, हम लोगों के नियमानुसार आहार विहार न करने से वात, पित्त और कफ—ये तीनो दोष कुपित हो जाते हैं और वे ही फिर रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र नामक धातुओं और मल मूत्रादि मलोंको बिगाड़ कर रोग पैदा कर देते हैं। इन तीनो के सम भाव से रहने पर रोग नहीं होते, पर इन में कमी-बेशी होने से ही रोग होते हैं। कहा है :—

> रोगस्तु दोषवैषम्य दोषसाम्यमरोगता।

दोषों की विषमता का नाम रोग और समानता का नाम आरोग्य है। दूसरे शब्दों में यों समझिये कि वात, पित्त और कफ़—इन तीनो दोषों के कम और ज़ियादा हो जाने से रोग होते हैं और इनकी समान भाव से रहने पर रोग नही होते। शरीर के भीतर से और बाहर से होने वाले दोनो तरह के रोग वात, पित्त और कफ की न्यूनाधिकता से होते है और इन तीनों दोषों की कमी-बेशी हम लोगों के मिथ्या आहार विहार अथवा काल, अर्थ और कर्म के हीन मिथ्या और अतियोग से होती है। मतलब यह निकला कि, हमारे

---

* अगर आप की समझ में यह काल, अर्थ और कर्म का हीन मिथ्या और अतियोग नहीं आया है,तो प्रथम भागके पृष्ठ ७७में लिखी ५६ वीं परिभाषा देखिये। उसे देखने से आप फौरन समझ जायँगे।

अनियमित खान पान और विहार से ही वात, पित्त और कफ "मन्दाग्नि रोग" पैदा करते है। जब ये तीनो दोष समान रहते हैं, तब "समाग्नि" रहती है। उस समय हमारा खाया-पिया ठीक रूप से पचता और उसकी रस रक्त आदि धातुएँ तथा मलमूत्र आदि बनते है। लेकिन जब वायु अधिक हो जाता है, तब हमारी जठराग्नि "विषम" हो जाती है। विषम अग्नि कभी तो अन्न को पचा देती है और कभी नहीं पचाती। बकौल धन्वन्तरि जी के, कभी वह पेट में शूल, अतिसार, उदावर्त्त, प्रवाहिका, पेट का भारीपन और गुडगुडाहट प्रभृति विकार करती है और कभी अन्न का पाचन कर देती है। इसी तरह जब पित्त अधिक हो जाता है, तब हमारी जठराग्नि "तीक्ष्ण" हो जाती है। वह हमारे खाये-पीये अन्न-पानादिको शीघ्र ही पचा देती है और हमें फिर भूख लगती है। प्रकृति से अधिक खा लेने पर भी तृप्ति नही होती, खाने की अभिलाष बनी ही रहती है। यहाँ तक कि, जब पित्त बहुत ही तीक्ष्ण हो जाता है, वायु और कफ क्षीण हो जाते हैं, उस समय हमें "भस्मक" रोग हो जाता है। जो भी खाया जाता है, पेट में जाते ही भस्म हो जाता है। भोजन पच जाते ही तालू और कण्ठ सूखने लगते हैं और दाह तथा सन्ताप होता है। इसी भांति जब कफ अधिक हो जाता है, तब "मन्दाग्नि" होती है। अग्निके मन्द होने से, थोडा सा खाया खाना भी बडी देर में पचता है। खाना पेट मे पत्थर की तरह रक्खा रहता है। पचने से पहले—पेट में भारीपन, सिर में वेदना, श्वास, खाँसी, राल बहना, ओकी आना और थकान प्रभृति उपद्रव होते है। साराश यह है कि, वात, पित्त और कफ की समानता और कमी-बेशी से चार तरह की अग्नि होती है। इनमें "समाग्नि" श्रेष्ठ है और "मन्दाग्नि" सबसे खराब है। अग्निके मन्द होने से, हमारी शरीर रूपी मैशीन में गडबड हो जाती है। जब तक यह आग ठीक रूप से जलती रहती है, इसके जोर से, सब शारीरिक यंत्र अपना-अपना काम यथार्थ रूपसे करते

रहते है। किन्तु ज्योंही यह आग मन्दी हो जाती है, उन सब का काम ठीक नहीं होता। खाया-पिया भोजन कोठे या संग्रहणीमें थोड़ी जमा रहकर सड़ता है, क्योंकि, बिना अग्निकी सहायताके, ग्रहणी भोजन को पचा नहीं सकती। जब अग्नि मन्द या एकदम मन्द हो जाती है, तब ग्रहणी भी कमज़ोर या एकदम कमज़ोर हो जाती है। दूसरे शब्दों में यों समझिये कि, ग्रहणी भोजन पचाने वाला यंत्र है, और वह अग्नि के ज़ोर से भोजन को पचाता है। जब तक आग ठीक रहती है, वह यन्त्र भोजनको यथार्थ रूपसे पचाता रहता है, लेकिन ज्योंही आग मन्दी होती है, कि उसे भोजन पचानेमें कठिनाई होती है। ज़ब भोजन ही नहीं पचता, तब रस रक्त आदि धातुएँ कैसे बन सकती हैं? और ज़ब शरीरको धारण करने वाली धातुएँ ही नहीं तैयार होतीं, तब शरीर कैसे क़ायम रह सकता है? क़ायम रहने और न रहने की बात तो पीछे की है, अग्नि के मन्द होने से बवासीर, अतिसार और संग्रहणी प्रभृति अनेक महादुःखदायी भयंकर व्याधियाँ खड़ी हो जाती हैं, जिनके कारण, नाना प्रकारके घोर कष्ट उठाकर अन्त में इस दुर्लभ देहसे हाथ धोना पड़ता है।

क्या जठराग्नि ही इस शरीर-मैशीन की मुख्य सञ्चालिका है?

बेशक, जठराग्नि ही सारे शरीर-व्यापार को चलाने वाली है। एक कपड़ा तैयार करने की मिल में अनेकों छोटी-छोटी मैशीन और यंत्र होते हैं और वे सब एक दूसरे के बल से चलते हैं। एक चक्का दूसरे चक्के की ताक़त से घूमता है, दूसरा तीसरे की ताक़त से और तीसरा चौथे की ताक़त से, इस तरह सैकड़ों हज़ारों चक्के घूमते हैं। उन सब को घुमाने वाला एक बड़ा चक्का होता है और उस बड़े चक्के को घुमाने वाला बायलर होता है। बायलर को घुमाती है, अग्नि और पानी से पैदा हुई भाफ। मतलब यह, उस मिल में काम सब

यंत्र करते हैं, पर किसके बल से ? अग्नि या भाफके बल से। बस, ठीक यही हाल हमारी इस शरीर-रूपी मैशीन का है। इस मैशीन में, हृदय, लिवर, प्लीहा—तिल्ली, आमाशय, पक्वाशय प्रभृति अनेक यंत्र या पुरज़े हैं। कोई कुछ काम करता है और कोई कुछ। कोई भोजन को पका कर रस बनाता है, तो कोई रसका रक्त बनाता है। कोई रक्तका मांस प्रभृति बनाता है और कोई अच्छे-अच्छे पदार्थों को अलग करके मल मूत्रादि को निकाल कर अलग फेंक देता है इत्यादि, पर इन सब का काम ग्रहणी से ही होता है। ग्रहणी ही भोजन को ग्रहण करती और उसे पचाती है, तब और यंत्र रस रक्त आदि बनाते, उन्हें छान कर साफ़ करते, अच्छे को दूसरे यंत्र के हवाले करते और खराब को नीचे धकेल देते हैं। मतलब यह निकला कि, असल काम ग्रहणी करती है। पर ग्रहणी किसके बल से काम करती है ? जठराग्नि के बल से। जिस तरह मिल में सब यंत्रों को चलाने वाला बायलर है, उसी तरह इस शरीर में ग्रहणी या कोठा बायलर है। बायलर जिस तरह अग्नि और जल से पैदा हुए भाफके बल से काम करता है, ग्रहणी उसी तरह जठराग्नि के बलसे काम करती हैं। अत यह सिद्ध हो गया कि, जठराग्नि ही इस शरीर की मुख्य सञ्चालिका है। यही वजह है कि, किसी-किसी महात्मा ने जठराग्नि को भगवान् तक कह दिया है।

मन्दाग्नि से कौन-कौन से रोग होते हैं ?

यह सवाल ठीक नहीं। जिसे ग्रहणी कहते हैं, उसे ही कोठा कहते हैं। इस कोठे में ही रोग और आरोग्य दोनों हैं। इस कोठेमें गड़बड़ी होनेसे, सांसर्गिक रोगोंके सिवाय और सभी रोग पैदा होते हैं। जबतक कोठा शुद्ध रहता है, रोग पास नहीं आते। जहाँ कोठा खराब हुआ कि, रोगों ने हमले किये। कोठे या ग्रहणी

का, अच्छा या बुरा रहना अग्नि पर निर्भर है। अगर अग्नि ठीक है, तो कोठा भी ठीक है। अगर अग्नि दूषित है तो कोठा भी दूषित है। जब अग्नि मन्द हो जाती है, तब ग्रहणी, अग्निका यथेष्ट बल न पाने से, भोजन को पचा नहीं सकती। भोजन के न पचने से मलावरोध होता है, यानी जितना चाहिये उस से अधिक समयतक मल आँतों में रुका रहता है। आँतों में रुके रहने से वहाँ वह पडा-पडा सडता है। मल के सडने से, दूषित अबखरे उठते और वह सारे शरीर के उत्तम रस रक्तादि में मिलते हैं। उनमें मिलकर वह उन्हें भी दूषित करते हैं। खून में मिलते हैं, तब खून को खराब कर देते हैं। खून के खराब होनेसे, खाज खुजली फोडे फुन्सी और कोढ प्रभृति अनेक रोग पैदा होते हैं। इसी तरह जब वह वीर्यमें मिलते हैं,तब धातुको खराब करके अनेक धातु-रोग पैदा करते हैं। कारण सबका,—एक मलावरोध या कब्ज है, पर उस से नाना प्रकार के रोग खडे हो जाते हैं। जब कब्ज होता है, तब मनुष्य पाखाना फिरते समय मल निकालने को ज़ोर करता है। ज़ोर करके मल निकालने से गुदा की वलियाँ खराब हो जाती है, उनपर दबाव पडने से और मल के सख्ती से निकलने के कारण, वहाँ का नाजुक चमडा छिल जाता है, जिससे खून गिरने लगता है और गुदा में पीडा और जलन सी होने लगती है। इस कब्ज के कारण, गुदा में एक महा भयङ्कर व्याधि पैदा हो जाती है। उस व्याधिका नाम अर्श या बवासीर है। बवासीरमें मलावरोध या कब्ज रहता ही है और कब्ज से पीछा छुडाने या दस्त साफ करनेके लिये रोगी जुलाब लेता है। जुलाब से ऊपरी मल निकल जाता है और इसके बाद फिर वही कब्ज हो जाता है। बिना जुलाब पाखाना होता ही नहीं। इस तरह जुलाब पर जुलाब लेने से आँतें कमज़ोर होती चली जाती हैं। जुलाब लिया जाता है, सुख के लिये पर होता उलटा दुःख है।

वजह यह है कि, रोगी आयुर्वेद-विद्या न जानने के कारण, असली मर्ज़ को मिटाने का उपाय नहीं करता, जड़ में जल न देकर पत्तों में जल देता है, जिस से लाभ के बजाय हानि ही होती है। असल रोग अग्निकी मन्दता है। अगर वह मिटे यानी अग्नि दीप्त हो,तो आप ही क़ब्ज़ और बवासीर दोनों जाते रहें। जब अग्नि नष्ट हो जाती है, तभी बवासीर होती है और जब अग्नि दीप्त हो जाती है, बवासीर भी जाती रहती है। कहा है—

> त्रयो विकारा प्रायेणये परस्पर हेतव ।
> अर्शांसि चातिसारश्च ग्रहणीरोग एवच ॥
> तेषामग्निबले हीने वृद्धिर्वृद्धे परिक्षय ।
> तस्मादग्निं समारक्षेदेषु त्रिषु विशेषत ॥

बवासीर, अतिसार और संग्रहणी—ये तीनों एक दूसरे को पैदा करने वाले हैं, यानी जिसे इन में से एक रोग होगा,उसे शेष दो हो सकते हैं। अग्नि-बलके नष्ट होने से, इन तीनों की वृद्धि होती है और अग्नि-बल के बढ़ जाने से इन तीनों का नाश हो जाता है। इसलिये, इन तीनों रोगों के होने की हालत में, अग्निबल की रक्षा करनी चाहिये।

अब साफ़ हो गया कि,इन तीनों रोगोंका कारण अग्निका नष्ट हो जाना या मन्दाग्नि है। अगर पहले ही से अग्नि ठीक रखी जाय, मन्दाग्नि न होने दी जाय,तो ये रोग हो ही क्यों ? अगर हो ही जायें, तो क़ब्ज़ वग़ैरः मिटाने को जुलाब न लेकर, अग्नि-बल बढ़ाने वाले उपाय करने चाहियें। जब अग्नि बलवान होगी, भोजन का परिपाक ठीक रूप से होगा, ठीक परिपाक होने से रस प्रभृति ठीक बनेंगी और दस्त भी साफ़ होता रहेगा, जुलाब की दरकार ही न होगी।

यहाँ यह बात साफ़ हो गई,कि सारेही रोगोंका कारण,—मलावरोध या आँतों में, मल का उचित समय से ज़ियादा पड़ा रहना

और सड़ना है। मल सड़ने या गाढ़ा पड़ जाने से आसानी से नहीं निकलता और अनेक रोग पैदा करता है। मलावरोध या दस्तकी क़बज़ियत से बवासीर प्रभृति अनेक रोग हो जाते हैं। बवासीरवाले को अतिसार या संग्रहणी रोग हो जाता है। अथवा अतिसार वाले को बवासीर या संग्रहणी और संग्रहणी वाले को अति सार या बवासीर रोग हो जाते हैं और इन सब का कारण एक अग्नि है। इन रोगोंकी तरह ही मन्दाग्नि और अजीर्ण भी एक दूसरेके कारण हैं, यानी मन्दाग्निसे अजीर्ण और अजीर्णसे मन्दाग्नि हो जाती है। मन्दाग्नि तो बहुत दिनों तक रहती है और अपना खराब नतीजा धीरे-धीरे दिखाती है, पर अजीर्ण अपना कुपरिणाम शीघ्र ही दिखा देता है। मन्दाग्निसे बवासीर और संग्रहणी प्रभृति रोग देर में होकर प्राण नाश करते हैं, पर अजीर्ण से विशूचिका या विल म्बिका प्रभृति होकर, आनन फ़ानन मनुष्यके प्राण नाश कर देते हैं। यों समझिये कि, जब जठराग्नि दीप्त रहती है, खाया-पीया झटसे पच जाता है और शरीर आरोग्य रहता है। लेकिन जब अग्नि मन्द हो जाती है, हमारी शरीर रूपी मैशीन को चलाने वाली आग की ताक़त कम हो जाती है, तब हम जो कुछ खाते-पीते हैं, वह नहीं पचता, अजीर्ण या बदहज़मी हो जाती है—और इस अजीर्ण या बदहज़मी से दस्त साफ़ नहीं होता, भूख नहीं लगती, खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं, पेट भारी रहता और फूल जाता है, खाने से अरु-चि हो जाती है, पेट में तरह-तरह के शूल चलते हैं, जी मिचलाता है, क़य होने की इच्छा होती है, बुखार चढ़ आता है, पतले दस्त होने लगते हैं या एकदम दस्त होता ही नहीं इत्यादि भयङ्कर विकार उत्पन्न हो जाते हैं साराश यह, हज़ारों रोगों की जड़ खानेका हज़म न होना है। अजीर्ण की वजह से अनेक रोग पैदा होते और इस प्राणी को घोर कष्ट भुगाकर बहुधा मार डालते हैं। जिसे हैज़ा या कॉलेरा कहते हैं, वह अजीर्ण के सिवा और

कुछ नहीं। जब अजीर्ण भयङ्कर रूप धारण कर लेता है, तब उसे "हैज़ा" कहते हैं और हैज़ा क्षण भर में प्राण संहार कर देता है। किसी ने कहा है:—

प्रायेणाहारवैषम्यादजीर्णं जायते नृणाम्।
तन्मूलो रोग संघातस्तद्विनाशाद्विनश्यति ॥

मिथ्याहार विहार या खाने-पीने की खराबीसे अजीर्ण होता है। उस अजीर्ण से अनेक रोग होते हैं और उसी अजीर्ण के नष्ट होने से सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

अजीर्ण का कारण मन्दाग्नि है। अगर अग्नि प्रदीप्त हो,तो अजीर्ण न हो और अजीर्ण न हो तो बवासीर, अतिसार और संग्रहणी तथा ज्वरादि प्राणनाशक रोग न हों। अतः वही उपाय करना परमावश्यक है,जिससे अग्नि मन्द न हो। जो अपने अग्नि और बलकी रक्षा करते हैं, वह सदा सुखी और आरोग्य रहते हैं। रोग-शत्रु उनसे हज़ार कोस दूर रहते हैं। कहा है—

अग्निमूल बल पुंसां रेतो मूल च जीवितम्।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन वह्नि शुक्रञ्च रक्षयेत् ॥

अग्नि ही मनुष्यके बल की जड़ है और वीर्य ज़िन्दगी की जड़ है, इसलिये मनुष्य को अग्नि और वीर्य की रक्षा हर तरह से करनी चाहिये। और भी वृन्द महोदयने कहा है.—

समस्य रक्षणा कार्य्यं विषमे वातनिग्रहः।
तीक्ष्णे पित्तप्रतीकारो मन्दे श्लेष्मविशोधनम् ॥

जब जठराग्नि सम हो, तब नियम-पूर्वक नित्य आहार विहारों से उसकी रक्षा करो। क्योंकि अग्निके सम होने की हालत में, कोई भी रोग आप पर हमला कर नहीं सकता। जब अग्नि विषम हो, तब वायु का, तीक्ष्ण हो, तब पित्त का और मन्द हो तब कफका निग्रह करो, यानी इनको शान्त करो। अगर आप ऐसा करेंगे, तो बवासीर, अतिसार, संग्रहणी और राजयक्ष्मा प्रभृति कोई रोग आप को सता न सकेगा।

अजीर्ण के सम्बन्ध में हम आगे फिर भी लिखेंगे। यहाँ हम विषमाग्नि और तीक्ष्णाग्नि नाशक नुसखे लिख कर मन्दाग्नि नाशक नुसखे लिखते हैं :—

विषमाग्नि की चिकित्सा।

(१) रास्ना, कचूर, काला अतीस, सौंफ़, सोंठ, सेंधानोन, कालानोन, हींग और पीपल—इनको समान-समान लेकर, कूट-पीस और छानकर चूर्ण बना लो और पीछे इस चूर्ण में 'पुराना गुड़' मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खाने से, वायु से पैदा हुआ, विषमाग्नि रोग दूर हो जाता है। इन गोलियों से शूल, अजीर्ण, विशूचिका तथा वायुसे पैदा हुए और रोगोंका एवं गुल्म आदिका भी नाश हो जाता है। इन गोलियों को गर्म जल से सेवन करना चाहिये। इनके ऊपर सब तरह के रस खाये जा सकते हैं।

(२) भात के माँड में हींग और काला नोन पीस कर मिला दो और गर्म-गर्म पीओ। इस माँड के पीने से विषमाग्नि सम और मन्दाग्नि दीपन होती है।

तीक्ष्णाग्नि की चिकित्सा।

(१) दाख, हरड़, कुटकी, बिदारीकन्द, चन्दन, बाँसा, नागरमोथा, परवल, चिरायता, पीपल, खिरैंटी, गोरखमुण्डी, अतीस, बालछड़, लौंग, पद्माख, मोंगरा, धनिया और खजूरिया—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लो और मिश्री मिला कर रख दो। इस चूर्ण को आधी मात्रा से सवेरे ही खाओ और इसके ऊपर औटा हुआ गरम दूध 'घी' मिला कर पीओ। इसके सेवन से तीक्ष्णाग्नि समान होती और दुबला शरीर पुष्ट होता है तथा ग्लानि, भ्रम, शोष, दाह, रक्तपित्त, क्षय, पाण्डु, हलीमक और कामला रोग भी शान्त होते हैं।

(४) विदारीकन्द का रस, घी और दूध मिला कर पीने से भस्मक-रोग* नाश होता है।

(५) चौंगे (चिरचिरे) के बीज और दूध की खीर घोर भस्मक को नाश करती है। परीक्षित है।

मन्दाग्नि की चिकित्सा।

हरीतक्यादि वटी।

(६) हरड़ ६ तोले, पीपल ४ तोले, गजपीपल १ तोले, चीते की छाल १ तोले, हींग १ तोले और सेंधानोन १ तोले—इन सब को पीस कूट कर, जल के साथ खरल करके, गोलियाँ बनालो। ये गोलियाँ अग्निदीपक और रसायन हैं।

अग्निमुख लवण।

(७) चीते की जड़ की छाल, दन्ती की जड़, तेवड़ी की जड़ और कूट—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस और छान लो। इस चूर्ण के वज़न के बराबर सेंधानोन पीसकर मिला दो। फिर इसमें थूहर के दूध की भावना दो। इसके बाद, थूहर की मोटी लकड़ी लाकर उसे पोली करो और उस पोल में इस भावना दिये हुए चूर्ण को भर दो और ऊपर से कपड़-मिट्टी कर दो। इसके बाद, आरने कण्डों की आग में उस लकड़ी को रखकर पकाओ, जब लाल हो जाय, निकाल लो। बस, यही "अग्निमुख लवण" है।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक।

सेवनविधि—गरम जलके साथ सेवन करने से यह लवण जठराग्नि को खूब जगाता और तिल्ली तथा गोले को नष्ट करता है।

---

* यथाद्भुक्तं भवेद्भस्म सरोगो भस्मकः स्मृतः ॥
भोजन किया पदार्थ क्षण भर में ही पच जाय, उसे "भस्मक" कहते हैं।

ज्वालामुखी चूर्ण।

(८) हींग, अम्लवेत, त्रिकुटा, चीतेकी जड की छाल, जवाखार, पोहकरमूल, त्रिफला और अनार—इन आठों को समान-समान लेकर जौ-कुट कर लो और सब चूर्ण के वज़न के बराबर "पुराना गुड" मिला दो। बस,यही "ज्वालामुखी चूर्ण" है। इसके सेवन से अग्नि खूब ही तेज़ होती है।

मन्दाग्नि नाशक रस ।

(८) शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध विष (मीठा तेलिया) और लौंग—प्रत्येक एक-एक तोला और कालीमिर्च २ तोला एवं जायफल ६ माशे लो।

पहले पारे और गन्धक को खरल में डालकर खूब घोटो और कजली बनालो। उधर विष, लौंग, मिर्च और जायफल को महीन पीस और कपड-छन करके, इसी कजली में मिला दो और खरल में डालकर, ऊपरसे कच्ची इमलीका रस दे-देकर खूब घोटो। घुट जाने पर, एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो।

मात्रा—१से ४ गोली तक।

सेवनविधि—(१) अजीर्ण में—अदरख के रस के साथ।
(२) मन्दाग्नि में—कालीमिर्च के साथ।
(३) अतिसार में—नागरमोथे के रस के साथ।
(४) उदरशूल में—पानके रस के साथ।
(५) कृमिरोग में—वायबिडङ्गके चूर्ण के साथ।
(६) सग्रहणी में—नागरमोथा, धनिया और सौंठ के काढे के साथ।
(७) प्रमेह में—हल्दी और शहद के साथ।
(८) आमवात में—"रास्नादि क्वाथ" के साथ।

नोट—यह नुसखा परीक्षित है। ज्ञानचन्दजी वैद्यभूषण गुरुकुल वालोंने इसे "वैद्य मुरादाबाद"में छपवाया था। वहीं से हमने लिया है।

"रास्नादिक क्वाथ" की ये चीजें हैं :—रासना, गोखरू, अरण्डीकी जड़, देवदारु, पुनर्नवा, गिलोय और अमलतास का गूदा—ये सब दो-दो तोला लेकर, ३२ तोले जल में औटाओ। जब ४ तोले जल रहे, उतार लो। यही "रास्नादि क्वाथ" है।

हिंग्वाष्टक चूर्ण।

(१०) सोंठ, मिर्च, पीपर, सेंधानोन, सफेद जीरा, कालाजीरा और अजमोद—ये सातों बराबर-बराबर लो। इनको कूट पीस और छान कर, चूर्ण बना लो। इस चूर्ण में आठवां भाग हींग भून कर मिला दो। इन आठों दवाओं से बने इस चूर्ण को "हिंग्वाष्टक चूर्ण" कहते हैं। भूख बढ़ाने में यह चूर्ण रामबाण है। अनेक बार परीक्षा की है। यह चूर्ण जठराग्निको दीपन करता, भूख बढ़ाता और बादी के रोगों को नाश करता है।

सेवनविधि—भोजन के पहले ग्रास में इस चूर्ण को एक मात्रा मिलाकर, ऊपर से ज़रासा गरम घी मिलाओ और खा जाओ। मात्रा ३ से ४ माशे तक। इस तरह लगातार कुछ दिन खाओ। तीसरे दिन ही यह अपना फल दिखाता है।

वड़वानल चूर्ण।

(११) सेंधानोन १ तोला, पीपरामूल २ तोला, पीपर ३ तोला, चव्य ४ तोला, चीतेकी छाल ५ तोला, सोंठ ६ तोला और जंगी हरड़ ७ तोला—इस क्रम से ये सब दवाइयाँ लाकर कूट पीस और छान लो। इस 'बड़वानल चूर्ण'के सेवन करनेसे निश्चय ही अग्नि दीप्त होती है। भूख बढ़ाने के लिए परमोत्तम चूर्ण है।

महा खाण्डव चूर्ण।

(१२) कालीमिर्च १ तोला, नागकेशर १ तोला, तालीस-पत्र

१ तोला, सेंधानोन १ तोला, सञ्चरनोन १ तोला, विड़नोन १ तोला, समन्दरनोन १ तोला, रेह का नमक १ तोला, पीपरामूल २ तोला, चित्रक २ तोला, दालचीनी २ तोला, पीपर २ तोला, इमलीकी छाल २ तोला, ज़ीरा २ तोला, धनिया ३ तोला, अम्लवेत ३ तोला, सोंठ ३ तोला, बड़ी इलायची के बीज ३ तोला, छोटेबेर ३ तोला, अजमोद ३ तोला और नागरमोथा ३ तोला तथा सूखा अनारदाना ११ तोला—इन सबको लेकर कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लो और जितना चूर्ण का वज़न हो, उस से आधी, सफेद मिश्री पीस कर इसमें मिला दो। इसको "महाखाण्डव चूर्ण" कहते हैं। यद्यपि यह चूर्ण "अरुचि" पर प्रधान है, पर हमने इस से मन्दाग्नि में भी बहुत लाभ होते देखा है, इसीसे इसे यहाँ लिख दिया है। इसके सेवनसे खाँसी, बवासीर, अतिसार, हृद्रोग, कण्ठरोग, उदररोग, मुखरोग, विशूचिका, अफारा, गोला, क्रमिरोग, पाँचों प्रकार के छर्दिरोग तथा श्वास—ये सब दूर होते हैं।

अग्निमुख चूर्ण।

(१३) हींग १ तोला, बच २ तोला, पीपर ३ तोला, अदरख ४ तोला, अजवायन ५ तोला, हरड़ ६ तोला, चीते की छाल ७ तोला और कूट ८ तोला,—इन सबको कूट पीस और छानकर चूर्ण बना लो। इसको दही के तोड़ या निवाये जलके साथ लेनेसे उदावर्त, अजीर्ण, तिल्ली और उदर रोग नष्ट होते हैं। जिसने विष खाया हो, जिसका शरीर गलता हो, जो बवासीर से दुखी हो, उसके लिये यह चूर्ण अमृत है। यह कफ नाश करने वाला, अग्निदीपक और गोलेको नष्ट करने वाला है। यह कभी निष्फल नहीं जाता।

दूसरा अग्निमुख चूर्ण।

(१४) चीतेकी छाल, झाऊबेर, पीपलामूल, पीपल, काला नमक, अज-

मोद, धनिया, कचूर, इन्द्रजौ, पोहकरमूल, जवाखार, जीरा, इमली, चव्य, अजवायन, अनारदाना, दाख, इलायची और अम्लवेत—इन १८ दवाओं को बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस कर चूर्ण कर लो। इस के सेवनसे अग्निमांद्य, गुल्म, अरुचि, शूल, बवासीर, तिल्ली, उदर-रोग और कफवात के रोग नष्ट होते हैं।

सेवनविधि—इस की मात्रा १ से ६ माशे तक है। एक मात्रा खाकर ऊपर से कांजी या दही का तोड़ पीना चाहिये।

भास्करलवण।

(१५) पीपर ८ तोले, पीपरामूल ८ तोले, धनिया ८ तोले, कालाजीरा ८ तोले, सेंधानोन ८ तोले, विरिया सञ्चर नमक ८ तोले, तेजपात ८ तोले, तालीसपत्र ८ तोले, नागकेशर ८ तोले, कालानोन २० तोले, कालीमिर्च २० तोले, जीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, दाल-चीनी २ तोले, इलायची के बीज २ तोले, समन्दरनोन ३२ तोले, अनारदाना सूखा १६ तोले और अम्लवेत ८ तोले—इन सबको कूट-पीस छान कर चूर्ण बना लो। यह उत्तम सुगन्धित चूर्ण, संसार के उपकार के लिये, भास्कराचार्य महोदयने निर्माण किया है।

यह चूर्ण वात और कफ के रोगों को नाश करता है। इसके सेवनसे, मन्दाग्नि नाश होकर, अग्नि खूब बलवान होती है। इसके सिवा बवासीर, संग्रहणी, सूजन, कोढ़, भगन्दर, हृदयरोग, आमदोष, अनेक प्रकार के उदररोग, तिल्ली, वातरक्त, श्वास, खांसी, कृमिरोग और शूल को यह चूर्ण नाश करता है।

अनुपान—माठा, दही का पानी, मदिरा, कांजी, सौंफ का अर्क, गरम जल और नीबू का रस है।

समय—सवेरे, दोपहर और शाम।

नोट—हमने इसे अनेक बार आजमाया है। पेट के रोगों पर यह रामवाण है।

बहुतसे रोगी इससे बात की बात में आराम हो गये । जो इसके सेवन से आराम न हुए,वे किसी भी दवा से आराम न हुए । दस्त-कब्जमें, इसे रात को फाँक कर,गरम जल पी लेने से दस्त खुलासा होता है । अजीर्ण में सौंफ के अर्क के साथ देने से खूब लाभ होता है । मन्दाग्नि और संग्रहणी में माठे के साथ देना अच्छा है । संग्रहणी में यदि रोगी को, पानी के बजाय, अर्क सौंफ पिलाते रहें और इसे छाछ के साथ सेवन कराते रहें, तो अपूर्व चमत्कार दीखेगा । यह चूर्ण और चूर्णों की तरह गरम नहीं, बल्कि मातदिल है ; इसलिये स्त्री बालक सबको अच्छा है । हमने सूजन में इसे खिलाकर और 'नारायण तेल' बदन पर मालिश कराकर, खूब फायदा उठाया है । मलावरोध, सूजन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, अजीर्ण और बादी बवासीरमें हमने इसे सैकड़ों बार आजमाया और ठीक फल पाया । लगातार सेवन करनेसे, यह चूर्ण पेट के भयानक रोगों को निश्चय ही नाश करता है । जल्दबाजी से कोई लाभ नहीं होता

बृहद् अग्निमुखचूर्ण ।

(१६) जवखार, सज्जीखार, चीते की जड़ की छाल, पाठ, करंज की जड़ की छाल, पाँचों नमक, छोटी इलायची, तेजपात, भारंगी, बायबिडङ्ग, हींग, पोहकरमूल, कपूर, दारुहल्दी, निशोथ, नागरमोथा, बच, इन्द्रजौ, आमले, जीरा, विषाविल, गजपीपल, कलौंजी, अम्लवेत, इमली, अनार, त्रिकुटा, भिलावे, अजमोद, हाऊबेर, अमलतास का गूदा, तिलकी लकड़ी का खार, बनपलाश का खार, सहँजने की जड़ की छाल का खार तालमखाने का खार, गोमूत्र में भिगोई या सिद्ध की हुई लोहे की कीट यानी मंडूर—इन २६ दवाओं को बराबर-बराबर लेकर, ३ दिन तक नीबू के रस की, ३ दिन तक काँजी की और ३ दिन तक अदरख के रसकी भावना देकर रखलो । भावना देने से पहले, सब दवाओंको कूट पीस कर छान लेना, पीछे तीन-तीन दिन तक नीबू, काँजी और अदरख के रस में भिगो देना । बस यही "वृहद् अग्निमुख चूर्ण" तैयार होगा । यह चूर्ण जठराग्निको अग्नि के समान तेज़ कर देता है । इसको यथाविधि सेवन करने से अनेक पुराने रोग भी नाश हो जाते हैं । यह अजीर्ण, गुल्म,तिल्ली,

गुदा के रोग, बवासीर, उदररोग, अन्नद्वेष, अष्ठीला, वातरक्त और अत्यन्त उल्वण दोषों को नाश करता है। नष्ट अग्निको जगाने में तो यह एक ही है।

सैंधवाद्य चूर्ण

(१७) सैन्धानोन, चीते की जड की छाल, हरड, लौंग, कालीमिर्च, पीपल, भुना सुहागा, सौंठ, चव्य, अजवाइन, सौंफ और बच—इन १२ दवाओंको कूट-पीस और छानकर, २१ दिन तक, नीबूके रसकी भावना दो।

मात्रा—२ से ३ माशे तक।

सेवन विधि—गरमजल, नमक मिली छाछ, दही के तोड या कांजी के साथ सेवन करने से शीघ्र ही जठराग्नि को तेज़ कर देता है।

गरीबी नुसखे।

(१८) शुद्ध मीठा विष १ तोले, त्रिकुटा ३ तोले और बडी हरड़ १ तोले—सब को महीन पीसकर खरल में डालो और नीबू का रस डाल-डालकर घोटो और चने-बराबर गोलियाँ बना लो। एक गोली सवेरे और १ गोली शाम को खाने से अग्नि दीप्त होकर, खूब भूख लगती है। गोपालसिंह वैद्य, सम्भल मुरादाबाद।

(१८) शुद्ध पारा, शुद्ध मीठा तेलिया विष और शुद्ध गन्धक—इनको बराबर-बराबर लेकर, पहले पारे और गन्धकको खरलमें खूब घोटकर कजली बना लो। फिर इसीमें शुद्धमीठे विष को पीस लो। फिर इन तीनों के वज़नके बराबर 'कालीमिर्च का चूर्ण' मिलाकर, खरलमें ही कटेहली के रस को २१ भावना दो। ग्रीष्म में, घोटकर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो। ये गोलियाँ सब तरह के अजीर्ण और मन्दाग्नि को नाश करती हैं।

(२०) हरड के चूर्ण को सोंठ और गुड के साथ अथवा सेंधे नोनके साथ सेवन करने से अग्नि दीपन होती है।

(२१) सेंधानोन, हींग, त्रिफला, अजवायन और त्रिकुटा—ये सब बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण के वज़न के बराबर "पुराना गुड" लेकर, सब को मिलाकर, गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन करने से मन्दाग्नि वाला बहुत खाता और तृप्त होता है।

(२२) पुराने गुडके साथ सोंठ का चूर्ण या पीपल का चूर्ण अथवा हरड का चूर्ण सेवन करने से आम, अजीर्ण, गुदारोग और मल-विबन्ध,—ये सब आराम होते हैं।

(२३) वायबिडङ्ग, शुद्ध भिलावे, चीते की छाल, गिलोय और सोंठ—इन सब को पीस कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को "पुराने गुड और घी" में मिलाकर सेवन करने से, मन्दाग्नि नाश होकर, अग्नि इतनी तीव्र हो जाती है कि, तारीफ नहीं कर सकते।

(२४) हरड को नीम के साथ सेवन करने से अग्नि की वृद्धि होती है और दाद खाज फोडे फुन्सी एवं खून के विकार निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

(२५) चीता, अजवायन, सेंधानोन, सोंठ और कालीमिर्च—इन को कूट पीस और छान कर रख लो। इस चूर्णको "खट्टी छाछ" के साथ सेवन करने से, सात दिन में, मन्दाग्नि नाश होकर, जठराग्नि अत्यन्त दीपन होती है एवं पीलिया और बवासीर रोग भी नाश हो जाते हैं।

(२६ हरड, पीपल और सोंठ को—बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। इसे "त्रिसम" कहते हैं। यह मनुष्यों को अग्नि को दीपन करने वाला तथा प्यास और भय को नाश करने वाला है।

(२७) जिनको जीर्णाजीर्ण की शङ्का रहती हो, उनको सोंठ का बना जल सदा हितकारी है।

(२८) हरड, गुड और सोंठ को एकत्र पीस-कूट कर, छाछ में

मिलाकर, सेवन करने से आमयुक्त मन्दाग्नि नाश हो जाती है। इस पर अगर "षडूषण"से सिद्ध किया हुआ अन्न खाया जाय, तो और भी जल्दी लाभ हो।

नोट—एक छाछ में मन्दाग्नि को नाश करने की पूरी सामर्थ्य है, कई बार परीक्षा की है। जाड़े के मौसम में, मन्दाग्नि, कफविकार, मलावरोध, दस्त-कब्ज़, बवासीर और गुल्म (गोला) रोग नाश करने के लिये, माठा पीने से बड़ा लाभ होता है। सेंधा नोन मिला कर पीने से तो बेतहाशा फायदा होता है। "माठे" की तरह "हरड़" भी दूसरा अमृत है। इसको ऋतु-ऋतुमें,अनुपान बदल-बदल कर, खाने से सब रोग नाश हो जाते हैं—

(१) ग्रीष्म ऋतु में, गुड़ के साथ हरड़ सेवन करनी चाहिये।
(२) वर्षा में, सेंधे नोन के साथ ,, ,,
(३) शरद् में, आमलों के साथ ,, ,,
(४) हेमन्त में, सोंठ के साथ ,, ,,
(५) शिशिर में, पीपलों के साथ ,, ,,
(६) बसन्त में शहदके साथ ,, ,,

(२९) सोंठ, हरड़, गिलोय, और षडूषण के काढ़े में ज़रा सी दालचीनी और तेजपात का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से कफरोग और मन्दाग्नि नाश होती है।

नोट—पीपल, पीपलामूल, चव्य,चीता और सोंठको "पंचकोल" कहते हैं। अगर इसमें छठी कालीमिर्च और मिला दी जाती हैं, तो इसे ही "षडूषण" कहते हैं।

(३०) नित्य सवेरे ही जवाखार और सोंठ का चूर्ण बराबर-बराबर खाकर,ऊपर से निवाया जल पीने से खूब भूख बढ़ती है।

(३१) सोंठ का चूर्ण घी में मिलाकर चाटने और ऊपर से गरम जल पीने से भूख खूब बढ़ती है।

(३२) नित्य, भोजन के पहले, छिली हुई अदरख में सेंधानोन लगाकर खाने से भूख बढ़ती है तथा जीभ और गला—ये साफ रहते हैं। कहा है —

भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रक भक्षणम्।
अग्नि सन्दीपनं हृद्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम्॥

(२३) लौग,सोंठ,कालीमिर्च और भुना सुहागा—सबको समान-समान लेकर, पीस-कूटकर चूर्ण बना लो। पीछे खरल में डालकर, चिरचिरे या चीते की छाल का रस डाल-डालकर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इस नुसखे से मन्दाग्नि और अजीर्ण रोग नाश होते हैं।

(२४) पीपल के चूर्ण में "दूना पुराना गुड़" मिलाकर सेवन करने से अरुचि, हृद्रोग, दमा, खाँसी, अग्निमांद्य, पाण्डु, जीर्णज्वर और मिरगी रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२५) गिलोय का सत्त गोरख-मुण्डी के साथ खाने से अग्नि-मांद्य रोग आराम होता है। परीक्षित है। मात्रा ४ रत्ती से २ माशे तक।

(२६) हरड़, पीपल, गोलमिर्च, सोंठ, शुद्ध कुचला, शुद्ध हींग, शुद्ध गन्धक और सेंधा नमक—इन आठों चीज़ों को बराबर-बराबर लेकर, कूट पीसकर छानलो और खरल में डालकर, ऊपर से नीबूका रस दे-देकर घोटो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बनालो। मात्रा १ गोली। अनुपान गरम जल।

रोग—अग्निमांद्य के लिए यह परमोत्तम दवा है। इस से जठर रस बहुतायत से पैदा होता और उस के कारण से अन्न अच्छी तरह पचता है। शूल नाश करने में भी यह नुसखा परले सिरे का अच्छा है। परीक्षित है।

(२७) लाल मिर्चों को नीबू के रस में ४० दिन तक खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। एक गोली "पान" में रखकर खाने से भूख खूब लगती है। भूख बढ़ाने में यह नुसखा परमोत्तम है।

(२८) कालानोन २तो० ४ मा०, कालीमिर्च २ तो० ४ मा०, पीपर

२ तो० ४ मा० और भुना सुहागा १ तो० ८ माशे—इन चारों को, नीबूका रस डाल-डाल कर,खरलमें पूरे २६ घण्टों तक घोटो। घुट जाने पर, चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लो। भोजनके बाद एक या दो गोली खानेसे बेतहाशा भूख बढ़ती है।

(३८) गेहूँ को धोकर, अन्दाज़ का सेंधानोन और अजवायन इन तीनों को मिला कर बनाई हुई रोटी मन्दाग्नि में निश्चय ही हितकारक है। परीक्षित है।

(४०) चनेका खार कुछ दिन सेवन करनेसे बिगड़ी हुई पाचन-शक्ति सुधर जाती है।

(४१) मोंठ की दाल मन्दाग्नि और ज्वर की नाशक है।

(४२) समन्दर नमक डेढ़ माशे,सवेरे ही,रोज़ फाँक कर, ऊपर से बासी पानी पीने से मन्दाग्नि नाश हो जाती, भूख लगती और पाचन-शक्ति बढ़ जाती है।

(४३) अजवायन ४ तोले और सेंधानोन १ तोले—दोनों को पीस कूट कर रख लो। इस में से २ माशे चूर्ण,सवेरे ही, फाँक कर, ऊपर से "सिरका" पीने से मन्दाग्नि और बादीके विकार मिट जाते हैं।

(४४) सौंफको पानीमें भिगो दो। पीछे पानी से चौगुनी मिश्री पानीमें मिलाकर चूल्हे पर पकालो। इस शर्बत के चाटनेसे बालकों को मन्दाग्नि, दस्त,पेट का दर्द,और पेशाब की लाली—ये सब मिट जाते हैं।

(४५) पकी मीठी इमली के पनेमें सेंधा नमक, कालीमिर्च और हींग डालकर पीने से मन्दाग्नि और अरुचि नाश हो जाती हैं।



अजीर्ण-वर्णन ।

साधारण लक्षण ।

सभी तरह के अजीर्णों में ग्लानि होती है, शरीर और पेट भारी रहते हैं, पेट में शूलसे चलते हैं, अपान वायु नहीं सरता यानी हवा रुक जाती है, कभी दस्तक़ब्ज़ हो जाता है तो कभी अजीर्ण या बदहज़मी के दस्त होते हैं, खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं, खानेके बाद क़य होती है या जी मिचलाता है। बस, यही अजीर्णकी सीधी पहचान है।

"वैद्यविनोद" में लिखा है —

ग्लानिर्विबन्ध प्रवृत्तिर्वा सामान्याजीर्ण लक्षणम् ।

शरीर में ग्लानि या मल का अवरोध अथवा दस्तोंका ज़ियादा होना,—अजीर्ण के "सामान्य" लक्षण हैं।

भोजन पचने के लक्षण ।

प्यास और भूख लगना तथा शरीर हलका मालूम होना—ये जीर्णाहार या भोजन पचने के लक्षण हैं।

अजीर्ण की क़िस्में।

अजीर्ण ६ तरह के होते हैं :—

(१) आम अजीर्ण।

(२) विदग्ध अजीर्ण।

(३) विष्टब्ध अजीर्ण।

(४) रस-शेष अजीर्ण।

(५) दिन-पाकी अजीर्ण।

(६) प्राकृत अजीर्ण।

कौन अजीर्ण किस तरह होता है ?

(१) कफ के प्रकोप से आमाजीर्ण होता है।

(२) पित्त के प्रकोप से विदग्धाजीर्ण होता है।

(३) वायु के प्रकोप से विष्टब्धाजीर्ण होता है।

(४) रस के शेष रहने यानी रक्तादि रूप में परिणत न होने से रसशेषाजीर्ण होता है।

(५) दिन भर में भोजन न पचने से दिनपाकी अजीर्ण होता है।

(६) स्वाभाविक अजीर्ण स्वभाव से नित्य होता है।

अजीर्ण के कारण।

(१) दैहिक कारण।

(१) बहुत जल पीना, (२) भोजन के समय के बाद भोजन करना, (३) मलमूत्रादि वेगों को रोकना, (४) रात को जागना, (५) दिन में सोना, ये पाँच तो देह से सम्बन्ध रखने वाले कारण हैं।

(२) मानसिक कारण ।

(१) ईर्षा, (२) भय, (३) क्रोध, (४) लोभ, (५) शोक, (६) दीनता, और (७) मत्सरता,—ये अजीर्ण के मानसिक कारण हैं ।

उपरोक्त दैहिक और मानसिक कारणों से, भोजनके समय किया हुआ, स्वभाव के अनुकूल, भोजन भी नहीं पचता, अजीर्ण हो जाता है ।

अजीर्णों के लक्षण ।

(१) आम अजीर्ण के लक्षण ।

इस अजीर्ण के होने से पेट और शरीर में भारीपन होता है, जी मिचलाता है, गालों और आँखों पर सूजन आ जाती है । जैसा खट्टा मीठा प्रभृति भोजन किया जाता है, उसी तरह की डकारें आती हैं ।

(२) विदग्ध अजीर्ण के लक्षण ।

इस अजीर्ण में भ्रम, प्यास, मूर्च्छा, पित्त के अनेक रोग, धूएँ के साथ खट्टी डकारें, पसीना और दाह—ये लक्षण होते हैं ।

(३) विष्टब्ध अजीर्ण के लक्षण ।

इस अजीर्ण में शूल, अफारा, अनेक प्रकार की बादी की पीडायें, मल और अधोवायु का रुकना, शरीर का जकड़ जाना, मोह और देह में दर्द—ये लक्षण होते हैं ।

नोट—याद रखो, पहला कफ से, दूसरा पित्तसे और तीसरा विष्टब्धाजीर्ण वायुके कोप से होता है ।

(४) रसशेष अजीर्ण के लक्षण ।

इस अजीर्ण में अन्न में अरुचि, हृदय में जडता और देह में भारीपन होता है ।

(५) दिनपाकी अजीर्ण।

इस अजीर्ण वाले को रात-दिन में भोजन पचता है और इसमें अफारा और हड-फूटन आदि कुछ नहीं होता।

(६) प्राकृत अजीर्ण।

यह अजीर्ण नित्य ही रहता है, क्योंकि स्वाभाविक है, विकृति-जन्य नहीं है। इसके पचाने के लिये सुश्रुतने ये उपाय लिखे हैं—(१) भोजन करके सौ क़दम टहलना, (२) बाईं करवट सोना, (३) अपने दिल को भाने वाले पदार्थों को छूना, देखना, सुनना, सूँघना और चखना, यानी मनोहर कामिनियों पर हाथ फेरना, रूपवती स्त्रियों को या अन्य सुन्दर चीज़ों को देखना, गाना सुनना, फूल और इत्र आदि सूँघना तथा स्वादिष्ट पदार्थ चखना। यह अजीर्ण इन उपायों से पच जाता है। इसके लिये दवा की ज़रूरत नहीं।

अजीर्ण के उपद्रव।

मूर्च्छा—बेहोशी, आनतान बकना, वमन, मुँह से लार गिरना, ग्लानि, भ्रम और मरण,—ये अजीर्ण के उपद्रव हैं।

नोट—मरण का यह मतलब है, कि अजीर्ण बहुत बढ़ जाने से मनुष्य को मार भी डालता है।

अजीर्ण का असल कारण क्या है ?

जो अनापशनाप नाक तक ठूँस-ठूँस कर खाते हैं, जिनकी इन्द्रियाँ उनके अपने वशमें नहीं हैं, जो पशुओं की तरह खाते हैं, उनको अनेक रोगों के पैदा करनेवाला "अजीर्ण" होता है।

अजीर्ण की साधारण चिकित्सा।

(१) आमाजीर्ण में वमन करा देने से लाभ होता है।

(२) विदग्धाजीर्ण में लंघन या उपवास से लाभ होता है।

(३) विष्टब्धाजीर्ण में पसीना कराने से लाभ होता है।

(४) रसशेषाजीर्ण में, भोजन से पहले, दिन में सोने से लाभ होता है।

विशेष चिकित्सा।

आमाजीर्ण की चिकित्सा।

(१) इस अजीर्ण में सेंधानोन एक तोले और वच एक तोले लेकर पीस लो और गरम जल में मिला कर रोगी को पिला दो और क़य कराओ। क़य से दूषित पदार्थ निकल जाँयगे और रोग आराम हो जायगा। यह वमनकारक दवा रोगीको उस हालत में दो,जबकि आमाशय बहुत भारी मालूम होता हो।

नोट—अजीर्ण में सबसे पहले अजीर्ण पैदा करने वाले कारणों को त्याग दो। बिना कारण त्यागे, अजीर्ण कभी आराम न होगा। सभी अजीर्णों में उपवास कराना सर्वोत्तम उपाय है। विशेष कर,आमाजीर्ण की पहली हालत में तो लङ्घन ही हितकारी है। परन्तु बालक, बूढ़े और दुर्बलों को उपवास कराना अच्छा नहीं। उनको,उनकी प्रकृति के अनुसार,हल्का और थोड़ा भोजन देना उचित है। अजीर्ण में क्या-क्या पथ्य और अपथ्य है,यह हमने आगे लिखा है। जो पथ्य हो,उसके देने में हानि नहीं, पर विचार की सर्वत्र दरकार है।

(२) धनिया और सोंठ का काढ़ा पीने से आमाजीर्ण शान्त होता, शूल नष्ट होता और मूत्राशय साफ होता है।

(३) दिन में चार बार गर्म जल पीने से भी आमाजीर्ण में लाभ होता है।

(४) सोंठ और सौंफ—दोनों बराबर-बराबर लेकर, पीस कूट छान कर और मिश्री मिलाकर सेवन करने से आमाजीर्ण शान्त होता है।

(५) सौंफ, पोदीना, गुलाब के फूल, तेजपात और बड़ी इलायची—सब को तीन-तीन माशे लेकर, एक सेर जलमें पका कर रख लो। उसीमें से ज़रा-ज़रा सा जल पीनेसे आमाजीर्ण नाश होता है।

(६) हींग, सेंधानोन, सोंठ, कालीमिर्च और पीपल, इनको बराबर-बराबर लेकर, जल के साथ सिल पर पीस कर लेप सा बना लो और पेट पर बारम्बार इसी लेप को करो। इससे आमाजीर्ण की पीड़ा शान्त हो जायगी।

(७) छोटी हरड़, सोंठ, नागकेशर और कालानोन—इनमें से प्रत्येक को चार चार माशे लेकर, पाव भर जल में पीस कर, ज़रा सी हींग डाल कर, दिन में कई बार ज़रा-ज़रा सा पीने से आमाजीर्ण शान्त होता है।

(८) बड़ी इलायची ३ माशे, दालचीनी ६ माशे, नागकेशर ८ माशे, कालीमिर्च १२ माशे, पीपल १५ माशे और सोंठ १८ माशे—इन सब को एकत्र कूट पीस कर चूर्ण बनालो। इसको दिन में २।३ बार सेवन करने से आमाजीर्ण नाश हो जाता है।

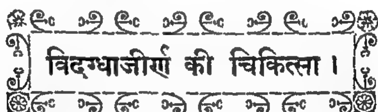
(९) सज्जीखार, जवाखार, कालानोन, साँभरनोन, सेंधानोन, कचियानोन, बिड़नोन, भुना सुहागा, आमलासार गंधक, सोंठ, मिर्च, पीपलामूल, चीता, अजवायन और वायबिडङ्ग—इन सब दवाओं को समान भाग लेकर, पीस कूट लो और पीछे आकके पत्तोंके रसमें खरल करो। इसके बाद मेंहुड या थूहर का एक डण्डा पोला करके,

उसी में खरल किये चूर्ण को भर दो और ऊपर से कपडमिट्टी च
दो। इसके बाद, २५ उपलो की आग में, उस कपडमिट्टी चढे,ड
को रख कर पकाओ। जब आग ठण्डी हो जाय,निकाल लो। डण्डे
ऊपर की मिट्टी उतार कर, डण्डे में से दवा को निकाल लो
इस नमक के सेवन करने से आमाजीर्ण और हर प्रकार के अजी
नाश होते हैं। मात्रा ४ रत्ती। अनुपान माठा या दही का तोड़।

(१०) शुद्ध मीठा विष १ भाग,सोंठ २ भाग, कालीमिर्च ३ भाग
और पीली कौडीकी भस्म ४ भाग—इन सबको पीस कूट खरलमें डाल
जम्बीरी नीबूके रसमें, उडद के दाने बराबर गोलियाँ बना लो। इनके
सेवन करनेसे आमाजीर्ण नाश होता और तत्काल भूख लगती है।

मात्रा—२ या ३ गोली। अनुपान ताज़ा जल।

नोट—ये सब नुसखे परीक्षित हैं।



विदग्धाजीर्ण की चिकित्सा।

(११) लिख चुके हैं कि, विदग्धाजीर्ण में लघन उपकारी है,
पर बहुधा इसमें शीतल जल पीने से भी लाभ होता है। अत' दिन
में कुछ न खाकर, केवल थोडा-थोडा शीतल जल पीना चाहिये।
इस अजीर्ण में गुलकन्द गुलाब प्रभृति से हलका दस्त करा देना
भी अच्छा है। लिखा है :—

श्लैष्मिके वमन पूर्व पैत्तिके मृदु रेचनम्।
वातिके स्वेदन चाथ यथावस्थं हित च तत्॥

कफमे उत्पन्न मन्दाग्नि या अजीर्ण में पहिले वमन करानी चाहिये।
पित्त से उत्पन्न अजीर्ण में हलका जुलाब देना चाहिये और बादी
से हुए अजीर्ण में स्वेदन कर्म, वफारा या सेक वगैर' करना चाहिये
अथवा जिस समय जैसी अवस्था हो और जो काम उस अवस्था में

हितकारी हो वही करना चाहिये। कहीं लंघन से काम हो जाता है, कहीं शीतल जलके पीनेसे और कही हल्के जुलाब से। चिकित्सा करने में, विचार बुद्धि और तर्क से क्षण-क्षण काम लेना चाहिये। किसी एकही क़ायदे को पकड़ कर अन्धाधुन्ध काम करने से हानि की सम्भावना रहती है।

(१२) सफ़ेद ज़ीरा ४ माशे, सफ़ेद इलायची ४ माशे, अनार-दाना ४ माशे, आलूबुखारा ४ माशे और मुनक्का ४ माशे,—इन सब को एक जगह पीस कर और थोड़ा सेंधानोन मिलाकर सेवन करने से पित्त का विदग्धाजीर्ण नाश होता है।

(१३) छोटी हरड़का चूर्ण १ माशे, दाख २ माशे, मिश्री ४ माशे और शहद ६ माशे—इन सब को पीस कर और शहद में मिला कर चाटने से पित्त का विदग्धाजीर्ण आराम होता है।

(१४) धनिया ४ माशे, इलायची ४ माशे, गुलाब की केशर ४ माशे और सौंफ ४ माशे—सबको पीसकर, चूर्ण के वज़न के बराबर मिश्री मिला लो। इस चूर्णको शीतल जल के साथ सेवन करने से पित्त का "विदग्धाजीर्ण" आराम होता है।

(१५) सौंठ ५ माशे, ज़ीरा ४ माशे, इलायची ३ माशे, काली-मिर्च २ माशे, पीपल १ माशे और शुद्ध आमलासार गन्धक ८ माशे,—सब को एक जगह मिलाकर पीस लो और फिर खरल में डालकर नीबू का रस दे-देकर, चार-चार रत्ती की गोलियां बनालो। एक-एक गोली सुबह-शाम या दिन में ३।४ बार खाने से "विदग्धाजीर्ण" और सब तरह के अजीर्ण नाश होते हैं।

(१६) बड़ी इलायची का चूर्ण और मिश्री मिलाकर तीन-तीन माशे की मात्रा से सेवन करने से पित्त का अजीर्ण नाश होता है।

(१७) पोदीना ४ माशे, अम्लवेत ४ माशे, इलायची ४ माशे, दालचीनी ३ माशे और तालीसपत्र ३ माशे—इन सब को एकत्र पीसकर, कूट-पीस लो और चूर्ण के बराबर मिश्री मिला दो। इस

चूर्ण के सेवन करने से पित्त का "विदग्धाजीर्ण" नाश होता है।

(१८) नीबू, नारङ्गी और अनार प्रभृति फलोंके सेवन क
से भी विदग्धाजीर्ण नाश हो जाता है।

राजवटी ।

(१९) सोंठ ४ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला और सेंधानोन १ तोला
इन सब को कूट पीस कर, नीबूके रस में घोटकर, गोलियां बनाले
इन गोलियों से अजीर्ण, विदग्धाजीर्ण और विशूचिका—हैज़ा
सब आराम होते हैं।

शङ्खवटी ।

(२०) इमली का खार ४ तोले, पाँचों नमक ४ तोले और नी
का रस—इन में चार तोले शङ्ख को गरम कर-करके उस समय त
बुझाओ, जब तक कि वह टुकडे-टुकडे न हो जाय। इसके बाद हींग
सोंठ, कालीमिर्च और पीपल ये चारों एक-एक तोले, शुद्ध पारा
माशे और शुद्ध गन्धक ६ माशे—ले लो। पहले पारे और गन्धक
काजली करलो। इसके बाद शङ्ख वगैर सब दवाएं खरलमें डालक
घोटो और एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। ये "शङ्खवटी
अजीर्ण, संग्रहणी और पसली के दर्द वगैरः को आराम करती है।

दूसरी शङ्खवटी ।

(२१) शुद्ध पारा २ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध विष ६ तो
कालीमिर्च ८ तोले, शङ्खभस्म ८ तोले, सोंठ १० तोले, सज्जीखार १
तोले, शुद्ध हींग १० तोले, पीपल १० तोले, सहँजना १० तोले, सौव
र्चल नमक १० तोले, कालानोन १० तोले, सेंधानोन १० तोले औ
पाङ्गानोन१०तोले लेलो। पहले पारे और गन्धकको घोटकर काजली ब

लो। दूसरी ओर शेष दवाओं को जो कूटने लायक हैं, कूट-पीस और छानकर काजली में मिला दो। ऊपर से नीबू का रस दे-देकर घोटो और गोलियां बना लो। इन गोलियों के सेवन से ग्रहणी, अम्लपित्त, शूल, और अग्निमांद्य आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

विष्टब्धाजीर्ण की चिकित्सा।

(२२) इस अजीर्ण में शरीर के रोमरन्ध्र खोल देना हितकारी है। इस के लिये चारों तरफ चादर तानकर बफारा लेना अच्छा है। पसीना निकालने से शीघ्र ही लाभ होगा। इस में तैल आदि चिकने पदार्थों से पसीना निकालना और भी अच्छा है।

(२३) अलसी को महीन पीस कर, पुल्टिश बना कर, गरमागर्म कपड़ेमें रखकर, दर्दकी जगह बांधो, अथवा अलसीको पीसकर कपड़े की पोटलीमें बांधो। पीछे उस पोटलीको, आग पर रक्खे गर्म तवे पर, गरम कर-करके पेट पर उससे सेंक करो। इस उपाय से इस अजीर्ण की वेदना शान्त हो जायगी।

(२४) रेहगवां नमक और सोया—इन दोनों की पोटली बना कर, ऊपर की विधि से, दर्द-स्थानको सेकने से भी विष्टब्धाजीर्ण की पीड़ा दूर होती है।

(२५) थोड़ा नमक मिलाकर, नमकीन जल पीनेसे विष्टब्धाजीर्ण की पीड़ा दूर होती है।

(२६) "हिङ्गाष्टक चूर्ण"को गर्म जलके साथ सेवन करनेसे विष्टब्धाजीर्ण नाश होता है। इस का नुसखा पहले मन्दाग्नि के बयान में लिख आये हैं।

(२७) चव्य, चीता, कचूर, अजवायन, सोंठ, दालचीनी, जवाखार, समुद्रफेन और कालानोन,—इन सब दवाओं को समान भाग लेकर

चूर्ण बना लो। मात्रा २ माशे की। अनुपान निवाया जल। इस से भी विष्टब्धाजीर्ण नाश होता है।

(२८) हरड़, अजवायन और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस लो और अन्दाज़ का कालानोन भी मिला दो। इस चूर्ण के सेवन करने से विष्टब्ध अजीर्ण नाश होता है।

(२९) सोंठ, बड़ी इलायची, पीपल, दालचीनी, बंसलोचन, तेजपात और सौंफ—सब को एक-एक तोले लेकर, कूट पीस कर बारीक चूर्ण बना लो और कपड़ेमें छानकर रख लो। उधर एक पाव मिश्री की चाशनीमें इसी चूर्णको मिलाकर चाटने लायक अवलेह बनालो। जब पक जाय, अमृतवान में रख लो। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक। इस से वायु और पित्त के विष्टब्ध और विदग्ध अजीर्ण नाश होजाते हैं।

अजीर्ण नाशक नुसखे।

(३०) पीपल और सोंठका चूर्ण गुड़ मिलाकर खानेसे अजीर्ण, आमशूल और सूजन—ये विकार आराम होते हैं। परीक्षित है।

पाचक पिप्पली।

(३१) नीबू के रसमें सेंधानमक मिलाकर, उसमें पीपलों को चार दिन तक भिगो रक्खो, उसके बाद निकाल कर छाया में सुखा लो और शीशी में रख दो। उसमें से दो चार पीपल रोज़ खाने से भोजन पचता, अजीर्ण नष्ट होता और मुँह का स्वाद अच्छा होता है। परीक्षित है।

(३२) नीबू के रसमें जायफल घिस कर पिलाने से दस्त होकर पेट साफ हो जाता तथा पेट का अफारा, शूल, और अजीर्ण ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

विषमुष्टिगुटिका।

(३३) शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्धबच्छनाग, अजवायन, त्रिफला, सज्जीखार, जवाखार, सेंधानोन, चीते की जड़, ज़ीरा, कालानोन, बायबिडङ्ग और त्रिकुटा—इन सब को लेकर रख लो। पहले पारे और गंधक को खरल में घोट कर कजली बनालो। दूसरे ओर बाक़ी की दवाओं को कूट पीस कर छान लो। फिर कजली और पिसी-छनी दवाओं के चूर्ण को एक में मिला दो। इसके बाद इन सब को तोलो। जितना वज़न हो, उतना ही शोधे हुए कुचले का चूर्ण पहले चूर्ण में मिला दो। इसके बाद सबको खरलमें डालकर, नीबू का रस दे दे कर, खूब घोटो। घुटाई हो जाने पर, दो दो रत्ती की गोलियाँ बनालो। इन गोलियों के सेवन से मन्दाग्नि, अजीर्ण, आमविकार, जीर्णज्वर तथा अनेक प्रकार के वात रोग, यथोचित अनुपानके साथ देने से, निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३४) शुद्ध कुचले को एक मात्रा गरम जल के साथ काफी की तरह सेवन करने से अन्न अच्छी तरह पचता है। अगर अजीर्ण को वजहसे वाय होती हो, तो वह भी इससे दब जाती है। इसके सेवन से मन्दाग्नि, अरुचि, पेट की मरोडो—पेचिशमें बड़ा लाभ होता है। वात प्रकृति वालों के लिये कुचला अमृत है। बादी के विकारों को यह शीघ्र ही नष्ट कर देता है। अफीम खाने वालों को थकान के समय इसे लेने से बड़ा सुख मालूम होता है। मात्रा १ से ६ रत्ती तक। अनुपान गरम जल।

(३५) अगर हवा न खुलने से पेट फूल कर पत्थर हो रहा हो, तो आरंभ में ही इन में से कोई उपाय करो —

(क) हींग के पानी में कपड़ा भिगोकर नाभि पर रखो। हींग को पानी के साथ पीसकर, ज़रा गरम कर लो और उसीमें कपड़ा तर करके काम में लाओ

(ख) हिंगाष्टक चूर्ण या और कोई चूर्ण खाने को दो।

(ग) नारायण तेल की पिचकारी गुदा में लगाओ।

(घ) पेट पर नारायण तेल या तारपीन का तेल मलो।

(ङ) तारपीन के तेल में कपूर मिलाकर पेट पर मलने से उसी समय पेट की वायु-जनित पीड़ा आराम होती है। शरीर के अन्य स्थानों के दर्द में भी यह बड़ा उपकारी है।

(च) अरण्डी के पत्तों का स्वरस १ पाव, काले तिलों का तेल १ पाव,—दोनो को मिला कर मन्दी आग से पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय उतार लो। इसके पेट पर मलने से वातजनित कोठे की पीड़ा अवश्य आराम होती है।

(२६) अरण्ड खरबूजा और पका हुआ पपीता—ये फल अतीव पाचक होते हैं। भोजन के बाद एकाध फल खा लेने से भोजन खूब जल्दी पचता, भूख लगती और दस्त साफ होता है।

नोट—इनमें मांस को गलाने की शक्ति है। इसलिये तिल्ली और यकृत के शोथ—सूजन को ये शीघ्र ही दूर करते हैं। परन्तु पित्तकी अधिकता और यकृतमें,अधिक गरमी होने पर, इनका सेवन लाभदायक नहीं, किन्तु हानिकारक है।

(२७) पीपल का चूर्ण पुराने गुड़में मिलाकर खानेसे अजीर्ण नाश होता है। परीक्षित है।

अमृतप्रभा गुटिका।

(२८) कालीमिर्च, पीपलामूल,लौंग, हरड़, अजमोद,डांसरिया, अनारदाना सूखा, पीपल, जवाखार, चीते की छाल, ज़ीरा, सोंठ, धनिया, इलायची और आमला—सब को चार-चार तोले लेकर, कूट पीस कर छान लो। फिर खरल में डाल बिजौरे नीबू के रस में घोटो। उत्तम घुटाई हो जाने पर २।२ माशे की गोलियां बना लो। इस नुसखे से अग्नि जागती और अजीर्ण नाश होता है।

(३८) हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ कालीमिर्च और पीपर,—इन सब को तोले-तोले भर लेकर, कूट-पीस कर छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण फांक कर, ऊपरसे ताज़ा पानी पीनेसे,६ दिनमें,अजीर्ण नाश हो जाता है। बादी करनेवाली चीज़ें न खानी चाहिये।

(४०) अजवायन का अर्क पीनेसे अजीर्ण आराम होजाता है। इस अर्क से बदहज़मी के कारण होनेवाली सारी शिकायतें रफा हो जाती हैं।

(४१) नीचे लिखे पदार्थों से पैदा हुए अजीर्ण इन उपायों से नाश होजाते हैं —

(क) भात खाने से हुआ अजीर्ण नारियल की गिरी खाने अथवा दूध में थोड़ा पानी मिलाकर पीने से आराम होता है।

(ख) खिचड़ी खाने से हुआ अजीर्ण बड़ी इलायची पीस कर फाँकने या सेंधानोन पीस कर खाने से आराम होता है।

(ग) गेहूँ की रोटी का अजीर्ण सोंठ और कालेनोन को पीस कर फाँकने से जाता है।

(घ) मिठाई—लड्डू पेड़ा आदि का अजीर्ण नमक मिलाकर पीपर का चूर्ण खाने से जाता है।

(ङ) दूध से हुआ अजीर्ण माठा पीने से जाता है।

(च) घी से हुआ अजीर्ण नीबू के रस में नमक और कालीमिर्चों का चूर्ण मिलाकर खाने से जाता है। अथवा सेंधानोन गरम जल में मिलाकर पीने से आराम होता है।

(छ) तेल या तेल से बने पदार्थों से हुआ अजीर्ण खट्टी छाछ, काँजी या नमक पड़े हुए माँड से मिटता है।

(ज) खाँड का अजीर्ण अदरख और नमक मिलाकर खाने से जाता है।

(झ) केले का अजीर्ण बड़ी इलायची पीसकर फाँकने या थोड़ा सा घी खाने से जाता है।

नोट—इलायची केले को फौरन पका देती है। अगर केले पर इलायची का चूर्ण डाल दो,तो फौरन गल कर सडने लगेगा। अगर कच्चा केला जल्दी पकाना हो, तो केले की डन्टी मे जहाँ गुच्छा लगा रहता है, चाकू से छेद कर उसमें इलायची का चूर्ण भर दो।

(ञ) अफीम के अजीर्ण में हींग खानी चाहिये।

(ट) हींग के अजीर्ण मे जीरा खाना चाहिये।

(ठ) आमके अजीर्ण मे जामुन खाना अथवा जीरे के पानी में कालानोन मिलाकर पीना अथवा सोंठ के जलमे काला नमक मिलाकर पीना चाहिये।

(ड) मूँगफली के अजीर्ण में माठा पीना चाहिये।

अजीर्ण गज केशरी।

(४२) आक का चूर्ण ४ तोला, सोंफ का चूर्ण ४ तोला, शुद्ध आमलासार गन्धकका चूर्ण ४ तोला, शुद्ध लोह मण्डूर ४ तोले, सुहागा ४ तोला, नौसादर ४ तोला, साँभर नमक ४ तोला, सोंठ का चूर्ण ४ तोला, पीपर का चूर्ण ४ तोला, चीते की छाल का चूर्ण ४ तोला और अजवायन का चूर्ण ४ तोला,—इन ग्यारह चीजों को एकत्र पीसकर,एक सेर जँभीरी नीबूके रसमें मिलाकर, खूब मजबूत बोतलों में भर कर और काग से खूब मजबूती से बन्द करके, जमीन में गाड़ दो और १४ दिन बाद निकाल लो। इससे तिल्ली,गुल्म, शूल, अजीर्ण प्रभृति अनेक रोग नाश होते हैं।

मात्रा—४ माशे की।

समय—भोजन के पीछे, दिनमें २।३ बार।

नोट (१) यह परीक्षित है। अजीर्ण को नाश करता है, पर तिल्ली पर भी अक्सीर है।

नोट (२) अगर वायुके कारण पेट फूल रहा हो, पेटमें शूलसे चलते हों और वह शूल जगह बदल-बदल कर चलते हों, तो आप गेहूं की भूसी या भोकर में थोडासा नमक मिला,उसकी पोटली बनावे और तवे पर गरम करकरके शूल स्थानको सेक।

अजीर्णान्तक चूर्ण ।

(४३) लाहौरीनोन ११ माशे, कालानोन ११ माशे, पोदीना १८ माशे, पीली हरड़ का बक्कल २४ माशे, बहेड़ेका बक्कल २४ माशे, आमले २४ माशे, पीपल २४ माशे, कालीमिर्च २४ माशे, सोंठ २४ माशे, बच २४ माशे, कालाजीरा २४ माशे, सफेदजीरा २४ माशे, लाल नमक २४ माशे, धनिया ३२ माशे, सौंफ ८० माशे, और अजवायन ८० माशे—इन सब को कूट-पीस कर कपड़छन कर लो। इस के बाद इस चूर्ण को नीबू के रस में भिगो और घोटकर सुखालो। सूख जाने पर उस मसाले को सूखे या हरे आमलों के रस में भिगोकर और मिला कर सुखा लो। जब फिर सूख जाय, खरल में डाल, नीबू के रस के साथ घोटो और जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सवेरे-शाम या तीन-तीन घंटे पर जल के साथ या अर्क सौंफ के साथ खाने से अजीर्ण नाश होता, भोजन पचता, कोठा या पक्काशय बलवान होता, मेदा ताकतवर होता, अग्नि तेज होती और कोठे की कुपित वायु शान्त होती है।

अजीर्ण कण्टक रस ।

(४४) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध सींगिया विष,—इन सबको एक-एक तोले ले लो और काली मिर्चका चूर्ण ३ तोला ले लो। पहले गन्धक और पारेको कज्जली करलो, पीछे उसमें विष और कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर खरल करो। शेष में कटेरी के फलों का स्वरस निकाल कर, इस चूर्ण में उसीकी भावना दो। बस यही "अजीर्ण कण्टक" रस है। इसकी मात्रा १ से २ रत्ती तक है। बलाबल देखकर मात्रा कम जियादा देनी चाहिये। यह रस तत्काल जठराग्निको बढ़ाता और विशूचिका—हैज़ा, अजीर्ण आदि वातरोगोंको नाश करता है। परीक्षित है।



गरीबी नुसखे ।

(४५) पीली हरड़ का बक्कल, सोंठ, पीपर, अनारदाना, सनाय, तुरबुद और मुनक्के बीज निकाले हुए—ये सब एक-एक तोले और कन्द ६ तोले लेकर, कूट पीसकर बेर समान गोलियाँ बना लो । इन गोलियों के खाने से पेट हलका होता, दस्त साफ आता, बदहज़मी या अजीर्ण नाश होता और भूख बढ़ती है । मात्रा १ गोली । अनुपान जल ।

नोट—ये गोलियाँ उस अजीर्ण में देनी चाहियें, जिसमें दस्त साफ न होता हो और पेट फूल रहा हो ।

(४६) सनाय, पीली हरड़का बक्कल और कालीमिर्च—ये तीनों चार-चार माशे और बड़े मुनक्के ४ तोले,—इनको कूट पीसकर जलमें घोटो और तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो । सवेरे ही, तीन गोलियाँ खाकर, ऊपर से थोड़ासा जल पी लेने से अजीर्ण नष्ट होता, अफारा मिटता और क़ब्ज़ नाश होकर दस्त खुलासा होता है । तीन गोली या ८ माशेकी मात्रा जवानको है । कम-उम्र या कमज़ोरको एक या दो गोली देनी चाहियें ।

(४७) भुना सुहागा ८ माशे, अजवायन ३॥ तोले, कालीमिर्च ४ तोले और एलुआ ५ तोले ४ माशे,—इन सबको कूट पीस और छानकर "घी ग्वारका" रस डाल खरलमें घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो । ये गोलियाँ परीक्षित हैं । एक बारमें ३ गोली देनेसे बादी का अजीर्ण नाश होता, दस्त साफ होता, पेटकी पीड़ा शान्त होती, भूख लगती और बढ़ा हुआ पेट हलका होता है । परीक्षित है ।

(४८) काली ज़ीरी, राई और गुड़—तीनों बराबर-बराबर लेकर जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो । एक गोली पानी के साथ निगल जाने से अजीर्ण नाश होता और खाया-पीया पचता है ।

(४९) सोंठ २ तोले, भुना सुहागा १ तोले, पीली हरड़की छा तोले, सेंधानोन १ तोले और भुनी हींग १ तोले,—इन को कूट छानकर खरल में डालो और ऊपर से सहँजने की जड़ का र सहँजनेके पत्तोंका स्वरस निकालकर डालते जाओ और घुटाई व घुट जाने पर, जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बनालो। जल के एक गोली खाने से अजीर्ण नाश होता, भोजन पचता, भूख ल वायु शान्त होती, तिल्ली गलती और कोठे या पक्वाशय का श्र मिटता है।

(५०) काला नमक दो तोले, खट्टा चूका २ तोले, अजव २ माशे, लौंग १ माशे और कालीमिर्च १ माशे—इन सबको कूट कर और चूके में मिलाकर गोलियाँ बनालो। भोजन के बाद गोली खानेसे भोजन पचता, भूख लगती, कूलो और आँतोंकी तथा जलन्धर नाश होता है। वायु को पचाने में यह गु अच्छा है।

(५१) लाहौरी नमक ४ माशे, इन्द्रानी नोन ४ माशे, साँभ ४ माशे, नमक नफ्ती ४ माशे, पीली हरड़की छाल ४ माशे, बहे छाल ४ माशे, आमले ४ माशे, सौंफ ४ माशे, अजवायन ४ म कालाज़ीरा ६ माशे, सफेद ज़ीरा ६ माशे, शैतरज ६ माशे, सौंठ ३ म कालीमिर्च ६ माशे, पीपल ६ माशे, भुना सुहागा ६ माशे, नौसादर ६ माशे, सनाय ६ माशे और भुनी हींग १ माशे— दवाओंको कूट पीसकर छानलो और खरल में डाल दो। पीछे कागज़ी नीबुओं का रस निकाल-निकाल कर, खरल में डालते ज और ऊपरके पिसे-छने चूर्ण को घोटते जाओ। जब चूर्ण घुट जाय सारा नीबुओंका रस खप जाय, जङ्गलीबेरके समान गोलियाँ बना एक गोली नित्य खानेसे अजीर्ण मिटता, भोजन पचता, वायु नष्ट और हैज़े में भी लाभ नजर आता है।

(५२) अजवायनको पहले दिन "घी ग्वार" के रस में एक

या ३ घण्टे तक भीगने दो, फिर उस में से निकाल कर सुखा दो। सूख जाने पर,उसे सात दिन तक रोज़ नीबुओंके रसमें भिगोओ और रोज़ सुखा दो। दूसरे दिन फिर भिगोओ और सुखा दो। इस तरह बराबर सात दिन तक करो। यह अजवायन बादी को नाश करके भोजन को पचाती है। बडी ही अच्छी चीज़ है। मात्रा १ माशे से २ माशे तक। अनुपान जल।

(५३) सोंठ,कालीमिर्च और पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस कूट छान कर चूर्ण करलो। इस चूर्ण के खाने से अजीर्ण नाश होता, भोजन पचता और वायु शान्त होती है।

(५४) अगर वायु के कारण शूल चलते हों या पेट में दर्द हो, (अजीर्ण में बहुधा ऐसा होता,है,) तो इन में से कोई लेप करो—

(क) निरमलीको पानीमें घिसकर, कटोरीमें रख लो और आग-पर जरा गरम करके नाभि के चारों ओर लगा दो।

(ख) बालू को सिरकेमें मिलाकर, पोटली में बाँध लो और उस पोटली को तवे या आग पर तपा-तपा कर पेट पर सेक करो।

(ग) चूहेकी मैंगनी और सौंफ—बराबर-बराबर लेकर, पानीमें पीस कर,कटोरीमें रखलो और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप पेटपर करो।

नोट—वायु-जनित अजीर्ण में पेट-दर्दों के इन लेपों से अवश्य शान्ति मिलेगी।

(५५) गुलकन्द गुलाब खिलानेसे पक्वाशय बलवान होता, भोजन पचता, अजीर्ण नाश होता और दस्त खुलासा आता है।

नोट—अगर खाली गुलकन्दसे पेटका सड़ा हुआ—बिना पचा मवाद न निकले, तो दो तोले गुलकन्द गुलाब में १० या १५ दाने मुनक्के (बीज निकाल कर) मिला दो और १ पाव पानीमें,मिट्टीकी हाँडीमें पकाओ। जब १ छटाक जल रह जाय, उतार कर मल छान लो और रोगीको पिला दो। इससे अवश्य पेटका मवाद निकल कर पेट हल्का हो जायगा। पित्त के अजीर्ण में गुलकन्द गुलाब देने से अनेक बार अच्छा चमत्कार देखा है। अजीर्ण में जुलाब अपथ्य है। यह उपाय हमने किसी खास हालत के लिए लिखा है।

(५६) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सेंधेनोन को जल में

(६५) गाय की छाछ अजीर्ण नाश करने मे उत्तम चीज़ है।

(६६) गुड २ भाग और सोंठ १ भाग मिलाकर, रोज-रोज़ खाने से पेचिश, अजीर्ण और पीनस रोग आराम होते हैं।

(६७) पेट में शूल से चलते हो, तो १ तोला साँभरनोन १ पाव जल में औटाकर पिला दो।

(६८) भुनी हींग, भुना ज़ीरा, सोंठ और सेंधानमक—सब को समान-समान लेकर पीस लो। इस चूर्ण को फाँकने और ऊपर से पानी पीने से अजीर्ण और पेट का दर्द मिटता है।

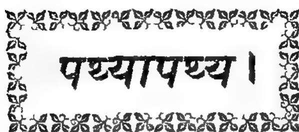
(६९) गुड मे पिसी हुई लालमिर्च मिलाकर खाने से पेट का दर्द आराम हो जाता है।

(७०) सोंठ,कालीमिर्च,पीपर,अकरकरा, सेंधनोन और नौसादर—इन सब को एक-एक तोले लाकर पीस कूट कर छान लो। इसमें से ३ या ४ रत्ती चूर्ण जल के साथ या बिना जलके फाँकने से भोजन निश्चय ही पच जाता है।

(७१) पाँचों नमक, त्रिफला, त्रिकुटा, पीपर, अजवायन, चीता, लौंग, दालचीनी, मस्तगी और बायबिडङ्ग—ये सब एक-एक तोले लो और इलायची २ माशे, केसर २ माशे और जावित्री २ माशे लो। पीछे सब को कूट पीस कर छान लो और खरल में डाल कर, ऊपर से सहँजनेका रस दे दे कर घोटो और बेरके समान गोलियाँ बनालो। जवान को दो दो गोली देकर, ऊपर से जरासा गरम जल पिला दो। इस नुसखे से अजीर्ण तो बातकी बात में भाग जाता है, साथ ही पेटका भारी से भारी दर्द भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(७२) पाँचों नोन, आक की कली, त्रिफला, त्रिकुटा और जवाखार—इन सब को कूट पीस कर, खरल मे डाल कर, ऊपर से आक के पत्तों का रस दे देकर, जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बनालो।

सन्ध्या-समय एक गोली, गरम जलके साथ, खाने से अग्नि दीप्त होती तथा अजीर्ण, पेट का दर्द, अफारा और गुडगुड आवाज़ होना नाश होता है। परीक्षित है।



पथ्यापथ्य।

मन्दाग्नि और अजीर्ण में पथ्य।

कफ से उत्पन्न मन्दाग्नि और अजीर्ण—आमाजीर्ण में,नमक-मिले गरम जल से वमन करानी चाहिये। पित्त से उत्पन्न विदग्धाजीर्ण में हलका जुलाब देना चाहिये और वातज अजीर्ण—विष्टब्ध अजीर्ण—में स्वेदकर्म—बफारे प्रभृतिसे काम लेना चाहिये अथवा समय पर जैसी ज़रूरत हो, विचार कर काम करना चाहिये। अजीर्ण की पहली अवस्था में उपवास कराना, सब से अच्छा उपाय है।

नोट—जहाँ तक हो, जुलाब न देना ही अच्छा है। हाँ,एक दस्त साफ करा देना बुरा नहीं।

अजीर्ण में नीचे लिखे आहार और विहार पथ्य या हितकारी है—कसरत, कुश्ती, मिहनत, हल्के और अग्नि प्रदीप्त करने वाले भोजन,बहुत पुराने महीन लाल चाँवल,यवागू, लाजामण्ड—खीलों का माँड, मूँगों का रस,मदिरा,शाली चाँवल, बथुआ,छोटी मूली, लहसन, पुराना पेठा, नवीन केले की फली, सहँजना, करेला, परवल, बैंगन, ककोड़ा, खसका सुगन्धित जल, अदरख, आमला, नारंगी, अनार, पापड़, अम्लवेत, जमीरी नीबू, बिजौरा नीबू, शहद, माठा, काँजी,

नमक, साठ, अजवायन, मिर्च, मेथी, धनिया, ज़ीरा, पान,
जल (विदग्धाजीर्ण में शीतल जल) कड़वे और चरपरे रस,
, आरारूट और साबूदाना प्रभृति हलके पदार्थ।
ोठकी दालमें पिसी हुई सोंठ और भुनी हुई हींग डालकर खाने
का दर्द और अफारा मिटता है।
नी हुई सोंठ नोन मिर्च लगाकर खाने से शीघ्र ही पच जाती
रुचि बढ़ाती है।
हली अवस्था में उपवास करनेसे, जब अजीर्ण के दोष शान्त
ोगीको साबूदाना, बारली या अरारूट पका कर दो। जब अग्नि
वेरे के भोजन में पुराने चाँवल का भात, परवल का साग, कच्चे
ी तरकारी, मसूर की दाल, माठा, कागज़ी नीबू और अदरख
ड़े नमक लगाकर दो। शाम के भोजन या व्यालूमें, यदि भूख
हो,तो साबूदाना या बारली अथवा और कोई हल्का खाना दो।
खूब भूख लगी हो, तो दिन की तरह पुराने चाँवल का भात
अगर खूब भूख लगने लगी हो और अजीर्ण न हो,तो "अजवायन
नमक"-डाली पतली-पतली पूरियाँ बनवा दो और साग तोरई
रवलका दो। रोगीसे कह दो कि,भोजन में लोटे के लोटे जल न
वे, बल्कि उतना ही जल पीवे, जितने से गले का ग्रास उतर
। वह भी उस दशा में, जब कि पानी बिना सरे ही नहीं। इस
जितना ही थोड़ा जल पिया जाय,उतनाही अच्छा। हो सके तो,
खाने के घण्टे दो घण्टे या ३ घण्टे बाद, थोड़ा-थोड़ा जल
जाय। सवेरे, तारों की छायामें, पेट भर शीतल जल पीना
ा है।

राजमण्ड।

चाँवलों के गरम माँड में हींग और सचरनोन मिलाकर पिलाने
षम और मन्द अग्नि पूर्ण रूप से बढ़ती है।
आठ-आठ तोले मूँग और चाँवलों को ३२ तोले जल में पकाओ।

ये पक जाँय, माँडको पसा लो और उसी गायके घी में भून लो। बाद उसमें भुनी हींग, सेंधानोन, सोंठ,मिर्च,पीपर और धनिया सबका एक माशा चूर्ण मिला दो और खूब स्वच्छ चमक- चाँदी या काँच के बर्तन में रख कर, एक चतुरा विलासिनी नी के हाथ में देकर रोगी के पास भेज दो। वह स्थान निर्जल त और निर्जन हो, यानी वहाँ न तो कोई आदमी हो,न बाहरो आती हो और न जल हो। वह स्त्री रोगी के पास जाकर मधुर- कटाक्ष करती हुई रोगी को उस अमृत-तुल्य माँड के बर्तन प्रेम से दिखावे। अगर इस तरह राजमण्ड पिया जाय, तो वह दीपन करके तीनों दोषों को हरेगा। कहा है —

किंचि-कटाक्षं सा दत्वा सुधातुल्य प्रकाशयेत्।
तत पिवेद्राजमण्ड दोषत्रयविनाशनम्॥

मन्दाग्नि और अजीर्ण में अपथ्य।

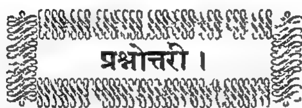
मन्दाग्नि और अजीर्ण में नीचे लिखे हुए पदार्थ अपथ्य या हानि- कारक हैं :—

जुलाब लेना, (पित्त के विदग्धाजीर्ण में हलका जुलाब बुरा नहीं) मल, मूत्र और अधोवायु के वेगों को रोकना, भोजन पर भोजन करना, यानी बिना एक भोजन पचे दूसरा भोजन करना, रात जागना, मैथुन करना, तेल लगाना, स्नान करना, कभी कम और कभी अधिक खाना, कभी किसी समय और कभी किसी समय भोजन करना और खून निकालना।

दालके अन्न,—मूँग, मोंठ,उड़द, चना वगैरः मछली, मास,बहुत जल पीना, पोई का साग,लालमिर्च, पिट्ठी के पदार्थ, घीमें पके पदार्थ, तत्काल ब्याई गायका दूध, विकृत दूध या घी में पके हुए चाँवल, दूध, खोया, इमली आदि का पना या और पतले पदार्थ, ईख-रस, ताड़-

फल की मींगी, नारियल, धनियाँ, तेलवाला, खराब या गन्दा पानी, अपनी प्रकृति के विरुद्ध अन्न और जल, भारी और देर में हज़म होने वाले पदार्थ, भूने सेके पदार्थ,दाख—मुनक्का या अन्य दस्तावर पदार्थ।

उडद मन्दाग्नि रोग में महा अपथ्य है, क्योंकि पहले दर्जे के गरिष्ट हैं। उडद की पिठ्ठी के लड्डू ताक़तवर होते हैं, पर मन्दाग्नि वाले के लिये हानिकारक हैं। ज्वार वात प्रकृति वाले और मन्दाग्नि वाले को नुकसानमन्द और अफारा करने वाली है।



प्रश्नोत्तरी।

प्र० (१) जठराग्नि कितने प्रकार की होती है ?

उ०—चार प्रकार की।

प्र० (२) चारों प्रकार की जठराग्नियो के नाम बताओ।

उ०—(१) समाग्नि, (२) विषमाग्नि, (३) तीक्ष्णाग्नि, (४) मन्दाग्नि।

प्र० (३) जठराग्नि सम, विषम, तीक्ष्ण और मन्द किन कारणो से होती हैं ?

उ०—(१) कफ के जियादा हो जाने से जठराग्नि मन्दी होती है।
(२) वात के जियादा होने से जठराग्नि विषम होती है।
(३) पित्त के अधिक होने से जठराग्नि तीक्ष्ण होती है।
(४) तीनों दोषों के समान रहने से जठराग्नि सम होती है।

प्र० (४) चारों प्रकार की अग्नियों मे उत्तम अग्नि कौनसी होती है ?

उ०—समाग्नि, क्योंकि समाग्निवालेका खाया-पिया भोजन सुखसे पच जाता है।

प्र० (५) विषमाग्नि होने से क्या होता है ?

उ०—विषमाग्निवाले का भोजन कभी अच्छी तरह पच जाता है और कभी नहीं पचता तथा इस अग्नि वाले को अफारा, शूल, पेट का भारी रहना, अतिसार और आंतो में गुड-गुड आवाज होना प्रभृति विकार होते हैं।

प्र० (६) तीक्ष्णाग्नि होने से क्या होता है ?

उ०—तीक्ष्ण अग्नि वाला जो खाता है, वही सहज में पच जाता है। इसलिये अनेक वैद्य तीक्ष्णाग्नि को अच्छी कहते हैं।

प्र० (७) मन्दाग्नि होने से क्या होता है ?

उ०—मन्दाग्निवाले को थोड़ासा खाना भी हज़म नहीं होता। उसे कय होती हैं, लार गिरती है, ग्लानि रहती है, सिर और पेट भारी रहते हैं।

प्र० (८) जिस अग्निसे भोजन पच जाय उसे अच्छी कहते हैं। तीक्ष्ण अग्निवाला जो खाता है वही आसानीसे पच जाता है , फिर उसे बुरी क्यों कहते हैं ?

उ०—समान अग्नि वाला अगर भूख लगने पर भी थोड़ी देर नहीं खाता, तो वह अग्नि कुछ हानि नहीं करती , परन्तु तीक्ष्णाग्नि तो समय पर खाना न मिलनेसे पित्त के विकार पैदा कर देती है इसी वजह से तीक्ष्ण अग्नि बुरी कही जाती है।

कहा भी है—

तीक्ष्ण पित्तसमुत्थानात् विषमो वातहेतुकात् ।
तथा करोति मन्दाग्निविकारान् कफसम्भवान् ॥

तीक्ष्णाग्नि पित्त के, विषमाग्नि वायु के और मन्दाग्नि कफ के विकार करती है।

प्र० (९) भस्मक रोग किसे कहते हैं ?

उ०—जब भस्मक रोग हो जाता है, तब खाया-पीया क्षण भरमें भस्म हो जाता है और फिर भूख लगती है। अगर भूख के समय खाने को नहीं मिलता, तो तीक्ष्ण अग्नि शरीर की रस, रक्त आदि धातुओंको जलाती है। जिस रोगमें रोगी बारम्बार खाय और भूखा-ही-भूखा चिल्लाये, वही भस्मक रोग है।

कहा है—

क्षणाद्भुक्तभनेद्भस्म स रोगो भस्मक स्मृत ॥

प्र० (१०) भस्मक किन्हे होता है ?

उ०—अत्यन्त तीक्ष्ण और रूखा अन्न खाने वालों को भस्मक रोग होता है।

प्र० (११) भस्मक रोग कैसे पैदा हो जाता है ?

उ०—अत्यन्त तीक्ष्ण और रूखा अन्न खाने से कफ क्षीण हो जाता है , तब वात और पित्त बढ़ जाते हैं। उस समय जठराग्नि भी अत्यन्त बढ़ जाती है। बढ़ी हुई जठराग्नि वायु के साथ मिलकर खाने को क्षण भर में भस्म कर देती है।

प्र०—(१२) भस्मक रोग के उपद्रव क्या हैं ?

उ०—भस्मक रोग—अग्नि के बहुत ही तेज होने से—प्यास, पसीना, दाह और बेहोशी वगैर करके, अन्न को तत्काल पचाकर, शीघ्र ही रस रक्त आदि धातुओं को नाश करता है।

प्र० (१३) अजीर्ण के कारण बताओ

उ०—(१) बहुत खाना-पीना।

(२) विषम भोजन करना।

(३) मलमूत्रादि को रोकना।

(४) भूख में न खाना।

(५) दिन में सोना।

(६) रात में जागना।

(७) लोभ करना।

(८) क्रोध करना।

(९) दूसरे को देखकर कुढना।

(१०) रोग होना।

(११) भय होना।

(१२) दीनता से पीड़ित होना।

प्र० (१४) अजीर्ण का असल कारण क्या है?

उ०—बहुत खाना ही अजीर्ण का मुख्य कारण है।

कहा है —

अनात्मवन्त पशुवद् भुञ्जते येऽप्रमाणतः।
रोगानीकस्य ते मूलमजीर्णं प्राप्नुवन्तिहि॥

जो मूर्ख हैवानों की तरह अन्धाधुन्ध खाते हैं, उन्हें हैजा वगैर रोगों का मूल-कारण "अजीर्ण" होता है।

प्र० (१५) क्या अजीर्ण और भी अनेक रोगों का कारण है?

उ०—हाँ, अजीर्ण होने से रोगों का समूह पैदा होता है और अजीर्ण के नाश होने से वे सब रोग-रोग नष्ट हो जाते हैं।

प्र० (१६) अजीर्ण के सामान्य लक्षण क्या हैं?

उ०—ग्लानि, भारीपन, विष्टम्भ, भ्रम, हवा का रुकना, मल का रुकना या दस्त लगना—ये ही अजीर्ण के सामान्य चिह्न हैं, यानी ये लक्षण हों तो अजीर्ण समझो।

प्र० (१७) अजीर्ण कितने प्रकार के होते हैं?

उ०—(१) आमाजीर्ण।

(२) विदग्धाजीर्ण।

(३) विष्टब्धाजीर्ण।

(४) रसाजीर्ण।

(५) दिनपाकी अजीर्ण।

(६) नित्य अजीर्ण।

प्र० (१८) छहो प्रकार के अजीर्णों के लक्षण कहो।

उ०—(१) आमाजीर्ण कफ की अधिकता से होता है। इस अजीर्ण में पेट और अङ्गों में भारीपन रहता है। कय करने की इच्छा होती है। गालों और पलकों पर सूजन होती है। जो खाया जाता है, उसी की डकारें आती हैं।

(२) विदग्धाजीर्ण पित्त से होता है। इस में प्यास, मूर्च्छा, दाह, सन्ताप आदि व्यथायें होती हैं, पसीना आता है, धूएँ से मिली खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं।

(३) विष्टब्धाजीर्ण वायु से होता है। इसमें दर्द, अफारा, तोड़ने छेदने की सी पीड़ा, मल और गुदाकी हवाका रुकना, शरीरका जकड़ना, शरीरमें दर्द होना और बेहोशी ये लक्षण होते हैं।

(४) रस शेष अजीर्ण भोजन के सार भाग के पकते-पकते कच्चा रह जाने से होता है, यानी भोजन के बने हुए रस में से जब पकते-पकते कुछ कच्चा रह जाता है तब रस शेष अजीर्ण होता है। इस में हृदय के अशुद्ध और भारीपन से अन्न पर अरुचि रहती है।

(५) दिन-पाकी अजीर्ण में अच्छा तथा मात्रा और काल के विचार से किया हुआ भोजन भी उस दिन नहीं पचता है, किन्तु दूसरे दिन पचता है।

(६) नित्य अजीर्ण प्रति-दिन रहता है। किया हुआ भोजन जब तक नहीं पचता, उसे अजीर्ण कहते हैं। इस में कोई विकार नहीं होता।

प्र० (१९) अजीर्ण के उपद्रव क्या हैं?

उ०—मूर्च्छा, बकवाद, कय, लार गिरना, ग्लानि, भ्रम और मरण।

प्र० (२०) नित्य या छठे अजीर्ण को पचाने के क्या उपाय हैं?

उ०—बाईं करवट लेटना, फिर दाहिनी ओर लेटना और फिर सीधे सोना, सुन्दर-सुन्दर चित्र आदि देखना, अच्छा गाना बजाना या कथा कहानी सुनना।

प्र० (२१) क्या सबेरे के अजीर्ण में रात को भोजन कर सकते हैं?

उ०—हाँ, रात को अवश्य खाना चाहिये।

प्र० (२२) अजीर्णों की चिकित्सा-सम्बन्धी कुछ मुख्य बातें बताओ

उ०—(१) आमाजीर्ण में वमन कराओ।

(२) विदग्धाजीर्ण में लङ्घन कराओ।

(३) विष्टब्धाजीर्ण में सेक वगैर करके पसीने निकालो अथवा नमक मिला गरम जल पिलाओ।

(४) रस शेष अजीर्ण में रोगी को सुला दो। इसमें दिन में सोना, लङ्घन करना और बिना हवा की जगह में रहना अच्छा है।

प्र० (२३) आमाजीर्ण में वमन किस तरह करानी चाहिये ?

उ०—आधा तोला बच और अन्दाज का सेंधानोन दोनों को ३२ तोले गरम जल में मिलाकर, रोगी को पिलाओ और वमन कराओ। कय होने से दूषित पदार्थ आमाशय से निकल जायगा और आमाजीर्ण मिट जायगा।

अथवा ।

पीपल, सेंधानोन और बच को बराबर-बराबर लेकर सिलपर पानी के साथ पीसकर शीतल जल में घोल कर पीजाओ। इस से भी कय होकर आमाजीर्ण नाश हो जायगा।

अथवा ।

धनिया और सोंठ का काढ़ा पीने से भी आमाजीर्ण शान्त हो जाता है।

प्र० (२४) अगर सवेरे उठते ही अजीर्ण की शङ्का हो तो क्या भोजन के समय भोजन न करना चाहिये ?

उ०—अगर अजीर्ण की शङ्का हो, तो हरड़, सोंठ और सेंधानोन—इन तीनों को पीसकर पी लो और भोजन के समय वहम छोड़ कर खाना खाओ।

प्र० (२५) अगर भोजन करते ही हृदय और कण्ठ में दाह हो तो क्या करना चाहिये ?

उ०—शहत और मिश्री में दाख और हरड़ मिलाकर चाटो, फिर कोई भय नहीं।

प्र० (२६) क्या विदग्धाजीर्ण में शीतल जल पीना हितकारी है ?

उ०—हाँ, शीतल जल पीने से विदग्ध भोजन पच जाता है, क्योंकि ठण्डेपन से पित्त नष्ट हो जाता और गीलेपन के कारण पचे हुए भोजन को नीचे गिरा देता है।

प्र० (२७) सब तरह के अजीर्णों में आमतौर से क्या करना चाहिये ?

उ०—हींग, सोंठ, मिर्च, पीपर और सेंधानोन,—इनको जलमें पीसकर पेट पर लेप करो और दिन में सोओ।

प्र० (२८) दिन में सोना किन-किन रोग वालों को अच्छा है।

उ०—दिन में ये सो सकते हैं —

(१) कसरत कुश्ती करने वाले।

(२) स्त्री प्रसङ्ग करने वाले।

(३) राह चलने वाले।

(४) हाथी घोड़े की सवारी करने वाले।

(५) अतिसार वाले।

(६) शूल-रोगी।
(७) श्वास-रोगी।
(८) प्यास-रोगी।
(९) हिचकी-रोगी।
(१०) वात-पीड़ित।
(११) क्षीण, कफक्षीण रोगी।
(१२) शराबी।
(१३) बूढ़े।
(१४) अजीर्ण-रोगी।
(१५) रात में जागने वाले।
(१६) लङ्घन करने वाले।

नोट—उपरोक्त १६ प्रकार के मनुष्य दिन में इच्छानुसार सो सकते हैं।

प्र० (२९) भस्मक रोग किन-किन उपायों से नाश किया जाता है ?

उ०—भारी,चिकने,गाढ़े शीतल और कढ़े अन्नपानों और पित्तनाशक जुलाब से "भस्मक रोग" शान्त होता है। अत्यन्त बढ़ी हुई अग्नि भैंसके दही, दूध,माठा और घी वगैर से शान्त होती है। भस्मक रोग में खीर खाना अच्छा है। इस रोग म पित्तनाशक दवाएँ देनी चाहियें और "काली निशोथ" दूधमें पकाकर देनी चाहिये। इस से पित्त निकल जाता है। जितने भी मीठ,कफकारक और भारी पदार्थ है, उनका खाना और दिन मे सोना "भस्मक रोग" मे हितकारी है।

प्र० (३०) भस्मक रोग नाशक ग़रीबी उपाय बताओ।

उ०—(१) बेर की गुठली की भीतरी मींगी जल मे घोटकर पीने से भस्मक रोग जाता रहता है।

(२) गूलर की छाल स्त्री के दूध में पीसकर पीने से भस्मक नाश होता है।

(३) सफेद चाँवल और सफेद कमल को पीसकर,बकरी के दूध म खीर बनाकर और उस में घी मिलाकर, १० दिन तक खाने से भस्म रोग जाता रहता है।

(४) चिरचिरे या ओंग के बीजों को दूध मे डालकर खीर बनाने और खाने से घोर भस्मक नाश होता है। परीक्षित है।

प्र० (३१) बारम्बार अजीर्ण होने पर भी,रोगी को थोड़ा-थोड़ा भोजन करनेकी आज्ञा शास्त्र में क्यों है ?

उ०—इस खयाल से कि,भोजन न मिलनेसे जठराग्नि कहीं रस को पचाकर शान्त न हो जाय अर्थात् फिर अन्न पचाने में असमर्थ होकर शरीर का नाश न कर दे।

अजीर्ण नाशक नक़शा ।



किस चीज़के अजीर्ण में	क्या हितकारी है ?
कटहरके अजीर्ण में	केले की फली हितकारी है ।
केले ,,	घी खाना
घी ,,	जँभीरी नीबूका रस
नारियल ,,	चाँवल
आम ,,	दूध
चिरौंजी ,,	हरड़
महुए ,,	नीमकी निबौली घोट कर पीना
बेल ,,	,, ,,
खिरनी ,,	,, ,,
फालसे ,,	,, ,,
खजूर ,,	,, ,,
कैंथ ,,	,, ,,
घी ,,	नीमकी निबौलियों का रस
माठा ,,	,, ,,
खजूर ,,	सोंठ और नागरमोथा
सिंघाड़े ,,	,, ,,
गूलर ,,	सोंठ का बासी काढ़ा
पीपल ,,	,, ,,
पाखर ,,	,, ,,
चाँवल ,,	दूध पीना
दूध ,,	अजवायन
चाँवलों ,,	अजवायन और पीपल घोटकर पीना

किस चीज़के अजीर्ण में	क्या हितकारा है ?
साँठी चाँवलों के अजीर्ण में	दही का पानी हितकारी है।
ककडियों "	गेहूँ "
गेहूँ "	धतूरा "
चने "	" "
उडद "	" "
मटर "	" "
काँगनी "	मोथ का काढा "
समा "	" "
खजूर "	" "
कमल नाल "	" "
कसेरु "	" "
मिश्री "	" "
सिघाडे "	" "
महुआ "	" "
काँगनी "	दही का तोड पीना "
समा "	" "
कुल्थी "	" "
दालवाली वस्तु	काँजी "
पिट्ठी के पदार्थ	शीतल जल "
खिचडी	सेंधा नोन "
खीर	मूँगका यूष "
बडे के अजीर्ण में	बेसवार यानी तैलादि चिकने पदार्थ, हल्दी, हींग, लौंग, मिर्च, इलायची, जीरा, धनिया, अदरख, सोंठ, खटाई और सेंधानोन ये सब

किस चीजके अजीर्ण में	क्या हितकारी है ?
	वेसवार कहलाते हैं। इन के डालने से पदार्थों में जायका बढ़ जाता है।
फेनी ”	लौंग
पापड ”	सहँजने के बीज
लड्डू ”	पीपरामूल
मालपूए ”	”
पूरी ”	माँड
मछली ”	काँजी
केवल आग से पकी मछली	मास खाना
मछली	कच्चा आम
कछुए के मास	जवाखार
कबूतर के मास	कास की जड
तीतर के मांस	”
नीलकण्ठ के मास	”
वथुआ	खैरसार का काढा
सरसों	” ”
पालक	सफेद सरसों का साग खाना
करेला	”
बैंगन	”
मूली	”
पोई	”
लौकी	”
चौलाई	”
परवल	”
गुड़	जमीकन्द

किस चीजके अजीर्ण में	क्या हितकारी है ?
आलू	चाँवलों का धोवन पीना
नमक	" "
घी	जँभीरी नीबू या काली मिर्च
तेल	काँजी
दूध	माठा
गाय के घी	गरम माँड
भैंस के दूध	सेंधानोन
भैंस के दही	शख चूर्ण
गन्ने	सोंठ, मिर्च, पीपर
खाँड	सोंठ का चूर्ण
चीनी	सोंठ और मोथा
ईख के रस	अदरख का रस
शराब	गेरू और चन्दन घोट कर पीना
शीतल वस्तु	गरम वस्तु
गरम पदार्थ	शीतल पदार्थ
नमकीन पदार्थ	खटाई
पानी के अजीर्ण	सोने या चाँदी को सात चार आग में तपा कर उन्ही से बुझाया जल पीना हितकारी है।
गरम पानी के अजीर्णमे	शहत और नागरमोथा



विशूचिका-वर्णन ।

(हैज़ा)

इस चराचर जगत्का स्वामी नितनयी सृष्टिका रचना करता और नित्यको नित्य ही उसका संहार भी करता रहता है। उसके सारे काम बाजीगर की तरह हैं, जो क्षण-भर में अनेक चीज़ें तैयार कर देता और फिर क्षण-भर में ही उन्हें गायब कर देता है। ईश्वर सृष्टि के शोभारूप मनुष्य को एक ओर बनाता और दूसरी ओर उसे क्षण-भर में ही नष्ट कर देता है। भगवान् की बात को भगवान् ही जाने, उसने इसमें क्या भलाई सोच रक्खी है। सच तो यह है, उसने मनुष्य की बनावट में ही उसकी मृत्यु का सामान छिपा रक्खा है। मनुष्य-शरीर में ही अनन्त रोग छिपे हुए हैं। जब तक वे प्रकट नहीं होते, तभी तक खैर है।

मनुष्य के प्राण नाश करने वाले रोगों में कितने ही तो ऐसे हैं, जो उसे घुला-घुला कर धीरे-धीरे मारते और कितने ही ऐसे हैं, जो क्षण-भर में ही उसको यमसदन पहुँचा देते हैं। आयुर्वेद-आचार्य्यों ने कहा है—

> कामप्राणहरा रोगा बहवो नतु ते तथा ।
> यथा श्वासश्च हिक्काच हरत प्राणमाशुवं ॥

यों तो मनुष्य के प्राण हरण करनेवाले सन्निपात प्रभृति अनेक रोग हैं, पर श्वास और हिचकी रोग जितनी जल्दी मनुष्य के प्राण हरण करते हैं, उतनी जल्दी ज्वरादिक नहीं करते।

इस में शक नहीं, दमा और हिचकी मनुष्य को बात करते-करते मार डालते हैं, पर हैज़ा भी उनसे कम नहीं। अनेकों बार आँखों से देखा है, कि मनुष्य किसी काम से घर के बाहर गया, राह में ज़रा जी घबराया, एक क़य हुई और वहीं प्राण त्याग दिये।

हम तो हैज़े को श्वास और हिचकी से भी बुरा समझते हैं। वे बेचारे तो किसी-किसी के ही प्राण नाश करते हैं, घर के घर, गाँव के गाँव और नगर के नगरों का सफाया नहीं करते, पर हैज़ा यदि कुटुम्ब में किसी एक को होता है,तो सारे कुटुम्ब की ख़बर लेता है। कुटुम्ब ही नहीं, सारे गाँव और नगर का सत्यानाश कर देता है। जिन घरों में बीस-बीस, तीस-तीस और पचास पचास आदमी होते हैं, उन घरों में सदा को ताले पड़ जाते हैं। कोई नाम-लेवा और पानी-देवा नहीं मिलता। इस तरह जब यह फैलता है, तब अच्छे अच्छे रौनकदार गुलज़ार शहरों और क़सबों को निर्जन जन-शून्य जङ्गल बना देता है। ऐसे भयङ्कर रोगको हमारे आयुर्वेद आचार्यों ने अजीर्ण के अन्तर्गत लिखा है। हमारी समझ में यह ठीक नहीं जँचता, कि ऐसे ज़बर्दस्त रोग का वर्णन अजीर्ण में ही कर दिया जाय, इसी से हम इसके निदान, लक्षण और चिकित्सा प्रभृति अलग लिखते हैं।

आयुर्वेदमें हैज़े का नाम "विशूचिका" लिखा है। हिकमत वाले इसे हैज़ा, बङ्गाली उलाउठा और अँगरेज़ कॉलेरा कहते हैं। विशूचिका रोगकी उत्पत्ति प्राय अजीर्ण से होती है। और यह है भी अजीर्ण का भयङ्कर रूप। अब यहाँ यह सवाल उठता है कि, यदि हैज़ा अजीर्ण की ही एक किस्म या उसका एक प्रकार है, तो उसको "विशूचिका" क्यों कहते हैं?

विशूचिका की निरुक्ति।



जिस रोग में, अजीर्ण की वजह से, बादी से, शरीर में सूई सी चुभें अथवा सूई चुभनेकी सी पीड़ा हो, उसे वैद्य लोग "विशूचिका" कहते हैं। संस्कृत ज़बान में सूई को "सूची" कहते हैं। सूची शब्द से ही "विशूचिका" शब्द बना है। सर्व साधारण में विशूचिका रोग "हैजे" के नाम से मशहूर है।

विशूचिका किन को होती है?

विशूचिका या हैज़ा अक्सर उन लोगों को होता है, जो पेटू और भोजनभट्ट होते हैं, जो खाने के लिये ही ज़िन्दगी को ज़िन्दगी समझते हैं और जो जानवरों की तरह ठूँस-ठूँस कर खाते हैं। आयुर्वेदमें लिखा है —

> अनात्मवन्तः पशुवद्भुञ्जते ये ऽप्रमाणतः ।
> रोगानीकस्यते मूलमजीर्णं प्राप्नुवन्तिहि ॥
> नतः परिमिताहारालभन्ते विदितागमाः ।
> मूढास्तामजितात्मानो लभन्तेऽशनलोलुपः ॥

जिन लोगों की इन्द्रियाँ उनके वश में नहीं हैं, जो जानवरों की तरह बे-प्रमाण—अनापशनाप, नाक तक ठूँस-ठूँस कर खाते हैं, पेट में हवा घूमने को भी जगह नहीं रखते, उनको अनेक रोग पैदा करनेवाला "अजीर्ण रोग" होता है।

जो परिमित भोजन करते हैं, जो एक परिमाण तक खाते हैं, जो वैद्य-विद्या की आज्ञानुसार चलते हैं,जो मिथ्या आहार विहार नहीं करते, उनको हरगिज़ विशूचिका—हैजा नहीं होता। लेकिन जो अज्ञानी और मूर्ख हैं, जिनकी इन्द्रियाँ वश में नहीं हैं, जिनकी जीभ क़ाबू में नहीं है,जो पेटू और भोजनके लालची हैं,उन्हें ही विशूचिका या हैजा होता है।

विशूचिका के औरभी कारण।

अनापशनाप बेतादाद खाना तो विशूचिकाका एक प्रधान कारण है ही, इसके सिवा विशूचिका के और भी नीचे लिखे कारण हैं —

बहुत जोर से गरम हवा या लू चलना, क़ायदे या नियम से अधिक वर्षा होना, हवा का रुकना या उसमें नमी होना, गन्दी हवा और मैला पानी, मनुष्यों की घनी बस्ती में रहना, अपनी सामर्थ्य से अधिक मिहनत करना, कभी किसी समय खाना तो कभी किसी समय, वक़्त-बे वक़्त भोजन करना, कभी कम खाना और कभी ज़ियादा, एक भोजन पचे बिना दूसरा भोजन कर लेना, रात के समय नियम से अधिक जागना, बासी कूसी खा लेना, गरमी के मौसम के सिवा और मौसमों में दिन में सोना, नशा करना, भयभीत रहना और शोक या रंज करना, गरम जगह से एकाएकी शीतल स्थान में प्रवेश करना, गरम देह या पसीनों में कहीं से चले आकर फौरन ठण्डा पानी पी लेना, रात के समय औरभी ज़ियादा खा लेना, मकान को गन्दा रखना, गन्दे आदमियों के पड़ोस में रहना, दूसरों को हैज़ा होते या हैजे से मरते देख कर डरना और घबराना एवं हैजेके समय में तेज दस्तावर दवा या जुलाब लेना इत्यादि विशूचिका या हैजे के कारण हैं।

जिसे असमय में अपने प्राण न गँवाने हों, जिसे अकाल मृत्यु से न मरना हो, जिसे दुर्लभ मनुष्य-योनि से कोई अच्छा काम करना हो, उसे इन सब कारणों से अवश्य बचना चाहिये। इन कारणों से बचने वालों को हैज़ा नहीं होता। जब हिन्दुस्तानी हैजे से २० फी सदी मरते हैं, तब अङ्गरेज कोई १ फी सदी मरते हैं। इसकी क्या वजह ? वजह यही है, कि अँगरेज़ क़ायदे से चलते हैं। वे अपने मकानोंको साफ़-सुथरे रखते हैं, औटाया हुआ या फिल्टर से साफ़ किया हुआ जल पीते हैं, सदा समय पर भोजन करते और समय पर

सोते-जागते हैं, एक खाना बिना पचे दूसरा खाना नहीं खाते, भारी से भारी हानि होने पर भी शोच फिक्र नहीं करते, मस्त रहते हैं, हमारी तरह बल से अधिक परिश्रम नहीं करते, डट कर ५।७ घण्टे काम करते हैं, तो कुछ समय मनोरञ्जनमें भी खर्च करते हैं। अङ्गरेज़ हो चाहे हिन्दुस्तानी—इस तरह नियम पर चलने वाले को ख्वाब में भी हैज़ा नहीं होता।

विशूचिका के सामान्य लक्षण।

विशूचिका या हैज़े के साधारण लक्षण दस्त और क़य होना है। दस्त और क़य होते ही साधारण लोग भी समझ लेते हैं, कि हैज़ा हुआ। पर अतिसार आदिके दस्तों और हैज़ेके दस्तोंमें जो भेद है, उसपर अवश्य ध्यान रखना चाहिये, अन्यथा भूल होनेकी सम्भावना है। हैजेमें पहले पहल तो एक दो दस्त और क़य उदरामय रोग के से होते हैं, लेकिन, पीछे दस्त पानी की तरह या चाँवलों के माँड की तरह होते हैं और वमन या क़यमें पानी ही पानी निकलता है और पेशाब बन्द हो जाता है। यह हैज़े की मोटी पहचान है।

वैद्यक शास्त्र से

विशूचिका के लक्षण।

मूर्च्छा, पतले दस्त, क़य, प्यास, शूल, भ्रम, जाँघों में पीड़ा, जँभाई, दाह, देह का रङ्ग और का और हो जाना, शरीर में कँपकँपी आना, हृदय या छातीमें दर्द और मस्तकमें वेदना—ये लक्षण विशूचिका रोग में होते हैं। इसी को साधारण लोग "हैज़ा" या "मरी" अथवा "महामारी" कहते हैं।



हैजेके
आज-कल नज़र आने वाले लक्षण।

ऊपर विशूचिकाके जो लक्षण लिखे हैं, वे सम्पूर्ण नहीं अपूर्ण हैं। ये मुख्य-मुख्य लक्षण हैं। इन के सिवा, और भी लक्षण होते हैं। ऊपर के लक्षणोंमें पेशाब बन्द होनेकी बात नहीं कही है, पर पेशाब बन्द हो जाना, हैजेकी एक खास पहचान है। इसी तरह और भी बहुत से लक्षण खुलासा नहीं कहे हैं। अतः यहां हम आजकल नज़र आने वाले सभी लक्षण विस्तार से लिखते हैं। इन से हैजे के पहचानने में बड़ी भारी मदद मिलेगी, धोखा हरगिज़ नहीं होगा। हैजे का रोग क्रम क्रम-से बढ़ता है, चाहे रोगी घण्टे दो घण्टों में मर जाय और चाहे एक दिन या दो चार दिनों में। इसलिये, डाक्टरोंकी तरह, हम भी इस को तीन दर्जों में तकसीम करते हैं—

प्रथम अवस्था। हैजेकी पहली अवस्थामें या रोगके उठते ही, रोगी का जी मिचलाता और घबराता है, फिर बारम्बार पतले दस्त और वमन होने लगती है। आरम्भ के दो एक दस्त मल सहित होते हैं और वमन में खाया-पीया निकलता है। इस के बाद पानी की तरह वमन और चांवल के मांड की तरह सफेद-सफेद पतले पानी से दस्त होते हैं। कभी-कभी लाल दस्त भी होते देखा जाता है।

दूसरी अवस्था। चन्द दस्त और वमन होनेके बाद, पेटमें दर्द होता, जीभ में कांटे पड़ जाते, प्यास का जोर बढ़ता, पेशाब बन्द हो जाता, नाड़ी की गति—चाल मन्दी होने लगती और कुछ-कुछ बेहोशी होने लगती है।

तीसरी अवस्था। यह अवस्था ही अन्तिम अवस्था है। हैजेमें क्रम-क्रम से एक पर एक लक्षण नज़र आने लगते हैं। इस अवस्था में रोगी बेहोश हो जाता है, संज्ञा नाश हो जाती है, धोती खुली पड़ी

रहती है, आदमियोंको नहीं पहचानता, हाथ पैर शीतल हो जाते हैं, आँखें बैठ जाती या खड्डों में घुस जाती हैं, होठ नीले हो जाते हैं, नाखून स्याह या नीले हो जाते हैं, नाक ऊँची हो जाती है, तशन्नुज या बाइँटे आने लगते हैं, हाथ-पैर ऐंठने लगते हैं, अँगुलियों के पोरवे सूख जाते हैं, हिचकियाँ चलने लगती हैं, पेशाब एकदम नहीं उतरता, प्यास बेतहाशा बढ़ जाती है, रोगी जलके गिलासको मुँह से लगाये रहना चाहता है, बिना जल मछली की तरह तड़फता है, तान-तान बकाता या प्रलाप करता है, आवाज बैठ जाती है, किसी तरह कल नहीं पड़ती, बेचैनी अत्यन्त बढ़ जाती है, सिर घूमता है, चक्कर आते हैं, भीतर-ही-भीतर शरीर और कलेजा जला जाता है, सिर में भयानक वेदना होती है, तरह-तरह के मिथ्या रूप दीखते हैं, कानों में नाना प्रकार की आवाज़ें सुनाई देती हैं, दाँत बाहर निकल आते हैं, ज्वर होता है, शीताङ्ग हो जाता है तथा शरीर खासकर हाथ पैर जीभ और साँस—ये ठण्डे हो जाते हैं ।

नोट—हमने कई बार देखा है, कि हैजे के अन्तमें ज्वर चढ़ आता है, उस के बाद शीताङ्ग हो जाता है और थोड़ी देर बाद रोगी चल बसता है। अन्त समयमें, बेहोशी से बेहोश रोगी को होश हो जाता है। चाहे वह होश एकाध मिनट ही रहता है।

विशूचिका के उपद्रव ।



बङ्गसेन महोदय लिखते हैं,—नींद न आना, बेकली, कँपकँपी, पेशाब का रुकना या होते समय अत्यन्त वेदना होना और सज्ञा नाश या बेहोशी—ये विशूचिका के उपद्रव हैं।

भावमिश्रजी लिखते हैं— ये पाँचो उपद्रव सभी रोगों से भयङ्कर हैं, लेकिन यदि विशूचिका में हों, तो औरभी भयङ्कर हैं। भयङ्कर यथा—निश्चय ही प्राणनाशक हैं।

दोषानुसार विशूचिका के लक्षण ।

अगर वायु की अधिकता होती है, तो दस्त और क़य कम होते हैं, किन्तु वायु-कोपके लक्षण होते हैं । जैसे शरीर में दर्द,पेटमें शूल, नसों का सुकड़ना और बाइँटे आना, मुँह सूखना, भौंर आना और बेहोशी प्रभृति ।

अगर पित्त की अधिकता होती है,तो दस्त बहुत होते हैं, प्यास बहुत लगती है—क्षण-भर भी जल बिना नहीं सरता, बेहोशी होती है, रोगी बकवाद करता है, भीतर घोर जलन होती है और ज्वर चढ़ आता है ।

अगर कफ की अधिकता होती है, तो क़य ज़ियादा होती हैं, शरीर भारी रहता है, सुस्ती छा जाती है, भोजन से अरुचि होती है और जाड़ा देकर ज्वर चढ़ता है ।

नोट—वायु का कोप होने से दस्त और क़य कम होते हैं, पित्त के प्रकोप से दस्त ज़ियादा होते और कफ के कोप से क़य ज़ियादा होती है।

असाध्य विशूचिका के लक्षण ।

रोगी को बाइँटे जोर से और जल्दी-जल्दी आते हों शरीरमें बल एकदम न रहा हो, भीतर से शरीर जला जाता हो और ऊपर से ठण्ढ लगती हो, बेचैनी के मारे रोगी घबराता और सिर को इधर-उधर फिराता हो, पेशाब न होता हो, साँस रुक-रुक कर आता हो, प्यास के मारे गले में काँटे पड़ गये हों, गले में कफ घर-घर करता हो, हिचकियाँ आती हों,नाड़ी रुक-रुक कर चलती हो , हाथ पैर, जीभ और साँस शीतल हो गये हों , रोगी आनतान बकता हो, उसे होश न हो—अगर ये लक्षण हों, तो रोगी के बचने की उम्मीद

न समझनी चाहिये। ये सब प्राणान्त होने के चिह्न हैं। इस अवस्था से शायद ही कोई भाग्यवान् बचता है।

अगर उपरोक्त लक्षणों के सिवा—रोगी के नाख़ून, दाँत और होठ नीले या काले हो गये हों, आँखें भीतर घुस गई हों, होश ज़रा भी न हो, हाथ पैरों के जोड़ ढीले पड़ गये हों, रोगी अपने पैरों पर खड़ा भी न हो सकता हो—तो समझना चाहिये कि, रोगी हरगिज़ नहीं बचेगा। अगर कोई बच जाय, तो समझो कि उसने फिर से नया जन्म लिया है।

साध्य विशूचिका के लक्षण।



अगर रोगी को वमन कम होने लगें या बन्द हो जायँ, पित्त-मिला मल आवे, पेट का दर्द मिट जाय, प्यास कम हो जाय, शरीर गरम बना रहे या पहले से गरमी बढ़ती आवे *, चेहरे की रङ्गत सुधर जाय, साँस ठीक चलने लगे, थोड़ी नींद आने लगे और तीन दिन चार दिन निकल जायें, तो समझो रोगी अवश्य बच जायगा।

नोट—बहुतसे रोगी इस अवस्था में आने पर भी, परिचार की या घरके लोगों की बेवकूफी से, अपथ्य सेवन करने से, आराम हो जाने की पूर्णाया हो जाने पर भी, मर गये, इसलिये इस रोग में खूब सावधानी और चतुराई से काम लेना चाहिये।

विशूचिका के आक्रमण का समय।



हैज़ा बहुधा पिछली रात को—रात के दो तीन बजे—मनुष्य पर आक्रमण करता है। कोई-कोई वैद्य कहते हैं कि, इस का हमला

* हैजेमें शरीर का ताप बहुत कम हो जाता है। थरमामीटर लगानेसे ९६ डिग्री तक ताप पाया जाता है। किसी-किसी की छाती और पेशानी पर, मरनेसे पहले, कुछ अधिक ताप देखा जाता है।

सवेरे और रात को होता है। हमने २।३ या ४ बजे रात को इसका आरम्भ होते देखा है। सवेरे तो इस बातका अच्छी तरह निर्णय हो जाता है, कि हैज़ा हुआ। रातके २।३ बजे हकीम वैद्य और डाक्टरों का मिलना और आना कठिन होता है, इसलिये बहुत से रोगी सुचिकित्सक—अच्छे वैद्य और अच्छी दवाके अभावसे बे मौत मरते हैं। सवेरा होते-होते, रोग अपना विकराल रूप धारण कर लेता है। उस समय दवा काम नहीं करती।

विशूचिका की अवधि।



हैज़े की कोई अवधि या मियाद नहीं। कोई घण्टे दो घण्टे में और कोई ३।४ घण्टे में मर जाता है। कोई १५।१६ घण्टे में और कोई दो तीन दिनों में मर जाता है।

जीर्णाहार के लक्षण।

उद्गार शुद्धिरुत्साहो वेगोत्सर्गों यथोचितः।
लघुता क्षुत्पिपासा च जीर्णाहारस्य लक्षणम्॥

शुद्ध डकार आना, उत्साह होना, मल मूत्र आदि वेगों का यथोचित रूपसे प्रवर्त्तन, शरीर हल्का होना और भूख प्यास लगना,—ये "जीर्णाहार" के लक्षण हैं।



एलोपैथिक डाक्टरी से हैज़े के कारण और लक्षण।

बहुत मिहनत करने, गन्दी जगह में रहने, मैलोः खराब और

सडो-बुसी चीज़ें खाने और अच्छी तरह नींद न आने की वजह से अक्सर हैज़ा हो जाता है।

और भी लिखा है।

(१) घर मैला रखना, (२) मनुष्यों की भीड में बैठना, (३) गरिष्ट या भारी तथा बासी पदार्थ खाना, (४) बासी दूध बासी रबडी, बासी खोआ, खट्टा दही, बासी मास, बदबूदार घी खाना, (५) कच्चे और सडे फल खाना, (६) ककडी खरबूज़ा, आडू, कोयला-कुम्हडा और टिंडसी खाना हैज़े के कारण हैं।

हैज़े की चार अवस्थायें।



डाक्टरों ने हैज़े की चार अवस्थायें मानी हैं :—

(१) आक्रमण अवस्था।

(२) वर्द्धमान अवस्था।

(३) पतन अवस्था।

(४) प्रतिक्रिया अवस्था।

(१) आक्रमण अवस्था।

हैज़े के आक्रमण या हमले करने की हालत में शरीर शिथिल हो जाता है, पेट भारी मालूम होता है, मुख मलीन हो जाता है, जी घबराता है, सिर घूमता है, कानो में भन-भन-भन-भन आवाज़ होती है, दस्त और कय होते हैं, पानी के समान कुछ मल-मिश्रित बदमैले से दस्त होते हैं और शरीर कमज़ोर हो जाता है।

(२) वर्द्धमान अवस्था।

हैज़े के दूसरे दर्जे या रोग बढने की अवस्थामें, पहले पतले दस्त

होते हैं और पीछे कय होती हैं। पहले पतले दस्त में कुछ मल मिला रहता है। इसके बाद बिल्कुल पानी के समान पतला और मिकदार में बहुत सा दस्त होता है। कभी-कभी झागदार दस्त भी होते हैं। पेट में कांटा चुभने की सी पीड़ा होती है। दस्त में, कुछ देर बाद देखने से, अन्न के छोटे-छोटे टुकड़े दीखते हैं।

(३) पतन अवस्था।

इस तीसरी अवस्था को पतन अवस्था इसलिये कहते हैं, कि इस अवस्था में रोगी का पतन हो जाता है, वह मुर्दे की तरह गिर पड़ता और मुर्दे-जैसा ही दीखने लगता है, उस में उठने की सामर्थ्य नहीं रहती, बीच-बीचमें कपड़ों को फेंकता, शीतल जल और शीतल हवा की इच्छा करता है, कभी-कभी तकलीफों को न सह सकने के कारण चीख उठता है, उसे साँस लेने-छोड़नेमें कष्ट मालूम होता है, मुख सुकड़ कर फीका सा हो जाता है, आँखें आँखों के खड्डों में घुस जाती हैं,नीचेके पलक नहीं चलते, माथे या पेशानी पर कुछ पसीना चमचमाता है,कभी-कभी सारे शरीरमें पसीना आ जाता है। रोगी आदमियोंसे बे-परवाही से बातें करता है। हैज़ेवाले रोगी का ज्ञान मरण समय तक नष्ट नहीं होता। इस अवस्था में कय और दस्त बन्द हो जाते हैं। अनजान या अनाड़ी समझ लेते हैं कि, रोगी बच जायगा, पर इस अवस्था में दस्त और कय बन्द हो जाने पर भी, रोगी मर जाता है। थरमामीटर से जाँच करने पर ९० से ९६ डिग्री तक ताप या गरमी पाई जाती है।

नोट—एक यूरोपियन डाक्टर कहते हैं—हैजा शुरु होते ही पहले पतला दस्त बिना किसी तरह के कष्ट के होता है। आरम्भ में मल विकृत रंग का उतरता है, परन्तु पीछे चाँवल के धोवन-जैसा उतरता है। इसके बाद शीघ्र ही वमन—कय और ऐंठन जारी हो जाती है। अन्त में पेशाब बन्द होकर रोगी मर जाता है।

बिना घबराया जाता हो, तो घूँट-घूँट जल दिलाना चाहिये। इस रोग में कोई ऐसा जल दवाओं से बनवा देना चाहिये, जिसे रोगी पीता रहे और उस से उस की प्यास हर क्षण कम होती रहे। डाक्टरी की एक पुस्तक में सेर का छटाँक रहा जल देने की बात लिखी है। इस रोग की अच्छी दवा आज-कल "अर्क कपूर" मानी जाती है। अर्क कपूरसे बहुतसे रोगी बचते भी हैं, पर अर्क कपूर १०० में ८० रोगियोंको आराम कर दे,यह हमने नहीं देखा। अर्क कपूर हैज़ेकी उत्तम औषधि है,पर इससे भी उत्तम औषधियाँ और हैं। हम अर्क कपूर और अन्य हैज़ा नाश करने वाली दवाओं के बनाने और सेवन करने की विधि आगे लिखेंगे। हाँ, असल बात कहना तो भूल ही गये, वह बात यह है कि, अर्क कपूर जिसे भी दिया जाय, उसे एक घण्टे तक जल पीने को न देना चाहिये।

(८) रोगी के घर वालों को हैज़े के प्रकोप से बचने के उपाय बता दो, क्योंकि यह बीमारी एकसे दूसरेको फौरन होती है। अगर आप उन्हें हैज़े से बचने के उपाय न बतायेंगे, तो वे भी बीमार हो जायँगे और आपके रोगीकी सेवा-शुश्रूषा कौन करेगा ? उनसे कह दो कि,तुम "कपूर" को हर दम पास रखो,क्षण-भरको भी उसे मत छोडो, और सूँघते रहो। घरमें लोबान या गन्धककी धूनी दो। ककडी खर-बूज़े,झाड़ू,कोयला और ढेरहस घरमें भी न लाओ। भीड-भाड और गरमी में न बैठो, हैज़ेसे डरो मत,बासी पदार्थ भूलकर भी न खाओ। हींग, पोदीना, कालीमिर्च या पिपरमिण्ट को रोज़ खाओ। दो चार बूँद "सुधाधारा" भोजन के बाद खाओ। पीने का पानी उबाल कर छान लो और कोरी हाँडी में भर दो। उस में एक बूँद सुधाधारा टपका दो। अगर भाँग पीने की आदत हो, तो २।४ रत्ती धुली भाँग, सौंफ, कासनी, गुलाब के फूल, कालीमिर्च, इलायची, खीरे ककडी के छिले बीज और पोस्तके बीज सबको मिला कर सिल पर घोटो और पानीमें छान कर पीजाओ। परीक्षा करके देखा है कि, हैज़े के मौसम में

बहुत ही कम,रत्ती दो रत्ती,भाँग ऊपर लिखा मसाला डाल कर पीने वाले को हैज़ा नहीं होता। पर अधिक भाँग पीने वाले को रोग का भय है।

(१०) अगर रोगी का रोग बढता ही जाय, तो आम रोग से बढी हुई विशूचिका में दोनों पैरों की एडियों को दाग देना अच्छा है। "वैद्यविनोद" में लिखा है —

अथालसे वान्तिरति प्रशस्ता विशूचिकाया किल पार्ष्णिदाह।
उपोषणं सैंधवकुष्टचर्कैस्तैलान्वितैर्मर्दनमत्र शस्तम्॥

अलसक रोगमें वमन कराना और विशूचिकामें लोहेकी शलाका से पीठ अथवा पाँव के तलवों में दाह देना या दागना, लङ्घन कराना एवं कूट, सेंधानोन और तेल की मालिश कराना अच्छा है।

बङ्गसेन जी कहते हैं —

विशूच्यामतिवृद्धायां पार्ष्ण्योर्दहनमिष्यते।
तद्दिने लङ्घनं कार्यं विरेकवदुपाचरेत्॥

बहुत बढी विशूचिका में आग से एडी में दाग देना तथा लङ्घन और विरेचन—जुलाब—कराना चाहिये।

(११) अजीर्ण की हालत में पेट में तेज़ी से दर्द होने पर भी, वैद्य को शूल या दर्द नाशक औषधियाँ न देनी चाहिये, क्योंकि जब अग्नि दोषोंसे ढक जाता है, तब वह दोष-नाशक औषधियोंके पचाने की सामर्थ्य नहीं रखता।

(१२) जिस समय रोग तेज़ी पर हो, रोगीको उपवास या लङ्घन कराओ। उसे कुछ भी खाने को देना और जान-बूझ कर मारना एक ही बात है, क्योंकि कुपथ्यसे रोग फिर हमला करता है और फिर आराम होना असम्भव होजाता है। जब रोग कम हो जाय,रोगीको भूख लगे, तब पानीमें पकाया साबूदाना, अरारूट अथवा अतिसारमें कही यवागू देनी चाहिये। जब बिलकुलही आराम हो जाय, रोगके चिह्न कतई न-रहें, रोगी "भूखा मरा, भूखा मरा" चिल्लाय तब पुराने चाँवलोंका माँड

देना चाहिये। जब रोगी में पचाने की शक्ति हो जाय, तब पुराने चाँवलों का भात, परवल का साग और मिश्री देनी चाहिये। पूरा बल आजाने पर,५।६ दिन बाद, गरम जल से स्नान कराना चाहिये। जब तक पूरी ताक़त न आ जाय, तब तक घी या घी में पके पदार्थ तथा भुने और सिके पदार्थ न देने चाहिएँ। पूर्ण आरोग्य लाभ किये बिना, रोगीको स्नान और मैथुनसे दूर रखना चाहिये तथा धूपमें न फिरने देना चाहिये। मिहनत या दौड़-धूप की भी मनाही कर देनी चाहिये। क्योंकि हैज़ेका मुख्य कारण अजीर्ण है, अतः रोगी को फिर अजीर्ण होने से बचाना चाहिये।

(१३) हैज़े की दवाएँ बहुधा तेज़ होती हैं,अत रोगीकी उम्र, बलाबल,प्रकृतिऔर कालप्रभृतिका विचार करके औषधि और मात्रा तजवीज करनी चाहिये। ऐसा न हो, कि उल्टे लेनेके देने पड़ जायें। अगर रोग के बल से कम मात्रा दी जायगी, तो रोग दबेगा नहीं उल्टा बढ़ेगा। अगर बे-समझे-बूझे अधिक मात्रा दी जायगी, तो कोई नया उपद्रव खड़ा होकर, हैज़े से न मरता रोगी भी आप की भूलसे मर जायगा।

(१४) लिख आये हैं कि,वायु की विशूचिका में दस्त और क़य ज़ियादा होते हैं। हकीम लोग कहते हैं, पित्त या गरमी की वजह से हुए हैज़ेमें हरी-हरी क़य होती है। उस दशामें गरम दवा न देनी चाहिये। हैज़ेकी चिकित्सा में दोषों के प्रकोप या अधिकताका निश्चय करके चिकित्सा करनी चाहिये।

(१५) अगर डकारें शुद्ध आती हों, शरीर और चित्त में उत्साह हो,भोजन के अनुसार ठीक पाख़ाना पेशाब होते हों, शरीर हल्का हो, भूख और प्यास लगती हों—तो समझ लो कि रोगी को आहार पच गया। ये ही जीर्णाहार के लक्षण हैं। वैद्य को रोगी की सब हालतों की ठीक परीक्षा करनी चाहिये और इन बातों का विचार करके ही खान-पान और स्नान प्रभृति की व्यवस्था करनी चाहिये।

(१६) वङ्गसेन कहते हैं, सर्व लक्षणों वाली विशूचिकामें नमक और गरम जल के द्वारा वमन करानी चाहिये।

नोट—शहद में नमक और गरम जल मिलाकर पिलाने से भी वमन हो जाती है। दो तोला शहद और दो तोला साभरनोन, आधसेर गरम पानीमें मिला कर पिला देनेसे वमन हो जाती है। इस योगसे अपने-आपही वमन हो जाती है। अगर न हो, तो गले में अङ्गुली डालने से हो जायगी।

"इलाजुल गुर्बा" के लेखक महाशय भी लिखते हैं, कि जो भोजन कोठे में उपद्रवकारक हो जाय, उसे क़य और दस्तोंके द्वारा निकाल देना चाहिये और जब तक दूषित अन्न निकल न जाय, क़य और दस्त बन्द न करने चाहिये।

चरकाचार्य्यने भी विशूचिकामें "दशमूलके काढ़ेमें" अरण्डीका तेल और चूने का पानी मिलाकर हैज़े वाले को देने की आज्ञा दी है। यह आज्ञा इसीलिये दी है, कि ज़हरीला माद्दा निश्चय ही निकल जाय।

वङ्गसेन लिखते हैं, जब तक मनुष्योंके हृदयोंमें दुष्ट अन्न—ख़राब या रोगकारक अन्न का रस रहता है, तब तक, मर्म-स्थानों में ज़हर पीने के समान पीड़ा होती रहती है।

आप कहते हैं, बहुत ही बढ़ी हुई विशूचिका में अग्नि के द्वारा एड़ी में दाग देना चाहिये और लङ्घन तथा विरेचन कराने चाहियें, यानी उपवास कराना और जुलाब देना चाहिये।

(१७) शीतल या कच्चा जल हैज़ेवाले को भूलकर भी मत पिलाओ। औटाया हुआ जल रोगी जब माँगे तभी दो, लेकिन अगर क़य बहुत होती हो, तो पानी बहुत ही थोड़ा-थोड़ा कोई एक-एक रुपये भर दो।

नोट—हैज़ा फैलने पर जलकी सफाई पर ज़ियादा ध्यान देना चाहिये। जल को ख़ूब उबालना चाहिये। ख़ाली गरम करने से कोई लाभ नहीं। रोगी को तो गरम जल देना ही चाहिये, पर रोगी के सिवाय अन्य लोगों को भी ख़ूब गरम किया हुआ जल पीना चाहिये।

विशूचिकानाशक नुसख़े ।

अर्क कपूर ।

१ रेक्टीफाइड स्पिरिट एलोपैथिक न० ९० Rectified Spirit Allopathic No 90 } २४ औन्स

२ कैम्फ (कपूर) ५ औन्स

३ आयल मिन्थ पिपरेटा [Oil Menth Pepp] २ औन्स

पहले कपूर के छोटे-छोटे टुकड़े करो और उन्हें स्पिरिट की बोतल में डाल दो। कपूर को स्पिरिट की बोतल में डालने से पहले, स्पिरिट को दो बोतलों में कर लो और दोनों बोतलों में आधा-आधा कपूर डाल दो। पीछे बोतलों को काग से बन्द करके खूब हिलाओ। जब कपूर गलकर एक-दिल हो जाय, तब उसमें न० ३ आयल मिन्थल पिपरेटा यानी पिपरमिण्ट का तैल मिला दो। पीछे दोनों बोतलों की दवा को एक में मिला लो। यही असली "अर्क कपूर" तैयार हो गया। आजकल जितने "अर्क कपूर" मिलते हैं, उन सब से यह अच्छा है। उनमें पिपरमिण्ट का तैल नहीं डाला जाता।

अगर व्यापार करना हो, तो छोटी-छोटी शीशियों में इसे भरकर लेबल लगादो। यह खूब सस्ता पड़ता है। इसके इस्तेमाल से हैज़ा, गरमी के दस्त, वमन, दाँतोंका दर्द, विषैले जानवरों का विष फौरन आराम होता है। हैज़े में तो यह अक्सीर का काम करता ही है।

हैज़ा शुरू होते ही रोगी को अर्क कपूर दो। भगवान चाहेगा और उसकी आयु होगी, तो निस्सन्देह आराम होगा।

जवान आदमी को, दस्त या क़य शुरू होते ही, १० बूँद अर्क कपूर, बताशे में छेद करके, उसी में टपका कर खिला दो। जब तक दस्त और क़य बन्द न हों, तब तक घण्टे-घण्टे दो दो घण्टे या

तीन-तीन घण्टे पर देते रहो। ज़रूरत होने से पाव-पाव घण्टे या आध-आध घण्टे में भी दे सकते हो। ज्यों-ज्यों रोग घटने लगे, दवा भी देर-देर से दो। १२।१४ साल के बालक को ४।५ बूँद दवा दो। बहुत छोटे बालक को २।३ बूँद दो। इसकी मात्रा २ से १० बूँद तक है। स्त्रियों को भी कम मात्रा देनी चाहिये।

गरमी के पतले दस्तों में भी यह दवा इसी तरह दी जाती है। रोग की कमी-वेशीके अनुसार मात्रा भी कम-ज़ियादा देनी चाहिये।

अगर दाँत या दाढ़ में दर्द हो, तो "अर्क कपूर" को रुईके फाहे में लगाकर दाँत या दाढ़ के नीचे रखकर मुँह नीचा कर दो, भयानक दन्त-पीड़ा भी ३।४ बार के इस्तेमालसे आराम हो जायगी।

अगर कोई ज़हरीला जानवर काट खाय, तो फौरन काटे हुए स्थान पर "अर्क कपूर" लगाओ। २।३ दफा के लगाने से बिल्कुल आराम हो जायगा।

"अर्क कपूर" खिलाकर, रोगी को कम-से कम आधा घण्टा जल मत पिलाओ, पीछे थोड़ा थोड़ा जल दे सकते हो।

सुधाधारा।

— ० —

(२) चार या पाँच तोले कपूर लाकर, केले की जड़के पानी में खरल करके सुखा लो। पीछे उसे अजवायन के अर्क में खरल करके सुखा लो। शेष में, उसमें से ६ माशे कपूर एक साफ शीशी में भर दो और ऊपर से ६ माशे अजवायन का सत्त और इतने ही पिपरमिण्टके फूल भी उसमें डाल दो। शेषमें काग लगाकर शीशीको रख दो। थोड़ी देर में तीनों चीज़ें गलकर पानी सा हो जायगा। इसमें से चार या पाँच बूँद अर्क पानी में मिला कर देने से पेटका दर्द, अजीर्ण, बद-हज़मी और हैज़ा निश्चय ही नाश हो जाते हैं। इसमें से चन्द बूँदें बिच्छू के डंक या ततैयेके डंक अथवा डाँस-मच्छरों के डंक पर मलने से आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—जो लोग इसे बेचना चाहे, वह इससे बहुतसा धन कमा सकते हैं। नाम चाहे सुधाधरा रखो, चाहे अमृतधारा अथवा पीयूष-बिन्दु अथवा सुधाबिन्दु। रामबाण है। कोई-कोई कपूर और अजवायन का फूल एक एक तोला और पिपरमिन्ट का सत्त २ माशे डालते हैं। कोई इसमें २ माशे लोबान भी डालते हैं। पर इस तरह हमने नहीं आजमाया। पाठक इस तरह भी परीक्षा कर देखें

✓ विशूचिकान्तक वटी।

(३) लहसन, सफेद ज़ीरा, सेंधानोन, शुद्ध गंधक, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और भुनी हींग,—इन आठों को कूट छान, खरलमें डाल, नीबूके रस से घोट, चने-समान गोलियाँ बनालो। इन गोलियों के सेवन से क्षण-भर में विशूचिका नाश हो जाती है। परीक्षित है।

रसिक-शिरोमणि लोलिम्बराज महोदय अपनी कान्ता से कहते हैं:—

लसुन जीरक सैंधव गंधक त्रिकुट रामठ चूर्ण मिद समम्।
सपदि निम्बुरसेन विशूचिका हरति भोरतिभोगविचक्षणे।

हे रतिभोग में चतुर स्त्री। लहसुन, जीरा, सेंधानमक, गंधक, सोंठ, मिर्च, पीपर और हींग,—इन आठों को बराबर-बराबर ले, कूट छान, नीबू के रस में गोली बना सेवन करने से तत्काल विशूचिका आराम हो जाती है। परीक्षित है।

मात्रा—जवान को एक बार में ४।५ गोली, कमज़ोर या बालक को अनुमान से कम। भोजन के बाद तीन चार गोली रोज़ खाने से कभी बदहजमी नहीं होती। गोली खाकर ऊपर से ताज़ा जल पीना चाहिये।

हैज़े में अगर रोग का ज़ोर बहुत हो हो, तो १५।१५ मिनट में जवान को दो दो या तीन तीन गोली देनी चाहिये। अगर रोग का उतना ज़ोर न हो, तो आध-आध घण्टे या घण्टे-घण्टे में देना उचित है। ये बातें वैद्य की बुद्धि पर निर्भर हैं। ध्यान रखो, ये गोलियां हैज़े में अकसीर का काम करती हैं।

नोट (१)—इन गोलियोंकी हमने अनेक बार परीक्षा की है। इस नुसखे की,हींग को छोड़कर, सातो चीजें दो दो तोले लेना और हींग १ तोले लेना। गंधक और लहसन को शोधकर और हींग को भूजकर डालना। खानेके नुसखे में कच्ची हींग डालने से कय आती और जी मिचलाता है। इन गोलियों को ७ दिन तक नीबू के रसमें घूटानेसे ये बडी ही मजेदार बन जाती है। गुणमें तो ये अव्वल दर्जे की हैंही।

नोट (२)—लहसनमें बुरी बदबू होती है,इसलिये लहसन को कूटकर माठामें भिगो दो और दिन-भर भीगने दो। रात को निकाल कर छाया में फैला दो। सवेरे फिर ताजी छाछमें उसे भिगो दो और रातको निकाल कर सुखादो। इस तरह सात दिन करने से लहसन शुद्ध हो जाता है, उसमें बदबू नहीं रहती।

हरिदास बटी।

(४) भुनी हींग, जवाखार,सज्जीखार,सेंधानोन, कालानोन, बिड-नोन,छोटीपीपर, पीपरामूल, चीता, कालीमिर्च, कचूर,धनिया, इमली, दूधियाबच, अजमोद, पोहकरमूल, सोंठ, करञ्जकी गिरी, स्याह-जीरा, हरड और पाठ— इन सब दवाओंको बराबर-बाराबर लेकर, कूट पीस कर छान लो और शेषमें हींग को भूँजकर मिलादो। इसके बाद सारे चूर्णको खरलमें डाल, कागजी नीबुओंके रससे घोटो। घुट जाने पर जङ्गली बेर की बराबर गोलियां बनालो।

इन गोलियों के सेवन से विसूचिका, पेट फूलना, अण्ड-वृद्धि, आमरोग, तिल्ली, वायुगोला, पेटका दर्द, हिचकी और मन्दाग्नि ये सब नाश होते है। इसके सिवा इन गोलियों का खानेवाला देश-परदेश में चाहे जहां फिरे, उसे रोज़ २।२ गोली खालेने से हैजा न होगा।

सेवन-विधि।

(१) हैजे में अर्क़ गुलाबके साथ लो, (२) कंठ और छाती की जलनमें गुलाब-जल के साथ, (३) अन्त्रवृद्धि, अफारा और आम रोग में सौंफ के अर्क के साथ, (४) तिल्ली, वायुगोला, हिचकी और उदर-

शूल में —गरम जल के साथ, (५) मन्दाग्नि में ताज़ा जल के साथ दिन में ३ या चार गोली खानी चाहियें।

नोट—ये गोली शास्त्रोक्त हैं। हमने १५। २० साल तक परीक्षा की है; इसी से इसका नाम "हरिदास वटी" रख दिया है। ये गोलियाँ अपने काममें कभी फेल नहीं होतीं। गृहस्थों को ये गोलियाँ अपने घर में अवश्य रखनी चाहियें। ये समय पर जान बचाती हैं। हैजे की पहली अवस्था में आध-आध घण्टे या पाव-पाव घण्टे में एक-एक गोली, असली अर्क गुलाब के साथ, देने से खूब लाभ होता है। सफर में सेवन करने वाले को कहीं का पानी नुकसान नहीं करता। हैजे की दूसरी तीसरी अवस्था में इनसे लाभ नहीं हुआ, पर यदि पहले से ही बराबर दी गईं, तो रोगी इनसे बच गये। अगर घर में और कोई दवा न हो, तो इनको देना ही अच्छा है।

वृहत शंख वटी।

(५) थूहरका खार ४ तोले, इमली का खार ४ तोले, आक का खार ४ तोले, चिरचिरे का खार ४ तोले, केले का खार ४ तोले, तिल का खार ४ तोले, ढाक का खार ४ तोले, पाँचों नोन २० तोले, जवाखार १६ माशे, सज्जी-खार १६ माशे, शुद्ध सुहागा १६ माशे,—इन पन्द्रह दवाओं का वज़न ५२ तोले हुआ। इनको कूट-पीस छान कर ६४ तोले नीबूके रस में डाल दो। इसके बाद ४ तोले भर शंखके टुकडे को, कोयलों की आग में सात बार तपा-तपा कर, इसी ऊपर लिखे नीबू के रस और चूर्ण के मसाले में बुझाओ, जिससे वह पतला हो जाय।

इसके बाद, सोंठ १२ तोले, काली मिर्च ८ तोले, पीपल ४ तोले, भुनी हींग २ तोले, पीपरामूल २ तोले, चीते की छाल २ तोले, अजवायन २ तोले, सफ़ेद ज़ीरा २ तोले, जायफल २ तोले, लौंग २ तोले, शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध वत्सनाभ १ तोले, भुना सुहागा १ तोले और शुद्ध मैनसिल १ तोले। कुल ४१ तोले दवाओंको अलग-अलग पीस-कूट छान लो। पहले गन्धक और पारे

को खरल करके कजली बना लेना। उसके बाद शेष ४१ तोले दवाओं को कज्जली में मिला लेना।

शेष में, इन ४२ दवाओं के तैयार मसाले को पहले नीबू के रस में भीगनेवाली शङ्ख प्रभृति दवाओं के रस में मिला दो और ऊपर से चूके का रस १६ तोले मिला दो और खूब घोटो। जब मसाला गोली बनाने के लायक़ हो जाय, उड़द के दाने-बराबर गोलियाँ बना कर और छाया में सुखा कर शीशी में रख दो। इन्हीं गोलियों को "बृहत् शङ्ख वटी" कहते हैं। इन गोलियों के सेवन करने से सब तरहके अजीर्ण, सब प्रकार के शूल, विशूचिका और अलसक आदि रोग नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

अग्निकुमार रस।

(६) भुना सुहागा १ तोला, शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, शुद्ध बच्छनाभ २ तोला, शुद्ध कौड़ी १ तोला, सज्जी १ तोला, पीपल १ तोला, सोंठ १ तोला और काली मिर्च ८ तोला— इन सब को एकत्र करके, १२ घण्टे नीबू के रस में, खरल करने से "अग्नि कुमार रस" तैयार होता है। यह रस विशूचिका, शूल और मन्दाग्नि तथा वायु प्रभृति को नष्ट करता है। "रसरत्नप्रदीप" और "रसेन्द्र चिन्तामणि" में यह विशूचिका और अजीर्ण पर लिखा है।

गरीबी नुसखे।

(७) चिरचिरे की जड़ जल में पीसकर पिलाने से शूल-समेत हैज़ा आराम होजाता है। परीक्षित है।

(८) बेल का गूदा, सोंठ और जायफल—इन तीन चीज़ों का काढ़ा पिलाने से हैज़ा आराम हो जाता है।

(९) दरियाई नारियल पानी में घिसकर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से

पित्त या गरमी की विशूचिका आराम होती है। यही दरियाई नारियल, एक जौ जितना, अर्क गुलाब में घोट कर, चटाने से दस्त और कय निश्चय ही बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०) गरमी की विशूचिका में इलायची के बीज, कासनी और धनियाँ चार-चार माशे और गुलकन्द गुलाब एक तोले—इनको घोट-छान कर पिलाने से फायदा होता है।

नोट—गरमी के हैजे में सिकञ्जबीन, शर्बत सेब और मुरब्बा बीह भी मुफीद है।

(११) अगर रोग सरदीसे हो, तो उत्तम हींग १ तोला, लालमिर्च १ तोला, उत्तम अफीम ६ माशे और कपूर ६ माशे,—इन चारोंको कूट पीस कर, थोड़ेसे पुराने गुड़ में मिला, चने-समान गोलियाँ बना लो। जवान आदमीको ६ से आठ गोली तक और बालकको चार गोली तक देनी चाहियें। अगर यह दवा कय से बाहर निकल जाय, तो फिर यही दवा दो। जब तक रोग आराम न हो जाय, आध-आध घण्टे पर देते रहो।

अनुपान—एक गोली खिलाकर, छटांक भर मिश्री के शर्बत में, १० बूँद नीबू के रस को डाल कर पिलाओ। आध-आध घण्टे पर एक-एक मात्रा दो और नीबू न मिले तो १ तोले सिकञ्जबीन में ५ तोले पानी मिलाकर गोली के साथ पिलाओ।

नोट—पेशाब खोलने, बाइँटे बन्द करने, प्यास रोकने और बदन की गरमी बढ़ाने प्रभृति के उपाय आगे एक ही जगह लिखे हैं। दवा खिलाते रहो और ये उपाय भी करते रहो।

(१२) मदारकी जड़की छाल २ तोला और अदरखका स्वरस २ तोला, दोनोंको खरलमें डाल कर घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना कर छायामें सुखालो। आध-आध घण्टे, घण्टे-घण्टे या दो-दो और तीन-तीन घण्टे पर, एक-एक गोली रोगी को निगला दो। ज़रूरत हो, तो एक घूँट जल से उतरवा दो। ये गोलियाँ रामवाण हैं। इन गोलियों से अनेक बार लोग मरते-मरते बच गये हैं। परीक्षित हैं।

नाट—मदार की जड़ की छाल एक तोले और काली मिर्च ३ माशे, दोनों को जलके साथ पीसकर मटर-समान गोलियाँ बनालो। इनके घण्टे-घण्टे या आध-आध घण्टे पर देने से ज्वर और हैज़ा नाश होते हैं।

(१३) सौंफ १ तोले, पोदीना ८ माशे, लौंग ४ दाने और गुल-कन्द २ तोले—इनको औटाकर पीने से हैज़ा आराम होता है।

(१४) चोबहयात पानीमें घिस कर पीनेसे हैज़ा नाश होता है।

(१५) नरकचूर का काढा पीने से हैज़ा नाश होता है।

(१६) छोटी इलायचीके छिलके १ तोले लेकर, दो तोले गुलाब-जलमें घोट कर पिला दो। अगर गुलाब-जल न हो, तो उन्हें आध सेर जल में औटाओ। जब आधा जल रह जाय, उतार कर छान लो और जब प्यास लगे, रोगी को थोड-थोडा पिलाओ। यह नुसखा हैज़े की प्यास को अवश्य शान्त करेगा। परीक्षित है।

(१७) ३ माशे पेठे के फूल ५ तोले पानीमें पीसकर हैज़ेवाले को पिलाने से हैज़ा आराम होता है। परीक्षित है।

(१८) दो माशे सरफोके की जड जल में पीसकर पीने से हैज़ा नाश होता है। परीक्षित है।

(१९) नील में रंगा नीला कपडा जलाकर, उसकी राख आदमी के पेशाब में मिलाकर पीने से हैज़ा आराम होता है।

नोट—जब हैज़े के आसार मालूम हों, मनुष्य को चाहिये, उसी समय अपना पेशाब पी जाय। जिस हालत में कोई दवा न हो सके, उसी हालत में यह उपाय उत्तम है।

(२०) खिरेंटी की जड ५ माशे, पानीमें घिस कर, पीनेसे हैज़ा आराम होता है।

(२१) लाल मिर्च का एक बीज "देशी मोम"में मिलाकर गोली बना लो। इस गोलीके निगल जानेसे हैज़े में अत्यन्त लाभ होता है।

(२२) पोदीने की ३० पत्ती, कालीमिर्च ३ दाने, कालानोन १ माशे, छोटी इलायची भुनी हुई २ दाने और इमली कच्ची या पक्की जैसी मिले १ माशे—सब को पानी के साथ महीन पीसकर चटनी

सी बना लो और हैज़ेवाले को चटाओ। इस चटनी के चाटने से पेट का दर्द, क़य और दस्त तथा प्यास—ये सब तत्काल आराम होंगी। अच्छा नुसखा है।

(२३) पपीता जलमें या गुलाब-जलमें घिस कर चटाने से हैज़ा नाश होता है।

(२४) तितली की पत्तियाँ ६ माशे लेकर दो तोले पानीमें घोट कर पीने से हैज़ा नाश होता है। परीक्षित है।

नोट—तितली का पेड़ गेहूँ के खेत मे होता है।

(२५) सफेद ज़ीरा १ तोला और जायफल १ तोला—दोनोंको सिल पर महीन पीस कर, आधसेर शीतल जल में घोल कर छान लो और रोगीको थोड़ा-थोड़ा ४।५ बार में पिलाओ। ज़रूरत हो तो फिर बना लो। इससे क़य और दस्त बन्द हो जायेंगे। हैज़े के आराम करने में यह नुसखा रामबाण है। हमने कितनी ही बार परीक्षा की है। शरीर की ऐंठन प्रभृति के लिये अन्य उपाय करते रहो।

(२६) तीन माशे बरियारे की जड़, दो तोले जल में घोटकर, पिलाने से हैज़ा आराम होता है।

(२७) हरे चिरचिरे की जड़ ३ माशे और कालीमिर्च ५ दाने—दोनों को पीसकर एक छटाँक जल में घोल लो। इतनी दवा को आध-आध घण्टे में चार बार पिलाओ। अगर आराम दीखे और ज़रूरत हो, तो फिर बनालो। परीक्षित है।

नोट—चिरचिरे को ओंगा और अपामार्ग भी कहते हैं। बगाली इसे अपाङ्ग कहते हैं

(२८) कपूर ४ रत्ती और सोंठका चूर्ण ३ माशे—इन दोनों को एकत्र करके १०।१५ मिनट तक खरल करो और इतनी दवा के आठ भाग कर लो। आध आध घण्टे या पाव-पाव घण्टे में एक-एक

खूराक खिलाने से हैज़े में बड़ा लाभ होता है। क़य और दस्त बन्द होने पर इसे मत दो। परीक्षित है।

(२९) दशमूल का काढ़ा बनाकर, उसमें पाँच तोले साफ़ अरण्डी का तेल और अढ़ाई तोले चूनेका पानी मिलाकर, रोगी को हैज़ेकी प्रथम अवस्था में, जब क़य का ज़ियादा ज़ोर न हो, एक या दो बार में पिला देने से हैज़े के ज़हरीले जीव बाहर निकल जाते हैं, और वायु शान्त हो जाती है। बड़ी अच्छी चीज़ है। "चरक" में लिखी है।

नोट—मदरास के सर्जन जनरल महोदयने एक पत्र में लिखा है कि, हैजे की उत्पत्ति एक प्रकार के कीड़े से होती है। यह कीड़ा खाने-पीने के पदार्थों के साथ पेट में चला जाता है, उसके जाते ही हैजा हो जाता है। इसलिये हैजे के मौसममें बासी या देरका पका हुआ पदार्थ हरगिज न खाना चाहिये। क्योंकि उसपर मक्खियाँ बैठ जाती हैं। हैजा एक प्रकार के कीड़े से होता है, यह बात युरोपियनों से हजारों बरस पहले हमारे यहाँ मालूम होगई थी, तभी तो चरक ने जहरीले कीड़ोंको निकाल देनेके लिये दशमूलके काढ़े में अरण्डीका तेल और चूनेका जल मिलाकर देने की राय दी है। यूनानी हकीमों ने भी ऐसी ही राय दी हैं।

(३०) अफ़ीम १ रत्ती, कपूर २ रत्ती, कालीमिर्च २ रत्ती, हींग २ रत्ती और सोंठ २ रत्ती—इन पाँचों को पीस कर, मूँग-समान गोलियाँ बना लो। दिन भर में १ से छै गोली तक देने से हैज़ा नाश हो जाता है।

(३१) सिरस की हरी पत्ती ३ माशे और कालीमिर्च १२ दाना—इन को १ छटाँक जल में पीस कर पीने से पेट का दर्द दूर होता है।

(३२) ३ माशे जावित्री दूधमें पीसकर पिलाने से हैज़ा आराम होता है। परीक्षित है।

(३३) जायफल, सेंधानोन, शुद्ध सिंगरफ़, शुद्ध कपर्दक भस्म, सोंठ, शुद्ध अफ़ीम, शुद्ध धतूरे के बीज और पीपर—इन आठों को बराबर-बराबर लेकर, पीस कूट कर खरल में डाल कर, नीबू के रस में, धतूरे के बीजों के रस में अथवा भाँग के काढ़े में घोट कर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो।

अनुपान—एक तोले छाछ में चने भर भुनी हींग और १ माशे सेंधानोन मिलाकर, उसी छाछ से एक-एक गोली लेने से हैज़ेके दस्त और क़य फ़ौरन बन्द होते हैं। परीक्षित है।

(३४) एक तोले अरहरके पत्ते १ छटांक शीतल जलमें पीसकर कपड़े में छान लो। इस नुसखे को घण्टे-घण्टे में पिलाने से हैज़ा आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(३५) नागरमोथा १ तोला, हींग ६ माशे, कपूर ६ माशे और पीपल ६ माशे—सब को पानी में पीस, चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लो। हैज़े के पहले दरजे में, एक-एक घण्टे में, एक-एक गोली देने से अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(३६) सूखी लाल मिर्च और सेंधानोन हांडीमें उबाल कर आध आध घण्टे में देने से हैज़ा आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३७) सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, जीरा, हींग, सेंधानोन, लहसन और शुद्ध गंधक—सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस लो। इस चूर्णको नीबूके रस साथ देनेसे विशूचिका नाश होती है। परीक्षित है।

(३८) दन्ती, चीतेकी छाल और पीपल को बराबर-बराबर लाकर, पानी में सिल पर पीसकर, भांग की सी लुगदी बना लो। यही "कल्क" है। इस लुगदी या कल्क को गरम जल के साथ सेवन करने से विशूचिका तत्काल नष्ट हो जाती है।

(३९) "अजीर्ण कण्टक रस" से भी विशूचिका आराम होजाती है। परीक्षित है। बनानेकी विधि अजीर्णके बयानमें देखिये।

(४०) करंज, नीम, चिरायता, गिलोय, अर्जुनकी छाल और कुड़े की छाल—इनको बराबर-बराबर चार-चार माशे लेकर काढ़ा बना लो और रोगी को पिला दो। इस काढ़े से वमन या क़य होकर घोर विशूचिका नष्ट होजाती है।

नोट—अगर वमन कराने की जरूरत पड़े, तो यह नुसखा देना अच्छा है। इस से ज़हर निकल जायगा

सुँघाते समय इस बात का ध्यान रहे कि, पोटली एड़ी की तरफ पञ्जों की ओर से न ले जाई जाय । हानि नहीं, पर लाभ भी न होगा ।

अँगरेज़ी नुसख़े ।

(४७) नीचे लिखे हुए अङ्गरेजी नुसखे कई बार आज़मानेसे ठीक मालूम हुए, इसलिए पाठकों के उपकारार्थ नीचे लिखते हैं —

नम्बर १

क्लोरोडाइन	१० से ३० बूँद तक ।
आयल पिपरमिण्ट	२ बूँद ।
क्लोरोडाइन आफ एमोनियम	५से १० ग्रेन तक ।
सौंफका अर्क	२ औन्स ।

यह एक खूराक दवा है । ऐसी-ऐसी चार या छै खूराक बना लो और कागज़ काटकर शीशीपर दाग लगा दो । हर बार हरेक क़य के बाद, एक-एक खूराक पिलाओ । जब तक रोगी को नींद न आजाय, दवा पिलाते रहो । सो जाने पर, जगा कर दवा न देना ।

नम्बर २

लौंग	२ ग्रेन ।
लाल मिर्च	१ ग्रेन ।
अफीम	१ ग्रेन ।

यह एक गोली का मसाला है । इस हिसाब से अधिक लेकर गोलियाँ बना लो और दो-दो घण्टे पर एक-एक गोली निगलवा दो । हाथ पैरों में ऐंठन हो या बाइँटे आवें, तो वहाँ सोंठ को पीसकर खूब मलो । पेशाब न आता हो, तो कमर पर राई का पलस्तर लगा दो ।

नम्बर ३

(४८) स्पिरिट क्लोरोफार्म १ ड्राम, स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक

१ ड्राम, क्लोरोडाइन और ब्राण्डी १ औन्स—चारों में अन्दाज़ का जल मिलाकर रख लो। मात्रा एक-एक चमची भर। इससे हैजा और अतिसार नाश होते हैं। परीक्षित है।

(५०) चॉक १ ड्राम, स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक २ ड्राम, टिंकचर ओपियम ४० बूँद, कैम्फर वाटर ८ औन्स,—सब को मिला कर रख लो। मात्रा १ औन्स। दिन में तीन बार देने से अजीर्ण, अतिसार और हैज़े की पहली अवस्था में लाभ होता है।

(५१) टिंकचर ओपियाई २ ड्राम और एसिड सल्फ्यूरिक एरोमेटिक ३ ड्राम, दोनों को मिला रख लो। मात्रा २० बूँद। घण्टे-घण्टे या दो दो घण्टे में देने से हैज़ा आराम होता है।

विशूचिका नाशक लेप।

अर्क रसादि तैल।

(५२) आक के पत्तों का रस ६४ तोले, धतूरे के पत्तों का रस ६४ तोले, सफेद थूहर का रस ६४ तोले, सहँजने का रस ६४ तोले, अदरख का रस ६४ तोले, कूट और सेंधेनमक का कल्क यानी दोनों को जल से पिसी लुगदी १६ तोले, दही १ सेर, कांजी १ सेर और तिलों का तेल १ सेर—तैयार करो।

इन सब को एक जगह करके, कलईदार कड़ाही में डाल, चूल्हे पर रख, मन्दी मन्दी आग से पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर शीतल करो और छानकर बोतलों में भर लो।

इस तेल का नाम "अर्करसादि तैल" है। इसके लगाने से विशूचिका से पैदा हुआ खल्लीशूल, पक्षाघात, आमवात, गृध्रसीवात, खञ्जता और पङ्गुता—ये सब रोग नाश होते हैं।

(५३) जौका आटा और जवाखार—इन दोनोंको छाछ में पीस कर और आग पर पका कर, गरमागर्म लेप करनेसे पेट का दर्द या शूल आराम हो जाता है। विशूचिका में यह लेप परमोत्तम है। परीक्षित है।

(५४) दालचीनी, पीले फूल की कटेहरी, कूट, शतावर, सोंठ, और सेंधा नोन—इनको महीन पीस कर, नीबू के रस में घोटो और पेट पर लेप कर दो। इस लेप से पेट का दर्द और अफारा दोनों नाश हो जायँगे।

(५५) दालचीनी, तेजपात, रास्ना, अगर, सहँजना, कूट, बच और शतावर—इनको बराबर-बराबर ले, नीबू के रस में महीन पीस, पेट पर लेप करने से खल्लीशूल समेत विशूचिका नष्ट होती है।

नोट—इन सबको तेल में पकाकर, तेल लगाने से भी वही लाभ होता है

(५६) जायफल और चूके को तिलों के तेल में पकाकर लेप करने से खल्लीशूल नष्ट होता है।

(५७) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सेंधानोन,—सब को दो दो माशे लेकर, पानी में पीसकर, पेट पर लेप करने से सब तरह के अजीर्ण नाश होते हैं। हैजे के शूल और अफारे में भी खूब लाभ होता है।

(५८) सरसों का तेल आग पर गरम करके गरमागर्म ही पेट या शरीर या हाथ पैरों में लगाने से शरीर का दर्द, पेट का दर्द, हाथ पैरों के बाइँटे ये सब आराम होते हैं।

(५९) चूहे की मेंगनी १ तोला और सोंफ १ तोला—दोनों को पानी में पीस, गरम करके, पेट पर लेप करने से पेट का अफारा, पेट का दर्द, गर्भाशय की वेदना और बाइँटों की पीड़ा शान्त होती है। पेट का दर्द और अफारा मिटाने में तो रामबाण ही है। परीक्षित है।

नोट—चूहे की मेंगनी और जरासी हींग पानी में पीसकर नाभि पर लेप करने से पेट का अफारा निश्चय ही नाश होता है।

(६०) निर्मली को पानीमें चन्दन की तरह घिसकर और गरम करके नाभि के चारों ओर लेप करने से पेट का दर्द मिट जाता है।

नोट—ये सब लेप अजीर्ण और हैजा दोनों में काम आ सकते हैं।

(६१) फलालेन या कम्बलके टुकडे को गरम खौलते हुए पानी में भिगो-भिगो कर निचोड़ लो और उसी से पेट पर सेक करो। इस उपाय से पेट का दर्द शान्त हो जायगा।

(६२) गोमूत्र या काँजी को आग पर पका कर, उसमें फलालेन का टुकड़ा भिगो-भिगोकर पेट पर धीरे-धीरे फेरो। इससे हैज़े मे होने वाला पेट का दर्द शान्त हो जायगा।

(६३) अगर और कुछ न मिले, तो तारपीन का तेल पेट पर मालिश करके, वहाँ रूई के पहलों से या खाली हाथोंसे सेक करो। इस उपाय से भी हैजे में हुआ पेट का दर्द मिट जायगा।

(६४) कूट और सेंधानोन—इन दोनों को जल के साथ लुगदी कर लो और चूकेका रस निकाल लो तथा तेल लाकर रखलो। कड़ाही मे तेल, चूके का रस और लुगदी (कल्क) को चढाकर, मन्दी मन्दी आग से पकाओ। तेल मात्र रह जाने पर उतार लो। इस तेल की मालिश से खल्ली शूल और विशूचिका नाश हो जाती हैं।

(६५) देवदारु, सफेद बच, कूट सौंफ, हींग और सेंधानोन—इन को काँजी में पीसकर, जिस के पेट में दर्द हो या जिस का पेट फूला हो उसके पेट पर लेप करो।

विशूचिका नाशक अञ्जन।

(६६) त्रिकुटा, करञ्ज के फल, दारुहल्दी, हल्दी और बिजौरे नीबू की जड़—इन को बराबर-बराबर लेकर, पानी के साथ पीसकर, गोलियाँ बनाओ और छाया में सुखालो। इन गोलियोंको जल में घिस

कर, आँखों में आँजने से विशूचिका नष्ट हो जाती है। भावमिश्र महोदय इसे अपना अनुभव किया बताते हैं।

(६७) सहुएका सार, चिरचिरेके चाँवल और कोपल, हल्दी, दारुहल्दी और त्रिकुटा—इन को बराबर-बराबर लेकर, पानी में पीसकर गोली बनालो और छाया में सुखालो। इन गोलियोंके नेत्रोंमे आँजने से विशूचिका नष्ट हो जाती है।

(६८) चिरचिरेके पत्ते और कालीमिर्च बराबर-बराबर लेकर घोडे की लारमें पीसकर, नेत्रोंमे आँजने से विशूचिका नष्ट हो जाती है।

हैज़े की प्यास नाश करनेवाले उपाय।

(६९) पानीमे लौंग डालकर औटाओ, जब आधा जल रह जाय, उतार कर शीतल कर लो। हैज़े के रोगी को इस जल के पिलाने से प्यास, जी मिचलाने, सूखी ओकी आने और हृदय की पीडामें बडा लाभ होता है। प्यास निश्चय ही कम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—कुछ लोग पानी में पीसकर थोड़ा नमक मिला दो और गरम करके रोगी को पिलाओ। इससे प्यास, अजीर्ण और जी मिचलाना आराम होगा। परीक्षित है।

(७०) जायफल का काढा बनाकर थोडा-थोडा पिलाने से हैज़े की प्यास कम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—जायफलका टुकडा सुपारीकी तरह, हर समय, मुखमें रखनेसे भी प्यास कम हो जाती है। ज्वर और अतिसार आदिकी प्यासभी कम हो जातीहै। परीक्षित है।

(७१) नागरमोथे के काढेसे भी हैज़ेकी प्यास कम हो जाती है।

(७२) कूट, धान की खील, कमलगट्टे की गिरी, बड के अङ्कुर और मुलेठी—इनको कूट पीस छानकर "शहत"में मिला गोली बनालो। एक गोली मुँह मे रखने से भयङ्कर प्यास भी शान्त हो जाती है।

(७३) एक हकीम साहब कहते हैं, पानी की बरफ के टुकडे रोगी को बारम्बार देने से प्यास कम हो जाती है।

(७४) अर्क सौंफ आधपाव, अर्क गुलाब एक छटांक, अर्क पोदीना एक छटांक और पानी की वर्फ आधपाव—चारों को एक मिट्टी की हाँडी में रख दो। जब रोगी पानी माँगे, इसी में से ६ माशे या एक-एक तोले पिलाओ। इस उपाय से वमन और प्यास दोनों उपद्रव शान्त हो जायँगे।

(७५) शीतल चीनी (कबाब चीनी) के काँटे तोड़ कर महीन पीस लो। रोगी जब-जब पानी माँगे,उसमेंसे एक-एक चुटकी भर चूर्ण मुँहमें डाल,एक घूँट जल पिला दो। इस तरह करने से प्यास अवश्य कम हो जायगी और पेशाब भी होगा। परीक्षित है।

(७६) बर्फ मिलाया जल देनेसे भी प्यास शान्त होती है, पर एक-एक या आधे-आधे रुपये भर से अधिक जल मत देना।

(७७) पीने के पानी में लकड़ी का कोयला डाले रखने और वही पानी पिलाने से भी प्यास में लाभ होता है।

(७८) ईंट को आग में लाल करके, धीरे से, छने हुए जल की हाँडीमें छोड़ दो। इस जलके पीनेसे प्यास और क़यमें लाभ होता है।

नोट—इन मामूली उपायों से हैजे की प्यास और वमन बन्द नहीं हो जातीं, पर इन से मदद अवश्य मिलती है, बड़ी सेहत होती है, प्यास का जोर घट जाता है। जहाँ कुछ भी न हो, वहाँ कम-से-कम इतना तो करना ही चाहिये।

(७९) तीन या चार तोले कलौंजी को आधसेर पानी में मिट्टी की हाँडी में डाल कर औटाओ। आधा पानी रह जानेपर उतार कर छान लो। हैजेवाले को प्यास लगनेपर, यही जल पिलाते रहने से हैजे का ज़ोर निश्चय ही घट जाता है। परीक्षित है।

हैजे की वमन नाश करने के उपाय।

(८०) बड़ी इलायची, धान की खील, लौंग, नागकेसर, पीपल,

महँदो, बेर की गुठली की गिरी, नागरमोथा और सफेद चन्दन—इन ८ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस और छान लो। इसके बाद उस चूर्णमें मिश्री मिला दो। इस चूर्णको शहद के साथ चाटने से तीनों दोषों से उत्पन्न हुई भयङ्कर वमन भी मिट जाती है। परीक्षित है।

(८१) खूब गरम जल थोड़ा-थोड़ा देने से हैजेकी वमन और प्यास दबती है।

(८२) पानी की बर्फके टुकड़े चूसनेसे वमन और प्यास शान्त होती हैं।

(८३) अगर उपरोक्त औषधियों से वमन होना बन्द न हो, दवा भी पेट मे न ठहरती हो, तो राई पानी में पीस कर, चौकोर पतले कागज़ पर लगाकर,नाभिसे ऊपर पेटपर चिपका दो। जब जलन होने लगे, उसे उतार डालो। इस तरकीबसे वमन बन्द हो जाती है। कम से कम २० मिनट यह पलस्तर रखना चाहिये।

नोट—यही राई का पलस्तर गर्दन और पीठ की रीढ़ या मेरुदण्ड पर लगाने से भी कय बन्द हो जाती है। कमर पर रखने से पेशाब होता है।

(८४) तीन तोले धानकी खील और एक तोले सफेद चीनी,डेढ़ पाव जल में, कोई घण्टे डेढ़ घण्टे तक भिगोकर छानलो। इस छने हुए जल में खस १ तोला, छोटी इलायची ६ माशे और सौंफ १ तोला—इन तीनोंको पीस कर मिला दो और शेषमें सफेद चन्दनको पत्थर पर घिस कर,एक तोले घिसा हुआ चन्दन का रस उसी जल में मिला दो। इस जल की मात्रा ६ माशे की है। आध-आध घण्टे या बीस-बीस मिनट में, आधा-आधा तोला यही पानी चमची द्वारा पिलाने से वमन बन्द हो जाती है।

(८५) राई और कपूर को पानी के साथ पीसकर और गरम कर के, हृदय पर लगानेसे वमन बन्द हो जाती है।

(८६) मोरके पङ्खका चँदोवा जलाकर राख कर लो। उस राख

से से ३ माशे राख "शहद और पीपल" में मिलाकर चाटने से क्षय बन्द हो जाती है।

हाथ पाँव वगेरः अङ्गोंकी शीतलता और बाइंटे नष्ट करने को तरकीबें।

(८५) अगर बाइंटे आवें और हाथ पैर शीतल हो जायँ, तो रोगी को गरम जगह में रखो, गरम कपड़े पहनाओ और सोंठ को महीन पीस कर गरम कर लो और उसे हाथ पाँवों पर मलो।

(८६) हाथ पैरो में अधिक ऐंठन हो, तो भुनी हुई रेत की पोटली बनाकर गरम कांजी में डुबो-डुबोकर बफारा दो।

(८७) सरसों के तेल में कूट और सेंधे नमक का चूर्ण मिला कर हाथ पाँवों पर मालिश करो। इस से हाथ पैरों की ऐंठन या बाइंटे मिट जायँगी।

(८८) सोंठ और कायफल बराबर-बराबर लेकर महीन पीस छान लो और हाथ पैरो पर मालिश करो। इनके मलने से ऐंठन मिटकर हाथ पैरो में गरमाई आवेगी।

(८९) रोगी की नाड़ी की चाल अत्यन्त मन्दी या क्षीण हो, तो उस के हाथ पाँवों पर फलालेन गरम करके सेक करो।

(९०) शीताङ्ग हो जाय या शरीर शीतल हो जाय, तो "चन्द्रोदय रस" या "वृहत कस्तूरी भूषण" देनेसे तत्काल लाभ होता है और शीत मिट कर गरमी आती है।

(९१) सरसो के तेल में जायफल और तांबा घिस कर सारे शरीर में लगानेसे हैजे की ऐंठन मिट जाती है।

(९२) अगर हाथ पैर शीतल हो गये हों, तो रूई के पहल आग पर खूब गरम करके उस जगह बांध दो और शीतल होने से पहले फिर खोल लो और दूसरे गरम करके उसी तरह फिर बांध दो। जब

तक पूरी गरमी न आ जाय, इसी तरह सेक करते रहे। इस उपाय से गरमाई आजायगी।

नोट—रूई के पहल दूसरे गरम करके बाँधने से पसली का दर्द, पैरों का दर्द अथवा और कहीं का दर्द अवश्य नाश हो जाता है।

(८३) अगर बाइँटे आते हो, शरीर शीतल हो गया हो और नाडी की चाल मन्दी पड गई हो, तो 'विषगर्भ तैल' में तारपीन का तेल और कपूर मिलाकर हाथ पैरो और हाथोंकी कलाइयों पर मलो। जब तक नाडी तेज़ी से न चलने लगे, हाथ पैर गरम न हो जायँ, बाइँटे बन्द न हो जायँ,बराबर यही तेल मलते रहो। इस उपाय से शरीर गरम हो जायगा और नाडी ठीक चाल पर आ जायगी। शीताङ्ग होने की हालत में यह उपाय खूब काम देता है, मरता हुआ आदमी भी एकबार बच जाता है। सैकडों बारका परीक्षित है।

(८४) हाथ पैरो और कलाइयो पर राई के पलस्तर रखने से नाडी तेज़ी से चलने लगती है, बाइँटे मिट जाते है और गरमाई आ जाती है। एक चौकोर पतले कागज पर, राई जल में पीस कर लेप कर दो और दोनों हाथों के पहुँचों पर लगा दो। यही पलस्तर है। अँग्रेज़ी दवाखानों में तैयार पलस्तर भी मिलते है।

(८५) उत्तम ब्राण्डी में तारपीन का तेल मिलाकर मालिश करने से हाथ पैरों के बाइँटे आराम हो जाते है।

(८६) कूट और सेंधे नोन को कांजी और तिलों के तेल में एकत्र पीस कर गरम करो और हाथ पैरों पर उसकी मालिश करो। इस से भी बाइँटे आना बन्द हो जायगा।

पेशाब खोलनेकी तरकीबें।

(८७) अगर पेशाब न होता हो, तो राई का पलस्तर कमर पर लगाओ। इससे पेशाब हो जायगा। अगर पलस्तर से छाला हो जाय, तो फिर पलस्तर न लगाना।

(९८) अगर दस्त और वमन बन्द हो जायँ, पर पेशाब न हो तो पेशाब कराने के लिये नीचे लिखे उपाय करो.—रोगी के पेडू पर कलमी शोरे के पानी में भीगा हुआ कपड़ा रक्खो। कलमी शोरा २ तोला लेकर पानी में महीन पीस लो। पीछे एक साफ कपड़े की पट्टी उसी शोरे के जल में तर करके नाभि के नीचे, पेडू पर, रख दो, पेशाब हो जायगा। अगर घण्टे आध घण्टे में पेशाब न हो, तो फिर दूसरी ताज़ा पट्टी उसी तरह शोरे के पानी में भिगोकर रक्खो। परीक्षित है।

(९९) टेसू के फूल २ तोले और कलमीशोरा २ तोले, दोनों को सिल पर रख, पानी के साथ पीस—लुगदी सी बना लो और उसे रोगी के पेडू पर रख दो। अगर आध घण्टे में पेशाब न हो जाय, तो फिर यही लेप लगाओ। परीक्षित है।

(१००) गरम जलमें फलालेन का टुकड़ा डुबोकर, उस पर चन्द बूँदें तारपीन के तेल की टपका दो और उसी फलालेन से कमर के दोनों तरफ सेक करो, फौरन पेशाब होगा।

(१०१) गोखरू के बीज, ककड़ी के बीज और जवासा,—इन तीनों को अढ़ाई तोले या दो तोले लाकर काढ़ा कर लो और शेष में डेढ़ माशे शोरा मिलाकर रोगी को पिला दो। इससे भी पेशाब होता है।

(१०२) चूहे की मैंगनी में थोड़ा सा कलमी शोरा मिलाकर, पानी के साथ पीस कर, लुगदी सी बना लो और नाभि के नीचे, पेडू पर, गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर दो। इस उपाय से निश्चय ही पेशाब होता है।

नोट—चूहे की मेंगनी में जरासी हींग मिलाकर पानी में पीसकर लेप करने से पेट का अफारा मिटता है।

हिचकी नाशक उपाय।

(१०३) केले की जड़ लाकर पीस लो और कपड़ेमें छान कर रस निकाल लो। इस रस के सूँघने से हिचकी बन्द हो जाती है।

(१०४) सेंधानोन पानी या घी में पीसकर सूँघने से हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१०५) पोदीने को चीनी में मिलाकर चबाने से हिचकी आराम हो जाती है।

(१०६) मोर के पंख का चँदोवा आग में जलाकर राख कर लो। इसमें से तीन माशे राख "शहद" में मिलाकर चाटने से हिचकी आराम होती है।

(१०७) साबत काले उड़द के महीन चूर्ण को चिलम में रख, तमाखू की तरह, कोयले की आग रख कर, पीने से हिचकी आराम होती है। आग में धूआँ न होना चाहिये।

(१०८) छप्परकी पुरानी रस्सी चिलममें रख कर, तमाखू की तरह पीने से हिचकी आराम होती है।

(१०९) मक्खीका गू दूध में पीसकर सुँघानेसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(११०) सोंठ को गुड़ में मिलाकर सुँघाने से हिचकी आराम होती है। चूल्हे की जली हुई गरम मिट्टी के सूँघने से भी हिचकी नाश होती है।

नोट—हिचकी नाशक और भी बहुतसे परीक्षित उपाय "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भाग में लिखे हैं। ऊपर लिखे सभी उपाय भी परीक्षित हैं। इन से ही हिचकी आराम हो जाती है। अगर किसी भी उपाय से हिचकी बन्द न हो, तो नाभि से दो अङ्गुल ऊपर, जली हुई हल्दी या लोहे की शलाका से दाग दो।

पसीने नाशक उपाय।

(१११) अगर बहुत ही पसीने आते हों, तो कुल्थीको भुनवा कर पीसो और उसे पसीनों के स्थान पर मलो। इससे पसीने आना बन्द हो जायगा। परीक्षित है।

(११२) मूँगे की भस्म शहत के साथ चटाने से पसीने कम हो जाँयगे।

(११३) समन्दर-फल सोंठ के साथ पीस कर शरीर पर लेप करने से पसीनो का आना बन्द होता है।

नोट—समन्दर-फल को कूट कर अन्दर की गिरी निकाल लो, ऊपर का जजाल फेंक दो। फिर इसे सात दिन तक बकरी के दूध में भिगो रखो। इस के बाद सात दिन तक बकरी के मूत्र में भिगो रखो। इस के बाद सुखालो और रखलो। समय पर, इस से बड़े काम निकलते हैं। जाड़े के इकतरा, तिजारी और चौथेया में ज्वर चढने से तीन घण्टे पहले, हर घण्टे-घण्टे में, चार-चार रत्ती समन्दर फल मिश्री के साथ देने से इकतरा, तिजारी और चौथैया आना बन्द हो जाता है। सोंठ और समन्दर फल दोनो को पीसकर लिंगेन्द्रिय पर लेप करने से स्त्री-प्रसङ्ग में रुकावट होती है। ३।४ रत्ती समन्दर फल खिलाकर, ऊपर से तुलसी का रस पिलानेसे सब तरह के ज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—पसीने कम करने वाले औरभी उपाय "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भागमें लिखे हैं।

(११४) भुनी हुई मोंठ पीस कर और उसमें पिसा हुआ सेंधानोन मिलाकर सूखा ही मलने से पसीने कम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११५) अरहर की दाल, सेंधानमक और सोंठ—तीनों को समान-समान लेकर पीस और भून लो। इसके बाद इसकी मालिश करो। इससे पसीनों का जियादा आना और हाथ पैरों का ठण्डा होना मिट जाता है। सन्निपात ज्वर में जब हाथ-पाँव शीतल हो जाते हैं और पसीनों के झोंवे आते हैं, इस भुने हुए चूर्ण की मालिश करने से निश्चय ही लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—ज्वारका आटा मलनेसे भी पसीने कम हो जाते है। परीक्षा नहीं की है। अगर समय पर और कुछ न मिले, इसी को मलो और परीक्षा करो।

(११६) बाजरे के आटे में सोंठ और सेंधानोन मिलाकर मलने से पसीने कम हो जाते हैं।

अलसक और विलम्बिका।

अलसक के लक्षण ।

जिस रोग में पेट बहुत ही अफर जाय, रोगी हाथ पैर आदि अङ्गों को पटके और चिल्लावे, पेट की अजीर्ण से रुकी हुई वायु, नीचे गुदा-मार्गसे न निकल कर, छाती और कंठ प्रभृति की तरफ ऊपर को चढ़े, मल और वायु अत्यन्त रुक जायँ यानी पाखाना न हो और हवा भी न खुले, प्यास लगे और डकारें आवें—वह रोग "अलसक" है।

काश्यप ऋषि कहते हैं —

नाधो याति न चाप्यूर्द्ध माहारो यन्न पच्यते ।
कोष्ठे स्थितोऽलसीभूतस्ततोऽसावलस ॥

किया हुआ भोजन न तो वमन द्वारा ऊपर हो कर ही निकलता है और न दस्तों द्वारा नीचेको ही गिरता है और जठराग्निसे पकता भी नहीं—किन्तु कोठेमें आलसीकी तरह पड़ा रहता है, इसी से इस रोगको "अलसक" कहते हैं।

खुलासा यह है कि, खाये-पीये पदार्थ खराब या जहरीले होकर कोठेमें आलसी या काहिलकी तरह पड़े रहते हैं, न दस्तोंसे निकलते हैं और न वमन से निकलते हैं, कोठे में पड़े-पड़े रोगी का पेट फुला देते हैं, गुदाकी हवाको निकलने नहीं देते, इससे वह छाती और कंठकी ओर जाती और पीड़ा करती है, प्यास लगती और डकारें आती रहती हैं।

विशूचिका और अलसक में भेद ।

विशूचिका में दस्त और कय से दूषित पदार्थ निकलते हैं, पर

अलसक में कोठे ही में पडे रहते हैं, दोनों राहों में से किसी से नहीं निकलते। खुलासा यह है कि, विशूचिका में दस्त और कय होते हैं, अलसक में दोनों नहीं होते।

विलम्बिका के लक्षण।



जिस रोग में भोजन किया हुआ दुष्ट आहार, कफ और वायु के कारण से, मुँह और गुदा द्वारा नहीं निकले, उसे विद्वान् वैद्य "विलम्बिका" कहते हैं।

विलम्बिका रोग की चिकित्सा में बडी कठिनाइयाँ हैं, इसलिये वैद्यको इसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये।

विशूचिका और विलम्बिका के अरिष्ट।

जिस रोगी के नाखून, होंठ और दाँत काले हो गये हों, संज्ञा नष्ट हो गई हो, होश न हो, वमन से पीडित हो, आँखें खड्डों में घुस गई हों, आवाज बैठ गई हो और सारे शरीर के जोड ढीले हो गये हों—वह मनुष्य मर जायगा।

अनाड़ियों की समझ की भूल।

आमाजीर्ण, विदग्धाजीर्ण और विष्टब्धाजीर्ण से विशूचिका, अलसक और विलम्बिका ये तीनों महारोग होते हैं। अनाडी लोग समझते हैं, आमाजीर्ण से विशूचिका, विदग्धाजीर्ण से अलसक और विष्टब्धाजीर्ण से विलम्बिका होती है।

यह अनुक्रम मानना ठीक नहीं। हाँ, एक-एक अजीर्ण से ये तीनों महा रोग होते हैं। अगर इस अनुक्रम को मानें, तो विष्टब्धाजीर्ण से विलम्बिका होनी चाहिये, लेकिन यह ठीक नहीं; क्योंकि विष्टब्धाजीर्ण वायु से सम्बन्ध रखता है, किन्तु विलम्बिका कफ और वायु से होती है।

अजीर्ण, विशूचिका, अलसक और विलम्बिका की तशरीह।

अजीर्ण में दस्त होते हैं और नहीं भी होते हैं, और वमन अजीर्ण का एक उपद्रव है। मतलब यह है कि, अजीर्ण में कभी तो दस्त और क़य होते हैं और कभी दस्त रुका रहता है और वमन होती है और कभी दस्त भी नहीं होता और वमन भी नहीं होती, हवा रुकी रहती है और पेट फूला रहता है इत्यादि

उधर विशूचिका में भी दस्त और क़य होते हैं। अलसक में मल और वायु का अत्यन्त अवरोध होता है, यानी न दस्त होते हैं और न हवा खुलती है। वमन के सम्बन्ध में कुछ लिखा नहीं—होती है या नहीं होती है। हाँ, काश्यप मुनि कहते हैं,भोजन किया हुआ आहार न गुदासे निकलता है और न मुँह से। विलम्बिका में भी, दुष्ट आहार न गुदा से निकलता है और न मुँह से।

अलसक और विलम्बिका की चिकित्सा।

नोट—अलसक और विलम्बिका में दस्त और क़य के सिवा और अनेक लक्षण विशूचिका के दिखाई पड़ते हैं। अलसक और बिलम्बिका में साफ फ़र्क़ मालूम नहीं होता। दोनों के लक्षण प्राय एकसे हैं। अलसक के लक्षण विशेष रूप से दिखाई देने पर बिलम्बिका कहने लगते हैं। इन दोनों रोगों का इलाज प्राय एक ही तरह होता है।

(१) इन रोगोंमें पहले गरम जलमें 'नमक' मिलाकर रोगी को खूब पिला दो और वमन कराओ। वमन होने से ये रोग जल्दी आराम होते हैं।

(२) अपामार्ग के बीज, गिलोय, सफ़ेद तुलसी, डहर करंज या पान, नीम की छाल और चन्द्रजौ—इन छओं का काढ़ा बनाकर

रोगोको गले तक पिलाओ। इससे भी वमन होकर दोनों रोग आराम हो जायगे।

(३) जौका आटा और जवाखार,—इन दोनोंको माठामें मिला कर गरम करो और पेट पर लेप करो। इससे पेट का दर्द नाश होता है। परीक्षित है।

(४) गरमागरम काँजी में ऊनी कपड़ा भिगो-भिगोकर और निचोड़-निचोड़ कर पेट को उसी से सेको। इस तरह पेट का अफारा और दर्द मिट जायगा।

(५) प्यास और उत्क्लेश हो, तो लौंगो का औटाया हुआ पानी रोगी को पिलाओ। अथवा जायफल का काढ़ा बना कर पिलाओ। नागरमोथे का काढ़ा भी अच्छा है। परीक्षित है।

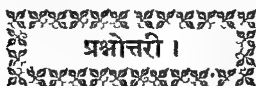
(६) हिचकियाँ चलती हों, तो केले की जड़ का रस रोगी को सुँघाओ।

नोट—प्यास हिचकी और बाइँटे प्रभृति के उपाय उधर विशूचिका चिकित्सा में लिखे हैं, वे सब इन दोनों रोगोंमें भी काम आ सकते हैं।

(७) भोजन करने से पहले हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल और सेंधानोन—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, जलके साथ पीस कर लेप सा बना लो और पेट पर लगाओ। इस लेप से सब तरह के अजीर्ण और अलसक तथा विलम्बिका रोग नाश होते हैं।

पथ्यापथ्य।

इस रोग में पहले लंघन कराने चाहिये। पीछे आराम होने पर भूख और अग्नि-बल देखकर हलका पथ्य देना चाहिये।



प्रश्नोत्तरी।

प्र० (१) क्या हैजा भी प्लेग की तरह संक्रामक और सांघातिक रोग है?

उ०—हाँ, संक्रामक और सांघातिक रोगों में हैजे का नम्बर प्लेग से दूसरा है।

परन्तु कितनी ही बातो में हैजा प्लेग से भी बढ़कर है, क्योंकि प्लेग का हमला रोगी के शरीर पर धीरे-धीरे होता है, और प्लेग रोगी कितने ही दिनों तक जीवित भी रहता है, परन्तु हैजे का हमला बहुत जल्दी होता है। हैजे का रोगी जियादा से जियादा चार पाँच दिनों में मर जाता है। कभी-कभी यह भयङ्कर रोग पहले दस्त और पहली कय में ही रोगी का सफाया कर देता है। इसकी मामूली मियाद २४ से ३६ घण्टो की है।

प्र० (२) हैजा किन किन मौसमों में होता है ?

उ०—गरमी की अधिकता से हैजा पैदा होता है, इसलिये गरमी या वर्षाकाल इसके पैदा होनेका ठीक समय है, पर कभी-कभी यह शीतकाल में भी होता है। इसके सिवा मौसम के बदलाव के समय भी यह फैलता है।

प्र० (३) डाक्टर लोग इसकी उत्पत्ति के विषय में क्या कहते हैं ?

उ०—डाक्टर कहते हैं, हैजे की उत्पत्ति एक प्रकार के विषैले सूक्ष्म जन्तुओं से होती है। ये विषैले जन्तु प्राय जलके द्वारा मनुष्य-शरीर में घुस कर इसको पैदा करते हैं। डाक्टर उन जन्तुओं को "कामा ब्यासिलिस" कहते हैं, क्योंकि ये कामा (,) की ही सूरत शकल के होते हैं। हैजेवाले रोगी के मल और वमन में हैजेका जहर होता है। उस मल और वमन के सम्पर्क से हैजे का विष और-और स्थानों में फैलता है।

प्र० (४) क्या मनुष्य के पेट में कामा नामक जन्तुओं के जाने से ही हैजेकी उत्पत्ति होती है ?

उ०—नहीं, इसके सिवा हैजे के और भी बहुत से कारण हैं। ये कारण न होने से पेट में जन्तुओं के जाने पर भी रोग उत्पन्न नहीं होता। यह रोग शीतला की तरह केवल रोगी के छूने से भी होता है। इसीसे इसको संसर्गज भी कहते हैं। इसका मुख्य कारण अजीर्ण या पाचक रस की कमी है। हैजे का ही नहीं, बल्कि सभी रोगो का कारण अजीर्ण है। इसीसे आयुर्वेद में लिखा है—रोग सर्वेऽपि मन्दाग्नौ" अर्थात पाचन शक्ति के मन्द होने से सब रोग होते हैं।

प्र० (५) हैजे के और सँखिया खाये रोगी के लक्षण प्राय मिलते है, अत इन दोनों की स्पष्ट परीक्षा बताइये।

उ०—हैजे के मौसम में जिनकी जिनसे शत्रुता होती है, अकसर ये लोग अपने शत्रुओं को किसी चीजमें संखिया दे देते हैं। इनकी परीक्षा करते समय, इन बातों पर ध्यान रखो —हैजे में प्राय पहले दस्त और पीछे कय होती है, संखिया खाने वाले को पहले वमन और पीछे दस्त होते हैं। संखिया खाने वाले के मल के साथ खून गिरता है, पर हैजे वाले के मल के साथ खून नहीं गिरता। हैजे वाले का मल चाँवल के धोवन जैसा होता है, परन्तु संखिया खानेवालेका मल अन्तकी अवस्था में ऐसा हो सकता है। हैजे में वमन से पहले गले में दर्द नहीं होता, पर संखिया वाले के गले में दर्द जरूर होता है। इन चार बातो के फर्क से,—हैजा हुआ है या संखिया खाया है, यह बात जानी जा सकती है।

प्र० (६) हैजा नाश करने के चन्द और भी अच्छे-अच्छे उपाय बताइये।

उ०—(१) मोथा १ तोला, पीपर ६ माशे, हींग ६ माशे और कपूर ६ माशे—इन को पानीके साथ खरल करके चार चार रत्तीकी गोलियाँ बना लो। घण्टे घण्टेमें एक-एक गोली देने से हैजा नाश होता है। परीक्षित है।

(२) सवा सेर साफ जलमें सवा तोले सेंधानोन मिलाकर रख लो। हैजे वाला जब-जब पानी माँगे, यही पानी उसकी इच्छानुसार उसे पिलाओ। इस जल से हैजे के जन्तु नाश होकर हैजा नाश होगा और प्यास शान्त होगी। किसी दवा के साथ पानी के बजाय इस जल का देना उपकारी है। परीक्षित है।

(३) नयी और सूखी हल्दी महीन पीस कर मोटे कपड़े में छान लो। पीछे इसमें से ६ माशे हल्दी १। सेर शीतल जल में मिला दो। हैजे वाले को यही जल दो। अगर क्य हो जाय, तो फिर भी आध घण्टे बाद यही जल दो। किसी तरह भी पेट में इस जल के रुकने से हैजा अवश्य आराम हो जायगा।

(४) प्यास के लिये, हैजे में, केले के खम्भे का जल निकाल कर देना अच्छा है। इससे हैजे के जन्तु नाश हो जाते हैं। मात्रा ४ तोले की है। इस जल के पीने और लगाने से साँप का विष, संखिया-विष, हरताल-विष और चूहे का विष नष्ट होता है। केले के पानी से पेशाब साफ होता है।

(५) सोंठ, अरहर की दाल, कौड़ी की भस्म, अजवायन और कायफल,—इन सबको पीस कर कपड़े में बाँधकर पोटली बना लो। इस पोटली से पसीने पोंछने से पसीने रुक जाते हैं। परीक्षित है।

(६) हैजे में गाय के गोबर का रस निचोड़ कर पिलाने से वमन बन्द होती हैं।

(७) लाल अरण्ड की जड़ १ तोला लेकर माठा में पकालो। फिर उसमें एक रत्ती सावर के सींग की भस्म मिलाकर हैजे वाले को सेवन कराओ। इस नुसखे से असाध्य रोगी के बचने की भी उम्मीद हो जाती है।

(८) सोंठ का चूर्ण ३ माशे और कपूर ४ रत्ती—इनको खरल में खूब पीस कर आठ भाग कर लो। इसमें से एक-एक भाग पाव-पाव घण्टे पर देने से हैजा नाश होता है। जब क्य और दस्त बन्द हो जायँ, दवा बन्द कर दो। बीच-बीच में पानी माँगने पर रोगी को नमक-मिला पानी, जितना रोगी पी सके, अवश्य दो। नमक का पानी हैजे में रामबाण है। इसको गुदा द्वारा पेट में पहुँचाने से अनेक मरते-मरते रोगी बच गये हैं।

(९) आक की जड़ की छाल, कागजी नीबू के बीज की गिरी, एलुआ, दरियायी नारियल, पपीता, कालीमिर्च, हींग, मुरमक (यूनानी दवा) पिपरमिन्ट, और केशर—इन दसों को बराबर-बराबर लेकर, अदरख के रस में घोट कर, कालीमिर्च के समान गोलियाँ बनालो। हैजे पर ये गोलियाँ रामबाण या तीरे हदफ का काम करती हैं। अगर हैजा होते ही ये दी जायँ, तो क्या कहना। हरेक दस्त पर एक-एक गोली रोगी को देनी चाहिये। परीक्षित है।

(१०) सूखी लाल मिर्च और नमक उबाल कर रख लो। इसमें से थोड़ा थोड़ा जल आध-आध घण्टे पर हैजे वाले को दो। इससे हैजा आराम होता है।

(११) बढ़िया हीरा हींग आधी रत्ती, लालमिर्च पिसी १ रत्ती, कपूर चौथाई रत्ती, अफीम चौथाई रत्ती और सोंठ आधी रत्ती—इनको जल के साथ घोट कर तीन गोलियाँ बना लो। हैजा होते ही एक गोली शीतल जल के साथ दो। अगर वमन हो जाय, तो आध घण्टे में फिर १ गोली दो। एक रोगी को दस गोली तक देने से हैजा नाश हो जाता है। रोग आराम होने और पेशाब हो जाने पर भूख लगे तो साबूदाना दो।

(१२) जहरमुहरा ७ माशे, जदवार २ माशे, बसलोचन ३ माशे, सफेद इलायची के बीज ३ माशे, पिस्ते के ऊपर के कड़े सफेद छिलके ३ माशे, अर्क कासनी १० तोले, अर्क गुलाब १० तोले और शर्बत अनार ३ तोले—पिसने वाली दवाओं को पीस कर, सब चीजोंको एक में मिला दो और एक कोरी साफ हाँडीमें रख दो। जब-जब रोगी पानी माँगे इसी में से रोगी को दो दो या तीन तीन तोले पिलाओ। इसके सेवनसे प्यास नाश हो जायगी।

(१३) चिरचिरे या औंगे की जड़ ५ तोले लेकर अढ़ाई सेर साफ जल में औटाओ। डेढ़ सेर जल रहने पर उतार कर कपड़े में जल छान लो और हाँडी में रख दो। इस में से थोड़ा-थोड़ा जल हैजे वाले को देने से हैजे में लाभ होता है।

(१४) निर्विषी (जदवार) २ माशे जहरमोहरा २ माशे, हल्दी २ माशे केशर २ माशे, सिरस की छाल २ माशे, मोती १ माशे, सफेद चन्दन १ माशे और कपूर १ माशे,—इन सबको पीस कर अर्क गुलाब में या केवड़े में घोट कर तीन तीन रत्ती की गोलियाँ बना लो। एक दिन में तीन या चार गोली देने से प्लेग और हैजे की बेहोशी, प्यास और दाह आराम होते हैं।

(१५) रात के भोजन से पहले, प्याज के रस में चने भर हींग, सौंफ १ माशे और धनिया १ माशे—इन तीनों को मिलाकर खाने से हैजा होने का भय नहीं रहता। हैजे के दिनों में इसे रात को अवश्य सेवन करना चाहिये और कपूर सूँघना और हरदम पास रखना चाहिये।

प्र० (७) अर्क कपूर से हैजा आराम होने के सिवा और क्या रोग नाश होते हैं?

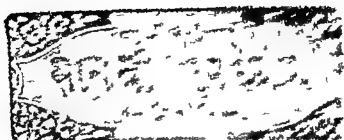
उ०—(१) कीड़ा खाये दाँत या दाढ़ के छेद में रुई का फाहा "अर्क कपूर" में भिगोकर रखने से कीड़ा मर जाता और फौरन दर्द मिट जाता है।

(२) अर्क कपूर सिर पर लगाने से सिर-दर्द मिट जाता है।

(३) अर्क कपूर को चौगुने तिली या अलसी के तेल में मिलाकर लगाने से हाथ पाँव की ऐंठन और फूलन मिट जाती है।

(४) बिच्छू, ततैया, बर्र, डाँस, मच्छर और कनखजूरा प्रभृति के काटे पर "अर्क कपूर" लगाने से फौरन शान्ति आती है।

(५) छोटी छोटी फुन्सियों के उठते ही उन पर "अर्क कपूर" लगाने से फुन्सियाँ बैठ जाती हैं।



कृमि-रोग

कृमिरोग के

अ

"कृमिरोग"

खानि

ौर अध

आधा

और भी भेद

विष्ठा से पैदा होने वाले कीडे सात तरह के होते है। इसी तरह कफ से होने वाले छ: तरह के और रक्त से होने वाले सात तरह के होते है। इस तरह तीनो कारणो से होने वाले कीडे २० तरह के होते है।

कीड़ों के पैदा होने के स्थान।



(१) मैल या पसीनों से होने वाले कीडे, जिन्हें जूं या लीख कहते है, कपडो और बालो में रहते है।

(२) पुरीषज या विष्ठा के कीडे पक्वाशय में पैदा होते है। यह बहुधा नीचे ही रहते और गुदा में काटते है।

नोट—शार्ङ्गधर आचार्य बाहर और भीतर के भेद से दो प्रकार के कृमियो को २२ प्रकार के कहते है '—१८ प्रकार के भीतर के कृमि। जू, जमजू और लीख तीन तरह के बाहर के और कफरक्त से पैदा होने वाले नहरुए, नारू या बाले को २२ वाँ लिखते हैं। बालों और कपडो में जो कृमि रहते हैं, वे तिल की तरह काले और सफेद होते है। उन्हें जू कहते है। जूओंके बहुत से पाँव होते है। जमजूँ भी ऐसी ही होती है। यह चमडे में चिपकी रहती हैं। जो बहुतही बारीक होती है, उन्हें लीख कहते है।

कीड़ों के स्थान।



(१) मैल या पसीनो से होने वाले कीडे, जिन्हे जूं या लीख कहते है, कपडो और बालो में रहते है।

(२) पुरीषज या विष्ठाके कीड़े पक्वाशय में पैदा होते है। ये बहुधा नीचे ही रहते और गुदा मे काटते हैं।

(३) कफ से होने वाले कीडे आमाशय में पैदा होते और पेट में चारो ओर घूमते हैं।

(४) रक्तज या खून से होने वाले कीडे रक्त बहानेवाली शिराओं या नसों में रहते हैं।

कृमि रोग के कारण।

भीतर के क्रमि नीचे लिखे हुए कारणो से पैदा होते हैं—

(१) अजीर्ण में भोजन करने से, (२) हर रोज़ मीठा और खट्टा भोजन करने से, (३) कढी, रायता, शिखरन प्रभृति पतले पदार्थों के अत्यधिक पीने से, (४) पिसे हुए अन्न मैदा प्रभृति और गुड के पदार्थ खाने से, (५) मिहनत न करने से, (६) दिन में सोने से, (७) दूध और मछली, दूध और दही, दूध और नमक, दूध और केला प्रभृति विरुद्ध भोजन करने से, (८) उडद और दही वगैरः के ज़ियादा खाने वगैर वगैर कारणों से मनुष्य के शरीर में कीडे पैदा हो जाते हैं।

पुरीषज कृमियों के कारण।

उडद, पिसा अन्न, लड्डू, घेवर प्रभृति पक्वान्न, नमक या गुड के बने पदार्थ एव शाक आदि जियादा खाने से मल के कीडे पैदा होते हैं।

कफज कृमियों के कारण।

मास, उडद, गुड, दूध, दही, सिरका और कॉजी प्रभृति खाने से कफ की क्रमियाँ पैदा होती हैं।

रक्तज कृमियोंके कारण।

विरुद्ध भोजन जैसे दूध और दही या दूध और मछली प्रभृति एक साथ खाने, अजीर्ण और आधा काचा और आधा पक्का साग-भाजी खाने प्रभृति से खून के कीडे होते हैं।

कीड़े पैदा होने के लक्षण।

जब शरीर के भीतर कीड़े पैदा हो जाते हैं, तब मनुष्यको ज्वर होता है, शरीर का रङ्ग और-का-और हो जाता है, पेट में शूल चलते हैं, हृदय दुखता है, जी मचलाता है—वमन करने की इच्छा होती है, चक्कर आते हैं, भोजन बुरा मालूम होता है और दस्त लग जाते हैं। इन लक्षणों के होने से जानना चाहिये, कि भीतर कीड़े पैदा हो गये हैं। बिना कीड़े पैदा हुए ये लक्षण नहीं होते।

बाहर के कीड़ों के विकार।

बाहर के कीड़ोंसे गाँठ, फुन्सी, दाद, खाज, कोढ़ और गलगण्ड रोग होते हैं।

पुरीषज कृमियों के लक्षण।

(पाखाने के कीड़े)

विष्ठा से पैदा हुई कृमियाँ पक्वाशय में जनमती हैं। ये बहुधा नीचे ही रहती हैं और गुदाकी राहसे बाहर निकलती हैं। लेकिन जब ये बहुत बढ़ जाती हैं, तब आमाशय की ओर जाती हैं। उस समय डकारों और श्वासों में विष्ठा या पाखाने की सी बदबू आने लगती है। ये कृमियाँ बड़ी, छोटी, गोल, मोटी, पीली, सफेद और नीली होती हैं। इनके पाँच नाम हैं—(१) ककेरुक, (२) मकेरुक (३) सौसुराद, (४) आमूलन, और (५) लेलिह।

जब ये कीड़े अपनी राह छोड़ दूसरी राह में जाते हैं, तब नीचे लिखे रोग पैदा होते हैं:—(१) पतले दस्त, (२) शूल, (३) अफारा, (४) देहमें दुबलापन, (५) देह में कठोरता, (६) पाण्डु रोग, (७) रोमाञ्च, (८) मन्दाग्नि और (९) गुदा में खुजली।

"सुश्रुत"में लिखा है —"अयव, वियव, किप्य, चिप्य, गडूपद, चुरव और द्विमुख—ये सात प्रकार के कीड़े विष्ठा में या विष्ठा से पैदा होते हैं । ये कीड़े सफेद और पतले होते हैं और गुदा में इस तरह काटते हैं कि, आदमीका शरीर अधर हो जाता है और रोएँ खड़े हो जाते हैं । ये गुदा की तरफ भी जाते हैं । इनमें कुछ कीड़े पूँछवाले और कुछ मोटे होते हैं ।

"ये कीड़े शूल, मन्दाग्नि, कब्ज और पीलिया पैदा करते तथा शरीर का बल नाश करते हैं । मुँह से पानी आना, अरुचि, हृद्रोग और विड़भेद—ये उपद्रव भी इनसे होते हैं। इन्हीमें एक प्रकार के लाल-लाल और लम्बे कीड़े होते हैं, जिन्हें गिंडोये कहते हैं । इनके होने से गुदा में खुजली, शूल, पेट पर अफारा, मल फटना और पाचन-शक्ति का मारा जाना ये उपद्रव होते हैं ।"

एक वैद्यराज लिखते हैं, इनमें से एक प्रकार के कीड़े बारह हाथ तक लम्बे होते हैं । बहुत जियादा मांस खाने, कच्चा मांस खाने और सूअर का मांस खाने से प्रायः ऐसे कीड़े पैदा होते हैं । ये खींच-खींच कर बाहर निकाले जाते हैं ।

नोट—पुरीषज या विष्ठा के कीड़ोंसे आहार नली के सभी कीड़ोंसे मतलब है ।

कफज कृमियों के लक्षण ।

कफज कृमियाँ, आमाशय में पैदा होकर, पेट में इधर और घूमती हैं । असल में ये बहुत बढ़ जाने पर ही चारों ओर फिरती हैं । इनमें से कोई मोटी चमड़ी की, कोई गिंडोये-जैसी, कोई धान्यके अंकुर-जैसी और कितनी ही छोटी, बड़ी और चौड़ी होती हैं। किसी का रङ्ग सफेद और किसी का ताम्बे-जैसा होता है । अन्नाद, उदरावेष्ट, हृदयाद, महागुद, चुरु, दर्भ, कुसुम और सुगन्ध—इन नामोंसे ये सात प्रकार की होती हैं ।

इन कृमियों से वमन की सी इच्छा, मुख में पानी आना, अन्न

न पचना, अरुचि, मूर्च्छा, वमन, प्यास, अफारा, ज्वर, शरीर की कृशता---दुबलापन, सूजन, पीनस, जुकाम, खांसी और छींक आना प्रभृति उपद्रव होते हैं।

सुश्रुत में लिखा है—दर्भ पुष्प, महापुष्प, प्रलून, चिपिट, पिपीलिका और दारुण—ये छः प्रकार के कीड़े कफ-कोप से होते हैं। इनके रोम होते हैं। सिर पर भी रोम होते हैं और दुम भी होती है। ये काले मण्डलवाले और बोये हुए धान के अंकुर की तरह सफेद और पतले होते हैं। ये कीड़े मज्जा, कान और तालू को खाते तथा आंखोंको भी चाट जाते हैं। ये सिरके रोग, हृदय के रोग, वमन और जुकाम पैदा करते हैं।

रक्तज कृमियों के लक्षण।

रक्तज कृमि या कीड़े रक्त-बहाने वाली शिराओंमें रहते हैं। ये बारीक, बिना पैर वाले, गोल और ताम्बेके रङ्गके होते हैं। कोई-कोई इतने बारीक होते हैं, कि देखने से भी नहीं दीखते। ये छै प्रकार के होते हैं। केशाद, रोमविध्वंस, रोमद्वीप, उदुंबर, औरस और मातर इनके ६ नाम हैं। ये कोढ़ पैदा करते हैं।

"सुश्रुत" में लिखा है—केशों में होने वाले, रोमों में होने वाले, नाखूनों में होने वाले और इन्हें ही खाने वाले तथा दाँतों के कीड़े, किक्किश, कुष्ठज और परिसर्पि ये सात प्रकार के कीड़े (खूनके मैल पसीने वगैर० से) खून सेपैदा होते हैं। इनमें से कुछ सुर्खी माइल काले, चिकने और मोटे भी होते हैं। ये रक्तस्थान में होने वाले विकार—खाज-खुजली, फोड़े, फुन्सी और कोढ़ प्रभृति पैदा करते हैं।

बाहर के कीड़ों के लक्षण।

शरीर के ऊपर होने वाली कृमियाँ मैल और पसीने प्रभृतिसे होती हैं। इनको जूँ और लीख कहते हैं। ये घने बालों और कपड़ों में रहती

हैं। ये अनेक पैर वाली और छोटी-छोटी होती हैं। जहाँ ये होती हैं, वहाँ खुजली चलती है। ये कोढ, पिडिका, फुन्सी, गाँठ और खाज पैदा कर देती हैं।

नोट—इन में से बहुत से कीड़े ऐसे छोटे होते हैं कि, बिना खुर्दबीन शीशे के दीखते भी नहीं। इनके पैदा होने से बुखार वगैर के अलावा अनेक खून-खराबी के वात-रक्त, दाद, खाज-खुजली प्रभृति रोग हो जाते हैं। यहाँ तक कि कोढ़ हो जाता है।

रक्तज क्रिमि होने से ज्वर, अतिसार, वमन, प्यास और बेहोशी प्रभृति के विकार होते हैं। इधर डाक्टर लोग जो विषम ज्वरों में कीड़ों का होना बताते हैं, वही बात जान पड़ती है। धन्य हमारे ऋषि-मुनियों को, जिन्होंने आज से लाखों-करोड़ों वर्ष पहले इन बातों का पता लगा लिया था।

यूनानी मत से क्रिमि रोग के कारण और लक्षण।

"इलाजुल गुर्बा" में लिखा है,—कीड़े आँतों में पैदा होते हैं। ये कितने ही प्रकार के होते हैं। एक लम्बे साँप-जैसे होते हैं। दूसरे चौड़े होते हैं। इन को हुब्बुलकरा और कद्दूदाना* कहते हैं। तीसरे प्रकार के कीड़े छोटे और सिर के कीड़ों-जैसे होते हैं। ये बहुधा मिथ्या आहार और गुदा को अच्छी तरह न धोने से बालकों की आँतों में होते हैं।

"मीज़ानुत्तिब्ब" नामक यूनानी हिकमत के ग्रन्थ में लिखा है :—कीड़े चार तरह के होते हैं —(१) बारह अंगुल या गज़ भर लम्बे होते हैं, उन्हें "केंचुए" कहते हैं। (२) कद्दू के बीज जैसे चौड़े होते हैं, उन्हें

---

* इन कीड़ों को कद्दूदाना इसलिये कहते हैं कि ये कीड़े कद्दू या लौकी के बीजों जैसे गुरियादार होते हैं। ये कीड़े बहुत लम्बे होते हैं और एक-एक कीड़े में अनेक गुरिया होती हैं। ये आँतों में ऐसे चिपटे रहते हैं कि, अनेक दस्तावर दवाओं से भी अपनी जगह नहीं छोड़ते। अगर किसी दवा से कद्दूदाने गिरते भी हैं, तो जड़ से नाश नहीं होते। इनकी बेल घटती नहीं, बढ़ती ही रहती है। अगर शीघ्र ही इनका उपाय नहीं किया जाता, तो अनेक भयङ्कर रोग पैदा हो जाते हैं।

"कद्दूदाना" कहते हैं। (३) गोल होते हैं, और (४) पतले और छोटे होते हैं। उन्हें "चिचिने" कहते हैं।

कीड़े होने के लक्षण।

जब ये होते हैं, तब होठ सूखे रहते हैं और रात के समय लार बहा करती है। मेदे के मुँह पर कुरेदनी सी मालूम होती है और भूख लगने के समय केंचुए ऊपर को चढते हैं। ये ऊपर ही की आँतों में होते हैं। कद्दूदानों और तीसरे प्रकार के केचुओं से भूख उल्टी बढ जाती है। ये कभी-कभी दस्तों में निकला भी करते हैं, तथा कूलन और अऊर नाम की आँतों में पैदा होते है। चिचने या चुन्ने बच्चोंके बहुत पडते हैं और नीचे की आँतों में पैदा होते हैं। इन से गुदा में खुजली चलती है।

एक हकीम साहब लिखते हैं और सच लिखते हैं कि, बाज-बाज औकात लक्षणों का ठीक ज्ञान न होने से, अच्छे-अच्छे वैद्य और डाक्टर भी इस रोग का निश्चय नहीं कर सकते। लोग इस रोग को मामूली समझते हैं, पर वास्तव में यह रोग मामूली नहीं। इस से मृगी, हैजा और पागलपन प्रभृति भयङ्कर रोग पैदा होते हैं, अजीर्ण से हैजा प्रभृति रोग पैदा होते हैं और अजीर्ण से कृमिरोग भी पैदा होता है। अत अजीर्ण से बचना चाहिये।

नोट—हमारे आयुर्वेद मे भी कृमिरोग की पैदायस अजीर्ण से लिखी है और यही वजह है कि, 'माधव निदान"-कर्त्ता ने कृमिरोग को अजीर्ण रोग के बाद लिखा है और पाण्डु या पीलिये को इसके बाद लिखा है, क्योंकि कृमिरोग भी पीलिये के कारणों में से एक है

डाक्टरी मत से कृमि रोग।

डाक्टरों के मत से मनुष्योंके भीतर सात तरहके कीडे होते है, जिन में से चार तरह के पेट वाले और तीन तरह के ठोस होते हैं, पर असल में तीन तरह के कीडे बहुत देखे जाते हैं —

(१) केंचुएकी तरहके कीडे पाँचसे चौदह इन्च तक लम्बे होते हैं। रंग कुछ-कुछ पीला होता है। इनके होने से चेहरा पीला पड जाता है, नींद कम आती है, भूख कम लगती है, पेट बढ जाता है, पेट में दर्द सा होता है, दस्त में आँव आता और प्यास जोर से लगती है। इनको "लार्ज शरन्द वर्म स" कहते हैं।

(२) चुरने कीडे होते हैं। ये सूत जैसे पतले और आध अगुल लम्बे होते हैं। थोडे से होते हैं, तब तो कुछ विशेष कष्ट नहीं होता, पर बढ जाने से बवासीर, मृगी, कम्प और काँच निकलने का रोग हो जाता है। इनको "स्मालथेड वर्म्स" कहते हैं।

(३) कद्दूदाने होते हैं। ये कीडे अलग-अलग होते हैं। जब सब मिल जाते हैं, तब एक पाँच गज़ लम्बा जीव बन जाता है। इनके होने से जठराग्नि मन्दी हो जाती है, इसी से भूख कम लगती और शरीर रूखा हो जाता है। इनको "टीयवर्म्स" कहते हैं।

कीडे पैदा होनेके कारण।

इनके पैदा होने का कारण बहुत ही जियादा मीठा खाना और सडे गले बासी भोजन करना है।

नोट—पहले मिठाई खिलानी चाहियें, जिस से कीड एक जगह इकट्ठे हो जाँय। इनके बाद दही में कमेला या कबीला खिलाना चाहिये। इस से ये मर जाते हैं। मर जाने पर, इनको अरण्डी के तेल या तारपीन के तेल का जुलाब देकर निकाल देना चाहिये।

वैद्यक-मत से, बायबिडङ्ग का चूर्ण शहत के साथ चटाना और ऊपर से बायबिडङ्ग का काढ़ा पिलाना अच्छा है। गुड में कबीला मिलाकर भी देते हैं। कबीला और बायबिडङ्ग इस रोग की अच्छी दवा है।



कृमिरोग की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर वैद्यको रोगी के अन्दर कीड़े मालूम हों, तो पहले वह रोगीको स्नेहन करावे और फिर "सुरसादि गण"से पकाये हुए घीसे से वमन करावे। फिर तेज नुसखे सेवन कराकर जुल्लाब करावे। इसके बाद जौ, बेर, कुलथी और बायबिडङ्ग से सिद्ध किये स्नेह और लवण से अस्थापन वस्ति करे। जब रोगी शुद्ध हो जाय, उसे निवाये पानी से स्नान करा कर, कृमिनाशक भोजन खिलावे, और फिर बिडङ्ग आदि से सिद्ध किये हुए स्नेह से अनुवासन वस्ति करे। यह विधि "सुश्रुत" में लिखी है।

(२) सुश्रुत में ही लिखा है, सिर, हृदय, नाक, मुँह और आँखों में हो जानेवाले कृमियों को, वैद्य विशेष कर अञ्जन, नस्य और अवपीड आदि से आराम करे। जैसे, घोड़े की लीद को सुखाकर, उसमें बायबिडङ्गके काढ़ेकी भावना दे और उसे फिर सुखावे। इसके बाद उस लीद को पीसकर, उसका प्रधमन नस्य दे, यानी उसे कागज़ की भोंगली द्वारा नाक में फूँके।

(५) बालकों का इलाज करते समय वैद्यको इस बात की जाँच अवश्य कर लेनी चाहिये, कि पेट में कीड़े तो नहीं पड़ गये। कीड़े पड़नेसे बालक जभी दूध पीता है, डाल देता है। उस दशा में, बिना कृमिरोग आराम हुए, कय बन्द नहीं होतीं और ज्वर भी नहीं उतरता। अगर कीड़ोंका वहम हो और लक्षण मिलें, तो बालक को दवा खिलानी और उस की गुदा में भी लगानी चाहिये।

(६) नित्य कटु और तिक्त यानी चरपरे और कड़वे पदार्थों का

भोजन कृमिरोग में हितकारी हैं। इससे कृमिनाश होते, रुचि बढती और अग्निदीप्त होती है, अतः वैद्य को अपने रोगी को ऐसे ही पदार्थ बताने चाहियें।

(३) रोम-पङ्क्तियोंमें होनेवाले कीडोंका इलाज, वैद्य इन्द्रलुप्त या गंज रोगकी तरह और दाँतोंको खानेवाले कीडोंका इलाज दाँतोंके रोगों को नाश करनेवाली विधियों से करे। रक्तज कृमियोंका इलाज कोढ में लिखी विधि से करे, परन्तु "सुरसादि गण" का प्रयोग तो सभी तरह के कृमियों के नाशार्थ विचार-पूर्वक करे। जैसे दाद, खाज, पामा, कच्छू, विचर्चिका, चर्मदल और कोढ ये सब रोग खून में कीडे होने से चमडे पर होते हैं। इन के नाश करने के लिए, वैद्य लेप लगाते और औषधियाँ पिलाते हैं। जैसे कूट, वायबिडङ्ग, पमार, हल्दी, सेंधानोन और सरसों—इन सब को नीबू के रस में पीसकर, दाद पर लगाने से दाद के कीडे मर जाते और दाद तथा कोढ आराम हो जाते हैं।

रोमों की जडों में रहने वाला खून, पित्त के साथ कुपित होकर, रोमों को गिरा देता है। फिर रुधिर के साथ मिलकर, कफ रोम-कूपों को रोक देता है, इस से फिर रोम पैदा नहीं होते। इसी को इन्द्र-लुप्त, खालित्य और रुज्या कहते हैं। साधारण लोग गञ्ज कहते हैं। इन बालों या रोमों की जडों में कीडे पैदा होकर गञ्ज कर देते हैं। इसी से सुश्रुतने कहा है कि, रोम-पङ्क्तियों में होने वाले कीडों का इलाज इन्द्रलुप्त या गञ्ज रोग की तरह करना चाहिये। जैसे, हाथी-दाँत की भस्म, बकरी का दूध और रसौत—इन तीनों का लेप करने से हाथ की हथेली में भी बाल पैदा हो जाते हैं, यानी इस लेप से रोगनाशक कीडे मर जाते हैं और बाल जमने लगते हैं।

नोट—नस्य, प्रधमन और अवपीड—इन तीनों का मतलब अगर जानना है, तो "चिकित्साचन्द्रोदय" प्रथम भाग के ६५ वें पृष्ठके नं० २०४-२०५ तक देखिये।

---

१ तोले "पुराना गुड" मिलाकर पीने से कोठे के सारे कीडे नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—अजवायन और गुड को मिलाकर खाने और ऊपर से बासी जल पीने से भी लाभ होता है।

(११) नीम के पत्तों के रसमें "शहद" मिलाकर पीने से क्रमि-रोग नष्ट हो जाता है।

(१२) ढाक के पत्तों के रस में "शहद" डालकर पीने से क्रमि रोग नष्ट हो जाता है।

(१३) धतूरे का रस पीनेसे क्रमिरोग नष्ट हो जाता है।

नोट—धतूरेके रसमें शहद मिलाकर पीनेसे अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(१४) मूसाकानीके पत्तोंको पीसकर, गेहूँके आटेमें मिलाकर, पूरियाँ बना लो और उन्हें खाओ। ऊपर से "सौवीर नामक काँजी" पीओ। इस तरह करने से सब तरह के कीडे नष्ट हो जाते हैं।

(१५) ढाकके बीजो के स्वरसमें "शहद" मिला कर पीनेसे क्रमि रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—ढाक के बीजों के कल्क में शहद मिलाकर पीने से भी कीडे नाश हो जाते हैं।

(१६) ढाकके बीज ५ माशे, "छाछ" में पीसकर पीनेसे क्रमिरोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बीजो को सिल पर महीन पीस कर छाछ में मिला लेना चाहिये।

(१७) बायबिडङ्ग का चूर्ण ५ माशे एक तोले शहदमें मिलाकर चाटने से क्रमि नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) सुरसादिगण की औषधियों को कूट पीस छान कर चूर्ण बना लो और "शहद" में मिलाकर चाटो। इससे क्रमि रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। सुश्रुत ने क्रमि रोग पर "सुरसादिगण" की औषधियों की बडी तारीफ लिखी है।

(१९) सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, इन्द्रजौ, नीम

की छाल, निशोथ, बच, और खेरसार—इन ग्यारह दवाओं का काढ़ा "गो मूत्र" में मिलाकर पीने से क्रमियों की कोटि भी फौरन नाश हो जाती है। पर कम से कम ११ दिन पिलाना चाहिये। परीक्षित है।

"वैद्य-जीवन" में लिखा है :—

त्रिकटुत्रिफलाकलिङ्गनिम्ब, त्रिवृदुसालदिरोद्भव कषाय ।
पशुमूत्रसमन्वितो निपीत, क्रमिकोटीरपि हन्ति वेगतोऽयम् ॥

(२०) ३ माशे कबीला ६ तोले पुराने गुड़ में मिला कर, ३ दिन तक, सेवन करनेसे पेट के सब कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—कबीला ६ माशे भी दिया जाता है।

(२१) खजूर के पत्ते दो तोले लेकर, डेढ़ पाव जल में काढ़ा बनाओ। जब आध पाव जल रह जाय, उतार कर छान लो और २४ घण्टे तक रखा रहने दो। दूसरे दिन उस बासी काढ़े में ६ माशे "शहद" डाल कर पीओ। इस तरह ७ दिन तक यही काढ़ा पीने से भयङ्कर क्रमि भी नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—खजूर की जड़ का नरम गूदा खाने से भी कीड़े मर जाते हैं।

(२२) कच्ची सुपारी मीठे नीबू के रस में ८ घण्टे तक घोट कर पीने से दारुण क्रमि भी नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२३) पकी खजूर १ छटांक खाकर, ऊपर से दो जँभीरी नीबू चूसने से मल के सारे कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(२४) बायबिडङ्गके काढ़े में बायबिडङ्ग का चूर्ण मिलाकर पीने से क्रमिरोग और क्रमिरोग से हुए रोगों का नाश होता है।

(२५) बायबिडङ्ग, ढाक के बीज और इन्द्रजौ—इनको महीन पीसकर चूर्ण कर लो। इसमें से ३ से ६ माशे तक चूर्ण "खाँड" मिला कर खाने से क्रमिरोग नष्ट हो जाता है।

(२६) नीबू के पत्तोंका रस शहद मिलाकर पीनेसे पेट के कीड़े मर जाते हैं।

(२७) खुरासानी अजवायन पान में खाने या नीम के पत्तों का रस पीने से कीड़े नाश हो जाते हैं। कहा है,—

पारसीकां यवानीं तु पर्णेन सह भक्षयेत् ।
कृमिजाल निहत्याशु पीतो निम्बरसोऽथवा ॥

(२८) खुरासानी अजवायन में सेंधानोन मिलाकर रोज़ सवेरे खाने से कृमिरोग, अजीर्ण और आमवात रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२९) तितली के बीजों का चूर्ण माठे या कच्चे नारियल के पानी के साथ पीने से कृमिरोग नष्ट हो जाते हैं।

(३०) दही में कमीला मिलाकर खिलाने से सब तरहके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३१) पहले रोगी को मिठाई खिला दो, इससे कीड़े इकट्ठे हो जायँगे। इस के बाद गुड़ में या दही में कमीला खिलादो। इससे कीड़े मर जायँगे। शेष में अरण्डी का तेल ४ तोले और तारपीन का तेल १० बूँद गरम दूधमें मिलाकर या ऐसे ही पिला दो। सब कीड़े निकल जायँगे। परीक्षित है।

(३२) बच, अजमोद, वायबिडङ्ग, ढाकके बीज, कचूर और हींग,— ये सब एक-एक तोले लो, और सोंठ २ तोले लो। पीछे पीस कूट कर चूर्ण बनालो। इस में से ३ से ६ माशे तक चूर्ण, गरम जल के साथ, लेनेसे कीड़े १०० तरह से निकलते हैं।

(३३) बिजौरे की जड़, लहसन, निशोथ, अजमोद और नीमके पत्ते—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, "गोमूत्र" में पीसकर पीनेसे कृमि नष्ट हो जाते हैं।

(३४) ढाक के बीज और अजवायन—दोनों को पीसकर खाने से कृमिरोग नष्ट हो जाता है।

(३५) कचूर का रस पीने से कृमि-रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कचूरके कन्दकी चकत्तियों की माला गलेमें पहननेसे भी कृमिरोग आराम हो जाता है। अगर दोनों काम किये जायँ तब तो कहना ही क्या!

(३६) कालेजीरेका चूर्ण "शहद" में मिलाकर लेनेसे क्रमि मर जाते हैं। परीक्षित है।

(३७) कमीला, वायबिडङ्ग, कारजकी गिरी, पित्तपापडेके बीज, किरमानी अजवायन—सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस कूट कर छान लो और अन्दाज़ का "पुराना गुड" मिलाकर तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना लो।

सेवनविधि—सवेरे-शाम एक-एक गोली ताज़ा पानी के साथ खाओ। दूसरे दिन उबाले हुए "अरण्डीके तेल" का जुलाब लो। इस तरह करने से हर तरह के कीडे दस्तों द्वारा निकल जायँगे। इसके बाद, डेढ माशे "वायबिडङ्ग का चूर्ण" शहद में मिलाकर, ११ दिन खाने से फिर कीडे पैदा न होंगे। परीक्षित है।

(३८) पलाश का पित्तपापडा ३ रत्ती से ६ रत्ती तक, रोज तीन दीन तक, रात को सेवन करने और चौथे दिन "अरण्डीके तेल" का जुलाब लेने से कीडे निकल जाते हैं। परीक्षित है।

(३९) अरण्डी के तेल में गोमूत्र मिलाकर पीने से पेटके रोग और कीडे नाश हो जाते हैं।

(४०) नारियल की दाढी पानी में औटाकर, सवेरे ही, खाली पेट में, पीने से क्रमि मर जाते हैं।

(४१) नीम के पत्तों को मीठे तेल में पकालो और छानकर रख लो। इस तेल के मलने से बाहरी कीडे जूँ लीक आदि नष्ट हो जाते हैं। इस को सूँघने और कानों में डालने से माथे के कीडे नष्ट हो जाते हैं।

(४२) अजवाइन, कचरी और सेंधानोन—पीसकर फाँकने और ऊपर से सिरका या काँजी पीने से पेट के कीडे मर जाते हैं।

(४३) कद्दू दाने होने की दशामें, नूनियाका साग रोज़ बनाकर

खाओ और चौथे दिन "अरण्डीके तेलमें गोमूत्र" मिलाकर पीओ। इस तरह करने से कद्दूदाने नष्ट हो जायँगे।

नोट—कद्दूदाने बड़ी कठिनाई से नष्ट होते हैं। इस रोगी को गुड़, उड़द, मैदा, मांस, कच्चा अन्न, मटर की फली, हरे चने, दूध, बहुत खटाई, गरिष्ट भोजन और तीक्ष्ण पदार्थों से बचना चाहिये। "हिंग्वाष्टक चूर्ण" तीन-तीन माशे दोनों भोजनके समय खाना चाहिये।

(४४) इन्द्रायणकी जड़, पानीके साथ, चन्दन की तरह घिसकर, गुदा के बाहर-भीतर लगाने से गुदा की सूजन, खुजली और ललाई आदि सारी शिकायतें रफा हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४५) चिरायता, दन्ती, हड़, बहेड़ा, आमला, विशाला, निशोथ, हल्दी,दारुहल्दी,बायबिडङ्ग,चीते की जड़की छाल और पलाशके बीज—इन सब को बराबर-बराबर लेकर काढ़ा बनाओ और पीओ। इस काढ़े से ज्वर और वमन आदि सहित कृमिरोग नाश हो जायगा।

(४६) छिला हुआ कबीला, पलाश के बीज, पुरानी बायबिडङ्ग और सेंधानोन—सबको बराबर-बराबर लेकर,कूट पीस छान कर,चूर्ण कर लो। मात्रा ६ से ८ माशे तक। अनुपान गरम जल। इस चूर्ण से गुदा के कीड़े निकल जाते हैं।

(४७) छिला हुआ कबीला दही में मिलाकर खाने से कृमि गिर जाते हैं। कबीला ३ माशे लेना चाहिये।

नोट—दही न हो या लेना न हो, तो इसे गरम जल से भी ले सकते हो। दो तीन दिन में आराम हो जाता है

(४८) सिरस की छाल एक तोला लेकर, आठ छटाँक जल में औटाओ, आठवाँ भाग जल रहने पर उतार कर मल छान लो और पी जाओ। इस काढ़ेसे सूजन सहित कृमि रोग नाश हो जाता है।

(४८) समन्दर-फलका ऊपरका जंजाल हटा कर, सात-सात दिन "बकरी के दूध और मूत्र" में उसे भिगो लो और सुखा लो। फिर उसको "हींग" के साथ कृमिरोगी को दो। अवश्य लाभ होगा।

(५०) दो माशे नौसादर "घी" में मिलाकर पिलाने से नारू या वाला नाश हो जाता है।

नोट—नारू की सूजन पर नौसादर का लेप करना चाहिये।

(५१) अनार की छाल का काढ़ा, चार आने भर तिल के तेल में मिलाकर, ३ दिन बराबर, पीने से सब कीड़े निकल जाते हैं। परीक्षित है।

(५२) सवेरे ही उठकर पहले "गुड़" खालो, फिर कुछ देर बाद बासी जल में "खुरासानी अजवायन" पीस कर पीलो। इस विधिसे कोठे के सब कीड़े मर जाते हैं। परीक्षित है।

(५३) खट्टे अनार के वृक्ष की छाल और उसकी जड़—इन दोनों का काढ़ा पीने से कीड़े मर जाते और दस्तों के साथ निकल जाते हैं।

नोट—गरम मिजाज वाले को गरम दवा कभी न देनी चाहिये। उसके लिये ऊपर की दवा उत्तम है। अगर रोगी दवा पीना न चाहे, तो हुकना या शाफा करना चाहिये। अगर यह भी न हो सके, तो नीचे के लेप करने चाहिये।

(५४) सिमाक, अकाकिया और गिले मखतूमको "शराब"में पीस कर, पेट पर लेप करना चाहिये। अथवा कड़वे बादाम, कमीला, तुरमस, किब्र और करम्ब को "सिरके"में पीसकर, पेट पर लेप करना चाहिए। ये नुसखे हिकमत के हैं।

(५५) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहसार, कालीमिर्च, शुद्ध मीठा तेलिया, धाय के फूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, नागरमोथा, रसौत, सोंठ, मिर्च पीपर, नागरमोथा, पाठा, नेत्रवाला और बेल-गिरी—इन को बराबर-बराबर लेकर, भाँगरेके रस में भावना देकर, गोली बना लो। ये गोलियाँ सब तरह के कृमिरोग नाश करती हैं। परीक्षित है।

नोट—ये गोलियाँ एक दूसरे वैद्य महाशय की परीक्षित हैं।

(५६) सवेरेही उठकर पहले "गुड़" खाओ। इसके बाद "तेजपात

और "अजवायन का चूर्ण" फांककर बासी पानी पीओ। इससे पेट के कीड़े गिर जाते हैं। परीक्षित है।

(५७) इन्द्रायण की जड़ और कालीमिर्च पीसकर सेवन करने से कृमि-रोग नाश हो जाता है।

(५८) नागरमोथा, मूसाकानी के फल, देवदारु और सहँजने के काढ़ेमें "पीपल और वायविडङ्ग के कल्क" को मिलाकर सेवन करने से गुदा और लिङ्ग दोनों मार्गों से प्रवृत्त हुए बहुत दिनों के कीड़े और उन से हुए रोग नष्ट हो जाते हैं।

(५९) कड़वे नीम के पत्ते और हींग मिलाकर खानेसे कृमिरोग नाश हो जाता है।

(६०) कड़वे नीम के पत्ते पीस-पीसकर लेप करने से नहरुआ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६१) कड़वे परवल के पत्ते १ तोले और धनिया १ तोले—दोनों को रातके समय १ पाव जलमें भिगो दो। सवेरे छानकर और "शहद" मिला कर, दिन में २ बार, नित्य पीने से कृमि-रोग आराम हो जाता है।

(६२) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध अभ्रकभस्म, शुद्ध लोहसार और शुद्ध मैनसिल,—इन सबको बराबर-बराबर लो और धाय के फूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, पठानो लोध, वायविडङ्ग, हल्दी और दारु-हल्दी—इन को भी बराबर-बराबर लेकर पीस कूट कर छान लो। सब को मिलाकर सात बार "अदरखके रस" में भावना दो। इस के बाद मसाले को खरल में डालकर "त्रिफले का रस" दे-देकर घोटो और चने-समान गोलियां बनालो। सवेरे ही एक गोली रोज़ खाने से सब तरह के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

नोट—यह नुसख़ा एक वैद्य महोदय अपना आजमूदा लिखते हैं। हमने आजतक नहीं आजमाया।

बालकोंके क्रमि रोग की चिकित्सा।

क्रमि-रोग बड़े छोटे सबको होता है, पर बच्चों को जियादा होता है। अक्सर बालकों के दस्तों में कीड़े नज़र आते हैं। इसका कारण बालकों को अधिक दूध पिलाना या दूध का दूषित होना है। जो महतारी भारी या गरिष्ठ भोजन करती हैं,उन्हें बदहज़मी बनी रहती है, इसीसे उनके बच्चों को क्रमिरोग ज़ियादा होता है। छोटे-छोटे बालकों को लाड-प्यार में नासमझ माता-पिता लड्डू,बरफी या ऐसी ही चीज़ें बहुत खिलाते हैं, इसलिये बरस डेढ़ बरस से ऊपरके बालकों को भी क्रमिरोग होता है।

कीड़ों के काटने से बालकों को बड़ी तकलीफ होती है। दिन-भर उनका हाथ गन्दी जगह में रहता है। साँझ होते ही वे माँ को हैरान करने लगते हैं। हज़ार तरह से राजी करने पर भी राज़ी नहीं होते। हाँ कैसे ? कीड़े खाते हैं। कीड़ोंके मारे सोये हुए बालक चौंक पड़ते और रोने लगते हैं। उनकी गुदा का रंग लाल हो जाता है, गुदा सूज जाती है, दस्त होने लगते हैं, पेट में दर्द होता है, शरीर पीला या सफेद पड़ जाता तथा दुबला हो जाता है। बच्चे दूध पीते ही वमन कर देते हैं, प्यास बढ़ जाती है, ज्वर चढ़ा रहता है। ऐसे क्रमिरोगवाले बालकोंकी वमन या क़य, बिना क्रमिरोग नाशक उपाय किये, हज़ारों दवाओं से भी नहीं मिटती।

(६३) प्याज का रस पिलाने से बालकों के पेट के कीड़े और बदहज़मी—ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—प्याज का रस लगाने से दाद का काटा आराम हो जाता है।

(६४) अरण्ड के पत्तों का स्वरस, तीन दिन तक, बालक की गुदा में लगाने से, चुने-कीड़े मर जाते हैं। परीक्षित है।

(६५) धतूरे के पत्तों का स्वरस, ३ दिन तक, बालक की गुदा में लगाने से चुने-कीड़े नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६६) घमीरा के पत्तों का स्वरस, ३ दिन तक, बालक की गुदा में लगाने से चुन्ने-कीड़े मर जाते हैं।

(६७) घमीरा के पत्तो का रस, धतूरे के पत्तों का रस और बँगला पानों का रस, तीन-तीन माशे लेकर, सब को मिला कर, दिन में २ दफा, नित्य, तीन रोज़ तक, बालक की गुदा में अँगुली से लगाने से सारे कीड़े बाहर निकल आते हैं।

(६८) महँदी और मोम मिलाकर बत्ती बनाओ और उसका धाफा करो। फिर थोड़ी देर बाद चिराग से बालक की गुदा देखो। जो कीड़ा गुदा के किनारे पर आ गया हो,उसे मोचने से पकड़ कर खींच लो।

(६९) जैतून का कच्चा तेल गुदा में लगाने से बालकों के कीड़े मर जाते हैं।

नोट—जैतून का तेल खाने से भी कीड़ों का नाश होता है।

(७०) मण्डूरभस्म और वायबिडङ्ग का चूर्ण, बराबर-बराबर लेकर, "शहद"के साथ चटानेसे बालकों के कीड़े निकल जाते हैं। परीक्षित है।

(७१) पलाश के पित्तपापड़े को उबाल कर, गुदा में पिचकारी मारने से सूत से कीड़े निकल पड़ते हैं। परीक्षित है।

(७२) कौंच की जड़ पानी में घिस कर पिलाने या कौंच के अङ्कुर छाछमें पिलाने से बालक के पेट के कीड़े नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—अरण्ड के पत्तों का रस भी यदि पिलाया जाय तो पेट के कीड़े निश्चय ही मर जायें। अगर इस रस में जरा सी हींग भी मिला दें, तो और भी अच्छा हो।

(७३) आधे माशे या एक माशे कबीले को आधी छटाँक जल में औटा लो। आठवाँ भाग जल रहने पर उतार कर छान लो और बालक को पिला दो। इससे चुन्ने गिर जायँगे।

नोट—(१) कुकरौंधेका रस ३ माशे पिलाने से भी बालक के कीड़े गिर जाते हैं।

नोट—(२) आधी रत्ती से २ रत्ती तक एलुआ, माँके दूधमें घिसकर, रोज चटाने से बालक को कृमि-रोग या पेटका रोग नहीं होता।

(७४) गिलोय और भैंसिया गूगल "अरण्ड के पत्तोंके रसमें" घिस कर, पेट पर लेप करने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

बाहर के कीड़ों की चिकित्सा

जूँ, लीख, नारू, दाँतों के कीड़े और रोमों के कीड़ों का इलाज।

(७५) इन्द्रायण के पके फल का थोड़ा सा गूदा लेकर, लोहेके बर्तन में रख कर, आग पर गरम करो, जब धूआँ निकलने लगे, उसे कीड़े वाले दाँत या दाढ़ में लगने दो। इस धूनी से कीड़ा तुरन्त ही मर जायगा। परीक्षित है।

(७६) वायविडङ्ग को छोटी चिलम में रख कर, ऊपर से साफ जलते कोयले या अङ्गार रखकर, तम्बाकू की तरह पीओ। इस उपाय से दाँतों के कीड़े मर जायँगे और मुँहसे खराब जल निकल कर दाँत-दाढ़ों का दर्द मिट जायगा। परीक्षित है।

(७७) दाँत या दाढ़ के कीड़ों के खाये हुए छेद में "कपूर" का टुकड़ा रखने से दाँत या दाढ़ के कीड़े तत्काल मर जाते हैं।

(७८) कड़वी तोरई का पिसा हुआ चूर्ण कागज़में रख, चुरट सी बना लो और दियासलाई दिखा कर सिगरेट की तरह पीओ। इससे दाँतों के कीड़े मर जायेंगे। परीक्षित है।

(७९) कड़वे परवल के पत्तों का रस लगाने से बाल जल्दी आ जाते हैं, यानी इन्द्रलुप्त या गज नाश होता है। परीक्षित है।

(८०) रीठे के पत्तों से सिर को धोकर, करज का तेल, नीबू का

रस और कड़वे कैथ के बीजों का तेल मिलाकर सिरपर लगाने से गंजरोग आराम हो जाता है।

(८१) धतूरे के पत्तों के रस में "पारा" खरल करके, सिरमें लगाने से जूँ नष्ट हो जाती है।

रसेन्द्रेण समायुक्तो रसो धत्तूरपत्रज।
ताम्बूलपत्रजोवाऽपि विलिप्तो यूकनाशन॥

(८२) पान के रस में पारा खरल करके सिर में लगाने से भी जूँ नष्ट हो जाती है।

(८३) कोह के फूल, बायविडङ्ग, कलिहारी, भिलावे, खस, लोबान, राल और मैनफल—इन सब को मिलाकर, आग पर डालकर धूप देने से मच्छर भाग जाते हैं। खाट में धूनी देने से खटमल दूर हो जाते हैं। शरीर में खेहने से शरीर और कपड़ों की जूँ नष्ट हो जाती है।

(८४) मँजीठ को काँजी में पीस कर लेप करने से जूँएँ नष्ट हो जाती है।

(८५) शिलारस को "गोमूत्र" में पीस कर लेप करने से जूँएँ नष्ट हो जाती हैं।

(८६) मैनसिल को "कड़वे तेल" मे पीस कर लेप करने से जूँ नष्ट हो जाती है।

(८७) लाख, भिलावे, श्रीवास, सफेद अपराजिता, अर्जुन की फल और अर्जुन के फूल, राल, बायबिडङ्ग और गूगल—इन सब की धूप बनाकर घर मे धूनी देने से सर्प, चूहे, डाँस, घुन, मच्छर और खटमल भाग जाते है।

(८८) बायबिडङ्ग, मैनसिल और गन्धक—इन तीनों को जल के साथ पीसकर लुगदी बना लो। फिर गोमूत्र और कड़वे तेल के साथ, तेल बनाने के कायदे से, तेल पका लो। इस तेल से सब तरह

की जूँ और लीख नाश हो जाती हैं, इस तैल को "विडङ्गतैल" कहते हैं। परीक्षित है।

(८८) धतूरे के पत्तों के कल्क (लुगदी) या धतूरे के पत्तों के रस के साथ पकाये हुए तेल की मालिश करने से क्षण-भर में जूएँ नष्ट हो जाती हैं। परीक्षित है।

(८९) अर्जुन के फूल, वायबिडङ्ग, जलपीपल, मोम, चन्दन, राल, खस, कूट और भिलावा,—इनकी धूनी देने से मच्छर और कीड़े नाश हो जाते हैं।

(९१) धतूरे के पत्तों के रस में "कपूर" मिलाकर सिर में लेप करने से सिर की जूँ नष्ट हो जाती हैं।

नोट—धतूरे के पत्ते न होने पर, पानों के रस में कपूर मिलाकर लेप करने से भी उतना ही लाभ होता है।

(९२) काली बेल के पत्तों का रस, कपूर और थोड़ा जल मिला कर रात को बालों में लगादो और ऊपर से इसी के पत्ते बाँध दो। सवेरे ही सब जूँ मर जायँगी।

नोट—यह बेल प्रायः झाड़ियों और बाड़ों पर होती है। इसके पत्ते कुछ २ अरण्ड के पत्तों से मिलते हैं। आकार में प्रायः दोनों के पत्ते एकसे होते हैं। केवल लम्बाई में काली बेल के पत्ते कुछ बड़े होते हैं।

(९३) कसौंदी के पत्ते काँजी में पीसकर लेप करनेसे दाद और कोढ़ आराम होते हैं।

(९४) कड़वे नीम के पत्ते जलाकर राख कर लो। उस राख को मीठे तेल में मिलाकर खुजली के स्थान पर लगाओ। खुजली नाश हो जायगी।

(९५) कड़वे नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी में रोज स्नान करने, उस के पत्तों का रस निकाल कर योंही पीने या गाय के दूध में पत्ते पीसकर पीने से २ मास में भयङ्कर रक्तपित्त और कोढ़ आराम हो जाते हैं। मगर रात को कड़वे नीम के वृक्ष के नीचे ही सोना और पथ्य सेवन करना भी आवश्यक है। परीक्षित है।

(८६) कडवे नीमकी ताज़ा निबौली खानेसे भी क्रमिरोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८७) कडवे नीम के बीज पीसकर लगाने से सिर की जूँ और खुजली दोनों नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८८) कुचले का बीज पानी में घिसकर लगाने से नारु आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—"इलाजुल गुर्बा" में लिखा है—नारु एक दाना होता है, जब वह फूट जाता है, तब उस में से एक तागा निकलता है। इस रोग में मल को शरीर से साफ करना चाहिए। नारु के इर्द-गिर्द जोंकें लगवानी चाहिएँ। गरम पानीमें तेल मिलाकर और उसे गरम करके, उस का नारु पर तरडा देना चाहिये। इस तरह तागा सहल से निकलता है। तागा टूटने न पावे, इस का बहुत खयाल रखो।

(८८) सफेद विषखपरे की जड विषखपरेके पत्तों के रसमें पीस कर और उस में ज़रा सी "सोंठ" मिलाकर नारु पर बाँधो, आराम होगा।

(१००) कलौंजी दही में पकाकर नारु पर लेप करो।

(१०१) जमालगोटा जल में पीसकर नारु पर लेप करो।

(१०२) चौलाई की जड पीसकर नारु पर बाँधो।

(१०३) जङ्गली कबूतर की बीट ४० माशे और गुड ४० माशे पीसकर, जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बनालो। नित्य १ गोली खाने से नारु आराम होता है।

(१०४) कबूतर का पङ्ख दो चाँवल के बराबर "गुड" में मिलाकर खाने से नारु आराम होता है।

(१०५) बकायन के सात दाने हर रोज निगल जाने से नारु आराम होता है।

(१०६) मूली या पानके रस में पारा पीसकर और उसमें एक तागा भिगोकर सिर में रखने से जूँ नष्ट हो जाती हैं।

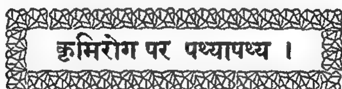
नोट—"इलाजुल गुर्बा" में लिखा है चाँदनीमें बैठकर कंघी करने से जूँ जियादा पैदा होती हैं।

(१०७) नीबू का रस शक्कर में मिलाकर सिर में मलने और दो पहर बाद सिर धो डालने से जूँ नाश हो जाती हैं।

(१०८) सांप की कांचली और अफीम की टिकिया बना कर नारु पर रख देने से नारु आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—किसी भी लगाने की दवा के साथ-साथ "निर्गौली" खाने से नारु निश्चय ही नाश हो जाता है।

(१०९) अगर ज़ख्म में कीड़े पड़ गये हों, तो घीग्वार का कान्द "गोमूत्र" में पीस कर, दिन में २।३ बार लगाओ।



कृमिरोग पर पथ्यापथ्य।

पथ्य

धूमपान, कफनाशक पदार्थ, शरीरको शुद्ध करनेवाले द्रव्य, पुराने लाल चाँवल, परवल, लहसन, बथुआ, चीता, आक के पत्ते, सरसों, नया केला, कटेली के फल, कड़वी चीजें, तालीसपत्र, नाड़ी के पत्ते, चूहे का माँस, वायविडङ्ग, नीम के पत्ते, हड़, तिल या सरसों का तेल, सौवीर काँजी, दही का तोड़, शहद, ताड़फल, भिलावा, गोमूत्र, पान, मदिरा—शराब, कस्तूरी, ऊँट का मूत्र, घी और दूध, हींग जवाखार, अजमोद, खैरसार, कुड़े की छाल, जम्भीरी नीबू का रस, कलौंजी,अजवायन, कड़वे, कसैले और चरपरे ये तीन रस—ये सब कृमिरोग में पथ्य हैं।

पुराने चाँवलों का भात, परवल, करेला, गूलर, बकरी का दूध, काँजी, कागज़ी नीबू का रस, साबूदाना, अरारूट, बारली प्रभृति लघु पथ्य सेवन करना अच्छा है। दोनों समय भात खाना चाहिये। कृमि-रोगमें अजीर्णसे अवश्य बचना चाहिये। कम और हल्का भोजन करने वाले को अजीर्ण नहीं होता।

अपथ्य।

पिट्ठी के बने भारी पदार्थ, मीठे पदार्थ, गुड़ वगैर, उड़द, दही जियादा घी, अधिक पतले पदार्थ, और मांस एवं दिन में सोना, मल मूत्र का वेग रोकना, वमन करना, वमन-वेग रोकना, विरुद्ध अन्न-पान, जल पीना, अजीर्ण में भोजन करना, पत्तों के साग, दूध, खटाई और मीठे रस—ये सब अपथ्य हैं।

कहा है—

क्षीराणि मांसानि गुड घृत च दधीनि शाकाश्च समच्चयन्ति।
समासतोऽम्लान्मधुरान्विकारान्कृमीन्जिघांस परिवर्जयेत् ॥



प्रश्नोत्तरी।

प्र० (१) कृमि रोग कितने प्रकार का होता है?

उ०—दो प्रकार का — १) बाहर का, और (२) भीतर का।

प्र० (२) कहते हैं, कृमि २० तरह के होते हैं, क्या यह ठीक है?

उ०—हां, मल से पैदा होने वाले सात तरह के, कफ से होने वाले छः तरह के और खून से होने वाले सात तरह के होते हैं, इस तरह २० तरह के कीड़े मनुष्य-शरीर में भीतर-बाहर होते हैं।

प्र० (३) बाहर के कीड़े कहां और कैसे पैदा होते हैं?

उ०—मैल या पसीनों से होने वाले कीड़े, जिन्हें जूँ या लीख कहते हैं, कपड़ों और बालों में होते हैं।

प्र० (४) भीतर के कीड़े कैसे पैदा होते और कहां रहते हैं।

उ०—(१) उड़द, लड्डू, घेवर एवं नमक और गुड़ वगैर खाने से मल के कीड़े पैदा होते हैं। ये बहुधा नीचे ही रहते और गुदा में काटते हैं।

(२) कफ से होने वाले कीड़े मांस, उड़द, गुड़, दूध, दही, सिरका वगैर खाने से होते हैं। ये कीड़े आमाशय में होते और पेटमें चारों ओर घूमते हैं।

(३) रक्तज कृमि रक्त या खून बहानेवाली शिराओं में रहते हैं। ये विरुद्ध

भोजन जैसे दूध और दही अथवा दूध मूली या दूध और मछली प्रभृति एक साथ खाने वगैर से पैदा होते हैं। ये फोड़े फुन्सी और खुजली तथा कोढ़ आदि पैदा करते हैं।

प्र० (५) क्रमि-रोग से कौन-कौन से रोग पैदा होते हैं ?

उ०—क्रमि रोगसे मृगी, हैजा, उन्माद और पाण्डु रोग प्रभृति भयङ्कर रोग पैदा होते हैं।

प्र० (६) बालकों के इलाज में वैद्य को किस बात का खयाल रखना चाहिये ?

उ०—बालकों का इलाज करते समय वैद्य को इस बात की जाँच अवश्य कर लेनी चाहिये, कि पेट में कीड़े तो नहीं पड़ गये। अगर पेट के कीड़ों का इलाज न किया जाय, पर ज्वर और वमन नाशक अनेक दवाएँ भी दी जायँ, तोभी कोई लाभ न होगा। बहुत से हकीम वैद्य क्रमि रोग पर ध्यान न देकर, अक्सर धोखा खाया करते हैं। जब तक क्रमिरोग नाशक दवा नहीं दी जाती बालकका दूध डालना, कय करना और ज्वर प्रभृति आराम नहीं होता।

प्र० (७) क्रमिरोग नाशक चन्द अच्छे-अच्छे नुसखे बचो के लिए बताओ।

उ०—(१) प्याज का रस पिलाने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। साथ ही पेटके और रोग भी चले जाते हैं।

(२) अरण्ड के पत्तों का स्वरस बालकों की गुदा में ३।४ दिन लगाने से गुदा के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३) धतूरे के पत्तों का स्वरस बालकों की गुदा में लगाने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(४) आधी रत्ती से २ रत्ती तक एलुआ माँ के दूध में घिस कर, रोज चटाने से बालकों को क्रमि रोग या पेट का रोग नहीं होता।

(५) गिलोय और भैंसा गूगल—इन दोनों को अरण्ड के पत्तों के रस में घिसकर पेट पर लगाने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

ये पाँचों नुसखे रामबाण हैं। हमारे आजमाये हुए हैं।

प्र० (८) बड़ों के क्रमिरोग नाश करने के लिए भी कोई आजमूदा नुसखा बताओ।

उ०—(१) खुरासानी अजवायन में सेंधानोन मिलाकर, रोज़ सवेरे खाने से क्रमि रोग, अजीर्ण और आमवात रोग नष्ट हो जाते हैं।

(२) कचूर का रस पीने से क्रमिरोग नष्ट हो जाता है।

(३) ३ माशे कबीला ६ तोले पुराने गुड़ में मिलाकर सेवन करने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(४) ३४६ सफे का १६ वाँ नुसखा परमोत्तम है।

नोट—ये सब परीक्षित योग हैं।

प्र०—(९) आपने इनके सिवा जो और नुसखे लिखे हैं, वे कैसे हैं ?

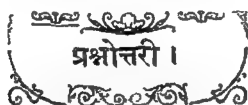
उ०—हमने इस पुस्तक में जितने नुसखे लिखे हैं, वे प्रायः सभी आजमूदा हैं, पर जो दस बीस या ज़ियादा दफे आजमाये हैं, उन्हीं के सामने "परीक्षित" शब्द लिखा है। जिनके सामने "परीक्षित" शब्द नहीं है, वे भी रामबाण हैं,फालतू नहीं।

अपथ्य ।

पिट्ठी के बने भारी पदार्थ, मीठे पदार्थ, गुड वगैर, उडद, दही जियादा घी, अधिक पतले पदार्थ, और मांस एवं दिन मे सोना, मल मूत्र का वेग रोकना, वमन करना, वमन-वेग रोकना, विरुद्ध अन्न-पान, जल पीना, अजीर्ण में भोजन करना, पत्तों के साग, दूध, खटाई और मीठे रस—ये सब अपथ्य है ।

कहा है—

क्षीराणि मांसानि गुड घृत च दधीनि शाकाश्च समच्चयन्ति ।
समासतोऽम्लान्मधुरान्विकारान्क्रमीञ्जिघांसु परिवर्जयेत् ॥



प्र० (१) कृमि रोग कितने प्रकार का होता है ?

उ०—दो प्रकार का — १) बाहर का, और (२) भीतर का ।

प्र० (२) कहते हैं, कृमि २० तरह के होते हैं , क्या यह ठीक है ?

उ०—हाँ, मल से पैदा होने वाले सात तरह के, कफ से होने वाले छ तरह के और खून से होने वाले सात तरह के होते हैं, इस तरह २० तरह के कीडे मनुष्य-शरीर में भीतर-बाहर होते हैं ।

प्र० (३) बाहर के कीडे कहाँ और कैसे पैदा होते है ?

उ०—मैल या पसीनों से होने वाले कीडे, जिन्हें जूँ या लीख कहते हैं, कपडों और बालो में होते हैं ।

प्र० (४) भीतर के कीडे कैसे पैदा होत और कहाँ रहते हैं ।

उ०— (१) उडद, लड्डू, घेवर एव नमक और गुड वगैर खाने से मल के कीडे पैदा होते हैं । ये बहुधा नीचे ही रहते और गुदा में काटते हैं ।

(२) कफ से होने वाले कीडे मांस, उडद, गुड, दूध, दही, सिरका वगैर खाने से होते हैं । ये कीडे आमाशय में होते और पेटमें चारों ओर घूमते हैं ।

(३) रक्तज कृमि रक्त या खून बहानेवाली शिराओं में रहते है । ये चिन्ह

भोजन जैसे दूध और दही अथवा दूध मूली या दूध और मछली प्रभृति एक साथ खाने वगैर से पैदा होते हैं। ये फोड़े फुन्सी और खुजली तथा कोढ़ आदि पैदा करते हैं।

प्र० (५) कृमि-रोग से कौन-कौन से रोग पैदा होते हैं?

उ०—कृमि रोगसे मृगी, हैजा, उन्माद और पाण्डुरोग प्रभृति भयङ्कर रोग पैदा होते हैं।

प्र० (६) बालकों के इलाज में वैद्य को किस बात का खयाल रखना चाहिये?

उ०—बालकों का इलाज करते समय वैद्य को इस बात की जांच अवश्य कर लेनी चाहिये, कि पेट में कीड़े तो नहीं पड़ गये। अगर पेट के कीड़ों का इलाज न किया जाय, पर ज्वर और वमन नाशक अनेक दवाएँ भी दी जायँ, तोभी कोई लाभ न होगा। बहुत से हकीम वैद्य कृमि रोग पर ध्यान न देकर, अक्सर धोखा खाया करते हैं। जब तक कृमिरोग नाशक दवा नहीं दी जाती बालकका दूध डालना, क्य करना और ज्वर प्रभृति आराम नहीं होता।

प्र० (७) कृमिरोग नाशक चन्द अच्छे-अच्छे नुसखे बच्चों के लिए बताओ।

उ०—(१) प्याज का रस पिलाने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। साथ ही पेटके और रोग भी चले जाते हैं।

(२) अरण्ड के पत्तों का स्वरस बालकों की गुदा में ३।४ दिन लगाने से गुदा के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३) धतूरे के पत्तों का स्वरस बालकों की गुदा में लगाने से कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(४) आधी रत्ती से २ रत्ती तक एलुआ माँ के दूध में घिस कर, रोज़ चटाने से बालकों को कृमि रोग या पेट का रोग नहीं होता।

(५) गिलोय और भैंसा गूगल—इन दोनों को अरण्ड के पत्तों के रस में घिसकर पेट पर लगाने से बालकों के पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। ये पाँचों नुसखे रामबाण हैं। हमारे आजमाये हुए हैं।

प्र० (८) बड़ों के कृमिरोग नाश करने के लिए भी कोई आजमूदा नुसखा बताओ।

उ०—(१) खुरासानी अजवायन में सेंधानोन मिलाकर, रोज़ सवेरे खाने से कृमि रोग, अजीर्ण और आमवात रोग नष्ट हो जाते हैं।

(२) कचूर का रस पीने से कृमिरोग नष्ट हो जाता है।

(३) २ माशे कबीला ६ तोले पुराने गुड़ में मिलाकर सेवन करने से कीटे नष्ट हो जाते हैं।

(४) ३४६ सफे का १६ वाँ नुसखा परमोत्तम है।

नोट—ये सब परीक्षित योग हैं।

प्र०—(९) आपने इनके सिवा जो और नुसखे लिखे हैं, वे कैसे हैं?

उ०—हमने इस पुस्तक में जितने नुसखे लिखे हैं, वे प्रायः सभी आजमूदा हैं, पर जो दस बीस या जियादा दफे आजमाये हैं, उन्हीं के सामने "परीक्षित" शब्द लिखा है। जिनके सामने "परीक्षित" शब्द नहीं है, वे भी रामबाण हैं, फालतू नहीं।

आठवाँ अध्याय

पाण्डु-वर्णन ।

पाण्डुरोग की क़िस्में ।

"माधव निदान" में लिखा है:—

पाण्डुरोगा स्मृता पञ्चवातपित्तकफास्त्रय ॥
चतुर्थ सन्निपातेन पञ्चमो भक्षणात्मृद ॥

(१) वातका, (२) पित्तका, (३) कफ का, (४) सन्निपातका (५) मिट्टी का,—इस तरह पाण्डु रोग पाँच तरह का होता है ।

नोट—यह मत चरक ऋषि का है । चरक के चिकित्सा-स्थान के बीसवें अध्याय का ही यह श्लोक है । माधवनिदानकर्त्ताने अपने ग्रन्थ में थोका यों उठा लिया है । माधवनिदानकर्त्ताने ही नहीं,—भावप्रकाश बङ्गसेन प्रभृति प्राय सभी ग्रन्थों के कर्त्ताओंने इसे ज्यों-का-त्यों ले लिया है । महर्षि वाग्भट्टने लिखा है —

स पञ्चधा पृथग्दोषैः समस्तैर्मृत्तिकादनात् ।

वह पाण्डुरोग वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और मृत्तिका-जन्य—इस तरह पाँच प्रकार का होता है ।

हारीत ने लिखा है,—

वातिक पैत्तिकञ्चैव श्लेष्मिक सान्निपातिक ।
पञ्चमो रुतया प्रोक्तो यद्ये चैषातु मन्भवम् ॥

वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और रुक्षण—ये पाँच प्रकार के पाण्डुरोग होते हैं। लेकिन धन्वन्तरि भगवान् सुश्रुत से कहते हैं —

पाण्डुवामयोऽष्टार्द्धविध प्रदिष्ट पृथक्समस्तैर्युगपच्चदोषे ।
सर्वेषु चैवस्विह पाण्डुभावो यतोधिकोऽत खलु पाण्डुरोग ॥

वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज—इस तरह पाण्डुरोग चार प्रकार का होता है। सब तरह के पाण्डुरोगों में, प्राय सब अवयवों में, पीलापन ज़ियादा होता है, इसी से इस रोग को पाण्डुरोग—पीलिया कहते हैं।

अब रही यह बात, कि सुश्रुत के सिवा चरक, हारीत और वाग्भट्ट आदि नये पुराने आचार्य पाण्डुरोग को पाँच तरह का मानते हैं और सुश्रुत चार प्रकार का। इस में कौन सी बात ठीक है? असल बात यह है कि, वास्तव मे पाण्डु चार प्रकार का ही होता है। मिट्टी खाने से जो पाँचवा माना जाता है, वह कारण-भेद है, जाति-भेद नहीं। सुश्रुत आचार्य ने यह समझ कर कि, मिट्टी खाने से हुए पाण्डुरोग की चिकित्सा और कारणों से कुपित हुए दोषों से पैदा हुए पाण्डुरोग की चिकित्सा करने से हो जाती है, उसे अलग नहीं लिखा। परन्तु चरक ऋषि ने इस मिट्टी खाने से पैदा होने वाले को अलग इसलिये कहा कि, और कारणों से कुपित हुए वात आदि दोष और रोगों को भी पैदा करते हैं, परन्तु यदि मिट्टी खाने से कुपित होते हैं, तो विशेष कर पाण्डुरोग ही पैदा करते हैं और मिट्टी खाने से हुए पाण्डुरोग की चिकित्सा भिन्न प्रकार से होती है। इन्ही बातों का विचार करके, चरक ने मिट्टी खाने से हुए पाण्डुरोग को पाँचवाँ माना है।

पाण्डुरोग के कारण।

अत्यन्त मैथुन करने, खट्टे पदार्थ खाने, बहुत शराब पीने, मिट्टी

खाने, दिनमे सोने और अत्यन्त तीक्ष्ण पदार्थ राई प्रभृति खाने से वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष कुपित होकर पाण्डु रोग करते हैं ।

पाण्डु रोग की सम्प्राप्ति ।

अति मैथुन करने और खट्टे पदार्थ खाने प्रभृति कारणो से वात, पित्त और कफ कुपित होकर, रुधिर—खून को बिगाड़ कर, चमड़े के रंग को पीला कर देते हैं ।

नोट—रुधिर या खून तो उपलक्षण मात्र है । असल में दोष चमड़े और मांसको दूषित करते हैं । इस रोगमें वात, पित्त और कफ तीन दोष और रस रक्त आदि दृष्य हैं। हारीत मुनि "रस" को दृष्य कहते हैं ।

"हारीत संहिता" में लिखा है—बहुत राह चलने से, ज्वर पीड़ित होने से, रक्तस्राव होने या खून गिरने से, व्रण होने से, अत्यन्त चिन्ता होने से, घोर परिश्रम करने से, मलमूत्रादि वेगों के रोकने से, खार और खट्टे पदार्थ खाने से, प्रभात समय मैरेय नामक मदिरा पीने से, कसरत न करने से, मैथुन करने से, निद्रा-नाश होने से, दिन में अत्यन्त सोने से, मिट्टी खाने से, रोग पीड़ित और शिथिल शरीर होने पर भी रास्ता चलने से, नमकीन, चरपरा, खट्टा, कसैला खाने से और निरन्तर मैथुन का अतिक्रम होने से खून सूख जाता है और उससे पाण्डुरोग हो जाता है ।

"चरक" में लिखा है—खार, खटाई, निमक, अत्यन्त गरम, विरुद्ध भोजन, असात्म्य भोजन, सेम, उड़द, तिल की खल, तिल और तेल का नित्य सेवन, ग्रहणी दोष आदि कारणों से अन्न का विदग्ध पाक होना, दिन में सोना, मिहनत न करना, अत्यन्त स्त्री-प्रसंग, वमन विरेचन आदि पंच कर्म की विषमता, मल-मूत्रादि का वेग रोकना, चिन्ता, भय, क्रोध और शोक—इन कारणों से हृदय में ठहरा हुआ पित्त, बलवान वायु से फेंका जाकर, हृदय-आश्रित दश धमनी नाड़ियों

द्वारा, सारे शरीर में व्याप्त हो जाता है तथा चमडा और मासके भीतर कफ,वात और रुधिर को दूषित करता है एवं चमडे और मास को भी दूषित करता है, इसी से चमडे का रग पीला, हल्दी के रग का, हरा और अनेक प्रकार के मिले रग वाला हो जाता है—इसी को पाण्डु रोग कहते हैं।

नोट—डाक्टरो का मत है कि, पित्त के कोप से ही पित्त, सारे शरीर में सञ्चारित होकर पाण्डु रोग करता है। असल में यकृत के दोषसे पाण्डुरोग पैदा होता है। इस के सिवा वृक्कयन्त्र या गुर्दों के काम मे गडबडी होने से अथवा अन्य विकारों से भी पाण्डुरोग होता है। यकृत के कोठे में जो पित्त की थैली है, उस में से हर रोज प्राय दस छटाँक पित्त निकल कर, किये हुए भोजनके पचाने में मदद देता है। इस के सिवा, वह पित्त शरीर के और भी अनेक काम करता है। अगर किसी वजह से उस पित्त के निकलने में कुछ रुकावट होती है या वह कम निकलता है, तो न निकला हुआ पित्त सूख जाता और खून मे मिलकर हृदय मे चला जाता है। हृदय से यह धमनियों की राह से खून के साथ-साथ सारे शरीर में जाकर कफ, रस, खून और मास धातुओं को बिगाड कर, चमडे और मास के भीतरी भाग मे रहकर, शरीर का रग बिगाड कर, पाण्डुरोग पैदा करता है।

पाण्डुरोग पैदा होने से पहले शरीर और मन मे अत्यन्त खिन्नता होती है। छाती में बाई ओर जो हृदय का स्पन्दन निरन्तर होता रहता है, उस की सख्या बढ जाती है, यानी हृदय बहुत जियादा फडकने लगता है शरीर की रूखी कान्ति हो जाती है, भोजन को जी नहीं चाहता, खाया हुआ नहीं पचता और पसीना रुक जाता है। हमने ये चन्द पंक्तियाँ "वैद्य" मुरादाबाद से ली हैं, अत इन नोटोंके लिए हम लेखक महोदय के कृतज्ञ हैं।

पाण्डु रोग के पूर्व रूप।

"सुश्रुत" में लिखा है,—जब पाण्डु या पीलिया होने वाला होता है, तब चमडे का फटना, मुँह से बारम्बार थूकना, अंगों का जकडना मिट्टी खाने पर मन चलना, आँखों पर सूजन आना, मल और मूत्र का पीला होना तथा अन्न का न पचना—ये लक्षण पहले ही नज़र आते हैं।

"चरक" में लिखा है—हृदय का फड़कना, देह का रूखा सा होना पसीनों का न आना, एवं बिना मिहनत किये थकान सी मालूम होना—ये पाण्डुरोग के पूर्वरूप हैं।

हारीत लिखते हैं—जिसे पाण्डुरोग होने वाला होता है, उसके आँखों के कोनों में सूजन आ जाती है, शरीर पीला हो जाता है, मुँह में थूक आता है और चमड़ा फट जाता है।

वाग्भट्ट लिखते हैं—पाण्डुरोग होने से पहले हृदय का स्पन्दन होता है, चमड़ा रूखा हो जाता है, अरुचि हो जाती है, पेशाब पीला होता है, पसीने नहीं आते और अग्नि मन्द हो जाती है।

नोट—इन सब आचार्य्यों के कथन में क्या भेद है, उसे पाठक सहज में देख सकते हैं। हाँ, एक बात और याद रखनी चाहिये कि, पाण्डुरोग होने से पहले हृदय की धड़कन बहुत बढ़ जाती है और पसीनों का आना बन्द हो जाता है, यह चरकने लिखा है। वाग्भट्टने भी हृदयका स्पन्दन लिखा है।

पाण्डु के साधारण लक्षण।

पीलिया होने से कान में आवाज़ होना, मन्दाग्नि, कमज़ोरी, अंगों का दुखना, नींद न आना, भ्रम, थकान, देह में पीड़ा, ज्वर, श्वास, भारीपन और अरुचि ये लक्षण होते हैं। ऐसा जान पड़ता है, मानो कोई सारे अङ्गों को मथे डालता है। नेत्र-गोलकों पर सूजन आजाती है, रंग हरा सा हो जाता है, बाल गिर जाते हैं या रोमाञ्च होता है, देह की कान्ति नष्ट हो जाती है, रोगी का स्वभाव क्रोधी हो जाता है, वह शीत से द्वेष करता है, नींद आती है, हर समय थूथू करता रहता है, थोड़ा बोलता है, चलने और मिहनत करने से कमर, जाँघों और पाँवों में दर्द होता है और वे रह जाते हैं।

वातज पाण्डु के लक्षण।

बादी के पाण्डु रोग में चमड़ा, नेत्र और मूत्र में रूखापन,

कलाई और ललाई होती है, कम्प होता है, सुई चुभाने की सी वेदना होती है, पेट पर अफारा होता है तथा भ्रम और शूल आदि होते हैं।

नोट—"चरक" में लिखा है,—बादी करनेवाले अन्नपानादि सेवन करने और बादी की उपचार या उपवास आदि करनेसे वायु कुपित होकर, कष्टसाध्य पाण्डुरोग पैदा करता है। इस में शरीर का रङ्ग रूखा और काला रङ्ग मिला सा हो जाता है। शरीर में दर्द होता है। सुई चुभाने की सी पीड़ा होती है। कँप-कँपी आती है। पसलियों और सिर में दर्द होता है। मल सूख जाता है। मुख में विरसता होती है। सूजन, कमजोरी और अफारा होता है।

वाग्भट्ट वातज पाण्डु में शूल चलना, चमके मारना, कम्प होना, नाड़ी, नाखून, विष्ठा, मूत्र और नेत्रों का काला, रूखा और लाल हो जाना प्रभृति कहते हैं।

सुश्रुत कहते हैं—वायु के पाण्डु में नेत्रों में पीलापन लिये कलाई होती है, नीली-नीली नसें चमकती हैं, और मल मूत्र नाखून और मुख भी पीलापन लिये काले से होते हैं। इस में और भी वायु के उपद्रव होते हैं।

हारीत लिखते हैं—चमके चलते हैं, सिर भारी रहता है, कठोरता होती है, चमड़ा मूत्र, नेत्र और नाखूनों में पीलापन रहता है।

खुलासा—छाती में अतीव अशान्ति या बेचैनी सी रहती है, पसलियों में दर्द होता है, कभी-कभी श्वास लेने में भी कष्ट होता है, मुँह का स्वाद खराब रहता है, शरीर में दर्द होता है, शरीर काँपता और सूजन आजाती है, मल मूत्र काले होते हैं तथा नेत्र और मुख किसी कदर काले हो जाते हैं।

पित्तज पाण्डु के लक्षण।

जिसे पित्त का पाण्डुरोग होता है, उस के मल, मूत्र और नेत्र पीले हो जाते हैं, रोगी दाह, प्यास और ज्वर से पीड़ित रहता है, मल पतला उतरता है और रोगी के शरीर की कान्ति अत्यन्त पीली होती है।

नोट—वाग्भट्ट लिखते हैं—पित्त से पैदा हुए पाण्डुरोग में नाड़ी, नाखून, विष्ठा मूत्र और नेत्रों में पीलापन होता है तथा ज्वर, प्यास, पसीना, बेहोशी, शीतल

पदार्थों की इच्छा, यदबू, मुँह का कड़वापन, पतला मल और दाह—ये सब लक्षण होते हैं।

सुश्रुत कहते हैं,—पित्त के पीलिये में नेत्र, मल, मूत्र, नाखून, और मुख पीले होते हैं, नसें पीली-पीली चमकती है और पित्त के अन्य उपद्रव भी होते हैं।

हारीत लिखते हैं—श्यामपना, शरीर का पीलापन, शोप, मुँह का कडवापन, मन्द ज्वर, प्यास, मोह-बेहोशी, सूजन और पीली कान्ति—अगर ये लक्षण हों, तो पित्त का पाण्डुरोग समझो।

"चरक" में लिखा है—पित्तकारक आहार विहार से पित्त कुपित होकर, रक्तादि धातुओं को दूषित करके, पाण्डुरोग पैदा करता है। पित्त प्रधान पाण्डुरोग में रोगी का रङ्ग हरा या पीला होता है, ज्वर, दाह, वमन, मूर्च्छा और प्यास होती है, तथा मल मूत्र पीले होते हैं। रोगीका मुँह कड़वा रहता है, वह खाना नहीं चाहता, नरम और खट्टे पदार्थ सहन नहीं कर सकता, खट्टी डकारें आती हैं, अन्न विदग्ध होने से शरीर में विदाह होता है, बदनमें बदबू निकलती है, मल पतला उतरता है, शरीर कमजोर हो जाता है और सामने अँधेरा मालूम होता है। रोगी शीतल पदार्थों या ठण्डको पसन्द करता है।

कितने ही आचार्य्य 'रोगी शीतकी इच्छा करता है,' ऐसा लिखते हैं और कितने ही नहीं। वाग्भट्टने पसीने आना लिखा है, पर डाक्टर कहते हैं, कि पसीनों का न आना ही पाण्डु का प्रधान कारण है। चरकने स्वय पूर्व रूप में पसीनोंका न आना लिखा है। माधव प्रभृति और आचार्य्योंने पसीनों का नाम भी नहीं लिया है।

खुलासा—पित्तका पाण्डु होनेसे नेत्र और शरीरका रंग हल्दी-जेसा हो जाता है। पेशाव का रङ्ग केसर के समान होता है, तरह-तरह की खुजली सी चलती हैं, रोगी को अपना शरीर बोझ सा मालूम होता है, स्वभाव चिरचिरा हो जाता है, मन अत्यन्त नाखुश रहता है, मुँहका स्वाद कड़वा या खराब हो जाता है, रोगी हर समय थूकना चाहता है और नाडी अत्यन्त क्षीण चलती है।

नोट—पित्तज पाण्डुरोग में धात्रीलोह, नवायसलोह, पाण्डुपञ्चानन रस प्रभृति अच्छे हैं। आगे नुसखों में बनाने की विधि लिखी है।

कफज पाण्डुके लक्षण।

जिसे कफ का पाण्डुरोग होता है, उस के मुँह से कफ गिरता है,

सूजन होती है, तन्द्रा या आंव आती है, आलस्य होता है, शरीर भारी रहता है तथा चमड़ा, नेत्र, मूत्र और मुख सफेद हो जाते हैं।

नोट—"चरकमें" लिखा है,—कफकारी पदार्थोंसे कफ कुपित होकर, रक्तादि धातुओं को बिगाड़ कर, कफ का पाण्डुरोग पैदा करता है। इस में भारीपन, तन्द्रा, वमन, सफेद रंग होना, लार गिरना, रोएँ खड़े होना, थकान मालूम होना, बेहोशी, भ्रम, क्लम, श्वास, खाँसी, आलस्य, अरुचि, आवाज रुकना, गला बैठना, मूत्र, नेत्र और विष्ठा का सफेद होना, रूखे, कड़वे, और खट्टे पदार्थों का अच्छा लगना, सूजन और मुँह का जायका नमकीन सा रहना—ये लक्षण होते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है—कफ के पाण्डु में आँखें सफेदी लिये पीली हों तथा मल, मूत्र, नख और मुँह भी ऐसे ही सफेदी मायल पीले हों, सफेद-सफेद नसें चमकें तथा और भी कफ के उपद्रव हों।

"वाग्भट्ट"में लिखा है—कफज पाण्डुरोग में नाड़ी, नाखून, मल और मूत्र सफेद होते हैं, तन्द्रा आती है, मुँह का जायका नमकीन रहता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं, स्वरभंग, खाँसी और क्षय प्रभृति लक्षण होते हैं।

हारीतने प्रस्वेद या पसीनों का होना ही अधिक लिखा है।

खुलासा—कफज पाण्डु होनेसे सारा शरीर, विशेष कर चेहरा, पाण्डुवर्ण हो जाता है, आँखों में जरा भी सुर्खी नहीं रहती, मुँहका जायका बहुत ही बुरा हो जाता है, आँखो के गड्ढो से सूजन उठकर क्रम से मुख पर फैलती है, फिर पेट और पाँवों पर फैलती है, मुँह से लार गिरती और क्षय होती है, आवाज बैठ जाती है, खाँसी आती है एव रोम खड़े हो जाते हैं इत्यादि।

सन्निपातज पाण्डुरोग।

सब तरहके अन्नोंके सेवन करने वाले मनुष्यके दूषित हुए तीनों दोषों से, ऊपर कहे हुए तीनो दोषों के लक्षणों वाला, अत्यन्त असह्य घोर पाण्डुरोग होता है। सन्निपातके पाण्डुवाले को तन्द्रा, आलस्य, सूजन, वमन, खाँसी, थुक-थुकी, शोष, पतले दस्त, ज्वर, मोह, प्यास, ग्लानि और इन्द्रियों की शक्तिका नाश—ये लक्षण होते हैं। उत्तम वैद्य को ऐसे रोगी का इलाज न करना चाहिये।

मिट्टी खाने से हुए पाण्डु के लक्षण।

जिस मनुष्य का मिट्टी खानेका स्वभाव पड जाता है, उसके वात, पित्त और कफ कुपित हो जाते है। कसैली मिट्टी से वायु कुपित होता है। खारी मिट्टी से पित्त कुपित होता है। मीठी मिट्टी से कफ कुपित होता है। खायी हुई मिट्टी पेट में जाकर रसादिक धातुओं को रूखा कर देती है। जब रूखापन पैदा हो जाता है, तब जो अन्न खाया जाता है, वह भी रूखा हो जाता है। फिर वही मिट्टी पेट में पहुँच कर, बिना पके रस को, रस बहाने वाली नसों में ले जाकर, नसों की राह को बन्द कर देती है। जब रस बहाने वाली नसों की राहें रुक जाती हैं, तब इन्द्रियों का बल नाश हो जाता है, इन्द्रियों की अपने-अपने विषयों को ग्रहण करने की शक्ति नाश हो जाती है, शरीर की कान्ति, तेज और ओज क्षीण हो जाते हैं, तब पाण्डु रोग पैदा होता है। पाण्डुरोग के होने से बल, वर्ण और अग्नि का नाश हो जाता है।

विशेष लक्षण।

नेत्र, कपोल, भृकुटी पैर, नाभि और लिङ्ग में सूजन आजाती है, कोठेमें कीडे पड जाते है, कफ मिला दस्त होता है। जेज्जट आचार्य कहते है, जब सभी पाण्डुरोगों में पेट में कीडे पड जाते है, तब ये लक्षण होते हैं। कोई-कोई कहते हैं, यह मिट्टी खाने से हुए पाण्डु-रोगके लक्षण हैं। विदेहने तो साफ कहा है कि, ये मृतिकाजन्य यानी मिट्टी खाने से हुए पाण्डुरोग के लक्षण हैं।

नोट—वाग्भट कहते हैं, मिट्टी खाने से हुए पाण्डुरोगी के नाभि, पैर और मुँह सूज जाते हैं। रोगी कीड़ों से मिला, रक्त और कफ संयुक्त पाखाना फिरता है।

हारीत कहते हैं—मिट्टी खानेसे घोर पाण्डुरोग होता है। यह पाण्डु बड़ा कठिन

और धातुओं को क्षय करने वाला होता है। मिट्टी खाने से स्रोत भर जाते हैं और उनके रुकने से रक्तका सञ्चार नहीं होता, अतः रस से शरीरकी पुष्टि नहीं होती। मिट्टी खानेसे कुपित हुए वातादिक दोष बड़े बलवान होते हैं। ये कान्ति, बल और जीवन की आशा को शीघ्र ही नष्ट कर देते हैं। इस पाण्डुरोग से जठराग्नि नष्ट हो जाती है।

"चरक"में लिखा है—मिट्टी रूखेपनके कारण रसादि धातुओं और भोजन करे हुए अन्नको रूखा कर देती तथा शरीरके सारे छेदोंको रोक देती है। इस से इन्द्रिय-बल, तेज, वीर्य्य और ओज धातु नष्ट हो जातीं और बल वर्ण तथा अग्नि को नाश करनेवाला पाण्डुरोग पैदा हो जाता है। नेत्र-गोलक,भौंह,पैर,नाभि प्रभृतिमें सूजन, चढ़ आती है। रोगी के कोठे में कीड़े पड़ जाते हैं, दस्त पतले लगते हैं एवं दस्तो में खून और कफ का लगाव रहता है।

"भावप्रकाश" में लिखा है—मिट्टी खाने से हुए पाण्डुरोग वाले को तन्द्रा, आलस्य, श्वास, खाँसी, शूल और अरुचि ये रहते हैं तथा पेटमें कीड़े रहते हैं। आँखों के गोलक, गाल,भौं,पाँव,नाभि और लिंग पर सूजन होती है और कफ मिले अनेक दस्त आते हैं।

पाण्डु-शोथ के लक्षण।

जब पाण्डुरोग अत्यन्त बढ़ जाता है, तब शरीरका निकम्मा जलीय भाग, मूत्र और पसीने प्रभृति के द्वारा, अच्छी तरह बाहर नहीं निकलता—शरीर के चमड़े और मांसके भीतरी भाग में रुकने लगता है, तब शरीर के किसी अङ्ग में या सारे शरीर में शोथ या सूजन पैदा हो जाती है।

नोट—सब तरह के शोथो पर "पुनर्नवाष्टकक्वाथ" खूब ही अच्छा है। आगे इस के बनानेकी विधि लिखी है। "पुनर्नवादि तैल"की मालिश कराने और"पुनर्नवाष्टक क्वाथ" पिलाने से पाण्डुरोग मय सूजन के नष्ट हो जाता है।

पाण्डुरोग की साध्यासाध्यता।

(१) बहुत दिन का पुराना पाण्डुरोग बहुत समय बीत जाने पर अच्छा नहीं होता।

नोट—पीलिया होतेही इलाज कराना चाहिये। इसकी उपेक्षा करना भला नहीं। अगर बहुत दिनों तक इस रोग का इलाज नहीं किया जाता, तो यह असाध्य हो जाता है।

(२) जिस पाण्डुरोगी की सब देह में सूजन आजाय और जिसे पदार्थ पीले दीखें, वह असाध्य है।

(३) जिस पाण्डुरोगी का बँधा हुआ मल थोड़ा, हरे रङ्ग का और कफ मिला हो, वह असाध्य है।

(४) जो पाण्डुरोगी ग्लानियुक्त हो, जिस के शरीर का रङ्ग सफेद हो या जिसका शरीर किसी सफेद पदार्थ से लिपटासा मालूम हो और जो वमन, मूर्च्छा और प्यास से पीड़ित हो, वह पाण्डुरोगी नष्ट हो जाता है। ये साधातिक लक्षण हैं।

(५) रुधिर-क्षय से हुआ पाण्डुरोग असाध्य होता है, यानी खून के नाश होने से जिस का शरीर पीला या सफेद हो गया हो, वह शायद ही बचे। ये साधातिक लक्षण हैं।

(६) जिस पाण्डुरोगी के दाँत, नाखून और नेत्र पीले हों, वह असाध्य है।

(७) जिस पाण्डुरोगी को सारी चीजें पीली-ही-पीली दीखें, वह असाध्य है।

(८) जिस पाण्डुरोगी के हाथ, पैर और सिरमें सूजन हो और मध्य भाग पतला हो, वह पाण्डुरोग असाध्य है, पर इस के विपरीत लक्षणों वाला साध्य है।

(९) जिस पाण्डुरोगी की देह के बीच में सूजन हो, पर हाथ, पैर और सिर सूख गये हों, एवं गुदा लिङ्ग मुख और फोतों पर सूजन हो, ज्वर और अतिसार हो तथा जो मुर्दे के समान हो गया हो, वह इलाज करने लायक़ नहीं, वह मर जायगा।

नोट—जिस मनुष्यके हाथ पाँव और मुख पर सूजन हो और मध्य भाग यानी धड़ पतला हो गया हो अथवा हाथ पाँव और मुँह पतले पड़ गये हों और धड़ सूज गया हो एवं गुदा लिङ्ग और फोते सूज रहे हों, जिस के सामने अँधेरी आती हो,

जिसकी संज्ञा जाती रही हो—ज्ञान नाहो तथा जो अतिसार और ज्वरसे दुखी हो, ऐसा पाण्डुरोगी असाध्य है । जो वैद्य यश चाहे, ऐसे रोगी को त्याग दे ।

(११) जिस पाण्डुरोगी को ज्वर, अरुचि, हुल्लास, वमन, प्यास और ग्लानि,—ये हों, इन्द्रियोंमें सामर्थ्य न हो तथा तीनों दोषोंका कोप हो—उस का इलाज वैद्य को न करना चाहिये ।

(१२) जो पाण्डुरोग बहुत पुराना हो, रोगी की सम्पूर्ण धातुओं में रूखापन आगया हो, थोड़े ही दिनों में सूजन चढ़ आई हो और रोगीको सब वस्तुएँ पीली-ही-पीली दीखती हों, उस रोगीका आराम होना कठिन है ।

(१३) जिस पाण्डुरोगी का बँधा हुआ मल हरियाली लिये हो और थोड़ा-थोड़ा उतरे, दीनता आगई हो, पसीना बहुत आता हो, वमन, मूर्च्छा और प्यास से जो व्याकुल हो, वह रोगी असाध्य है । वह आराम नहीं हो सकता ।

(१४) "हारीत संहिता" में लिखा है—जिस रोगी के दाँत, नाखून और नेत्र पीले होते हैं और जिसे सर्वत्र पीला-ही-पीला दीखता है, वह मर जाता है ।

जिस रोगी का चमड़ा, नेत्र और पेशाब पीले होते हैं और जिसे सब जगह पीला-ही-पीला दीखता है, वह नष्ट हो जाता है ।

पाण्डु रोग के उपद्रव ।

—०:०—

उपद्रवास्तेऽरुचि पिपासा छर्दि ज्वरो मूर्ध रुजाग्निसाद ।
शोफस्तथा कण्ठगतो बलत्वं मूर्च्छा क्लमो हृदयपीडन च ॥

अरुचि, प्यास, वमन, ज्वर, सिरदर्द, अग्निमांद्य, कण्ठ में सूजन, कमज़ोरी, बेहोशी, क्लम और हृदय में पीड़ा—ये पाण्डु और कामला प्रभृति के उपद्रव हैं ।

कामला के निदान और सम्प्राप्ति।

जो पाण्डुरोगी अधिक पित्तकारी पदार्थों को अधिक सेवन करते हैं, उन का पित्त कुपित होकर, रुधिर और मास को दूषित करता है, बस, इसी से कामला रोग होता है।

नोट—ऐसा नहीं समझना चाहिये, कि पाण्डुरोगीको ही पित्तकारक पदार्थ सेवन करने से कामला होता है। कामलारोग अपने-आप भी हो जाता है। जिस तरह खाँसी का इलाज न करने से राजयक्ष्मा होता है, उस तरह ही कामला नहीं होता। जिस तरह राजयक्ष्मा अपने-आप भी हो जाता है, उसी तरह कामला भी अपने-आप हो जाता है। मतलब यह, पाण्डुरोगीके पित्तकारक पदार्थ खाने से भी कामला होता है और अपने-आप भी हो जाता है। यकृतरोग होने पर भी क्रमश यह होते देखा जाता है। यकृत से पित्त निकल कर, साराका सारा ही पाकस्थलीमें न जाकर, उस में से थोड़ासा खूनमें मिल जाता है। इस तरहभी कामला होता है। पाण्डुरोगके जो कारण हैं, उन्हीं सब कारणो तथा दिनमें बहुत ही सोने प्रभृति कारणोंसे भी कामला होता है।

कामला के लक्षण।

इस रोग मे नेत्र अत्यन्त पीले हो जाते हैं, चमडा, नाखून और मुँह—ये भी पीले या हल्दीके रगके हो जाते हैं, मल मूत्र पीले या लाल हो जाते हैं, शरीर का रग बरसाती मेंडक का जैसा हो जाता है, इन्द्रियो की सामर्थ्य जाती रहती है, हृदय में जलन होती है, भोजन नहीं पचता, शरीर कमज़ोर और शिथिल हो जाता है तथा अन्न में अरुचि हो जाती है।

नोट—कामलारोग मे पहले दोनो नेत्र पीले होते हैं। इस रोग मे पित्त की प्रबलता होती है।

कामला के दो भेद।

(१) कोष्ठाश्रय (२) शाखाश्रय।

नोट—जो कोठे के आश्रय से होता है, उसे कोष्ठाश्रय कहते हैं और जो रक्तादि

धातुओं के आश्रय से होता है, उसे शाखाश्रय कहते हैं। कोठे के आश्रय होने से, जिस तरह घड़े का पेट बड़ा और मुख छोटा होता है, उसी तरह का रोगी का पेट हो जाता है, तब उसे ही "कुम्भकामला" कहते हैं।

कुम्भ-कामला के लक्षण।

कामला रोग जब बहुत पुराना हो जाता है, तब रूखा होकर जठराग्नि को रोक लेता है। जिस तरह घड़े का मुख छोटा और पेट बड़ा होता है, उसी तरह कुम्भकामला रोगीके पेटको समझना चाहिये।

नोट—कुम्भ=कोठा। जो कोठे या कोष्ट के आश्रय होता है, उसे कोष्ठाश्रय कामला कहते हैं। कामलारोग जब बहुत पुराना हो जाता है, तब कृच्छ्रसाध्य हो जाता है। उस समय उसे "कुम्भकामला" कहते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है,—अगर रोगी पाण्डुरोग (या और किसी रोग) के अन्त में खटाई या और ऐसे ही कुपथ्य पदार्थ खाता-पीता है, तो पित्त बहुत ही दूषित होकर मुखको पाण्डुवर्ण और शरीर को और भी पाण्डुवर्ण कर देता है एवं तन्द्रा और निर्बलता तथा पाण्डुरोग के अन्य लक्षण प्रकट करता है, तब उसे कामला कहते हैं।

"इस कामलाका ही एक भेद कुम्भिका या कुम्भकामला है। इस रोग में सूजन अधिक होती है और जोड़ों में दर्द होता है।

"जिसमें ज्वर, अंग-टूटना, थकान, तन्द्रा और क्षीणता ये लक्षण होते हैं, उसे 'लाघरक अलस' कहते हैं। अगर इसमें वात-पित्त के चिह्न मिलते हैं, तो 'हलीमक' कहते हैं।"

कामला के असाध्य लक्षण।

जिस कामला रोगी का मल मूत्र काला या पीला या काला-पीला अथवा लाल हो, शरीर पर सूजन विशेष हो, नेत्र, मुँह, वमन, मल और मल ये अत्यन्त लाल हों तथा मोह हो—वह रोगी नहीं बचता।

जिस कामला रोगी में दाह, अरुचि, प्यास, अफारा, तन्द्रा, मो मन्दाग्नि और विस्मृति ये लक्षण हों, वह नहीं जी सकता।

कुम्भ-कामला का अरिष्ट।

वमन, अरुचि, ओकारी, ज्वर, अनायास थकान, श्वास, खाँसी औ फटा हुआ पतला मल—ये लक्षण अगर कुम्भकामला वाले में पायें जायें, तो समझ लेना चाहिये कि, रोग असाध्य है, रोगी नहीं बचेगा।

हलीमक के लक्षण।

पाण्डु या कामला होने के बाद क्रमशः शरीर का रंग हरा, काला या पीला हो जाय, बल और उत्साह का नाश हो जाय एवं तन्द्रा, मन्दाग्नि, महीन ज्वर, स्त्री-सम्भोग में अनिच्छा, शरीर टूटना, दाह, प्यास, अन्न से बैर और भ्रम—ये लक्षण हों, तो वात पित्त से हुआ "हलीमक" रोग समझना चाहिये।

नोट—जब पाण्डुरोगी के शरीर में वात पित्त बढ़ जाते हैं, तब रोगी के शरीर का रङ्ग, हरा, काला और पीला हो जाता है तथा बल और उत्साहका नाश होकर तन्द्रा और मन्दाग्नि आदि हलीमक के लक्षण प्रकट होते हैं। खब याद रखो, यह हलीमक रोग वात और पित्त से पैदा होता है।

पानकी के लक्षण।

इन्द्रियों और मन में सन्ताप हो, मल पतला हो, भीतर बाहर पीलापन हो जावे * और नेत्र पीले हों तो पानकी रोग समझो।

* बाहर का चमड़ा और भीतर के मल मूत्र आदि पीले हो जायँ।

हकीमी मत।

यूनानी हकीम पाण्डु रोग को "यरकान" कहते हैं। उनका कहना है कि, पाण्डु या पीलिया जिगर की खराबी और पित्त के दोष से होता है और हलीमक तिल्ली के दोष से होता है।

"इलाजुल गुर्बा" में लिखा है—हिन्दी में यरकान को "कामलवायु" या "कामला" कहते हैं। यह रोग सौदा या पित्त के दोषों के बिना, दुर्गन्ध जारी होने से, चमड़े की ओर होता है। अगर यह रोग पित्त से होता है, तो "यरकान असफर" बोलते हैं और अगर सौदा या किसी दोष के जलने से होता है, तो उसको "यरकान असूद" कहते हैं।

पाण्डु, कामला और हलीमक रोगमें चिकित्सक के याद रखने योग्य बातें।

(१) जिस क्रिया या चिकित्सा से "यकृत" का काम अच्छी तरह चलता रहे, वही क्रिया पाण्डु रोग की चिकित्सा है।

(२) वैद्य को मुनासिब है, कि पाण्डु या कामला प्रभृति का इलाज शुरू करनेसे पहले यह देख ले कि, रोग साध्य है या असाध्य। अगर रोग साध्य मालूम हो, तो रोगी को घी पिला कर, वमन और विरेचन—जुलाब से उसे साफ करे। इसके बाद "हल्दी के कल्क" द्वारा या "त्रिफले के कल्क" द्वारा सिद्ध किया हुआ घी रोगी को पिलावे अथवा दस्तावर दवाओं को घी के साथ रोगी को पिलावे। साधारणतया, अगर ज़ियादा झंझट न हो सके तो "हरड़ का चकला" गुड़ में मिलाकर रोगी को सेवन करावे अथवा "आरग्वधादि क्वाथ" पिलावे।

नोट—अमलताश का गूदा, पीपरामूल, नागरमोथा, कुटकी, और जङ्गी हरड़—इन पाँचों के काढ़े को "आरोग्यपञ्चक" या "आरग्वधादि क्वाथ" कहते हैं। यह आमपाचक, त्रिदोष-नाशक, शूलनाशक और दीपक है। इस से पच कर दस्त होता है।

(३) वातज पाण्डु रोग में चिकनी चिकित्सा करनी चाहिये। पित्तज में कड़वी और शीतल क्रिया करनी चाहिये। कफज में कड़वी, रूखी और गरम क्रिया करनी चाहिये। मिले हुए दोषों में मिली हुई क्रिया करनी चाहिये। कहा है :—

सर्वेषु पाण्डुरोगेषु पथ्याचूर्णं घृतप्लुतम् ॥
स्निग्धो विधिर्वातभवे प्रशस्तस्तिक्तः सुशीतः किल पित्तजाते ॥
कफात्मके रूक्षकटूष्णतिक्तः प्रोक्तो विमिश्रस्त्रिमलोद्भवे स्यात् ॥

सब तरह के पाण्डु रोगोंमें "छोटी हरड़ों का चूर्ण" घीमें मिलाकर देना चाहिये। पाण्डुरोगों में यह नुसखा परमोत्तम और परीक्षित है। वातज पीलिये में स्निग्ध या मातदिल, पित्तज में सिद्धशीत—गरमी और खुश्की-रहित शीतल, कफज में रूखी, कड़वी और गरम तथा मिले हुए दोषों में मिली हुई क्रिया करनी चाहिये।

(४) कामला रोगी को पहले घी प्रभृति चिकनी चीज़ पिला कर, तब कोई विरेचक या दस्तावर दवा देनी चाहिये। इसके भी बाद, रोग शान्त करनेवाली औषधि देनी चाहिये।

(५) इन रोगों में रोग की ठीक परीक्षा करके देश, काल, पात्र और बलाबल का विचार करके, कोई परीक्षित औषधि रोगी को खिलानी चाहिये। साथही कोई दवा आँखोंमें आँजकर या नाकमें डाल कर रोग नाश करना चाहिये। नस्य देने से अक्सर पीलापन जाता रहता है। जैसे —

(१) द्रोणपुष्पी या गूमा के पत्तों का रस निकाल कर आँखों में डालना चाहिये।

(२) गेरू, हल्दी और आमलों को पीस कर और "शहद" में मिलाकर नेत्रों में आँजना चाहिये।

(३) कामला में कड़वी तूम्बी का रस—सरस—दो तीन बूँद नाक में टपकाना चाहिये ।

(४) देवदालीके फलोंका रस निकाल कर सुँघाना चाहिये ।

नोट—ये चारों उपाय आजमूदा हैं ।

(६) इन रोगों में जीर्णज्वर और यकृत रोग की तरह पथ्यापथ्य सेवन कराना चाहिये ।

(७) कामला रोग में पीले कपड़े पहनना हितकारक है । अत: रोगी को यही सलाह देनी चाहिये ।

पाण्डु रोग की चिकित्सा ।

पाण्डु रोग नाशक नुसखे ।

अयोमोदक

(१) लोह-भस्म, तिल, सोंठ, मिर्च, पीपर और कोल—ये सब एक-एक तोला लेकर कूट-पीसकर छान लो । इसमें सब चूर्ण के वजन की बराबर "सोनामाखीकी भस्म" मिला दो और खरल करके गोलियाँ बना लो ।

सेवनविधि—एक गोली "शहद"के साथ खाकर, ऊपरसे 'माठा' पीने से पाण्डु रोग नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

नवायस लौह ।

(२) सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, वायविडङ्ग और चीते की छाल—इन सब को एक-एक तोले लेकर कूट पीस कर छान लो । फिर इसमें तीन तोले "लोह" मिलाकर सब को एक कर लो ।

सेवनविधि—इस को २ रत्तीकी मात्रा से, शहत ६ माशे और घी ३ माशे के साथ लेने से पाण्डु रोग नाश हो जाता है।

नोट—"भावप्रकाश"में सब चूर्णकी बराबर नौ तोले लोहभस्म मिलाना लिखा है। हमने उस तरह परीक्षा नहीं की। वैद्य लोग कर देखें। ध्यान रखें,पित्तज पाण्डुरोगमें "नवायस लौह" विशेष उपकारी है।

योगराज।

(३) ३ माशे त्रिफला, ३ माशे त्रिकुटा, ३ माशे बायबिडङ्ग, ५ माशे शुद्ध शिलाजीत, ५ माशे चाँदी का मैल, ५ माशे सोनामाखी, ५ माशे लोह की धूल और ८ माशे शक्कर—इन सब को कूट पीस कर और "शहद" में मिला कर एक साफ-सुथरे लोहे के बर्तनमें रख दो। इसमें से अग्नि-बल के अनुसार सेवन करने से पाण्डु, क्षय, खाँसी, विषमज्वर, सब तरह के कोढ़, श्वास, हिचकी, अरुचि, विशेष करके मृगी, कामला, और बवासीर रोग नाश होते हैं। यह योगराज 'चरक' का है। वृन्द वैद्य ने इसकी खूब तारीफ की है।

सेवनविधि—मात्रा २ रत्ती। अनुपान शहद। इसके पचजाने पर कुलथी, मकोय और कबूतर का मांस छोड़ कर, रोगी और मनमाने पदार्थ खा सकता है।

व्योषाद्य घृत।

(४) त्रिकुटा, बेल की छाल, दारूहल्दी, त्रिफला, सफेद पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, मोथा, मण्डूर, पाठा, बायबिडङ्ग, देवदारु, बिछोरिया या वृश्चिकाली और भारङ्गी—इन सब दवाओं को मिलाकर आध सेर लो। इनको सिल पर डाल कर जल के साथ पीस लो। यही लुगदी या कल्क है। अब दो सेर "घी", आठ सेर 'दूध' और बत्तीस सेर 'पानी' तैयार करो। सबके तैयार होने पर, पीतल की कलईदार

कड़ाही में (१) लुगदी, (२) घी, (३) दूध,और (४) पानी को चढ़ाकर घीकी विधिसे मन्दाग्नि से पका लो।

सेवनविधि—मात्रा ६ माशे की है। इस घृत के खाने से पाण्डु रोगादि अनेक रोग नाश होते हैं, पर ठीकरे खाने से हुए पाण्डु पर तो यह घृत रामबाण ही है।

मण्डूर वटक।



(५) त्रिकुटा, त्रिफला, मोथा, बायबिडङ्ग, चव्य, चीता, दारुहल्दी, दालचीनी, सोनामाखी, गठिवन और देवदारु,—इन सबको चार-चार तोले लेकर, अलग-अलग पीसकर चूर्ण बना लो। इसके बाद अञ्जन के समान "शुद्ध मण्डूर" को चूर्णों से दूना लेकर, अठगुने "गायके मूत्र" में पकाओ। इसके बाद उसे पहलेके दवाओंके चूर्ण में मिला कर गूलर के फल के बराबर वटक बना लो। ये वटक पाण्डु-रोगियों के प्राणदाता हैं। इनके सेवन से कोढ़, उरुस्तम्भ, कफरोग, कामला, प्रमेह, बवासीर और तिल्ली रोग भी नाश होते हैं।

सेवन विधि—इन वटकोंको माठेके साथ सेवन करना चाहिए। अगर रोग पुराना हो, तो जो मन में आवे सो रोगी खा सकता है।

मण्डूर वज्र वटक।

(६) पीपल, पीपरामूल,चव्य,चीता और सोंठ,—ये सब ४ तोले, देवदारु ४ तोले, त्रिफला ४ तोले, बायबिडङ्ग ४ तोले, मोथा ४ तोले और कुटकी ४ तोले लेकर कूट-पीस कर चूर्ण बनालो। जितना इस पिसे-हुए चूर्ण का वज़न हो, उससे दूना मण्डूर लो। मंडूर को अठगुने गोमूत्र में पकाओ, जब वह पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, उतार लो। फिर उसमें पहले के दवाओं के चूर्ण को मिलाकर, दो-दो तोले के वटक बनालो।

सेवनविधि—इन गोलो के "माठा" के साथ सेवन करने से पाण्डु रोग, मन्दाग्नि, अरुचि, बवासीर, ग्रहणी दोष, उरुस्तंभ, हलीमक, कृमिरोग, तिल्ली, उदर-रोग और गल-रोग नाश होते है। इनके सिवा और भी अनेक रोग नाश होते है।

विडंगाद्य लौह।

(७) वायविडङ्ग, त्रिफला, त्रिकुटा, दारुहल्दी, पीपर और मडूर—इन सब को पीस छान कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को "घी और शहद" के साथ सेवन करने से पाण्डु और कामला रोग नाश होते हैं। यह नुसखा वृन्द ने कहा है। वृन्द के योग सदा अच्छे निकलते हैं।

कौरैया पाक।

(८) कौरैया की जड लाकर धो लो और उसकी छाल उतार लो। पीछे उसे सिलपर रख पानीके साथ पीसो और उसका रस निकाल लो। रसको कलईदार कडाही में डालकर, आगपर पकाओ। जब औटते-औटते गाढा हो जाय, उसमें अन्दाज से सोठ, मिर्च, पीपर, जायफल, माजूफल, जावित्री, लौग, वायविडङ्ग, मरोडफली, वेलगिरी और नागकेशर बराबर-बराबर लेकर मिला दो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियो के सेवन से अतिसार, संग्रहणी और पाण्डु रोग नाश होते है।

सेवनविधि—(१) अतिसार और संग्रहणी मे इन गोलियों को "हींग मिली छाछ" के साथ अथवा "सौंठ" के साथ अथवा "घी" के साथ लो। (२) पाण्डुरोग में इन्हें गोमूत्र के साथ लो। यह बालकों के लिये अच्छी है।

नोट—कौरैयाको कुडा या कुरैया भी कहते हैं। इसकी फलियोंमे जो बीज निकलते है, उन्हे 'इन्द्रजौ' कहते है। जड और बीज दोनों ही कडवे होते है। कौरैया

सफेद और काली दो तरह की होती है। यह अग्निदीपक, पाचक और ग्राहक—काबिज होती है। अतिसार-वर्णन में इसके बहुत से नुसखे लिख आये हैं।

पुनर्नवादि मण्डूर।

(९) पुनर्ननवा, निशोथ सोंठ, मिर्च, पीपर, वायबिडङ्ग, देवदारु, चीता, कूट, हल्दी, हरड़, बहेड़ा, आमला, दन्ती, चव्य, इन्द्रजौ, कुटकी, पीपरामूल, मोथा, काकड़ासिंगी, कालाज़ीरा, अजवायन और कायफल—इन सबको चार-चार तोले लेकर, कूट पीसकर चूर्ण कर लो। फिर चूर्ण के वजन से दुगुना "मण्डूर" लेकर अठगुने "गोमूत्र" में पचाओ। बाद में सब चूर्ण मिला दो और नीचे उतार कर उस में "पुराना गुड़" मिलाकर गोलियाँ बना लो। यह "पुनर्नवादि मंडूर" अश्विनीकुमारों ने बनाया है। इसके सेवन से पाण्डु कामला, श्लीपद, श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा, ज्वर, सूजन, उदरशूल, तिल्ली, अफारा, बवासीर, संग्रहणी, कृमिरोग, वातरक्त और कोढ़ ये सब नष्ट हो जाते हैं।

सेवनविधि—बलाबल अनुसार ये गोलियाँ "छाछ" में घोलकर पीनी चाहियें। मात्रा 8 माशे की है।

गरीबी नुसखे।

(१०) लोहसार की भस्म को सात दिन तक 'गोमूत्र' में भावना देकर, दूध के साथ सेवन करो। इससे पाण्डुरोग जाता है।

(११) मण्डूर को सात बार आग में तपाकर 'गोमूत्र' में बुझाओ। जब अच्छी तरह से भस्म हो जाय, उसे चना-बराबर लेकर शहद और घी में चाटो। इससे पाण्डुरोग नाश होता है।

नोट—भात में मिलाकर खाने से सूजन सहित पाडु नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) हल्दी को सिलपर पीस कर लुगदी बना लो। फिर और

हल्दी लेकर काढा बना लो। फिर कल्क, काढे और घी को कलईदार कडाही में चढ़ा कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। घी मात्र रहने पर उतार लो। इस घी के सेवन करने से पाण्डु रोग नाश होता है। कहा है :—

क्षयादाकाथकल्काभ्यां घृत सिद्धमिमं जयेत् ॥

(१३) कडवे नीम के पत्तो को पानी में पीसकर, पाव भर रस निकाल लो। उस रस में मिश्री मिलाकर गरम करो। शीतल होने पर पी लो। इससे पाण्डु रोग नाश होता है। परीक्षित है।

(१४) कडवी तूम्बी के पत्तो का काढा पीने से पाण्डु रोग नाश होता है। परीक्षित है।

(१५) लोहे के १ माशे कीट को महीन पीस कर, ६ माशे गुड में मिलाकर, ११ दिन तक खाने से पाण्डु रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

लुहार की दूकानपर जहाँ लोहा कूटा पीटा जाता है, मैल झड़ झड़ कर गिरता है। उसे ही लोहे का मैल या कीट कहते हैं। उसे आग में तपा-तपाकर 'गोमूत्र' में बुझा लेने से वह निर्दोष हो जाता है। पाण्डु रोग में यह बहुत काम आता है।

(१६) लोहे का मैल लाकर, आग में तपा-तपा कर सात बार 'गोमूत्र' में बुझाओ। फिर उसमें से ४ रत्ती मैल को २ माशे "घी" और ६ माशे "शहद" में मिलाकर चाटो। इससे पाण्डु रोग निश्चय ही नाश होता है। इससे पेट का तो भयानक से भयानक दर्द नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) ६ माशे त्रिफले का चूर्ण शहद में मिलाकर रोज़ चाटने से पाण्डुरोग नाश होता है। परीक्षित है।

(१८) ६ माशे गिलोय का चूर्ण "शहद" में मिलाकर चाटने से पाण्डु रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१९) ६ माशे काली मिर्च का चूर्ण "शहद" में मिलाकर चाटने से पाण्डु रोग नाश होता है। परीक्षित है।

(२०) दो माशे रेवन्दचोनो "शर्बत अनार" में मिलाकर चाटने से पाण्डु और कामला नाश होते हैं। प्रथम श्रेणी की दवा है।

नोट—रेवन्दचीनी को संस्कृत में रेवटचीनी, पीता, गन्धिनी, क्षीरणी प्रभृति कहते हैं। मरहटी में "रेवाचीनी", गुजराती में "रेवचीनी", बँगला में 'रेउचीनी' और अङ्गरेजी में "रूवर्ब" कहते हैं। इसकी मात्रा जवान के लिये १ या १॥ माशे की है। जियादा मात्रा लेनेसे भयङ्कर परिणाम होता है।

(२१ त्रिकुटा, बाँसा, चिरायता, नीम की छाल, कुटकी और गिलोय—इन का काढा बनाकर, शीतल होनेपर उसमें शहत मिला कर पीने से कामला और पाण्डु दोनों नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—त्रिफले के ४ तोले काढ़े में ६ माशे शहद मिलाकर पीने से पाण्डु रोग चला जाता है।

(२२) हरड, तिल और त्रिकुटा—ये सब एक-एक तोले लो। फिर इनमें तीन तोले सोनामक्खी का चूर्ण मिलाओ। शेषमें, शहद मिलाकर मोदक बनालो और रोज़ खाओ। इन मोदकों से पाण्डु रोग नाश हो जाता है।

(२३) तपे हुए बकरो के मल को एक दो बार "गोमूत्र" में पका कर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को ३ माशे घो और ६ माशे शहद के साथ "भातमें मिलाकर" खानेसे सूजन और पाण्डुरोग नष्ट होते तथा अग्नि दीप्त होतो और बढती है। वृन्द।

(२४) त्रिकुटा, त्रिफला, मोथा, बायविडंग और चीते की छाल —सब को बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर और नौ तोले लोह-चूर्ण लेकर मिला लो। इस चूर्णको नाबराबर "घी और शहद" में मिला कर सेवन करने से पाण्डुरोग, हृदरोग, कोढ और कामला आराम होते हैं।

(२५) गुड में मिलाकर "बडी हरड" खाने से सब तरह के पाण्डु रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

पाण्डु रोग की विशेष चिकित्सा।

वातज पाण्डुरोग की चिकित्सा।

(२६) शुद्ध शिलाजीत में केशर और मिश्री मिलाकर, बकरी के दूध के साथ, सेवन करने से वातज पाण्डुरोग नष्ट होता है।

(२७) त्रिफले के काढ़े में घी और चीनी मिलाकर सेवन करने से वातज पाण्डुरोग जाता है। परीक्षित है।

(२८) हल्दी का काढ़ा बना कर रख लो। साथ ही छटाँक भर हल्दी को सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। घी एक पाव ले लो। घी, लुगदी और काढ़े को क़लईदार कड़ाही में चढ़ाकर, मन्दाग्नि से पकाकर घी निकाल लो, शीतल होने पर छान लो और किसी चौड़े मुँह की बोतल या घी की हाँडी में रख दो। इसमें से ६ माशे से २ तोले तक घी, गरम भात के साथ, खाओ। इस घी से वातज और पित्तज दोनो पाण्डुरोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इसी तरह त्रिफले का काढ़ा और कल्क तैयार करके, भैंस का घी पका लेने से भी वातज पाण्डु रोग में लाभ होता है। काढ़ा कितना होना चाहिये, घी कितना लेना चाहिये, घी पका या नहीं,—ये सब बातें हम पीछे कहीं लिख आये हैं। "व्योषाद्य घृत" जो पहले लिख आये हैं, वातज पाण्डु में अच्छा है।

(२९) मण्डूर के चूर्णको गोमूत्र में सात बार बुझाकर रखलो। उसमें से ४ रत्ती से १ माशे तक मण्डूर, चार माशे गाय के घी और

६ माशे शहद में मिलाकर लेने से वातज पाण्डुरोग नाश होता है परीक्षित है।

(३०) दाख, हल्दी और पुनर्नवा एक-एक तोले लेकर, अध-कचरा कर लो और पावभर गाय के दूध में, पाव भर जल मिलाकर औटाओ। जब जल जलकर दूध मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और ज़रा सी मिश्री मिलाकर पीओ। इस "दुग्धयोग" से वातज पाण्डुरोग नाश होता है।

पित्तज पाण्डुरोग की चिकित्सा।

(३१) त्रिफला और नीम के नर्म-नर्म पत्तों का चूर्ण बनाकर "शहद" में मिलाकर, सेवन करने पित्तज पाण्डुरोग नाश होता है। परीक्षित है।

(३२) निशोथ के चूर्ण में दो भाग "शक्कर" मिलाकर सेवन करने से पित्तज पाण्डु नाश होता है। मात्रा एक तोले की। वृन्द।

(३३) हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, अडूसे की जड़ की छाल, कुटकी, चिरायता और नीमकी छाल—इन सब को तीन-तीन माशे लेकर, आध सेर जल में पकाओ। चौथाई जल रहने पर उतार कर छान लो। शीतल होने पर छै माशे "शहद" मिलाकर पीने से पित्तज पाण्डु और कामला निश्चय ही नाश होते हैं। परीक्षित है।

(३४) लौह मण्डूर को आमलों के स्वरस में खूब खरल करो। पीछे उसके वज़न से चौगुना सूखे आमलों का चूर्ण उसमें मिला दो। उसको थोड़ी मात्रा में लगातार सेवन करने से पित्तज पाण्डुरोग अवश्य नाश होता है।

(३५) नवायस लौह जो पाण्डुरोग की सामान्य चिकित्सा में लिखा है, पित्त जनित पाण्डुरोग में अच्छा काम देता है।

(३६) आमले, लौहचूर्ण, सौंठ, पीपर, गोलमिर्च, हल्दी, शहद और चीनी—ये सब मिलाकर सेवन करने से पित्तज पाण्डु में खूब

लाभ होता है। इसको "धात्रीलौह" कहते हैं। इससे हलीमक और कामला भी नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

(३७) मकोय, कासनी और मूली के पत्तों का स्वरस—इन्हें आग पर चढ़ाकर पकाओ। जब स्वरस फट कर सफेद पानी अलग हो जाय, छानकर बोतल में भर लो। इसमें से दो-दो तोला पानी सवेरे-शाम ज़रा सा "शहद" डाल कर पीने पित्तज पाण्डु नाश होता है।

कफज पाण्डु रोग की चिकित्सा।



(३८) दशमूल के काढ़े में "सोंठ" मिलाकर सेवन करने से पाण्डु रोग, ज्वर, अतिसार, सूजन, ग्रहणी, खाँसी, श्वास, अरुचि, कण्ठरोग और हृद्रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

(३९) बड़ी हरड़ गोमूत्र में भिगोकर और गोमूत्र में मिलाकर सेवन करने से कफज पाण्डुरोग नाश होता है।

(४०) लौहभस्म १ माशे और पिसी हुई सोंठ ४ माशे—इन दोनो को गोमूत्र के साथ सेवन करने से कफज पाण्डु आराम होता है।

(४१) पीपल और सोंठ को चार-चार माशे लेकर पीस छान लो और "गोमूत्र" के साथ सेवन करो। इससे कफज पाण्डु रोग आराम होता है।

(४२) २ माशे शुद्ध शिलाजीत गोमूत्र के साथ सेवन करने से कफ का पाण्डुरोग नाश होता है।

(४३) त्रिफले और त्रिकुटे को बराबर-बराबर लेकर काढ़ा बना लो। शीतल होने पर उसमें "शहद" मिलाकर पीने से खूब जल्दी लाभ होता है। परीक्षित है।

(४४) सूखी मूली १ तोला, बेल के हरे पत्ते ६ माशे, बाँस की

जड़ ३ माशे और सोंठ ३ माशे—इन सब को कूट कर, ३२ तोले जल में पकाओ। जब ८ तोले जल रह जाय, उतार कर छान लो और पी जाओ। इससे कफज पाण्डुरोग आराम होता है। कम उम्र को कम देना चाहिये। परीक्षित है।

(४५) लोहमण्डूरको सात बार गोमूत्र में भावना देदे कर धूप में सुखालो। इसको सफेद पुनर्नवे या गरम जलके साथ सेवन करनेसे कफज पाण्डु रोग नाश होता है। यह परले सिरेकी उत्तम दवा है।

नोट—मण्डूर ६०।७० साल का पुराना या इससे भी अधिक पुराना अच्छा होता है और वह शोधकर लिया जाता है। नया और बिना शोधा मण्डूर भूल कर भी न लेना चाहिये। आगे हम इसके सम्बन्धमें और भी लिखेंगे।

कामलारोग की चिकित्सा।

(४६) हल्दी, त्रिफला, त्रिकुटा, वायविडङ्ग और मण्डूर—इन को पीस-कूटकर नावराबर घी और शहत के साथ सेवन करने से कामला और पाण्डुरोग नाश होते हैं।

नोट—एक रत्ती मण्डूर भस्म, एक रत्ती गुलाब जलमें घोटा हुआ प्रवाल—मूँगा, १ माशे बंसलोचन, १ माशे छोटी इलायची और १ माशे पीपल का चूर्ण—सबको एकत्र मिलाकर, शहत के साथ,सबेरे शाम,चटाने से और बीच-बीच में सफेद पुनर्नवे का स्वरस अग्नि पर फाड़ा हुआ पिलाने से यकृत का शोथ जाता रहता, आँखों का पीलापन नष्ट होजाता तथा ज्वर चला जाता है। परीक्षित है। इस नुसखे से एक ऐसा रोगी आराम हुआ, जिसका यकृत मलेरिया ज्वरके कारण बहुत ही बिगड़ गया था। हर समय थोड़ा थोड़ा ज्वर रहता था। यकृत और प्लीहा के बढ़नेके कारण पेट बढ़ गया था,कमजोरीके कारण उठा बैठा न जाता था,पर उसे भूख बहुत लगती थी और दस्त ज़ियादा आते थे, इस नुसखे से और शिकायत तो मिट गई, पर दस्त कम न हुए तब उस रोगी को मण्डूर २ रत्ती, सोंठ, मिर्च, पीपर, नागरमोथा,चीता और जायफल—इन सबका चूर्ण ३ माशे मिलाकर दिनमें दो बार सेवन कराया। इससे उसकी रही सही शिकायत भी मिटगई। ये नुसखे "वैद्य" सम्पादक महोदयके आजमाये हुए हैं।

नोट—मण्डूर लोहेका मैल होता है, जो लुहारोंकी दूकानों में लोहा धमाते समय नीचे इकट्ठा हो जाता है। यह ६० सालसे ऊपरका पुराना लेना चाहिये; क्योंकि मात

साल से पहले का विष समान होता है। बहेड़े की लकड़ी के कोयलों पर मण्डूर को तपा-तपाकर गो मूत्र में बुझाना चाहिये। अगर बहेड़े की लकड़ी न मिले, तो बबूल की लकड़ी के कोयलों पर तपाना चाहिये।

(४७) मण्डूर, दारुहल्दी, हल्दी, त्रिफला, और कुटकी,—इनके चूर्ण को नाबराबर घी और शहद के साथ सेवन करने से कामला नाश होता है।

(४८) हरड़ १ तोले, हल्दी १ तोले और मण्डूर २ तोले—सब का चूर्ण बनाकर, गुड़, मधु और जल के साथ सेवन करने से कामला नष्ट होता है।

(४९) नीम का रस घी और शहदके साथ खाने से कामला नष्ट हो जाता है।

(५०) त्रिफला या गिलोय अथवा हल्दी—इन में से किसी एक के रस में घी और शहद मिलाकर सेवन करने से कामला निश्चय ही चला जाता है।

(५१) आमले, मण्डूर, त्रिकुटा, हल्दी, मधु, घी और चीनी—ये सब भयङ्कर कामला को भी नाश करते हैं।

(५२) बहेड़े की लकड़ी में मण्डूर को आठ बार गरम कर-कर के गोमूत्र में बुझाओ, फिर इस में से शहद के साथ चाटो। इस के लगातार बहुत दिन चाटने से "कुम्भकामला" रोग निश्चय ही नाश हो जाता है।

(५३) त्रिकुटा, चीता, वायविडङ्ग, त्रिफला और मोथा—सब को बराबर-बराबर लो। सबके वज़नके बराबर "मण्डूर" लेकर चूर्ण बना लो। इसको माठा, मधु, घी और कुछ गरम जलके साथ लेनेसे कामला, पाण्डु, हृद्रोग, कोढ़, बवासीर और मूर्च्छा ये रोग नाश होते हैं।

(५४) हल्दी, त्रिफला, नीमकी छाल, खिरटी और मुलहटी,—इनसे सिद्ध किया हुआ घी कामला को नाश करता है। इसी का नाम "हरिद्राद्य घृत" है। मात्रा ६ माशे की है।

नोट—भैंस का घी १ सेर लो, दूध ४ सेर लो, पानी १६ सेर लो, हल्दी और त्रिफला प्रभृति को मिलाकर १ पाव लो। हल्दी प्रभृति को सिलपर रख कर पानी के साथ लुगदी बनालो। पीछे लुगदी, घी और पानी को कड़ाही में चढ़ा, मन्दाग्निसे घी पकालो। घी मात्र रहने पर उतार कर रखलो।

(५५) गिलोय के पत्ते पीसकर माठे के साथ सेवन करने से कामला नष्ट होता है।

(५६) गाय के दूध में सोंठ का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से कामला चला जाता है।

लोलिम्बराज जी कहते हैं—

अये मनोज्ञ कुण्डले स्फुरन्मुखेन्दुमण्डले।
गवापय सनागरं निहन्ति कामलाभरम्॥

हे शोभायमान कुण्डलो वाली! हे चन्द्रमा के समान प्रकाशमान् मुँहवाली! गाय के दूध में सोंठ मिलाकर पीने से कामला का भारी जोर भी घट जाता है।

नोट—परीक्षित है। भयङ्कर कामला भी निश्चयही नाश होता है।

(५७) एक तोले हल्दी का चूर्ण, आठ तोले दही में मिलाकर, सवेरे ही, खाने से कामला चला जाता है।

(५८) हरड़ का चूर्ण गुड़ और शहद के साथ खाने से कामला नाश हो जाता है।

नोट—हरड़ का चूर्ण खाली शहद के साथ चाटने से भी कामला चला जाता है।

(५९) हल्दी का चूर्ण घी, शहद और चीनी में मिलाकर खाने से कामला चला जाता है।

(६०) कुटकी को पीस कर, उस में मिश्री मिलाकर, हथेली भर फांको और ऊपर से गुनगुना जल पीओ। कामलारोग निश्चय ही चला जायगा। परीक्षित है।

(६१) सोंठ, मिर्च, पीपर, बायबिडङ्ग, त्रिफला, दारुहल्दी, पीपर और लौहभस्म—इन सब का चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को नाबराबर घी और शहदके साथ खानेसे कामला रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(६२) त्रिफला, गिलोय, दारुहल्दी और नीम की छाल का रस—इन सबके रस में शहद मिलाकर पीने से कामला रोग अवश्य ही नाश हो जाता है।

(६३) ६ माशे कुटकी को ६ माशे शक्कर में मिलाकर पीने से कामला चला जाता है।

(६४) ढाक के फूल २ तोले रात को पानी में भिगोकर, सवेरे ही उस मेंसे पानी पीने से कामला नाश होता है।

(६५) सफेद चन्दनका,हुरसे पर गुलाब-जलके साथ घिसा हुआ, रस ३ माशे, आमाहल्दी का गुलाब जल के साथ घिसा हुआ रस ५ माशे और शहद ७ माशे—तीनों को मिलाकर सात दिन चाटने से और दाल भात खाने से कामला भाग जाता है। परीक्षित है।

नोट—गुलाबजल हो तो अच्छा। अगर न हो तो पानी में ही चन्दन वगैर. को घिस लो।

(६६) एक तोला लौंग, २॥ तोले जल में रात को भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर वही जल पीओ। इस से भी कामला चला जाता है। परीक्षित है।

(६७) तीन तोले मह्ँदी की पत्तियाँ रात को ५ तोले जल में भिगोकर, सवेरे ही छान लो। इस जलके पीने से कामला चला जाता है। परीक्षित है।

(६८) पके हुए केलेकी एक फलीके दो टुकडे करो। एक टुकडेमें १ या २ माशे सीपीका चूना भरकर खा लो। इस तरह जितनेही दिन करने से कामला या कमल वायु नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बालक को २ या ४ रत्ती चूना केलेकी चौथाई फली में खिलाना चाहिए।

(६९) रेवन्दचीनी दूध में घिसकर ७ दिन चाटने से कामला चला जाता है। मात्रा १ या १॥ माशे की है।

(७०) सात माशे कची पानी में पीसकर, शहद में मिलाकर, खाने से कामला नाश हो जाता है। पथ्य दाल भात।

(७१) बिनौले २ तोले ४ माशे रात को पानी में भिगो दो सवेरे पीसकर साफ पानी निथार लो। उस में लाहौरी नमक मिलाकर रोज़-रोज़ पीने से कामला चला जाता है। खटाई और बादी पदार्थों से परहेज़ रखना चाहिये।

(७२) अरीठा १ तोले ८ माशे और गावजुबाँ १ तोले ८ माशे दोनों को १ पाव पानी में रात को भिगोकर, सवेरे ही साफ जल निकाल कर पीने से, ईश्वर-कृपा से, सात दिन में, कामला नाश हो जाता है।

(७३) दो तीन-कसौंधीकी पत्तियाँ, दो तीन-गोल मिर्चोंके साथ खाने से कामला नाश हो जाता है।

(७४) बबूल के फूलों में बराबर की मिश्री मिलाकर खाने से कामला चला जाता है। मात्रा १ तोले की।

(७५) सिरके में बना हुआ मूली का अचार खाने से कामला नाश हो जाता है।

(७६) अगर कामला नाश हो जाने पर भी पीलापन रह जाय, तो सात दाने कलौंजी के स्त्री के दूध में पीसकर नाक में टपकाने से पीलापन चला जाता है।

(७७) बेल के पत्तों को सिल पर कूट-पीसकर, कपड़े में निचोड़ कर रस निकाल लो। इस रस में चार पाँच कालीमिर्चों का चूर्ण पीसकर मिला दो। इस के पीने से कामला चला जाता है।

(७८) कड़वे नीम की छाल ३ तोले, घोड़ा वच १ तोले और कालीमिर्चें २ माशे,—इनसब को महीन पीस कर, पाव भर जल में छानकर रख लो। इस की चार खूराक करो। हर बार २ माशे शहद मिला कर पीआओ। दूध भात खाओ। इस से कामला, पाण्डु और खुजली नाश होती है।

नोट—तेल, खटाई, नमक और मिर्च अपथ्य हैं।

(७९) अरण्ड के नरम पत्ते १ तोले लेकर १० तोले दूधमें पीस

कर कपड़े में छान लो। फिर उसमें ६ माशे चीनी मिलाकर, दिनमें ३ बार पीओ। कामलारोग के लिये यह अच्छी दवा है।

नस्य और अञ्जन।

(८०) देवदाली के पत्तों का रस दो तीन बूँद नाक में टपकाने से कामला चला जाता है। परीक्षित है।

लोलिम्बराज कहते हैं:—

देवदालीफलरसो नस्यतो हन्ति कामलाम्।
सन्देहो नात्र संफुल्ल नीलोत्पलविलोचने॥

हे खिले हुए नील-कमल के समान नेत्रों वाली कामिनी! देवदाली के फल का रस सूँघने से कामला चला जाता है, इस में शक नहीं।

(८१) गेरू, हल्दी और आमले—इन तीनों को घिसकर, इनका अञ्जन करने से कामला चला जाता है। परीक्षित है। लोलिम्बराज कहते हैं:—

गिरिमृदात्रिधात्रीणामञ्जनं कामलापहम्।
इदं नहि भवेन्मिथ्याशपथस्तु तवाङ्गने॥

गेरू, हल्दी और आमले के अञ्जन से कामला नाश हो जाता है। हे स्त्री! यह झूठ नहीं है, तेरी कसम।

(८२) दो तीन बूँद नीबू का रस नेत्रों में टपकाने से कामला चला जाता है।

(८३) कड़वी तूम्बी का स्वरस दो तीन बूँद नाक में टपकाने से कामला चला जाता है। परीक्षित है।

(८४) कड़वी तूम्बीके बीज पानीमें पीसकर नस्य लेनेसे कामला और पीलिया आराम होता है। परीक्षित है।

(८५) सफेद प्याज़, गुड़ और हल्दी—इन तीनों को मिलाकर नास लेने से कामला आराम होता है। परीक्षित है।

(८६) द्रोणपुष्पी या गूमा के फूलों का रस आँखों में आँजने से कामला चला जाता है। परीक्षित है।

(८७) घीग्वारका रस सूँघनेसे आँखों का पीलापन चला जाता है।

कुम्भकामला और हलीमक की चिकित्सा।

(८८) वरियारा, कुटकी, जेठीमधु, आमला, बहेड़ा, हल्दी और दारुहल्दी—इन का चूर्ण शहत और चीनी में मिलाकर चाटने से "हलीमक" रोग चला जाता है।

(८९) दारुहल्दी या त्रिफला, इन में से किसी एक का काथ बनाकर और शहत मिलाकर पीने से कुम्भकामला और कामलारोग नाश होते हैं।

(९०) गिलोय के रस में शहद मिलाकर पीने से कामला और कुम्भकामला नाश हो जाते हैं।

(९१) नीम का रस शहद में मिलाकर पीने से कामला, और कुम्भकामला चले जाते हैं।

(९२) उत्तम शुद्ध शिलाजीत "गोमूत्र" के साथ पीने से कुम्भ-कामला चला जाता है।

(९३) लोहसार की भस्म और सोंठ का चूर्ण "खैरसार" के काढ़े के साथ पीने से हलीमक रोग चला जाता है।

(९४) खाँड, तिल, खिरेंटी, त्रिफला, हल्दी और दारुहल्दीको कूट पीसकर चूर्ण करलो। पीछे इस में लोहभस्म मिला लो। इसको शहत के साथ सेवन करने से हलीमक रोग चला जाता है।

(९५) गिलोय का स्वरस और गिलोय का कल्क तथा भैंस का घी लेकर, उस में चौगुना दूध डालकर घी बनाओ। इस "अमृत-लतादि घृत" के सेवन करने से हलीमक निश्चय ही चला जाता है। परीक्षित है।

नोट—हलीमक रोग मीठे और वात-पित्तनाशक पदार्थों से जीतना चाहिये। पाण्डु और कामला में लिखी दवाओं से हलीमक को शान्त करना चाहिये।

(८६) आध सेर महुआ, आध सेर गेहूँ, आध सेर गुड़ और आध सेर ज़ंग लगा हुआ लोहा—इन चारों को एक मिट्टी के घड़े में डाल, ऊपर से बारह सेर जल भर दो और घड़े का मुँह बन्द करके आठ दिन तक उसे अलग रख दो, छेड़ो मत। इसके बाद इसमें से दो से ५ तोले तक जल रोगी को सवेरे-शाम पिलाओ। इससे कामला और हलीमक नाश होते हैं। अगर जी मिचलाय, तो पान या इलायची खिलाओ। यह नुसखा पं० नवनीत मिश्र जी वैद्य, पटना का परीक्षित है।

पाण्डु, कामला और हलीमक की सामान्य चिकित्सा।

(८७) त्रिफला, गिलोय, अडूसा, कुटकी, चिरायता और नीम की छाल का काढा बनाकर, उसमें शहद मिलाकर पीने से हलीमक, पाण्डु और कामला नाश होते हैं।

त्र्यूषणादि मण्डूर वटक।

(८८) सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, वायविडङ्ग, चव्य, चीता, दारुहल्दी, दालचीनी, सोनामाखी, पीपलामूल और देवदारु—इन सब को चार-चार तोले लेकर अलग-अलग पीस कर चूर्ण बना लो। इन सब के वज़न से दूना मण्डूर का चूर्ण लेकर अठगुने गोमूत्र में पकाओ और ऊपरके चूर्ण उसमें मिलाकर, गूलर के फल-समान गोली बनाकर, माठे के साथ सेवन करो। जब गोली पच जाय, तब भोजन करो। यह मण्डूर वटक पाण्डु रोग वालों के

बचाने वाला है। इससे कुष्ट, उदर रोग, सूजन, आँखों का
ड़ना, कफरोग, बवासीर, कामला और प्रमेह आदि अनेक रोग
होते हैं।

अष्टादशांग लौह।

(९९) चिरायता, देवदारु, दारुहल्दी, मोथा, गिलोय, कुटकी,
ल, जवासा, पित्तपापड़ा, नीम, त्रिकुटा, चीता, हरड़, बहेड़ा,
मला और वायविडङ्ग—ये सब बराबर-बराबर लेकर और सब के
न की बराबर "लोहभस्म" लेकर सब को मिला दो। पीछे इसमें
और शहत मिलाकर मोदक बना लो। इन मोदकोंके माठेके साथ
न करने से पाण्डु, हलीमक, सूजन, प्रमेह, संग्रहणी, श्वास, खाँसी,
पित्त, बवासीर, जीभका जठरा जाना, आमवात, व्रण, वायुगोला,
रोग, विद्रधि, सफेद कोढ़ और दूसरे तरह के कोढ़ आराम
ते हैं।

(१००) हरड़ का चूर्ण ६ माशे लेकर ६ माशे गुड़ या शक्कर में
ला खाओ। इस से पाण्डु, कामला और हलीमक तीनों नाश
ते हैं। परीक्षित है।

(१०१) सफेद निशोथ का चूर्ण ६ माशे, ६ माशे गुड़ या चीनी
मिलाकर खाने से पाण्डु, कामला और हलीमक तीनों नष्ट होते
। परीक्षित है।

(१०२) ६ माशे इन्द्रायणका चूर्ण ६ माशे गुड़में मिलाकर खाने
भी पाण्डु, कामला और हलीमक नाश होते हैं। परीक्षित है।

पुनर्नवादि तेल।

(१०३) त्रिकुटा, त्रिफला, काकड़ासिंगी, धनिया, जायफल,
धुर, दारुहल्दी, प्रियंगू, देवदारु रेणुका, कूट, पुनर्नवाकी जड़,

अजवायन, काला जीरा, इलायची, दालचीनी, पद्मकाष्ठ, तेजपात और नागकेशर—इन सब को एक-एक तोले लेकर, सिल पर रख, पानीसे पीसकर लुगदी (कल्क) बना लो। फिर तिलों का तेल २ सेर, सफेद पुनर्नवा सवा छै सेर और पानी ३२ सेर ले लो। पहले सफेद पुनर्नवा को चढ़ाकर काढ़ा बना लो और ८ सेर जल रहने पर उतार लो।

इसके बाद कड़ाही में लुगदी रक्खो, पुनर्नवा का काढ़ा डालो और तेल डालो। सब को मन्दाग्नि से पकाओ और तेल मात्र रहने पर उतार लो। इसका नाम "पुनर्नवादि" तैल है। इसकी मालिश करने से पाण्डु, कामला, हलीमक, श्वास, तिल्ली का रोग, मलरोग और पुराना ज्वर ये सब नाश होते हैं। परीक्षित है।

नोट—पुनर्नवा दो तरह का होता है। (१) सफेद फूल का, और (२) लाल फूल का। सफेद फूल वाले को हिन्दी में बिषखपरा कहते हैं। लाल फूल वाले को गदह सठ या गदहपुनेरा कहते हैं। यों तो शोथ नाश करने में दोनों ही पुनर्नवा अच्छे हैं, पर सफेद विशेष अच्छा है।

पाण्डु पञ्चानन रस।

(१०४) लोहभस्म, अभ्रकभस्म और ताम्बाभस्म, प्रत्येक को चार-चार तोले लो। त्रिकुटा, त्रिफला, दन्ती की जड़, चव्य, चीता, काला-जीरा, हल्दी, दारुहल्दी, तेवड़ी की जड़, मानकन्दमूल, इन्द्रजौ, कुटकी, देवदारु, बच और मोथा—इन सब को दो दो तोले लो। इन सबके वज़न से दूना "मण्डूर" लो। मण्डूर का अठ गुना गोमूत्र लो। पहले गोमूत्र में मण्डूर को औटा लो। जब औटते-औटते गाढ़ा हो जाय, उसमें ऊपर की सब चीज़ें मिला दो। यही "पाण्डु पञ्चानन रस" है।

सेवनविधि—इसको गरम पानी के साथ सेवन करना चाहिये। इस रस से पाण्डु, हलीमक और सूजन वगैर सब नाश हो जाते हैं।

पुनर्नवाष्टक क्काथ ।

(१०५) सफेद फूल का हरा या ताज़ा पुनर्नवा, नीम की हरी छाल, परवल के हरे पत्ते, सोंठ, कुटकी, हरी गिलोय, देवदारु और हरड़ —इन सब को ३।३ माशे लेकर कूट लो और आध सेर जल में औटाओ ; चौथाई जल रहने पर उतार लो और छानकर शीतल कर लो। पीछे इसमें ६ माशे "शहद" डालकर हर दिन पीओ। इस काढ़े से सब तरह के शोथ (सूजन) आराम होते हैं। यह मशहूर काढ़ा है। पाण्डुरोग में जब सूजन बहुत ही बढ़ जाय, इसको सेवन कराओ, आश्चर्य फल दीखेगा। सूजन नाश करने में रामबाण है।

इस काढ़े के २।३ दिन लेने से कड़ा मल नरम होकर दस्त खुलासा आता है, भूख लगती और ज्वर हल्का होता है।

यह काढ़ा केवल पुराने शोथज्वर की ही दवा नहीं है, इससे विषमज्वर और जिन ज्वरों में रोगी की तिल्ली और यकृत—लिवर एक दम खराब होकर सारे शरीर में सूजन फैल जाती है, अथवा जिन उदर रोगों के कारण सारे शरीर में सूजन आ जाती है, उन सब में भी यह काढ़ा अच्छा काम करता है। इसके सिवा जिस सूजन का कारण नहीं मालूम होता, जिसमें ज्वर भी नहीं होता और प्लीहा तथा यकृतकी शिकायतें भी समझ में नहीं आती, उनमें भी यह अच्छा काम करता है। यहाँ तक कि, गर्भवती और प्रसूता स्त्रियों की सूजन में भी अच्छा फल दिखाता है।

नोट—(१) यह पुनर्नवाष्टक सब तरहके शोथ या सूजनकी रामबाण दवा है। जब ज्वरमें बारम्बार कुनैन या और तीक्ष्ण वीर्य या बलायती दवा देने और आहार विहारमें गड़बड़ होने से रोगी के हाथ पाँव पेट आदि अंगों पर सूजन आ जाती है और उसके साथ बुखार जम जाता है, उस समय यह काढ़ा रामबाण की तरह अचूक निशाने पर लगता है। उस समय अगर रोगी स्नान प्रभृति त्यागकर हलका पथ्य सेवन करता है, तो निश्चय ही उपकार होता है।

नोट—(२) सफेद पुनर्नवा सूजन की अच्छी दवा है। इसका दो तोले स्वरस ६ माशे शहदमें मिला कर दिनमें दो तीन बार पीने से, सूजन चली जाती है। ज्वर

नायक और दवाओं के साथ यदि इसका स्वरस अनुपान के तौर पर दिया जाय, तो बहुत लाभ हो ।

नोट—(२) जो सूजन दिन में बढ़े, रात में कम हो जाय, सूजन पर अँगुली गाड़ने से गड्ढा सा हो जाय, हृदय की धड़कन बहुत हो, शरीर बहुत ही रूखा हो, उस सूजन में "दशमूल का क्वाथ" विशेष लाभदायक है। दशमूल की प्रत्येक दवा ३।३ माशे लेकर कूट लो और १६ तोले जल में पकाओ, चौथाई जल रहने पर उतार लो। सवेरे ही इसमें जरासा शहद डालकर पीओ। शोथ ज्वर नाश हो जायगा। अगर खांसी हो, तो २।३ रत्ती पीपल का चूर्ण डाल दो। अगर श्वास हो, तो १ माशे बहेड़े का चूर्ण और ६ माशे शहद डाल कर पीओ। अगर शोथज्वर में अजीर्ण हो, तो जरासी बड़ी इलायची और अजवायन मिलाकर पीओ। दशमूल के काढ़े से सूजन तो जाती ही है, पर इसके सिवा यह सन्निपात-ज्वर, वातरोग और प्रसूतिका रोग की भी अच्छी दवा है।

"मण्डूर" शब्द पर दो चार बातें

हमने अनेक स्थानों पर लोह-कीट, मण्डूर या लोहमल आदि शब्द लिखे हैं। उन शब्दोंका भेद अनजान पाठकों को समझ लेना चाहिये। लुहार की दूकान से लोह-कीट लाकर दवा में मिला देना हितकारक नहीं,—अहितकारक है। क्योंकि नया मण्डूर दवा के काम का नहीं होता। साठ साल से पहले का मण्डूर काम में लाना अच्छा नहीं, क्योंकि साठ वर्ष से पहले का मण्डूर विषवत् होता है।

मण्डूर के संस्कृत में क्या-क्या नाम हैं ?

लोहे के मैलको "मण्डूर" कहते हैं। संस्कृतमें मण्डूर, लोह-किट्ट, लौहमल, किट्टी, लोहसिंहान और शूलघातन आदि नाम लोहे के मैल के हैं। बोल-चाल में इसे लोहे की कीटी या कीटीसार भी कहते हैं।

मण्डूर कहाँ मिलता है ?

लोहे को आग में धमाते समय जो उसका मैल मिट्टी में गिर

जाता है, उसीको "मण्डूर" कहते हैं। जहाँ प्राचीन समय में लोहे के कारखाने थे, वहीं से यह अच्छा मिलता है, क्योंकि मण्डूर साठ साल से १०० साल तक का पुराना ही अच्छा होता है। अतः बूढे लोगोंसे पता लगाकर, ऐसे स्थान खोजने चाहियें और वहाँ से इकट्ठा हुआ मण्डूर या लोहे का मैल जमा करना चाहिये।

मण्डूर कैसा होता है ?

मण्डूर के टुकड़े एकसे नहीं होते। कोई टुकड़ा गोल होता है, कोई लम्बा होता है, कोई ऊँचा-नीचा और कोई टेढ़ा-मेढ़ा होता है। नया मण्डूर चिकना और काले रंग का होता है, पर पुराना होने से वही भदमैला या खाकीसा हो जाता है और तोड़ने पर भीतर से काले रंगका निकलता है। मण्डूर अति-भङ्गुर और बिखरने वाला होता है।

यह वज़न में प्राय, लोहे के समान या उससे कुछ कम होता है। गुणों में भी प्राय लोहे के समान ही होता है। इसीलिये लोहे के अभाव में मण्डूर इस्तेमाल किया जाता है। यह लोहे की तरह तेज़ नहीं होता, इसी से कमज़ोर से कमज़ोर मनुष्यों और यहाँ तक कि बच्चों को भी, बेखटके दिया जा सकता है।

मण्डूर किस काम में आता है ?

कामला, पाण्डु, यकृत की विकृति और बालकों के यकृत-सम्बन्धी रोगों में मण्डूर बड़े काम की चीज़ है।

क्या नया मण्डूर काम का नहीं होता ?

हाँ, नया मण्डूर औषधि के कामका नहीं होता। साठ साल

पहले का मण्डूर विष के समान होता है, इसी से वैद्य लोग साठ साल का या उससे भी पुराना मण्डूर दवाओं में डालते हैं। सौ बरस का मण्डूर सबसे उत्तम होता है। अस्सी साल का मध्यम होता है और साठ साल का साधारण होता है। इससे कम वर्षों का मण्डूर निकम्मा होता है और चालीस साल से कम का तो विषवत् होता है। अतः जहाँ तक हो, सठ-साला या साठ साल से पुराना मडूर लेना चाहिये। अगर १०० साल का पुराना हाथ लग जाय, तब तो कहना ही क्या ?

मण्डूर शुद्ध करने की विधि।

पुराना मण्डूर पुराने कारखानों की खंडहर ज़मीनों में मिलता है। बड़े-बूढ़ों से पूछने से ऐसी ज़मीनों का पता लगता है। वहाँ से बड़ी चतुराई से मण्डूर इकट्ठा कर लेना चाहिये। इसके बाद उसे पानी से धोकर साफ कर लेना चाहिये। इसके बाद "बहेड़े की लकड़ी" लाकर, कोयले बना लेने चाहिएँ। अगर वह न मिले, तो "बबूलकी लकड़ी" के कोयले तैयार करने चाहियें। फिर उन कोयलों को भट्टी में जलाकर, एक बर्तन में मण्डूर रखकर, उसे खूब तपाना चाहिये। जब मडूर आग के समान लाल हो जाय, उसे मट्टी या पत्थर के बासन में भरे "गोमूत्र" में बुझा देना चाहिये। इसके बाद उसे गोमूत्र से निकाल कर, फिर आग पर लाल करना चाहिये और फिर गोमूत्र में डाल कर बुझा देना चाहिये। इस तरह सात बार तपा-तपा कर, उसे गोमूत्र में बुझाना चाहिये। इस तरह करने से मडूर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाता है। इसके बाद मडूर को पानी से धोकर सुखा लेना और फिर हमामदस्ते में डालकर कूट लेना चाहिये। जब खूब महीन हो जाय, तब उसे किसी बासन में रख देना चाहिये। यही मण्डूर दवा में डालने योग्य है।

और भी अच्छा मण्डूर बनाने की विधि।

ऊपर के पिसे हुए मण्डूर को कुछ समय तक गोमूत्र में भिगो कर, गजपुट में २।३ बार पका लेने से वह और भी अच्छा हो जाता है।

इसके बाद उस मण्डूर को, मण्डूर से चौगुने त्रिफलेके काढे में, कड़ाही में डालकर पकाना चाहिये। जब त्रिफले का काढा जलते-जलते सूख जाय, तब मण्डूर की भस्म हो जायगी। जब मण्डूर और कड़ाही का रंग लाल हो जाय, तब और आग न देनी चाहिये। कड़ाही जब आप ही ठण्डी हो जाय, मण्डूर को निकाल कर और फिर पीस कर महीन कर लेना चाहिये।

त्रिफले का काढा

मण्डूर का जितना वज़न हो, उससे दुगना त्रिफला लेना चाहिये। जैसे एक सेर मण्डूर हो, तो दो सेर गुठली निकाला हुआ त्रिफला लेकर,१६ सेर जलमें काढा पकाओ और चौथाई पानी रहने पर उतार कर छान लो। यही त्रिफले का काढा मण्डूर की भस्म करने में काम का होता है।

मण्डूर-भस्म क्या काम आती है?

यह मण्डूर भस्म अनुपान विशेष के साथ देने से अनेक रोग नाश करती है। पाण्डु, कामला, हलीमक, यकृतशोथ, तिल्ली और पेट के रोगों में यह बड़ा काम देती है। इनके सिवा ज्वर, खाँसी, अफारा, शूल, बवासीर, कृमिरोग और गोले के रोग में भी यह बड़ी लाभदायक है।

पहले का मण्डूर विष के समान होता है, इसी से वैद्य लोग साठ साल का या उससे भी पुराना मण्डूर दवाओं में डालते हैं। सौ बरस का मण्डूर सबसे उत्तम होता है। अस्सी साल का मध्यम होता है और साठ साल का साधारण होता है। इससे कम वर्षों का मण्डूर निकम्मा होता है और चालीस साल से कम का तो विषवत् होता है। अतः जहाँ तक हो, सठ-साला या साठ साल से पुराना मडूर लेना चाहिये। अगर १०० साल का पुराना हाथ लग जाय, तब तो कहना ही क्या ?

मण्डूर शुद्ध करने की विधि।

पुराना मण्डूर पुराने कारखानो की खंडहर ज़मीनो में मिलता है। बड़े-बूढ़ों से पूछने से ऐसी ज़मीनों का पता लगता है। वहाँ से बड़ी चतुराई से मण्डूर इकट्ठा कर लेना चाहिये। इसके बाद उसे पानी से धोकर साफ कर लेना चाहिये। इसके बाद "बहेड़े की लकड़ी" लाकर, कोयले बना लेने चाहिये। अगर वह न मिले, तो "बबूलकी लकड़ी" के कोयले तैयार करने चाहियें। फिर उन कोयलों को भट्ठी में जलाकर, एक बर्तन में मण्डूर रखकर, उसे खूब तपाना चाहिये। जब मडूर आग के समान लाल हो जाय, उसे मट्ठी या पत्थर के बासन में भरे "गोमूत्र" मे बुझा देना चाहिये। इसके बाद उसे गोमूत्र से निकाल कर, फिर आग पर लाल करना चाहिये और फिर गोमूत्र में डाल कर बुझा देना चाहिये। इस तरह सात बार तपा-तपा कर, उसे गोमूत्र में बुझाना चाहिये। इस तरह करने से मंडूर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाता है। इसके बाद मडूर को पानी से धोकर सुखा लेना और फिर हमामदस्ते में डालकर कूट लेना चाहिये। जब खूब महीन हो जाय, तब उसे किसी बासन में रख देना चाहिये। यही मण्डूर दवा में डालने योग्य है।

और भी अच्छा मण्डूर बनाने की विधि।

ऊपर के लिखे हुए मण्डूर को कुछ समय तक गोमूत्र में भिगो कर, गजपुट में २।३ बार पका लेने से वह और भी अच्छा हो जाता है।

इसके बाद उस मण्डूर को, मण्डूर से चौगुने त्रिफलेके काढे में, कड़ाही में डालकर पकाना चाहिये। जब त्रिफले का काढा जलते-जलते सूख जाय, तब मण्डूर की भस्म हो जायगी। जब मण्डूर और कड़ाही का रंग लाल हो जाय, तब और आग न देनी चाहिये। कड़ाही जब आप ही ठण्डी हो जाय, मण्डूर को निकाल कर और फिर पीस कर महीन कर लेना चाहिये।

त्रिफले का काढ़ा

मण्डूर का जितना वज़न हो, उससे दुगना त्रिफला लेना चाहिये। जैसे एक सेर मण्डूर हो, तो दो सेर गुठली निकाला हुआ त्रिफला लेकर,१६ सेर जलमें काढा पकाओ और चौथाई पानी रहने पर उतार कर छान लो। यही त्रिफले का काढा मण्डूर की भस्म करने में काम का होता है।

मण्डूर-भस्म क्या काम आती है ?

यह मण्डूर भस्म अनुपान विशेष के साथ देने से अनेक रोग नाश करती है। पाण्डु, कामला, हलीमक, यकृतशोथ, तिल्ली और पेट के रोगों में यह बड़ा काम देती है। इनके सिवा ज्वर, खाँसी, अफारा, शूल, बवासीर, कृमिरोग और गोले के रोग में भी यह बड़ी लाभदायक है।

नोट—यह लेख हमने "वैद्य" मुरादाबाद के एक सम्पादकीय लेख को उलट-पुलट कर लिखा है। अत हम सम्पादक महोदय बाबू शकरलाल जी हरिशङ्कर जी के अतीव आभारी हैं।

पथ्यापथ्य।

पथ्य ।

शाली चाँवल, जौ, गेहूँ, जाँगल जीवों का मांसरस, मूँग, अरहर और मसूर—ये पाण्डुरोग में पथ्य हैं।

इस रोगमें खूब सावधान रहो। रोगीको शीतल जलसे स्नान मत कराओ। पानी गरम करके उसमें नर्म कपड़ा डुबो कर उसीसे दूसरे तीसरे दिन रोगीका शरीर पोंछ दो। रोगी का पलँग, घर और उसके निकट के स्थान खूब साफ-सुथरे रखो।

पकाकर शीतल किया हुआ जल अथवा लोहा बुझा हुआ जल रोगी को पिलाओ।

लोहे की कड़ाही में पकाया हुआ दूध, पुराने चाँवलों का भात, सूजी की रोटी, मूँग या मसूरकी दाल, परवल, मूली, तोरई, बैंगन, कच्चा केला, पालक का साग, साफ चीनी, सेंधानोन और गाय का घी पथ्य है।

अपथ्य ।

पाण्डुरोगी को पेट भर खाना मना है। भूख लगने पर भी थोड़ा सा खाना चाहिये।

मछली, मांस, गरम मसाले और लालमिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थ न खाने चाहियें।



सोज़ाक-वर्णन ।

जिस रोग में लिङ्गेन्द्रिय के भीतर ज़ख़्म या घाव हो जाते हैं, पेशाब करते समय जलन होती है और भीतर से पीप सी निकलती है, उसे आजकल सर्व्वसाधारण जानकार लोग और यूनानी हकीम "सोज़ाक" कहते हैं। अँगरेज़ और हिन्दुस्तानी सभी डाक्टर उसे "गनोरिया" कहते हैं, पर अफसोस है कि, आयुर्वेद के किसी भी ग्रन्थ में इस रोग का ज़िक्र पाया नहीं जाता।

भिन्न भिन्न मत।

आयुर्वेद ग्रन्थों में सोज़ाक का ज़िक्र नहीं है, पर अनेक वैद्य और साधारण लोग इसे परमा या प्रमेह कहते हैं। अनेक इसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात मानते और कितने ही इसे आभ्यन्तरिक उपदंश या भीतरी गरमी रोग कहते हैं। पर विचार से देखा जाय, तो न यह प्रमेह है और न मूत्रकृच्छ्र या मूत्राघात। हाँ, आभ्यन्तरिक उपदंश कहनेवालों की बात बेशक कुछ युक्तियुक्त है। उपदंश रोग में लिंगेन्द्रिय के ऊपर घाव होते हैं, और सोजाक में लिंगेन्द्रिय के अन्दर घाव होते हैं। उपदंश विषैला रोग है और गनोरिया या सोज़ाक भी विषैला रोग है। माता-पिता को उपदंश होने से

सन्तान में भी उसका असर पाया जाता है, यही हाल सोज़ाक का है। इसीसे हमको कहना पडता है कि, सोज़ाक को आभ्यन्तरिक उपदंश कहने वालों की बात कुछ युक्तिसंगत है। अब रही उनकी बात, जो इसे प्रमेह या परमा कहते हैं। प्रमेह कहनेवाले सचमुच ही गलती करते हैं। प्रमेह और सोज़ाक दो भिन्न-भिन्न रोग हैं और इन दोनों में बडा अन्तर है।

सोज़ाक और प्रमेह में भेद।

सचमुच ही सोज़ाक और प्रमेह में बडा फर्क़ है। सोज़ाक स्थानिक रोग है, पर प्रमेह सार्व्वाङ्गिक रोग है। सोज़ाक का सम्बन्ध किसी खास जगह से है, पर प्रमेह का सारे शरीर से। गनोरिया या सोज़ाक मूत्रमार्ग या लिंगेन्द्रिय की स्थानिक विकृति है, पर प्रमेह मूत्र का विकार है। सोज़ाक दूषित ससर्ग से, लिंगेन्द्रिय में विष या विषैले जन्तुओं के घुस जाने से होता है, पर आयुर्वेद में लिखे हुए बीसों प्रमेह मनुष्य के कुपथ्यों के कारण से, वात आदि दोषोंके कुपित होने से होते हैं। प्रमेह वस्तिमें होनेवाले रोग है और सोज़ाक लिंगेन्द्रिय में होनेवाला रोग है। वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष कुपित होकर, शुक्र, मेद, मास आदि धातुओं को दूषित करके और उन्हे बस्ति में पहुँचा कर मेह रोग पैदा करते हैं, किन्तु सोज़ाक पेशाब की नली—(लिंगेन्द्रिय मे ज़हरीले जन्तुओं के प्रवेश करने से होता है।) प्रमेह में यकृत की क्रिया ठीक न होने से पाचन शक्ति में गडबडी होती है। पाचनशक्ति की विकृति होने से, रक्त के द्वारा जो मूत्र मूत्राशय में आता है, उसमें विकृति के भिन्न भिन्न तत्व वहाँ आते हैं और मूत्र के द्वारा बाहर निकल जाते हैं। सोज़ाक का यकृत वगैर.से कोई सम्बन्ध नहीं। प्रमेह अनेक साधारण कारणों से होते है, पर (सोज़ाक प्राय· सोज़ाकवाली स्त्री के

समर्ग द्वारा, विषैले जन्तुओं के लिंगेन्द्रिय में प्रवेश करने से होता है। सोज़ाक स्त्री के शरीर से पुरुष के शरीर में और पुरुष के शरीर से स्त्री के शरीर में होता है। जिस तरह क्षय-रोग के कीड़े दूसरे शरीर में घुसकर क्षय पैदा कर देते हैं, उसी तरह सोज़ाक के कीड़े एक शरीरसे या और किसी तरह दूसरे के शरीर में घुस कर सोज़ाक रोग उत्पन्न कर देते हैं।

अब तो पाठक समझ गये होंगे, कि सोज़ाक और प्रमेह में बड़ा अन्तर है। प्रमेह एक प्रकार का मेह या स्राव है, उसमें विषैले जन्तु नहीं, पर सोज़ाक में स्राव होनेपर भी उसका सम्बन्ध विषैले जन्तुओं से है। प्रमेह में पेशाब द्वारा भीतरी धातुएँ गिरती हैं, पर सोज़ाक में मूत्रनली के ज़ख्मों से पीपमात्र बाहर आती है। प्रमेहों के कारण और हैं, सोज़ाक के कारण और हैं। प्रमेह और सोज़ाक के लक्षणों में भी फ़र्क़ है, इसी लिये डाक्टर भी प्रमेह को सिम्पिल यूरेथ्राइटिस—मूत्रनली का साधारण रोग और सोज़ाक को स्पेसीफिक यूरेथ्राइटिस—मूत्र-नली का विशेष रोग कहते हैं।

क्या सोज़ाक के भी जन्तु होते हैं ?

हाँ, क्षय और हैज़े प्रभृति की तरह सोज़ाक के भी छोटे-छोटे जन्तु होते हैं। उनको डाक्टर लोग "गोनोकाकाई" कहते हैं। उन्हीं कारण से ही इस रोग का नाम "गनोरिया" रखा गया है। वे खराब या सोज़ाकवाली स्त्रीके साथ प्रसंग करनेसे,मूत्रनलीके द्वारा,मूत्रमार्ग की अन्दर की चमड़ी की रसीली तह में घुस कर, वहाँ अपनी कारस्तानी करते हैं। इसीसे मूत्रनली में दाह होता, पेशाब में जलन होती और चन्द रोज़ बाद या शीघ्रही घाव होकर पीप आने लगती है।

सोज़ाक के ज़हरीले कीड़े मूत्रनली से आगे भी बढ़ जाते हैं। बहुत करके ये पुरुष के मूत्रमार्ग, स्त्रियों के मूत्रमार्ग, योनि, गर्भ-

स्थान, स्त्री-अण्ड एवं अनेक नाड़ियों द्वारा हमला करते हैं। अनेक बार ये नाक, कान, और मुख की रसीली तहों में पहुँच जाते हैं। इन जन्तुओं का चेप अँगुलियों और मैले कपड़ों द्वारा भी फैलता है।

सोज़ाक और उपदंश में भेद।

यद्यपि सोज़ाक और उपदंश या गरमी रोग दोनों सगे भाई बहन हैं, तथापि इनमें भी फ़र्क़ है। सोज़ाक में लिंगेन्द्रिय के भीतर और उपदंश में बाहर घाव होते हैं। सोज़ाक में लिंगेन्द्रिय के मुख के पास और गरमी में सुपारी के ऊपर ज़ख़्म होते हैं। सोज़ाकवाले का चेप यदि किसी के लगा दिया जाय, तो सोज़ाक ही होता है, उपदंश नहीं होता। इसी तरह उपदंश का चेप लगा देने से उपदंश ही होता है। दोनों में चेप होता है, पर दोनों के चेपोंमें बड़ा भेद है। इस तरह स्पष्ट है कि,सोज़ाक और उपदंश एक नहीं, नाम कोई चाहे जो रख ले।

मूत्रकृच्छ्र और सोज़ाक में भेद।

मूत्रकृच्छ्र और कारणों से होता है और सोज़ाक और कारणों से। मूत्रकृच्छ्र तीनों दोषों से अलग-अलग, सन्निपात से, चोट लगने से, मल रोकने से, वीर्य रोकने से और पथरी से—इस तरह आठ प्रकार का होता है। वातादिक दोष वस्ति या मूत्राशय में कुपित होकर, मूत्रमार्गको पीड़ित करते हैं, तब बड़े कष्ट से पेशाब होता है। इन में किसी को आग के समान जलता हुआ लाल-लाल पेशाब होता है,किसी को मूत्राशय और इन्द्रिय में पीड़ा होकर थोड़ा-थोड़ा पेशाब होता है, किसी को पीड़ा के साथ पेशाब होता और पेशाब के साथ वीर्य गिरता है। मूत्रकृच्छ्र में पेशाब का खूब

जल कर कष्ट से होना, यही एक लक्षण सोज़ाक से मिलता है। सोज़ाक की तरह मूत्रकृच्छ्र में चेपी या विषैले जन्तु नहीं होते। सोजाक दूषित संसर्ग से होता है, पर मूत्रकृच्छ्र और कारणोंसे होता है। इसलिये सोज़ाक को मूत्रकृच्छ्र कहना भूल है। मूत्रकृच्छ्र में पेशाब की रुकावट थोड़ी होती है, पर पेशाब करते समय दर्द बहुत होता है, जबकि मूत्राघात में पेशाब की रुकावट बहुत देर तक होती है, पर दर्द बहुत ही कम होता है।

सोजाक होने में समय-भेद क्यों ?

सभी मनुष्यों के शरीरों की स्थिति एकसी नहीं होती और सभी मार्गों पर समान चेप नहीं होता। इसीसे इन छोटे-छोटे जन्तुओं के बढ़ने और प्रत्यक्ष फल दिखाने में समय-भेद पड़ता है। कितने ही केसों में जन्तुओं के प्रवेश करनेके दस दस और पन्द्रह-पन्द्रह दिन तक बीमारी के लक्षण स्पष्ट नजर नहीं आते और कितने ही केसोंमें हाथों-हाथ फल मिलता है। इधर दूषित संसर्ग हुआ और उधर दो चार छै या दस बारह घण्टे में सोज़ाक के चिह्न दिखाई पड़े। अनेक मनुष्य दूषित संसर्ग के १०।१५ दिन बाद सोजाक से पीड़ित होते और अनेक उसी रात को अथवा सबेरे उठते ही सोज़ाक साहब को सामने देखते हैं। जिनका मिज़ाज बड़ा ही कोमल होता है अथवा जिनका अतीव भयङ्कर सोज़ाकवाली स्त्री से पाला पड़ जाता है, वे शीघ्र ही पेशाब करते समय भयङ्कर वेदना भोगते हैं। सोजाक के कीड़े बहुधा मूत्रनली या लिंगेन्द्रिय के मुँह के किनारों पर लगते हैं। कितनही बार ये सारे शरीर के जोड़ों में सूजन पैदा कर देते हैं। कितने ही हृदय तक दौड़ मारकर, हृदय की भीतरी पड़त में प्रवेश करके, भयानक काण्ड रच देते हैं। मतलब यह, दूषित प्रसंग होने के १०।१२ घण्टे बाद या २।३ दिन

बाद अथवा १०।१५ दिन बाद या कुछ पहले ही सोज़ाक के लक्षण नज़र आते हैं ।

सोज़ाक के कारण ।

हम लिख आये हैं कि, सोजाक प्रायः दूषित संसर्ग से ही होता है , यानी सोजाक वाली स्त्री के साथ प्रसङ्ग करने से पुरुष को और सोज़ाक वाले पुरुष के साथ प्रसङ्ग करनेसे स्त्री को होता है । वास्तव में सोज़ाक का आज-कल यही एक कारण बहुधा देखा जाता है । अनेक नासमझ अनाडी बाज़ारू स्त्रियों के यहाँ जा मरते हैं । प्रसङ्ग करना शुरू करते ही, लिङ्गेन्द्रिय को गरमी का भभका सा लगता है । कोई समझदार तो झट अलग हो जाता और पेशाब कर लेता है । वह कदाचित सोज़ाक से बच भी जाता है , पर जो नादान बिना मतलब हुए अलग नहीं होते, उनको सोज़ाक हो जाता है । इसलिये सोज़ाक का मुख्य कारण वेश्या या खराब स्त्री हुई ।

और भी कारण ।

वेश्यागमन से तो आज-कल अधिकांश लोगों को सोज़ाक होता ही है, पर इस के सिवा सोज़ाक के नीचे लिखे कारण और भी हैं—

(१) स्वप्नदोष होना ।
(२) नशीली वस्तुएँ खाकर रुकावट करना ।
(३) चलते वीर्य्य को अधिक आनन्द के लिये रोकना ।
(४) सोज़ाक वाले के पेशाब पर पेशाब करना ।
(५) रजस्वला स्त्री-गमन ।

स्वप्नदोष प्रभृतिसे सोज़ाक कैसे होता है ?

आज-कल भारत के १०० में ८८ पुरुषों को धातुरोग होता है ।

इसलिये ऐसे लोगों को रात के समय स्वप्न में कोई स्त्री दीखती है, वह स्वप्न में ही उससे प्रसंग करते हैं। प्रसंग करने से वीर्य स्खलित होता है। वीर्य के स्खलित होते-होते ही अक्सर आँख खुल जाती है। आँख खुलते ही प्रसंग-क्रिया बन्द हो जाती है और वीर्य भी सम्पूर्ण रूप से बाहर न निकल कर पेशाब की नलीमें ही रुक जाता है। रुका हुआ वीर्य नली में घाव कर देता है। फिर तो सारे लक्षण सोज़ाक के नज़र आने लगते हैं।

अनेक अभ्यागे लोग वाजीकरण औषधियों सेवन करके अथवा धातुपौष्टिक दवाएँ खाकर अपनी धातु को गाढ़ी और पुष्ट नहीं करते, किन्तु चाहते हैं अत्यधिक स्तम्भन। बिना धातुके पुष्ट हुए स्तम्भन या रुकावट होती नहीं, इसलिये कोई अफीम खाते हैं, कोई गांजा या चरस पीते हैं, कोई तरह-तरह की स्तम्भन-कारक दवाएँ सेवन करके प्रसंग करते हैं, पर धातु के अतीव दुर्बल होने की वजह से वीर्य स्तम्भन करने वाली दवाएँ भी बेकाम साबित होती हैं। ज्योंही वीर्य स्खलित होना चाहता है, वह उसे रोक लेते हैं, इस तरह मूत्रनली में वीर्य रुक कर घाव कर देता है। घाव होने से वही जलन और दाह आदि उपद्रव होते और पीप गिरने लगती है। धोती में पीले-पीले पतले या गाढ़े दाग लगने लगते हैं।

इसी तरह अन्यान्य कारणों से सोज़ाक हो जाता है।

सोज़ाक के लक्षण।

(आरम्भिक चिह्न)

सोज़ाक होते ही पेशाब की इन्द्रिय में घोर दाह और जलन होती है। इन्द्रिय का मुख थोड़ा या बहुत सूज या फूल जाता है। ऊपर की खाल सिमट जाती है। पीड़ा होती और खाज चलती है।

लिंगेन्द्रिय का मुँह लाल हो जाता और सूज जाता है। मुँह के दबाने से गाढ़ा-गाढ़ा सफेद चेप सा निकलता है। पहले-पहल वह थोड़ा-थोड़ा निकलता है।

बीच की अवस्था।

इस तरह सोज़ाक के लक्षण नज़र आते ही अगर किसी अच्छे वैद्य हकीम या डाक्टर का इलाज शुरू करा दिया जाता है, तब तो रोग दब जाता है, ज़ोर कर नहीं सकता। पर, ऐसे मर्ज़ों के मरीज़ अक्सर अपने रोग को छिपाया करते हैं और शीघ्र ही दवा नहीं करते, इसलिये रोग क्षण-क्षण बढ़ने लगता और अतीव भयङ्कर रूप धारण कर लेता है। उस दशा में लिंगेन्द्रिय में ज़ख्म हो जाते हैं। पेशाब के समय जो कष्ट होता है, उसको भयङ्करता को भुक्तभोगी ही कह सकता है। दाह और जलन के मारे रोगी एक-दम चीखता और घबराता है। इस हालत में घावों से पीला पीला या हरियाली माइल पीला स्राव होता है, यानी पीली-पीली गाढ़ी सी या पतली सी रसी या पीप निकल कर धोती में लगने लगती है। बहुत से मूर्ख पेशाब को जलन के भय से पेशाब नहीं करते, रोके बैठे रहते हैं, पर इससे और भी बड़ी खराबी होती है। पेशाब के भर जाने से इन्द्रिय तन जाती है। तनाव से घाव फट जाते हैं। फिर तो और भी घोर वेदना होती है। पेड़ू, कमर और जाँघों के जोड़ों के पास पीड़ा होती है। कभी-कभी बुखार चढ़ आता है। एक तरफ के कूले या गुर्दे में दर्द होता है। (इस रोग में रात को लिंगेन्द्रिय ज़ोर करने लगती है। यह इस व्याधि का स्वभाव है। उस दशा में यदि कोई पुरुष अपने मन को वशमें न करके स्त्री-प्रसंग करता है, तब तो घोर आफत खड़ी हो जाती है। घाव और भी फट जाते हैं। रोग भयङ्कर रूप धारण कर लेता है। इसके सिवा बेचारी स्त्री और मरती है)

तीसरी अवस्था।

एक अवस्था ऐसी भी इस रोग में आती है, जब नाना प्रकार की दवाइयाँ करने से या दिन-पर-दिन बीतने से रोग का ज़ोर घट जाता है, पेशाब की जलन कम हो जाती है या नाम को रह जाती है; पर थोड़ा-थोड़ा पीप आया करता है, कभी-कभी रसी एक-दम बन्द हो जाती है, पर सवेरे ही उठकर इन्द्रिय के दबाने से मुँह पर पीप आई दीखती है। अनेक बार छेद में पीप जम जाती है। पीप को हटाये बिना पेशाब नहीं होता। पीप हटते ही डाट सी खुल जाती और पेशाब होने लगता है। किसी-किसी को अधिक शिकायत नहीं रहती, पर सोज़ाक बना रहता है। रोगी उतनी सी बात की परवा नहीं करता।

पुराना सोजाक।

सोज़ाक का ज़ोर दस पन्द्रह दिन बहुत रहता है, पीछे ज़ोर घटने लगता है। रसी पतली या कम आने लगती है। जिस तरह बीच की अवस्था में पीली रसी आती है, उसी तरह बाद की अवस्था में रसी का रंग सफ़ेद सा हो जाता है। पेशाब की जलन कम हो जाती है। फिर धीरे धीरे वह भी बन्द हो जाती है। सफ़ेद सी रसी कई महीनों तक निकलती रहती है। यद्यपि उस समय पीड़ा नहीं होती। इसी को, पुराना सोज़ाक या क्रॉनिक गनोरिया कहते हैं। इस पुराने सोज़ाक का आराम होना बड़ा कठिन हो जाता है। चन्द महीनों तक घावों के मुँह बन्द हो जाते हैं। रोगी समझता है, मैं आराम हो गया। पर ज्योंही वह लाल मिर्च आदि तीक्ष्ण या गरम पदार्थ खाता है, कि फिर रसी आने लगती है, यानी फिर सोज़ाक हो जाता है। सोज़ाक के पुराना होने से कुरन्द पड़ जाता

है, यानी पेशाब की नली में गाँठ हो जाती है । उससे रोगी को बड़ा कष्ट होता है । पेशाब महीन धार में या बूँद-बूँद निकलता है । इसी को डाक्टर "ष्टिकचर" कहते हैं । इस अवस्था में मूत्र बन्द हो जाने से सलाई फिरानी पड़ती है, तब पेशाब होता है । बहुधा पुराने सोज़ाक से मूत्रकृच्छ्र रोग हो जाता है ।

सोज़ाक को पुराना होने देना अच्छा नहीं, क्योंकि उस से मूत्र-नली के पास के यंत्रों में व्याघात होता है । मूत्र-नली सुकड़ जाती है । उसकी पेशियाँ कमज़ोर हो जाती हैं । किसी-किसी की मूत्र-नली की राह रुक जाती है, तब पेशाब फोतों और गुदा के बीच में रुक जाता है । अन्त में, वह स्वाभाविक राह बन्द होने से नयी राह पैदा करता है । इस दशा में मनुष्य किसी काम का नहीं रहता, नामर्द हो जाता है ।

क्या औरतों को भी सोज़ाक होता है ?



हाँ, पहले लिख आये हैं कि, सोज़ाक स्त्री से पुरुष को और पुरुष से स्त्री को होता है । स्त्रियों को भी पीड़ा होती है, पर मर्द जितनी नहीं होती । क्योंकि उनका मूत्र मार्ग और तरह का अथवा चौड़ा होता है, तोभी जलन और वेदना तो होती ही है । स्त्री को यह रोग होता है, तो जल्दी आराम नहीं होता । स्त्री को सोज़ाक पहले योनि में होता है, पीछे मूत्र-मार्ग में होता है । धीरे-धीरे इस रोग का असर गर्भाशय तक में होता है, जिससे अनेक स्त्रियाँ प्रायः बाँझ हो जाती हैं । उनको सन्तान का मुँह देखना नसीब नहीं होता ।

कहते हैं, स्त्री के सोज़ाक वाले के साथ प्रसंग करने से पाँच सात दिन के भीतर सोज़ाक हो जाता है । सोज़ाक होने के पहले पेडू में अचानक वेदना उठ खड़ी होती है, कय होती हैं, पेट में दर्द होता

है, अन्न से अरुचि हो आती है और किसी-किसीको ज्वर भी चढ आता है। पेशाब जलन के साथ होता है और पखाना साफ नहीं होता। पाँच सात दिन बाद ये शिकायतें प्राय मिट जाती हैं।

स्त्री को कुछ कष्ट मालूम नहीं होता। पर सोज़ाक का बीज नहीं जाता। उस स्त्री के पास जो भी जाता है, उसे भयङ्कर सोजाक हो जाता है। यह बात निश्चय है, कि सोज़ाक होने से मर्द को आरम्भ में ही जैसी पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है, स्त्रियों को वैसा कष्ट उठाना नहीं पड़ता।

सोज़ाक की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) इलाज शुरू करने से पहले रोगी को अरण्डी के तीन या चार तोले तेल को दूध में मिला कर पिला देना चाहिये। दस्त साफ कराकर, कोठा शुद्ध करके, सोजाक की दवा देनेसे जल्दी फायदा होता है। इतना ही नहीं, सोज़ाक नाशक दवा में भी, अगर हो सके तो, कोई हल्की दस्तावर दवा मिला देनी चाहिये। अगर बीच-बीच में कब्ज मालूम हो, तो गुलकन्द गुलाब २ तोले और मुनक्का (बीज निकाल कर) १५ दाने—इन दोनों को औटाकर और मल-छान कर रात को सोते समय पिला देना चाहिये। यह अमीरी चीज़ है। अगर रोगी का कोठा कड़ा हो,तो "स्वास्थ्यरक्षा" या "चिकित्सा चन्द्रोदय" पहले भाग के जुलाब-प्रकरण में लिखे "प्रथमप्रकार चूर्ण" में २ तोले गुलकन्द गुलाब और १० या १५ दाने मुनक्के मिलाकर सबको आधसेर पानीमें औटा लेना चाहिये। चौथाई जल रहने पर, मल छान कर, सोते समय, पिला देना चाहिये। इससे सवेरे ही एक दो दस्त खुलासा आजाते हैं। जैसा रोगी हो, वैसी ही दस्तावर दवा देनी

चाहिये। सनाय और गुलाब के फूलों को उबाल कर देना भी अच्छा है।

(२) सोज़ाक रोगीको ज़ियादा पेशाब लानेवाली दवाएँ देनी चाहियें। दूध और पानी की लस्सी इस रोग में अच्छी है। पर याद रखो, दूध में खाली पानी मिला देने से लस्सी नहीं बन जाती। दूध पानी को दो लोटों में लेकर खूब उलट-पुलट करना चाहिये। बिना उलट-पुलट किये लस्सी नहीं बनती। आरम्भ में, पेशाब साफ कराने के लिये, नीचे लिखे नुसखे काम में लाना अच्छा है :—

(क) गोखरू, ईसबगोल, मुलहटी या बीहदाना—इन में से किसी को, रात को भिगोकर, सवेरे ही मल-छानकर, वही जल पिलाना चाहिये। इन दवाओं से पेशाब साफ होता और पेशाब की जलन कम हो जाती है।

(ख) ककड़ी के बीजों की मींगी, दारुहल्दी और मुलेठी—इन तीनों का चूर्ण चाँवलों के धोवन के साथ पिलाना चाहिये। इससे सोज़ाक और मूत्रकृच्छ्र की जलन एकदम कम हो जाती है।

(ग) ककड़ी के बीज ३ माशे और कलमी शोरा डेढ़ माशे—इन दोनोंको पीस कूटकर फाँक जाना चाहिये और ऊपर से उसी समय, एक पाव गाय के कच्चे दूध में पाव भर जल मिला कर पी जाना चाहिये। पेशाब लानेमें यह नुसखा परमोत्तम और परीक्षित है। पर, इसे खड़े-खड़े पीना चाहिये और पीकर बैठना न चाहिये, किन्तु टहलते रहना चाहिये। इससे पेशाब की गरमी एकदम निकल कर सोज़ाक में बड़ा लाभ होता है।

(घ) ककड़ी के बीज, गुलाब के फूल और सफेद कमल की पखड़ी—इन को जल के साथ सिल पर पीस कर और चीनी मिलाकर छान लेना और पी जाना चाहिये।

(ङ) ककड़ी के बीजों की मींगी १ तोले और सफेद कमल की पखड़ी १ तोले—इनको पीस कर पानी में छान लेना चाहिये। ऊपर से

२ माशे सफेद ज़ीरा और २ तोले मिश्री मिलाकर पीना चाहिये। इस नुसखे से सोज़ाक में पेशाब साफ होता, मूत्रकृच्छ्र मिटता और स्त्रियों का श्वेत प्रदर आराम हो जाता है। स्त्रियों को ७ दिन तक पिलाना चाहिये।

(च) २ तोले शीतलचीनी को जौकुट करके, १६ तोले जल में पकाना चाहिये। दो तोले पानी रहनेपर उतार कर छान लेना चाहिये। शीतल हो जाने पर, उसमें ८ से १० बूंद तक सफेद चन्दन का तेल डालकर उसे पी जाना चाहिये। इस नुसखे को सवेरे, दोपहर और सन्ध्या समय, ५ दिन तक, पीने से सोज़ाक की जलन मिट जाती है, पेशाब साफ होता है और सोज़ाक के ज़ख़्म मिट जाते हैं। इसके सेवन करते समय गेहूँ की पतली रोटी और घी चीनी खानी चाहिये।

नोट—(१) शीतल चीनी के चूर्ण में देशी चीनी मिलाकर खाने से कुछ दिनों में प्रमेह आराम हो जाता है। शीतल चीनी और मिश्री मुँह में रखने से मुँह के ज़ख़्म या छाले मिट जाते हैं। शीतल चीनी के काढ़े में ५ बूँद चन्दन का तेल डाल कर पीने से मूत्रकृच्छ्र—पेशाब का जल कर कष्ट से होना मिट जाता है।

नोट—(२) ऊपर लिखे छहों पेशाब साफ कराने वाले नुसखे परीक्षित हैं। जिनमें ऊपरका नं० (च) तो सोजाक को आराम ही कर देता है।

(३) सोज़ाक-रोगी को तेल लगाकर नहाना और ज़ियादा पानी पीना हितकारक है। दूध पानी की लस्सी थोड़ी-थोड़ी कई बार में खड़े-खड़े पीना और भी अच्छा है। अगर जाड़े का मौसम हो, रोगी कमज़ोर हो, तो "नारायण तेल" मालिश कराकर नहाना चाहिये। इस तेल को लगाकर नहाने से गठिया होने का भय नहीं रहता। अगर रोगी को ज्वर हो या वह स्नान सह न सकता हो, तो स्नान न कराना चाहिये।

(४) इस रोग में पेशाब के अम्ल या खट्टे होने के कारण जलन होती है, इसलिये इस रोग में एलकाली या सोडा पोटाश आदि क्षार देना अच्छा है।

५३

(५) रोगी को अलसी के दानों की चाय बनवा कर पिलानी चाहिये। अगर ज़रूरत हो तो उसमें ज़रासा सोडा मिला देना चाहिये। जौका काढ़ा भी इस रोग में अच्छा है।

(६) आरम्भ में दस्त कराकर, तब पेशाब की नली साफ करने वाली दवाएँ देनी चाहियें। जब पेशाब साफ हो जाय, रसी का रंग सफेद हो जाय और वह पतली सी आने लगे, तब खाने के लिये असल सोज़ाक की दवा देनी चाहिये और साथ ही पिचकारी भी लगानी चाहिये। सोज़ाक होते ही पिचकारी लगाना उचित नहीं, उससे हानि होती है। ८।१० रोज़ बाद ज़ोर घटने पर पिचकारी लगानी चाहिये। पिचकारी की दवाएँ हमने आगे लिखी हैं।

(७) इस रोग से अकसर खून भी खराब हो जाता है। इसलिये रोग मिटते ही, हमारा "अर्क़ खूनसफा" मँगाकर ४।६ बोतल पीना चाहिये अथवा और कोई खून साफ करनेवाली दवा पीनी चाहिये। उसके बाद ४०।५० दिन तक पृष्ठ ४२२का नं० १६ नुसखा सेवन करना चाहिये। अगर ऐसा किया जाय, तब तो इस रोग की जड़ ही नाश हो जाय और शरीर पूर्ववत् निर्दोष हो जाय।

सोज़ाक नाशक नुसखे।

(१) जिस सेमल के वृक्ष में फल न आयें हों, उस सेमल के वृक्ष की नयी या कच्ची मूली या मूसली को खोद कर ले आओ और धोलो। पीछे उसे सिल पर रख कर खूब कूटो और महीन पीसो। पिस जाने पर, रेज़ी के कपड़े में रख कर, किसी मिट्टी या काँच के बर्त्तन में रस निचोड़ लो। यही सेमल का स्वरस है। इसमें से दो तोला स्वरस लेकर पी जाओ। इसके नित्य सेवन करने से

प्रमेह और सोज़ाक निश्चय ही आराम होजाते हैं। आराम ही नहीं—जड़ से आराम हो जाते हैं, पर लगातार कुछ दिनों तक सेवन करना ज़रूरी है।

नोट—१) सोज़ाक रोग में सेमल की नयी मूसली के स्वरस की पिचकारी देने से बहुत ही जल्दी सोज़ाक आराम होता है।

नोट—(२) सेमल की मूसली के स्वरस में थोड़ी मिश्री मिलाकर रोज़ सवेरे-शाम पीने से अपार बल वीर्य बढ़ता है, शरीरकी कान्ति निखरती और पुष्टि होती है। याद रखो, सेमल की मूसली के स्वरस की मात्रा १ से २ तोले तक है। प्रमेह, धातु की कमज़ोरी और शरीर की क्षीणता में सेमल की मूसली अव्वल दर्जे की चीज़ है। गांव और दिहातवालों को इस चीज के लिये पैसा खर्च न करना पड़ेगा। अमीरों को जो मजा हजारों रुपये खर्च करनेसे न आयेगा, वही गरीबोंको बिना १ पाई खर्च किये आयेगा।

(२) बिरौजे का सत्त, सफेद पपरिया कत्था, कलमी-शोरा, भुनी हुई फिटकरी, सफेद चन्दन का बुरादा, केवड़े के अर्क में घुटा हुआ मूँगा, रेवन्दचीनी, गिले अरमनी, संगजराहत, गेरू और दम्मुल अख़वैन—इन सबको एक-एक तोले लेकर, कूट-पीसकर, महीन करलो और तराज़ू में तोलो। जितना चूर्ण का वज़न हो, उतनी ही मिश्री इसमें पीसकर मिलादो और चौड़े मुँह की साफ शीशी या कोरी हँडिया में रखदो। इस चूर्ण के पथ्य-सहित सेवन करने से सोज़ाक और उसके सारे उपद्रव निश्चयही नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

सेवन विधि—इसकी मात्रा जवान को चार माशे की है। एक मात्रा सवेरे और एक शाम को फाँक कर, ऊपर से गाय का थन-दुहा कच्चा दूध पीना चाहिये।

(३) केले के खम्भ को कूट-पीसकर, कपड़े में रखकर उसको निचोड़ लो। इसमें से जो पानीसा निकलेगा, उसेही केले का पानी या रस कहते हैं। यह रस अमूल्य औषधि है। इस रस को मात्रा से पीने से पेशाब खूब साफ होता और सोज़ाक आराम हो जाता है। हर दिन ताज़ा रस निकाल कर पीना चाहिये। बासी रस हानिकारक होता है।

सेवन विधि—मामूली मात्रा ४ तोले की है। दिन में तीन वार सेवन करना चाहिये।

नोट—केले के पानी के सेवन करने से हैज़े के कीड़े मर जाते हैं। साँप के काटने पर इसके पिलाने और लगाने से बड़ा उपकार होता है। हमारे यहाँ तो सर्प आदि विषैले जानवरों के काटने पर केले का जल देने की पुरानी चाल है। अब तो डाक्टर भी इसे सर्प-विष की उत्तम दवा कहते हैं।

इसके सिवा केले के पानी के पिलाने से सूजन, खाँसी, श्वास, अम्लपित्त, पीलिया, कामला, पित्तविकार, दाह, यकृत की सूजन, तिल्ली का बढ़ना, रक्तपित्त, अतिसार, खूनकी गरमी, कफका जमाव,जलोदर, शीतपित्त, फ़ील-पाँव—हाथी-पाँव, प्रदररोग, योनिरोग, प्रमेह और उपदंश—गरमी रोग आराम होते हैं। गरीब इन रोगों में इसका व्यवहार करें। संखिया, हरताल और पारे के विष, बिच्छू के जहर और चूहे के जहर पर भी यह परमोत्तम है। इसमें जरा भी शक नहीं, कि केले का रस अनेक दुःसाध्य और भयङ्कर रोगों के बीजों को नाश करता है।

(४) दो तोले कुकरौंधे के रस में ज़रासी मिश्री मिलाकर पीने से सोज़ाका नाश होजाता है।

नोट—कुकरौंधे को हिन्दी में कुकरौंदा या कुकुरमुत्ता कहते हैं। बंगला में कुकुर-शोका या कुकसीमा कहते हैं। मरहटी में कुकुरन्दा कहते हैं। लैटिन में ब्ल्यूमिया ऑडोरेटा कहते हैं। इसके पेड़ गलीज स्थानों और पुराने खंडहरों में अधिक होते हैं। इसका वृक्ष दो से तीन हाथ लम्बा होता है। पत्ते तमाखू के समान लम्बे और गहरे हरे रंगके होते हैं। पत्तोंको मलनेसे बहुत बुरी बदबू निकलती है। वृक्ष पर एक लाल रंग की चोटी सी होती है। यह कड़वा, तीखा, पचने में मधुर, शीतल, ज्वर-नाशक, रुधिर-विकार शान्त करने वाला एवं प्यास, दाह, रक्तपित्त और रक्तविकार नाशक है। पारे के विकार और खून के दोष में दो तोले रस पीने और शरीर पर मलने से बड़ा ही उपकार होता है। खाँसी में कुकरौंधे की जड़ मिश्रीके साथ मुँहमें रखने से कंठ में जमा हुआ कफ निकल जाता और मुँह का सूखना मिट जाता है। १ तोले रस में ६ माशे मिश्री मिलाकर पीने से खूनी बवासीर जाती रहती है।

(५) बंसलोचन ४ माशे, सफेद इलायचीके बीज ४ माशे, चन्दन का बुरादा ४ माशे, शीतल चीनी २ माशे, रेवन्दचीनी २ माशे, जवाखार २ माशे और कलमी शोरा २ माशे—सबको कूट पीसकर महीन कपड़े में छानलो और वज़न करो। जितना चूर्ण हो, उतनीही मिश्री मिलाकर चौड़े मुँह के साफ बर्तन में रखलो। सवेरे-शाम छै-छै माशे यही चूर्ण चाँवलों के जल के साथ सेवन करनेसे नया सोज़ाक आराम हो जाता है।

(६) गेरू ६ तोले, शीतलचीनी ६ माशे और कपूर ६ रत्ती— इन सबको पीस कूट कर महीन कर लो और चलनी में छानलो। इसकी मात्रा ३ माशे की है। दिन में, हर दो-दो घण्टेपर, एक-एक मात्रा खाकर, ऊपर से शीतल जल पीने से पेशाब की जलन, पेशाब का तकलीफ से उतरना और पीप आना प्रभृति शिकायतों-सहित तथा सोज़ाक आराम हो जाता है। यह नुसखा वैद्यराज प० दुर्गादत्तजी पन्त का परीक्षित है। हम भी ऐसा ही एक चूर्ण बनाते हैं। उससे सोज़ाक फौरन चला जाता है, इसलिये इसके उत्तम होने में सन्देह नहीं।

(७) रूमी मस्तगी १० माशे, इलायची के दाने १० माशे, फिटकरी भुनी १० माशे और मिश्री ३० माशे—इन सबको पीस कूटकर रख लो। इसमेंसे ४ माशे चूर्ण, गाय के दूध की लस्सीके साथ, लेने से सोज़ाक और धातु का गिरना आराम होजाता है।

(८) सफेद ज़ीरा १ तोला, कलमी शोरा ६ माशे, रेवन्दचीनी ८ माशे, शीतल चीनी ६ माशे और खरबूजे के बीज १ तोले—इन सबको पीसकर, पाव-भर जल में मिलाकर, कपड़े में छान लो और ३ तोला मिश्री मिला कर, दिन में तीन चार बारपीओ। यही दिन-भर की खुराक है। ७ दिन में सोज़ाक चला जाता है।

(९) फिटकरी ४ माशे, शीतल चीनी ६ माशे, सफेद कत्था ६ माशे, बड़ी इलायची के बीज ६ माशे, सेलखड़ी ६ माशे और राल ६ माशे—इन सब दवाओं को कूट-पीस कर कपड़े में छान लो। मात्रा ४ माशे की है। अनुपान गायका दूध है। इसके सेवन करने से पेशाब की जलन और सोज़ाक आराम होजाता है।

नोट—यह नुसखा चौबे ज्वालादत्तजीठाकुर द्वारा निवासीका आजमाया हुआ है।

(१०) बेलकी जड़ को कूट कर रात के समय जल में भिगोदो। सवेरे ही उसे छानकर, उसमें कच्ची चीनी मिलाकर पीओ। इससे पेशाबकी चिनग और जलन आदि उपद्रव नाश हो जाते हैं।

(११) लौकी की खीर बनाकर खाने से नवीन सोज़ाक में बहुत लाभ होता है।

(१२) नीम का गोंद और मिश्री मिलाकर खाने से सोजाक में अत्यन्त लाभ होता है।

(१३) गीली फालसे की जड़ १० तोले कुचल कर, रात के समय, १ पाव जल में भिगो दो। सवेरे ही उसे मलकर छान लो और उसमें देशी मिश्री मिलाकर पीजाओ। इस नुसखे से एक हफ़्ते में सोज़ाक आराम हो जाता है।

नोट—फालसे की गीली जड़ १० तोले लो। अगर गीली न मिले, सूखी मिले तो पाँच तोले लो। अगर इसके पीते-पीते पिचकारी भी लगाई जाय, तो बहुत ही जल्दी आराम हो।

(१४) घीग्वार के गूदे में मिश्री मिलाकर खाने से १०।१५ दिन का नया सोज़ाक ३।४ दिन में आराम हो जाता है।

(१५) रेवतचीनी का चूर्ण १ तोला, दोनों समय, पानी के साथ लेने से बहुतसा सुर्ख पेशाब होता और इन्द्रिय के भीतर के घाव आराम होकर, पुराना सोज़ाक नाश हो जाता है।

(१६) गिलोय का सत्त १ तोले, दिल्ली की सफेद मूसली २ तोले, दरियाई तालमखाना ३ तोले, मखाने की ठुर्री ४ तोले और देशी मिश्री ५ तोले—सब को पीस कर और छानकर रखलो। इसमें से छै-छै माशे दवा मिश्री-मिले गाय के दूध के साथ लेनेसे, सब तरह के प्रमेह नाश हो जाते हैं। धातु-विकार, मूत्रदोष, वीर्य का जल्दी छुटना, स्वप्नदोष आदि आराम होते हैं। सोज़ाक आराम होनेके बाद इसको ४० दिन तक खाने से फिर सोज़ाक नहीं होता और शरीर खूब बलवान हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) गिलोय के अढाई तोले रस में ६ माशे शहद मिलाकर पीने से पेशाब की जलन और दाह समेत प्रमेह और सोज़ाक नाश हो जाते है।

(१८) हरे आमलों का रस निकाल कर, उसमें पिसी हुई हल्दी और शहद मिलाकर पीने से प्रमेह और सोज़ाक नाश होते हैं।

नोट—हरे आमले न मिलें, तो सूखे आमलों का काढ़ा कर लो।

(१९) भुनी हुई फिटकरी ४ माशे, गेरू ४ माशे और मिश्री ८ माशे, इन तीनों को पीसकर मिलालो। इसमें से ७ माशे चूर्ण गाय के दूध के साथ खाने से सोज़ाक आराम होता है।

(२०) हल्दी और आमले बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। पीछे उसमें बराबर की मिश्री पीसकर मिला दो। इसमें से १ तोला चूर्ण खाकर, शीतल जल पीने से नया सोज़ाक ८ दिन में आराम हो जाता है।

(२१) ढाक की सूखी कोंपल, ढाक का गोंद, ढाक की छाल और ढाक के फूल,—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, कूट छान कर बराबर की मिश्री मिला लो। हर दिन ७॥ माशे दवा दूध के साथ खाने से सोज़ाक की पीप बन्द हो जाती और सोज़ाक नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(२२) बड की कोंपल छाया में सुखाकर पीस लो और उसमें बराबर की शक्कर मिला लो। हर सवेरे १ तोला चूर्ण खाकर, दूध की लस्सी पीने से ७ दिन में सोज़ाक नाश हो जाता है।

(२३) सदा सुहागन के पत्ते १ तोले रात को पानी में भिगो दो। सवेरे ही मल-छान कर थोड़ी सी चीनी मिलाकर पीने से नया सोज़ाक आराम हो जाता है।

(२४) कलमी शोरा १॥ तोला, सेलखड़ी आधी छटाँक, शीतल-चीनी आध पाव, फिटकरी ६ माशे, गेरू मिट्टी ४ माशे और कपूर ३ माशे,—सबको महीन कूट पीस कर, कपड़े में छानकर, चौड़े मुँह की बोतल में भर दो।

सेवनविधि—मात्रा ३ माशे की है। इसको दिन में ६ बार, दो-

दो घण्टे पर खाकर, ऊपर से शीतल जल पीना चाहिये। इसके सेवन से सोज़ाक निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर ११ दिन तक यह दवा खाने से आराम न मालूम हो, तो पिचकारी भी लगानी चाहिये।

(२५) शीतलचीनी २ तोला, रेवन्द चीनी १ तोला, कलमीशोरा १॥ तोला, कच्ची फिटकरी १ तोला और छोटी इलायची के दाने १ तोला, सब को कूट पीस कर छान लो। इसकी मात्रा ४ माशे की है। अनुपान दूध पानी की लस्सी। दिन में ६ मात्रा, हर दो दो घण्टे पर, लस्सी के साथ, लेने से वह सोज़ाक आराम हो जाता है, जिसमें इन्द्रिय में गाँठ या कुरह पड जाता है और जिसकी वजह से पेशाब रुक-रुक-कर महीन धार से आता है। परीक्षित है।

(२६) दो तोले अलसी को रात के समय आध सेर जल में भिगो दो। सवेरे मल-छान कर लुआब निकाल लो। फिर उसमें दो तोले मिश्री मिलाकर पी जाओ। इस नुसखे से स्वप्नदोष से हुआ सोज़ाक आराम हो जाता है। गरम चीजों से बचना चाहिये। परीक्षित है।

(२७) अलसी ४ तोले, खीरे ककड़ी के बीज ४ तोले, गोखरू २ तोले, बिहीदाना २ तोले, धनिया २ तोले, बबूल का गोंद २ तोले, आमले सूखे २ तोले और ईसबगोल साबत २ तोले—सब दवाओं को जौकुट करके रख लो और उसके दश भाग कर लो। एक भाग रात को आध सेर जल में भिगो दो, सवेरे खूब मल-छान कर और एक तोला चीनी मिलाकर पी जाओ। सवेरे इसी तरह एक भाग दवा भिगोकर, सन्ध्या को मल छान कर पी जाओ। आशा है, आठ दिन में स्वप्नदोष के कारण से हुआ सोज़ाक आराम हो जायगा।

(२८) असली चन्दनका तेल और विरौजे का तेल लाकर रख लो। इन तेलों को दश-दश बूँद एक बताशे में टपका कर, बताशा खा जाओ और ऊपर से गाय का थन-दुहा दूध एक पाव पी लो। सवेरे-शाम इस दवा के खाने से सब तरह के सोज़ाक आराम हो

जाते हैं। अगर रोग का ज़ोर बहुत हो, तो पन्द्रह-पन्द्रह और बीस-बीस बूँदें तक ली जा सकती हैं, पर ज्यों ज्यों रोग का ज़ोर घटे, दवा की मात्रा घटा देनी चाहिये। इस दवा से पहले दिन ही आराम मालूम होता है। सोजाक की भयङ्कर वेदना कम हो जाती है। ८।१० दिन में तो आराम ही हो जाता है।

नोट—चन्दन का तेल और बिरौजे का तेल दस-दस या बीस-बीस बूँद लेने से भी खूब लाभ होता है। यदि पेशाब कम होता हो, तो इसमें "शीतलचीनी" का तेल भी १० बूँद मिला लेना चाहिये। इस दवा से हमने कोई ५०० रोगी आराम किये हैं। बहुत से रोगी ऐसे भी मिल गये, जिनको पिचकारी की दवा भी देनी पड़ी, तब आराम हुए। सोजाक में पिचकारी लगाना बहुत जरूरी है। पिचकारी की दवाएँ हमने आगे लिखी हैं। अगर दवा खाई जाय और साथ-साथ पिचकारी भी लगाई जाय, तब तो आराम होने में सन्देहही नहीं। पर पिचकारी सोजाक होते ही न लगानी चाहिये। जब सोजाक का जोर घट जाय, रसी पतली पड़ जाय और जलन कम होजाय, तब लगानी चाहिये।

(२८) शीतल चीनी ४ माशे, छोटी इलायची ४ माशे, गिले अरमनी ४ माशे, इसपरल यहूद ४ माशे और बिरौजे का सत्त ४ माशे,—इन सब को एकत्र पीस कर, सब की बराबर मिश्री मिलाकर रख लो। इस में से चार चार माशे दवा, सवेरे-शाम, पानी मिले कच्चे दूध के साथ, लेनेसे सोज़ाक आराम हो जाता है।

(३०) धनिया, धमासा, गोखरू, पाषाणभेद, अमलतास का गूदा और पुराना गुड़—इन सब को छै छै माशे लेकर, एक सेर जल में भिगो दो और छान लो। इस जल को दिन में २।३ बार पिलाने से सोज़ाक के आरम्भ में अवश्य लाभ होता है। ध्यान रखो, यह शुरू में ही देने की दवा है।

नोट—अमलतास नर्म दस्तावर दवा है। अमलतास का बीज पानी में घिसकर बिच्छू के डंक पर लेप करो और उस लेप पर घिसा अमलतास का बीज रख दो। यह वहाँ चिपक जायगा और जहर को सोख लेगा। बिच्छूके डंक का अच्छा इलाज है।

(३१) आयल कोपेबा	४ ड्राम
आयल क्यूबिब	२ ड्राम
म्यूसिलेज अकेसिया	२ औन्स

आयल सिनेमन	१५ बूँद
पानी	१५ औन्स

पहले की चारो दवाओं को मिलाकर पानी में मिला दो। इस दवा को दिन में ३ बार, खाना खाने के पीछे, एक-एक औन्स सेवन करने से शीघ्र ही पीप या रसी आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(३२) अगर ऊपर की अङ्गरेज़ी दवासे रसी बन्द न हो, तो ३ या ६ माशे शीतलचीनी के चूर्ण में—४० या ६० बूँद कोपैवा मिलाकर रख लो। उसके दो भाग कर लो। सवेरे-शाम एक-एक भाग दवा ३ माशे घी, ६ माशे शहद और ८ माशे मिश्री में मिलाकर चाटो। इससे अवश्य रसी बन्द हो जायगी।

(३३) दस या बीस बूँद बरगोयन का चन्दन का तेल मिश्री या बताशे में टपकाकर खाने से सोज़ाक आराम हो जाता है।

नोट—अगर इसमें बालसाम कोपैवा या बिरौजे का तेल भी दस या बीस बूँद मिलालें, तो सोने में सुगन्ध हो जाय। बिरौजेका तेल, चन्दन का तेल और शीतलचीनी का तेल सोजाक की रामबाण दवा हैं।

(३४) नीम के पत्ते और चमेली के पत्ते औटाओ और उस गुनगुने जल में लिंग को रखो और उसका बफारा लो। १०।१२ मिनट बाद उसी में पेशाब कर दो। सोज़ाक में लाभ होगा।

(३५) केले के खम्भे का रस निकाल कर पीने से सोज़ाक आराम होता है।

(३६) सवेरे ही बरगद का दूध दो बताशों में भरकर खाओ। ३ दिन में सोज़ाक आराम हो जायगा।

(३७) सात माशे जवाखार गाय के दही में पीने से सोज़ाक आराम होता है।

(३८) दो रत्ती गन्दाबिरोज़ा गुड़ में मिलाकर खाने और ऊपर से पानी में घोला हुआ दही पीने से सोज़ाक नाश होता है।

(३८) सिरस के पत्ते पीस कर और पानी में घोल कर पीने से सोज़ाक नाश होता है। थोड़ी सी चीनी भी मिला दी जाय तो अच्छा हो।

(४०) बबूल की कोंपल १ तोले और गोखरू १ तोले, दोनों का रस निकाल कर और ज़रा सी चीनी मिलाकर पीने से सोज़ाक नाश होता है।

(४१) कतीरे में ज़रा सी चीनी मिलाकर खाओ और ऊपर से गाय का दूध पीओ। इस नुसखे से पुराना सोज़ाक नाश हो जायगा।

(४२) सोज़ाक में लिंगेन्द्रिय में उत्तेजना बहुत होती है। उससे घाव तड़क कर रोग बढ़ जाता है। इसलिये उसकी उत्तेजना कम करने को, रात के समय, अफीम १ गेहूँ भर और बरास कपूर ५ गेहूँ भर देना उचित है। अगर उत्तेजना या तेज़ी अधिक हो, तो यही सवेरे भी देना चाहिये।

(४३) रोज़ रात को सोते समय, कबाबचीनी का चूर्ण १॥ माशे, कपूर २ रत्ती और अफीम आधी रत्ती—इन सब को एक में मिला कर सेवन करो। इससे पेशाब साफ होगा, लिंगेन्द्रिय ज़ोर नहीं करेगी, स्वप्नदोष नहीं होगा और सोज़ाक के घाव आराम होंगे।

(४४) राल और शक्कर बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इसमें से ३।३ माशे चूर्ण सवेरे-शाम खाने से सोज़ाक की पीप आना मिट जाता है।

(४५) त्रिफले के पानी में चने भिगोकर, नित्य सवेरे ही खाने से सोज़ाक चला जाता है।

(४६) सफेद चन्दन पत्थर पर घिस कर एक तोले पानी में मिला दो और चीनी मिलाकर दिन में ३।४ बार पीओ। इससे सोज़ाक निश्चयही आराम हो जाता है।

(४७) चन्दन का तेल २० बूँद मिश्री के चूर्ण पर टपकाकर खा जाओ। ऊपर से शीतल जल पीलो। इसको सवेरे शाम सेवन करने

से पहले दिन ही जादू का सा चमत्कार दीखता है और ४।५ दिन में सोज़ाक नाश हो जाता है।

(४८) तीन रत्ती गन्देबिरोजे का सत्त गुड़ में मिलाकर सवेरे-शाम खाने से पुराना सोज़ाक चला जाता है।

(४९) सवेरे शाम तीन-तीन रत्ती भुनी हुई फिटकरी शहद में खाने से पुराना सोज़ाक आराम हो जाता है।

(५०) सफ़ेद कमल की गाँठ का चूर्ण ६ माशे, ज़ीरे का चूर्ण ३ रत्ती, चीनी ६ माशे और घी १ तोला—मिलाकर सवेरे शाम लेने से सोज़ाक और प्रमेह नाश होते हैं। परीक्षित है।

(५१) ज़ीरा सफेद १ तोले, सफेद इलायची ६ माशे, कपूर २ माशे, वंसलोचन ३ माशे, धनियाँ डेढ़ माशे और कासनी १॥ माशे —सब को कूट-छान कर, और १ तोला मिश्री मिलाकर रख लो। इस में से ८ माशे चूर्ण दूध की लस्सी के साथ लेने से खून की गरमी का सोज़ाक आराम होता है।

(५२) कलमीशोरा, रेवतचीनी, सफेदज़ीरा और जवाखार—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस छान लो। इसमें से चार माशे चूर्ण फाँक कर, ऊपर से गाय के दूध की लस्सी पीओ। इससे ढेर के ढेर पेशाब होकर सोज़ाक मिट जायगा।

(५३) कीकर के फूल एक मुट्ठी-भर,रातको, कोरी हाँडी में पानी १ पाव डाल कर भिगो दो। सवेरे मल-छान कर और चीनी मिला कर पीओ। इससे सोज़ाक आराम हो जाता है।

नोट—बबूल की नरम पत्ती १ तोला और गोखरू १ तोला दोनों को छटाँक भर पानी में पीसकर और तोले भर मिश्री मिलाकर पीने से सोजाक नाश हो जाता है।

(५४) शुद्ध गन्दाबिरोजा १ माशे, इलायची ४ रत्ती और बंस-लोचन ४ रत्ती—इनको कूट पीस कर मिला लो। यह एक मात्रा है। इसको फाँक कर, दूध की लस्सी पीने से सब तरह के सोज़ाक नाश होजाते हैं।

(५५) भुनी फिटकरी के फूल १ माशे रोज खाने और जल पीने से सात दिन में सोज़ाक जाता रहता है।

(५६) सिरस के नर्म पत्ते १ तोले लेकर पीस लो और आध पाव जल में घोल कर, दो तोले मिश्री मिला कर पीओ। सोज़ाक चला जायगा। परीक्षित है।

(५७) भुनी फिटकरी ३ माशे, गेरू २ माशे, और मिश्री ६ माशे —सब को गाय के कच्चे दूध के साथ १५।२० दिन खाने से सोज़ाक निश्चय ही चला जाता है। परीक्षित है।

(५८) सहँजने का गोंद १ तोले, गाय के १ पाव दही में मिला कर, ११ दिन, खाने से सोज़ाक आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५९) ६ माशे राल और ६ माशे मिश्री दोनों को मिलाकर खाने से पेशाब के साथ कच्चे खून का आना बन्द हो जाता है।

(६०) ६ माशे शोरा कलमी और बड़ी इलायची के बीज ६ माशे —दोनों को मिलाकर, लाल सांठी चांवलों के धोवन के साथ, सात दिन सेवन करने से सोज़ाक ज़रूर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६१) गन्देबिरोज़े का सत्त १ माशे लेकर, एक माशे गुड़ में मिलाकर खाओ और ऊपर से गाय के आध पाव दही में एक छटाँक पानी मिलाकर पी जाओ। इस तरह करने से सोज़ाक जल्दी ही आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(६२) कतीरा गोंद १ तोले और चीनी कच्ची १ तोले—दोनों को गाय के पाव भर कच्चे दूध में मिलाकर, सवेरे ही, कोरे कलेजे पीने से पुराना सोज़ाक भी चला जाता है। ११ दिन या २१ दिन में आराम होगा। परीक्षित है।

(६३) अगर सोज़ाक में पेशाब के साथ खून आता हो, तो चाकसू के २१ बीज चबाकर, ऊपर से भिगोया हुआ चन्दन का पानी पीलो। निश्चय ही खून बन्द हो जायगा।

नोट—सफ़ेद चन्दन का बुरादा दो तोले लेकर, मिट्टी की कोरी हाँड़ी में आधा

पाव जल डालकर रात को भिगो दो। सवेरे मल-छान कर जल निकाल लो। यही चन्दन का जल है।

(६४) मुण्डी के स्वरस को पीने और उसकी पिचकारी लगाने से पेशाब की जलन, घाव की पीड़ा आराम होती है तथा पेशाब साफ होता है। स्त्रियों के योनिशूल, योनिकी खुजली, एवं मूत्र-नली की जलन में भी मुण्डी का स्वरस पीना और पिचकारी देना अच्छा है।

(६५) बिरौजे का सत्त, सफेद कत्था, कलमीशोरा, भुनी फिटकरी, सफेद चन्दन, केवड़े के अर्क में घुटा हुआ मूँगा, रेवतचीनी, गिले अरमनी, सङ्गजराहत, गेरू और हजरल यहूद—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, पीस कूट कपड़े में छान लो। मात्रा २ माशे की। इस मात्रा में बराबर की मिश्री मिलाकर, गाय के कच्चे दूध के साथ सेवन करने से सोज़ाक और उसके सब उपद्रव शान्त होते हैं।

(६६) गोंदके पानी या बबूलके पत्तोंके स्वरसमें वंगेश्वर १ रत्ती से २ रत्ती तक मिला कर सेवन करने से सोज़ाक नाश हो जाता है।

(६७) गिलोयका स्वरस ५ तोले, चाँवलोंका धोवन १० तोले, शहत १ तोले, मिश्री २ तोले और इलायची के बीज २ रत्ती—इन सब को मिलाकर रख लो। इसमें से दो दो तोले घण्टे-घण्टे में पीने से सब तरह की पेशाब की जलन शान्त होती है।

सोज़ाक नाशक पिचकारी।

(६८) हरड़ १ माशे, रसौत १ माशे और पपरिया कत्था १ माशे—सब को आध सेर पानी में रात को भिगो दो। सवेरे ही कपड़े में छानकर पिचकारी लगाओ। इस पिचकारी से पेशाब साफ होता और पेशाब की जलन, चिनग वगैर सोज़ाक के सभी उपद्रव नाश हो जाते हैं। अगर दवा खाई जाय और साथ ही पिचकारी भी लगाई जाय, तो बहुत ही जल्दी आराम हो। परीक्षित है।

(६८) सफेद कत्था २ तोले, अफीम १ रत्ती, मह्दँदी के पत्ते २॥ तोले और रसौत १ तोला,—इन सबको रातके समय पानीमें भिगो दो और सवेरे ही कपड़े में छान कर पिचकारी लगाओ। यह एक दिन की बनी दवा ३ दिन तक काम देती है। परीक्षित है।

(७०) तूतिया तीन माशे और फिटकरी ६ माशे—इन को आध सेर पानी में औटाओ। आधा जल रहने पर उतार लो। इसकी पिचकारी लगाने से सोज़ाक का भीतर का घाव आराम हो जाता है। अगर इसके लगाने से खून आवे, तो हर्ज नहीं। उस हालत में स्त्री के दूध को पिचकारी लगानी चाहिये।

नोट—अगर इस दवा में १ तोला सफ़ेद कत्था भी मिला दिया जाय, तो अच्छा हो।

(७१) सफेद कत्था १० माशे, मुरदारसंग १० माशे, रसौत १० माशे और भुना तूतिया चार रत्ती—इनको १ सेर जल में औटाओ, आधा रहने पर उतार लो और पिचकारी लगाओ। इस पिचकारी से सोज़ाक आराम हो जाता है।

(७२) तालाब की काई निचोड़ कर, उसका पानी लिंग के छेद में टपकाने से सोज़ाक में लाभ होता है।

(७३) गोखरू, शीतलचीनी, पोस्त का डोडा, खिरेंटी की जड़, और सफेद पुनर्नवे की जड़—इन सब दवाओं को ३ तोला लेकर, आध सेर जल में पकाओ। जब एक छटाँक जल रह जाय, छान कर पी लो। इससे नया सोज़ाक चला जाता है।

(७४) मह्दँदी की ताज़ा पत्ती २ तोले, सफेद सुरमा २ तोले, गेरू २ तोले और रसौत २ तोले—इन दवाओं को डेढ़ सेर जल में खूब महीन घोट कर आग पर पकाओ, जब आधा जल रह जाय उतार लो और छान कर बोतल में भर दो। इस दवा की पिचकारी लगाने से सोज़ाक नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(७५) नीम की ताज़ा पत्ती १२ तोले, त्रिफला २० तोले, धनिया

१ तोले और अफ़ीम ६ माशे—इन सब को अधकचरा करके, रात को २॥ सेर जल में भिगो दो और सवेरे ही आग पर जोश दो। आधे से कम जल रहने पर उतार कर छान लो और बोतल में भर दो। यह पिचकारी की दवा सोज़ाक पर निहायत अच्छी है। परीक्षित है।

(७६) हरड़, बहेड़ा और आमला,—तीनों को मिलाकर १ पाव लेकर, अधकचरा करके, रात के समय १॥ सेर जल में भिगोदो। सवेरे ही उसमें से जल को छान कर, उसमें एक माशे नीलाथोथा महीन पीस कर मिला दो। इस दवा की पिचकारी लगाने से बहुत करके स्वप्नदोष का सोज़ाक नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(७७) रसौत, फिटकरी, सफेद कत्था और कपूर,—इन सब को दो दो माशे लेकर, इन्हीं में एक तोले सफेद सुरमा मिला दो। पीछे इन सब को साफ खरल में डाल कर घोटो और आध सेर जल में घोल कर कपड़े में छान लो। इस दवा की पिचकारी लगाने से हर तरह का सोज़ाक नाश हो जाता है।

(७८) सफेद चन्दन पानी में घिसकर उसकी पिचकारी लगाने से पुराना सोज़ाक चला जाता है।

(७९) ५ रत्ती फिटकरी आधी छटांक शीतल जल में मिलाकर, साँझ सवेरे, पिचकारी लगाने से सोज़ाक आराम हो जाता है।

(८०) एक रत्ती अफ़ीम आधी छटांक कपूर के पानी में घोल कर, सवेरे-शाम पिचकारी लगाने से सोज़ाक आराम हो जाता है।

(८१) त्रिफले का काढ़ा, पीपल की छालका काढ़ा, खैर भिगोया जल, बबूल की लकड़ी का काढ़ा या दही का पानी,—इन में से किसी की पिचकारी मारने से सोज़ाक में अवश्य लाभ होता है।

(८२) त्रिफले के सुहाते-सुहाते गरम काढ़े में लिंग को डुबाये रखने से लिंग की सूजन उतर जाती है। ऐसा कई दिन करना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—गरमी या उपदंश रोग में जब लिङ्ग सूज जाता है, मुँह नहीं खुलता, तब

इस तरह लिङ्ग को त्रिफले के काढ़े में घण्टा आध घण्टा डुबाये रखने और ऊपर से सुहाता-सुहाता यही त्रिफले का काढ़ा डालने से ५।७ दिन में भयानक सूजन भी उतर जाती है। परीक्षित है।

(८३) जायफल के गरम सुहाते-सुहाते काढ़े में लिंगको डुबाये रखने से भी लिंग की सूजन उतर जाती है।

नोट -सूजन होने की हालत में लिङ्ग को कपड़े से लपेटे रहो और ऊपर को उठाये रखो।

(८४) केवल रसौत को अर्क गुलाब में घोलकर पिचकारी देने से सोज़ाक में बड़ा फ़ायदा होता है।

(८५) नीम के पत्ते, इमली के पत्ते, नीबू के पत्ते और महँदी के पत्ते,—इनको दो-दो तोले लाकर, आठों तोले पत्तों को सेर-भर जल में औटाओ। तीन पाव जल रहने पर उतार कर छान लो। इस काढ़े की पिचकारी दिन में तीन या चार बार रोज़ लगाने से सोज़ाक नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(८६) मोर थोथा २ रत्ती, सफेदा काशगरी १ माशे, गेरू ६ माशे, वालमीशोरा ३ रत्ती और माजूफल १ माशे—इन सब को सिल पर पीस कर, खूब महीन कर लो। इसके बाद अफ़ीम १ माशे, रसौत १ माशे और बबूल का गोंद १ तोले ले लो। पहले गोंद को खरल में डालकर, ऊपर से १ पाव जल डाल कर खूब घोटो। गोंद के घुट जाने पर, उसमें रसौत और अफ़ीम डाल दो और घोटो। इन तीनों के घुट जाने पर, ऊपर की मोर-थोथा प्रभृति पिसी दवाइयों के चूर्ण को उसी में डाल दो और घोटो। एक-दिल हो जाने पर, महीन कपड़े में छान लो। यह एक दिन के लायक़ पानी है। इसको चीनी के साफ़ प्याले में रखकर, दिन में तीन बार, रोज़ पिचकारी लगानी चाहिये। रोज़ इसी तरह पिचकारी की दवा तैयार करके ८।१० दिन पिचकारी लगाने से सोज़ाक अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर इन पिचकारी की दवाओं में पानी के बदले "गुलाब-जल' डाला जाय, तो और भी अच्छा हो।

(८७) सलफेट आफ कॉपर एक चाँवल भर लेकर, १ छटाँक साफ जल में घोल लो और पिचकारी लगाओ। इससे सोज़ाक अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८८) सलफेट आफ ज़िंक दो चाँवल भर लेकर, पाँच तोले पानी में मिलाकर पिचकारी लगाने से सोज़ाक आराम हो जाता है।

पेशाब खोलने और सूजन नाश करनेके उपाय।

(८९) चूहे की मेंगनी २ तोले और कलमी शोरा १ तोले, दोनों को सिल पर पानी के साथ पीस कर, गुनगुना करके, नाभि के नीचे लेप करने से पेशाब हो जाता है।

(९०) ज़रा सा कपूर या शोरा मूत्रनली के मुँह में रखने से पेशाब खुल जाता है।

(९१) १ तोले रेवन्दचीनी सौंफ के अर्क में पीस कर, नाभि के चारों ओर गाढा-गाढा लेप करने से पेशाब खुल जाता है।

(९२) अगर इन्द्रिय सूज जाय, तो नीम के पत्ते पानी में औटाकर, उस पानी का बफारा इन्द्रिय को दो। जब पानी कम गरम हो जाय तब उसको लिंगेन्द्रिय पर ढालो। इन उपायों से सूजन अवश्य कम हो जायगी।

(९३) पोस्त के डोडों को औटाकर इसी तरह बफारा दो और लिंग पर ढालो। इससे भी सूजन उतर जाती है।

(९४) अगर पेशाब बन्द हो जाय, तो मुट्ठी भर टेसू के फूल उबाल कर, सुहाते-सुहाते गरम, नाभि से नीचे पेडू पर बाँधो। पेशाब होगा।

(९५) कलमीशोरा और टेसू के फूल, दोनों बराबर-बराबर लेकर, पानी के साथ पीस कर, पेडू पर लेप करो, पेशाब खुल जायगा।

(८६) मूली के पत्तों का स्वरस आधसेर निकाल कर, उसमें २ माशे शोरा मिलाकर रोगी को पिलादो। पेशाब होगा।

(८७) रोगी को नाभि तक गरम जल में बिठा दो, पेशाब होगा। अथवा इन्द्रिय और मूत्राशय पर गरम पानी की धार छोड़ो।

(८८) अनेकवार सोडावाटर पिलाने से भी पेशाब हो जाता है।

नोट—पेशाब बन्द होने को फ़ारसी में "बन्द शुदन बौल" और पेशाब के बूँद-बूँद आने को "तक्तीरुल बौल" कहते हैं।

प्रश्नोत्तरी।

प्रश्न—(१) सोजाक के कभी भी फेल न होने वाले नुसखे कौन से हैं?

उत्तर—(१) हमने सोज़ाक के जितने नुसखे लिखे हैं, उनमें से प्राय सभी परीक्षित हैं। हाँ, पृष्ठ ४२५—४३० में लिखे नीचेके नम्बर ज़ियादा बारके आजमूदा हैं—नम्बर १, २, २४,२५, २६, २७, २८, २६, ३२, ३६, ४८, ५६, ५७, ६० और ६५।

(२) रसौत, गिले अरमनी, सेलखड़ी, लाल गेरु, सङ्गजराहत और छोटी इलायची—इन सब को पीस छान कर, इस में से चार-चार माशे चूर्ण सवेरे-शाम गाय के कच्चे दूध या चाँवलों के धोवन के साथ लेने से पुराना सोज़ाक भी निश्चय ही नाश हो जाता है। "वैद्य"

(३) सोजाक नाशक पिचकारी लगाने के जितने नुसखे पृष्ठ ४३०—४३४में लिखे हैं, वे सभी उत्तम हैं पर उन मे भी नं० ६८, ६६,७४, ७५, ७७, ८६, और ८७, सर्वोत्तम और अनेक बार के परीक्षित हैं।

प्रश्न—(२) पेशाब खोलने के चन्द नुसखे और बताओ।

उत्तर—अगर पेशाब रुक जाय, तो नीचे के नुसखे काम मे लाओ —

(क) राई ४ रत्ती, कलमी शोरा ४ रत्ती और मिश्री १ ग्रा—इन को पीस-छानकर सवेरे ही फाँको। यह १ मात्रा की दवा है।

(ख) गेंदे की पत्तियाँ पीसकर पानी में छान लो और मिश्री मिलाकर पीओ।

(ग) ज़रा सा कपूर जलाकर लिंग के छेद मे रखो।

(घ) एक जूँ लिंग के छेद मे छोड़ो।

(ङ) खटमल पीस कर लिंग के छेद में छोड़ो।

(च) बकरी के गुनगुने दूध में लिंग को रखो।

(छ) सीपी पीसकर नाभि के नीचे लगाओ।

(ज) शहतूत के रस में कलमी शोरा पीसकर नाभि से नीचे पीसकर लगाओ।

(झ) लाहौरी नमक गुदा में रखो।

(ञ) पेठे के बीज पीसकर नाभि के नीचे लगाओ।

(ट) रत्ती-दो-रत्ती कपूर खाओ।



उपदंश-वर्णन ।

उपदंश के कारण ।

'माधव निदान" में लिखा है —

> हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनादत्यतिसेवनाद्वा ।
> योनिप्रदोषाच्च भवन्ति शिश्ने पंचोपदंशा विविधोपचारैः ॥

अर्थात् नीचे लिखे कारणों से पाँच प्रकार का उपदंश रोग होता है —

(१) हाथ की चोट लगने से ।
(२) नाखून या दाँतों के लगने से ।
(३) मैथुन करके लिंग को न धोने से ।
(४) अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करने से ।
(५) कड़े बाल वालो के साथ प्रसंग करने से ।
(६) रजस्वला के साथ मैथुन करने से ।
(७) गरमी या उपदंश वालो के साथ मैथुन करने से ।
(८) खारी या गरम जल से लिंग धोने से ।

उपदंश की क़िस्में।

ऊपर कह आये हैं कि, आयुर्वेद के मत से उपदंश रोग पाँच प्रकार का होता है—

(१) वातोपदंश।

(२) पित्तोपदंश।

(३) कफोपदंश।

(४) सन्निपातोपदंश।

(५) रुधिरजन्य उपदंश।

वातोपदंश के लक्षण।

अगर लिंग पर काली-काली फुन्सियाँ हों, उनमें सूई चुभने या शस्त्र लगने की सी पीड़ा हो और स्फुरण हो, तो उसे वातज या बादी की उपदंश समझो।

पित्तोपदंश के लक्षण।

अगर लिङ्गपर फुन्सी या टाँची पीली बहुत हों, उनमेंसे पानी बहुत बहे, दाह हो, रंग सुर्ख हो, देखने में मांस की समान हो, तो उसको पित्त की उपदंश जानो।

कफोपदंश के लक्षण।

अगर फुन्सियों या टाँचियों में खुजली चले, सफेद या मोटी फुन्सियाँ हों, सूजन हो, अनेक प्रकार की पीड़ा हो और गाढ़ी-गाढ़ी राध बहे, तो कफ की उपदंश समझो।

सन्निपातोपदंश के लक्षण।

अगर फुन्सियों में अनेक तरह की पीड़ा हो और अनेक तरह का मवाद निकले, तो उसे सन्निपात की उपदंश समझो। यह उपदंश असाध्य होती है।

रुधिर की उपदंश के लक्षण।

अगर फुन्सियाँ काली हों, खून बहुत निकलता हो, पित्तकी उपदंश के लक्षण पाये जायँ, ज्वर, दाह—जलन और शोष हो, तो उसे रुधिर या खून के दोष की उपदंश समझो। कभी-कभी यह उपदंश याप्य हो जाती है, यानी बड़ी कठिनाई से आराम होती है।

असाध्य उपदंश के लक्षण।

जिस उपदंश रोगी के लिंग का मांस गल गया हो, कीड़े लिंग को खा गये हों, केवल फोते रह गये हों, वह उपदंश असाध्य है। ऐसे रोगी का इलाज न करना चाहिये।

उपदंश के होने पर भी जो मूर्ख मनुष्य मैथुन करता रहता है, उसका इलाज नहीं कराता, उसके लिंग पर थोड़े दिनों में सूजन आ जाती है, कीड़े पड़ जाते हैं, लिंग पक जाता है और जलन खूब होती है। वह उपदंश-रोगी मर जाता है।

उपदंश के आँखों देखे लक्षण।

इस रोग के होते ही लिंग की सुपारी या ऊपरी चमड़े पर छोटी-छोटी फुन्सियाँ होती हैं और उनके इर्द-गिर्द की जगह कड़ी हो

जाती है। इसके बाद वह फुन्सी या फुन्सियाँ पकती और बढ़ती हैं, एवं घाव हो जाते हैं। घाव की बीच की जगह नीची होती है और अगल-बगल की कड़ी होती है।

बीमारी का ज़ोर होने या वेदना अधिक होने से बुखार चढ़ आता है, कय होना चाहती हैं, भूख नहीं लगती, जीभ मैली हो जाती है, मुँह का ज़ायका खराब हो जाता है, सिर में दर्द होता है और किसी-किसी के हाडों और पुट्ठों में पीड़ा होती है।

रोग पुराना होने या इलाज न होने से सारे शरीर में चेचक सी निकल आती है, जगह जगह घाव हो जाते हैं, नेत्रों में रोग हो जाता है, रोम और बाल गिरने लगते हैं, जोड़ों में दर्द होता है, यानी गठिया हो जाती है, होते-होते पीनस रोग और कोढ़ भी हो जाता है। शेष में घावों में कीड़े पड़ कर रोगी मर जाता है।

इस रोग में जब लिंग पर घाव होते हैं और वह सूज जाता है, घूँघट नहीं खुलता, तब बड़ी तकलीफ होती है। इससे दो चार या दस पाँच दिन बाद जाँघोंके जोड़ोंमें बद या बाघी—गाँठ हो जाती हैं। बाघी या गाँठ बिना उपदंश के भी हो जाती हैं, पर उपदंश की बद पक जाती है और बद प्राय: नहीं पकती।

उपदंश और फिरंग में भेद ।

बहुत से वैद्य भी उपदंश और फिरंग को एक समझते हैं, पर वास्तव में ये एक नहीं हैं। स्वर्गवासी प० दत्तरामजी चौबे ने अपनी "माधव निदान" की टीका में ग्रन्थान्तर से फिरंग रोग के लक्षण लिखे हैं और आपने लिखा है कि, फिरंग सोज़ाक के नाम से प्रसिद्ध है, पर सोज़ाक के और इसके लक्षण मिलते नहीं। हमारी समझ में लिंगके भीतर रोग होनेके ख़यालसे ही आपने फिरंग को सोज़ाक मान लिया होगा। हमारी राय में तो फिरंग रोग पेशाब की नली में होता

और सारे शरीर में विष्फोटक की तरह फैलता है, पर उपदंश केवल मूत्र-नली में ही होती है।

फिरंग शब्द की निरुक्ति।

यह रोग बहुधा फिरंगियों के देश में होता है, इसी से वैद्य इसे "फिरंग रोग" कहते हैं।

फिरंग रोग क्यों होता है?

यह रोग अङ्गरेजों के संसर्ग अथवा मेमों के साथ प्रसंग करने से होता है।

फिरंग रोग कितने प्रकार का होता है?

फिरंग रोग तीन प्रकार का होता है—

(१) बाहर होता है।

(२) भीतर होता है।

(३) बाहर भीतर, दोनों जगह होता है।

फिरंग के लक्षण।

बाहर का फिरंग रोग फोड़े के समान थोड़ी पीड़ा करता है और फोड़े की तरह ही फूट जाता है। यह सुखसाध्य है।

जो फिरंग सन्धियों के भीतर होता है, अथवा बाहर-भीतर दोनों जगह होता है, वह बहुत दिन रहने वाला और कष्टसाध्य होता है।

फिरंग के उपद्रव।

इस रोग के होने पर देह दुबली हो जाती है, बल नाश हो

जाता है, नाक बैठ जाती है, अग्नि मन्द हो जाती है, हड्डियाँ सूखतीं और टेढी हो जाती हैं। येही फिरंग रोग के उपद्रव हैं।

साध्यासाध्यता।

जो फिरंग बाहर होता है, नया और उपद्रव रहित होता है, वह साध्य होता है, जो भीतर होता है, वह कष्टसाध्य होता है। जो बाहर-भीतर दोनों जगह होता है, जो पुराना होता है और उपद्रव-सहित होता है, वह असाध्य होता है।

यहाँ तक हमने फिरंग के कारण और लक्षण दिखलाये। अब हम दोनो का भेद दिखाने के लिये "वैद्य" मुरादाबाद का एक लेख नीचे अविकल उद्धृत करते हैं —

उपदंश और फिरंग रोग में भेद।

आजकल बहुत से वैद्यो ने उपदंश और फिरंग रोग दोनों रोगों को एकही समझ रक्खा है। इसलिए वे उभय रोगो की एकसी ही चिकित्सा करते हैं। परन्तु वास्तव मे दोनों रोग एक नही है और एक प्रकार के भी नही है। दोनों के कारण और लक्षण सब भिन्न-भिन्न हैं।

शरीर मे फिरंग का विष प्रविष्ट होनेपर, कई दिन तक किसी प्रकार का कोई लक्षण प्रकट नही होता। प्रायः पाँच सात दिन के बाद, पुरुषेन्द्रियकी सुपारी के ऊपर अथवा उसके पार्श्व (करवट) में विशेष प्रकार का घाव उत्पन्न होता है और उसके पीछे अन्यान्य लक्षण प्रकट होते हैं। आयुर्वेदोक्त उपदंश रोग भी पुरुषेन्द्रिय में ही उत्पन्न होता है। सम्भवत इसी सादृश्यता से फिरंग की उपदंश मे गणना की जाती है।

उपदंश रोग पुरुष के ही शरीर में उत्पन्न होता है। स्त्री-शरीर

में उपदंश होने की किसी प्रकार सम्भावना नहीं हो सकती। यथा—'भवन्ति शिश्ने पंचोपदंशा विविधोपचारैः। (मा० नि०) मेढ्रमागम्य कुपिता दोषाः क्षतेऽक्षते वा शोथमुपजनयन्ति तमुपदंशमित्याच क्षते (सुश्रुत) इत्यादि।

किन्तु फिरंग रोग स्त्री पुरुष दोनो के शरीर में उत्पन्न होता है। यदि नपुंसक-शरीर का भी कोई अङ्ग थोड़ा सा काटकर, उसमें फिरंग रोग का विष पहुँचा दिया जाय, तो नपुंसक-शरीर में भी अवश्य फिरंग रोग का प्रादुर्भाव हो सकता है। जिन कारणों से फिरंग रोग उत्पन्न होता है, उन कारणो से उपदंश रोग उत्पन्न नहीं होता।

उपदंश रोग के कुछ कारणों को कहते हैं। जैसे अत्यन्त प्रसंग करने अथवा बहुत दिनों तक ब्रह्मचर्य्य धारण करने से, ब्रह्मचारिणी स्त्री अथवा रजस्वला के साथ संसर्ग करने से, वीर्य्य और मूत्र के वेगों को रोकने से, हाथ, नाखून, वगैरः की चोट के लगने प्रभृति कारणों से उपदंश रोग उत्पन्न होता है, किन्तु फिरंग रोग इन कारणों से उत्पन्न नहीं होता। फिरंग के कारण जुदे है। यद्यपि फिरङ्ग रोग के कारणों में भी योनि का दोष मुख्य है, परन्तु उपदंश रोग जिस प्रकार के योनि-दोषों से उत्पन्न होता है, उस प्रकार के दोषों से फिरङ्ग रोग नहीं होता। अशुद्ध तथा मलिन योनि में गमन करने से उपदंश रोग अथवा उपदंश की समान और चाहे किसी तरह का रोग उत्पन्न हो जाय, परन्तु फिरङ्ग रोग का होना सर्वथा असम्भव है।

आयुर्वेद शास्त्रोक्त कारणो की पर्य्यालोचना करने से स्पष्ट रूप से मालूम होता है कि, इन्द्रिय में किसी प्रकार की चोट लगनेसे उपदंश रोग उत्पन्न होता है, किन्तु फिरङ्ग रोग का विष अनेक मार्गों से स्त्री-पुरुष-शरीर और नपुंसक-शरीर में भी प्रविष्ट होता है। यदि किसी दाईके हाथ में ज़रासाभी किसी तरह का घाव हो और वह यदि उस घाववाले हाथ को फिरङ्ग रोगवाली स्त्री के गर्भाशय मे डालकर सन्तान प्रसव करावे, तो उस प्रसव करानेवाली दाई के शरीर में भी

भी फिरङ्ग रोग का विष अपना असर कर सकता है। मतलब यह है कि, फिरङ्ग एक प्रकार का विषैला और संसर्गज रोग है। इसके सिवा उपदंश के और फिरङ्ग के ज़ख्मों में भी बहुत बड़ा अन्तर है। उपदंश में शोथ अवश्य होता है, किन्तु फिरङ्ग में शोथ का होना कोई आवश्यक नहीं है। फिरङ्ग के घावों में जब गरमी की अधिकता होती है, तब कभी शोथ हो जाता है। फिरङ्ग रोग के अत्यन्त बढ़ जाने पर, रोगी के शरीर में अनेक प्रकार के दाग, चकत्ते, खुजली, व्रण और सूजन आदि विकार उत्पन्न होते हैं। यहाँ तक कि, सम्पूर्ण शरीर का रुधिर दूषित हो जाता है। सब अंग भंग हो जाते हैं। नासिका बैठ जाती और अस्थियें गल जाती हैं, परन्तु उपदंश रोग में इन उपद्रवों में से कोई भी उपद्रव नहीं देखा जाता। फिरङ्ग रोग को अँगरेज़ी में "सिफलिस" कहते हैं। फिरङ्ग रोग का उल्लेख सबसे पहले भावमिश्र ने अपने "भाव प्रकाश" नामक ग्रन्थ में किया है। वैद्यक के अन्य प्राचीन ग्रन्थों में इस रोग का पता नहीं है। इससे जाना जाता है कि, "फिरङ्ग" रोग इस देश में पहले नहीं था।

उपदंश चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) "भाव प्रकाश" में लिखा है कि, उपदंश अगर साध्य हो, तो पुरुष को स्नेहन और स्वेदन करके, लिङ्ग के मध्य में जो महीन नस है, उसे बीधो अथवा जोंक लगवाओ। वमन और विरेचन देकर, उस रोगी के बढ़े हुए दोषों का हरण करो। तत्काल ही दोषों के हरण करने से पीड़ा और सूजन शान्त हो जाती है। अगर रोगी बहुत ही कमज़ोर हो, विरेचन के लायक़ न हो, तो निरूहण वस्ति करके दोषों को नाश करो। जैसे भी हो, लिंग को पकने मत दो, क्योंकि पकने से लिंग का नाश हो जाता है।

नोट—लिंग की नस में नश्तर देकर खून निकालना अच्छा ज़रूर है; पर यन-

जान या अनभ्यासी को यह काम भूलकर भी न करना चाहिए। जरा सी भूल
भयानक अनिष्ट की सम्भावना है। इसी तरह निरूहण बस्ति प्रभृति भी वही क
जिसे पूर्ण ज्ञान और अभ्यास हो। साधारण वैद्यों को जुलाब देकर ही दोष निक
लने चाहिएँ, पर जुलाब देने में भी बड़ी चतुराई की जरूरत है। जुलाब देने वाले
हमारा "चिकित्सा चन्द्रोदय" पहले भाग के पृष्ठ ३१६-३४३ में लिखा "विरेच
विषय" अवश्य देख लेना चाहिये।

(२) उपदंश में, जहाँतक हो, रोगी के बलाबल अनुसार जुला
अवश्य देना चाहिये। इस रोग में जुलाब देकर दोषों को निकाल दे
और फिर उपदंश नाशक दवा खिलाना और घावों पर लेप या मल
हम आदि लगाना अच्छा है। जिस तरह धुले कपड़े पर रंग अच्छ
आता है, उसी तरह गरमी-सोजाक में दस्त कराकर, दवा देने
जल्दी फायदा होता है।

(३) उपदंश या गरमी रोग में शीतल दवाओं से रोग शान
होने की बात समझकर, शीतल दवाएँ न देनी चाहियें। ऐसा कर
ने से गठिया रोग हो जाता है और बाज़-बाज़ औक़ात रोगी म
भी जाता है। इसलिए उपदंश रोगी को शीतल दवा, शीतल पदार्थ
और ऊपरी शीत से बचाना चाहिये।

(४) गरमी या उपदंश रोग विषैला रोग है। इसमें बहुध
विषसंयुक्त दवाइयाँ ज़ियादा फायदा करती हैं, पर जहाँ तक ह
पारे या रसकपूर अथवा भिलावे वाली दवायें न देनी चाहियें।
अगर किसी भी दवा से लाभ न हो, तब ऐसी दवाओं का आश्रय
लेना चाहिए, क्योंकि ऐसी दवाओं से यद्यपि रोग नाश हो जाता है,
पर अनेक बार मुँह आ जाता है या और व्यथायें खड़ी हो जाती
हैं। अगर कोई ऐसी दवा दे दी जाय और मुँह आजाय, तो घबराना
न चाहिये। "कचनार की छाल" का काढ़ा बनाकर कुल्ले कराने
चाहियें अथवा "चमेली की पत्ती और कचनार की छाल" का काढ़ा
बनाकर कुल्ले कराने चाहियें। अगर इनसे भी लाभ न हो, तो चमेली के
पत्ते, त्रिफला, जवासा, दारुहल्दी, गिलोय और मुनक्के लेकर, इनका

काढा बनाकर और शीतल होने पर "शहद" मिलाकर कुल्ले कराने चाहिये। यह नुसखा मुख के घावों वगैर. पर परीक्षित है। कभी फेल नहीं होता। अगर इससे दिन में ३ बार कुल्ले कराये जायँ और "स्वास्थ्यरक्षा" में लिखी "कासमर्दन बटी" चूसने को दी जाये, तब तो सोने में सुगन्ध ही हो जाय।

(५) जिन दवाओंमें पारा या भिलावा अथवा गंधक प्रभृति चीज़ें गिरती हों, उनमें पारे प्रभृति को बिना शोधे न लेना चाहिये। इनके शोधनेकी तरकीबें "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भागके अन्तमें लिखी हैं। बिना शोधे लेनेसे,यह भयानक हानि करते हैं, पर शुद्ध करके लेनेसे अमृतके समान लाभ करते हैं। पारे की दवाओं को दाँतों से न खाना चाहिये,बल्कि निगलना चाहिये। पारा और गंधक मिल जानेसे हानि नहीं करते। हानिका वहम न करना चाहिये, पर ये सब शुद्ध करके लेने चाहियें और इनकी मात्रा बहुतही थोडी सेवन करानी चाहिये। याद रखो, अशुद्ध पारे से हड्डियों में दर्द, जलन, शरीर में हज़ारों फुन्सी, काले या सफेद दाग, हाथ पैर के तलवों से चमडा निकलना, मुँह और नाक में घाव होना, नाक का बैठ जाना, सिर-दर्द, एक तरफ का शरीर मारा जाना, फोतों पर सूजन, जगह-जगह सूजन, नेत्र-रोग, भगन्दर, कोढ और तरह तरह के चर्मरोग होते हैं, इस-लिये अशुद्ध पारे से दूर भागना चाहिये।

अगर अशुद्ध पारे के सेवन से ये दोष हो जायँ, तो "शोधी हुई गंधक" तीन या चार रत्तीकी मात्रासे "घीके साथ" खिलानी चाहिये। अथवा १०।१५ बूँद राल का तेल दूध के साथ देना चाहिये। घाव नाश करने के लिए कत्था, कपूर और सिन्दूर की मरहम लगानी चाहिये अथवा और कोई मरहम लगानी चाहिये। घावोंको नीमके पत्तोंके काढेसे धुलवाना चाहिये। पीनेको खून साफ करने वाली दवा देनी चाहिये। बदनमें "स्वास्थ्यरक्षा"में लिखे "चर्मरोग नाशक तेल"की मालिश करानी चाहिये। उस तेल से शरीर के काले-काले, लाल-

लाल या सफ़ेद दाग या चकत्ते निश्चय ही मिट जाते हैं। उस तेलको दो दो महीने मालिश कराकर और "अर्क खून सफा" पिला कर, ऐसे-ऐसे दागवाले रोगी हमने आराम किये हैं, जिन्हें बीसियों डाक्टर आराम न कर सके। पारे का दोष दूर करने वाली कई परीक्षित दवाएँ, हमने इसी उपदंश रोग के नुसख़ों में आगे लिखी हैं।

(६) जहाँ तक हो, पहले मामूली दवाओं से रोग नाश करना चाहिये। अगर उनसे लाभ न हो, तो बड़ी दवाएँ देनी चाहियें। जैसे त्रिफले के काढे या नीम के काढ़े से घाव धोने और त्रिफले की भस्म शहद में मिलाकर लगाने से उपदंश के भारी से भारी घाव भी आराम हो जाते हैं। अनार की छाल पीस कर बुरकने या आदमी की हड्डी पीस कर लगाने से भी घाव मिट जाते हैं। भाँगरेके रस से घाव धोने से भी घाव आराम हो जाते हैं। खाने को भी आककी जड़की छाल और काली मिर्चकी गोली प्रभृति देनी चाहिये। जब ऐसी दवाओं से लाभ न हो, तब और दवाएँ देनी चाहियें। घावोंके आराम करनेके लिए "करञ्जाद्यघृत," "भूनिम्बाद्य घृत," "आगार धूमाद्य तैल" भी लगाते हैं। पर इन तेल या मरहम अथवा लेपोंको लगाने से पहले घावों को भाँगरे के रस या त्रिफले के काढ़े या नीम के काढ़ेसे अवश्य धो लेना चाहिये।

(७) अगर रोगी की इन्द्रिय सूज जाय, न खुले तो हमारी आगे लिखी कत्था, कपूर और सिन्दूरवाली मरहम लगानी चाहिये। ऊपर से चर्मरोग नाशक तेल की पट्टी रखनी चाहिये। त्रिफले और नीम के काढ़े से घाव धोने चाहियें। कोई खून साफ़ करने वाली दवा पिलानी चाहिये। ये हमारे परीक्षा किये हुए उपाय हैं। "वरादि गूगल" या "चन्द्रशेखर रस" भी इस रोगमें रामवाण है। परीक्षित है।

(८) अनेक रोगी हुक्के में दवा पिलाने या धूनी अथवा बफारा देने से भी आराम हो जाते हैं। ज़रूरत होने से वे उपाय करने चाहियें। हमने ऐसे नुसखे लिखे हैं। सबसे पहले परीक्षित नुसखे काम में

लाने चाहियें। अगर उनसे लाभ न हो, तो बिना आजमाये नुसखोंसे काम लेना चाहिये। हमने भरसक अपनी लिखी पुस्तकों में अपने या और वैद्यों के आज़माये हुए नुसखे ही लिखे हैं। जिनके सामने केवल "परीक्षित" शब्द है, वह हमारे निज के आज़माये हुए हैं।

(९) रोगी को पथ्य पालन की खूब ज़ोर से सलाह देनी चाहिये। बिना पथ्य के हज़ारों दवाएँ भी रोग को नाश कर नहीं सकतीं। आयुर्वेद में लिखा है, उपदंश रोगी को जौ का भोजन और कूएँ का जल सेवन करना चाहिये और सब त्याग देना चाहिये। बहुत से मूर्ख अनाड़ी रोगियोंको,गरमी या सोज़ाक होने पर,फिर मैथुन करने की सलाह दे देते हैं। उनका कहना है, इस तरह रोग दूसरे को लग जाता और रोगी आराम हो जाता है, पर यह भारी भूल है। ऐसा करने से रोग असाध्य हो जाता है। सूजन आकर इन्द्रिय पक जाती और फिर कीड़े पड़ कर रोगी मर जाता है। अत: आप रोगी को सावधान कर दें। फिर भी हमने उपदंश रोग के "पथ्या-पथ्य" आगे लिखे हैं, उन पर रोगी का ध्यान दिला देना चाहिये।

(१०) उपदंश रोगी की चिकित्सा इस तरह करनी चाहिये —

(१) पहले रोगी का बलाबल देख कर हल्का या तेज़ जुलाब दो। पर जुलाबसे पहले मल पकाने या फुलानेके लिये कोई मुंजिस दो। जब मल फूल जाय, तब जुलाब देकर मल को निकाल दो। इसके बाद खाने और लगाने को दवा दो। मुंजिस और जुलाब के नुसखे "चिकित्साचन्द्रोदय" पहले भाग के अन्त में लिखे हैं।

(२) घावों पर लगाने के लिए नीचे की चीज़ें अच्छी हैं :—

(क) कत्था, कपूर और सिन्दूर की मरहम।

(ख) कत्था और मोम की मरहम।

(ग) कराञ्जाद्य घृत।

(घ) भूनिम्बाद्य घृत।

(ङ) जम्ब्वाद्य तैल।

(च) कोशातकी तैल।

(छ) "स्वास्थ्यरक्षा" में लिखा हुआ चर्मरोग नाशक तैल।

(ज) त्रिफले की भस्म, शहत में मिली हुई।

(झ) अनार की छाल पीसी हुई।

(ञ) बबूल के पत्ते पीसे हुए।

(ट) रसौत और हरड़ पीस कर शहत में मिलायी हुई।

(ठ) रसौत और सिरस की छाल का चूर्ण शहत में मिलाया हुआ।

(ड) सफेद कनेर की जड़ पानी में घिसी हुई।

नोट—पर उपरोक्त चीजें लगाने से पहले घावों को दवाओं के रसों या काढ़ों से धो लेना परमावश्यक है।

(३) घाव धोने के लिये ये चीजें उत्तम हैं :—

(क) भाँगरे का रस।

(ख) नीम के पत्तों का काढा।

(ग) त्रिफले का काढा।

(घ) खैरसार का काढा।

(ङ) अरण्डी, उडहल, आक और कनेर के पत्तों का काढा।

(४) खाने के लिये ये दवाएँ अच्छी हैं —

(क) वरादि गूगल।

(ख) रस शेखर रस।

(ग) आक और कालीमिर्च की गोली।

(११) उपदंश होने से बहुधा बद या बाघी हो जाती है। यह

एक तरह की गाँठ या गिल्टी होती है, जो जाँघों के जोड़ों में होती है। बद तेज़ चलने, ऊँचे-नीचे स्थानों में पैर पड़ने, पैर में फोड़ा होने प्रभृति कारणों से भी होती है, पर उपदंश की बद पक जाती है और कारणों से हुई बद अकसर नहीं पकती।

अगर बद हो जाय, तो उसे अलसी प्रभृति की पुल्टिश से पका कर, नश्तर या फोड़ा फोड़ने वाली दवाओं से फोड़ देना और गा पीव निकाल देना ही भला है। मवाद को वहाँ रखने से और रो होने का भय है। जिन उपायों से फोड़े पकाये, फोड़े भी सुखाये जाते हैं, वही उपाय बद में भी करने चाहियें। अगर बद उठी ही हो, ज़ोर न धरा हो, तो बने जहाँ तक उसे बैठा देना उचित है। "गन्देबिरोजेका शीरा" मोटे कपड़े पर लगाकर, बद पर रख देने से बद बैठ जाती है। अनेक बार ऐसा देखा है। अगर जोंक मिलें, तो खून निकलवा देना सब से अच्छा है। खराब ज़हरीला खून निकल जाने से रोग का भय न रहेगा और रोगी सुख पावेगा। जोंक लगवाकर नीम के पत्ते बाँधने चाहियें। अगर बद पक गई हो तो दवा या नश्तर से फोड़ कर कोई मरहम लगा देनी चाहिये।

(१२) अगर उपदंश या बद की दशा में ज्वर आदि रोग हो जायँ, तो उनके लिए विचार-पूर्वक अलग दवा देनी चाहिये।

(१३) कभी भी उपदंश को सोज़ाक और सोज़ाक को उपदंश समझ कर दवा देने में भूल न करनी चाहिये। उपदंश की दवाएं शीतल नहीं होतीं और सोज़ाककी दवाएँ अत्यन्त शीतल होती हैं। भूल से बीमार के खतरे में पड़ने का भय है। याद रखो, सोज़ाक में लिङ्ग के भीतर घाव होते हैं और उपदंश में ऊपर, यह साफ पहचान है।

(१४) अगर उपदंश-रोगी के जोड़ों में दर्द और सूजन हो, गठिया हो गई हो, तो और दवाओंके साथ-साथ जोड़ों पर "नारायण तैल" लगाना चाहिये। इस तैल के निर्वात—बिना हवा के स्थान में घण्टे दो घण्टे रोज़ मलने से सूजन उतर जाती और दर्द मिट जाता है।

अगर अधिक शीत से रोग हो, नारायण तैल से लाभ न हो, तो "माषादि तैल" मालिश कराना चाहिये। ये उपाय परीक्षित हैं।

नारायण तैल बनाने की विधि "स्वास्थ्यरक्षा" में खूब अच्छी तरह समझाकर लिखी है।



विशेष-चिकित्सा।

वातज उपदंश को चिकित्सा।

(१) महुआ, मुलहटी, देवदारु, अगर, देवदारु, रास्ना, कूट, और पद्माख—वातज उपदंश में इन दवाओंका लेप करने और इनके काढ़े से घाव सींचने से अवश्य लाभ होता है।

पित्तज उपदंश की चिकित्सा

(२) मुलहटी, खस, मँजीठ, गेरू, रसौत, पद्माख, चन्दन और कमल—इनको शीतल जल में पीस कर लेप करने से पित्तज उपदंश आराम होती है। परीक्षित है।

(३) त्रिफले के काढ़े में शहद मिलाकर, पित्तज उपदंश के घावों पर सींचने से लाभ होता है। परीक्षित है।

(४) घी, दूध, गोखरू, ईख का रस, शहद और पानी—इनको पित्तज उपदंश पर सींचने से लाभ होता है। परीक्षित है।

(५) गेरू, रसौत, मंजीठ, महुआ, खस, पद्माख, चन्दन और नील-

कमल—इन सबको पीसकर, पानी में लेपसा बनाकर, पित्तजन्य उपदंश के घावों पर लगाओ। अवश्य लाभ होगा।

(६) नीम, अर्जुन, पीपल, कदम, शाल, जामुन, बड़, गूलर और बेत—इन सबकी छाल पीसकर लेप करने या इनकी छालोंको भिगो कर,उनका पानी सींचने या इनका चूर्ण बनाकर घावों पर बुरकने से पित्त और रक्त की उपदंश के घाव आराम हो जाते हैं।

कफज उपदंश की चिकित्सा।

(७) कफज उपदंश को आरग्वधादिगण की औषधियों के काढ़े से सींचना चाहिये, यानी कफज उपदंश के घावों पर इनका काढ़ा ढालना चाहिये।

नोट—वाग्भट्ट सूत्रस्थान के १५ वें अध्याय में लिखा है —अमलतास, इन्द्र-जौ, वसन्तदूती, करंजवल्ली, नीम, गिलोय, मूर्वा, कटकारी वृक्ष, पाठा, चिरायता, पीयाबाँसा, परवल, दोनों करंजुए, सतवन, चीता, मेढ़ासिंगी, मैनफल, पीयाबाँसा और सुपारी,—ये आरग्वधादि गण है। छर्दि, कोढ़, विष, ज्वर, खाज, प्रमेह और दुष्ट घाव इनसे नाश होते हैं।

(८) शाल, विजयसार, लताशाल और धव,—इनकी छालों को शराब में पीसकर गरम करो और सुहाता-सुहाता लेप कर दो। कफज उपदंश के लिए यह अच्छा योग है।



सामान्य-चिकित्सा ।

सिद्ध रसशेखर रस ।

(८) पारा १ तोले और अफीम १ तोले—इन दोनो को लोहे के बासन मे रख कर, नीम के सोटे से "श्यामा तुलसीका स्वरस" डाल-डालकर कोई ८ घण्टो तक घोटो ।

इसके बाद उसमें १ तोला सुहागा डालकर, ऊपर से उसी श्यामा तुलसी का रस दे देकर ३ घण्टों तक घोटो । इसके बाद अढाई तोले जावित्री, अढाई तोले खुरासानी अजवायन, अढाई तोले जाय-फल और अढाई तोले अकरकरा लेकर, पीस-कूट कर महीन कर लो । बादमें इनको उसी बासनमें डाल कर, ऊपरसे "श्यामा तुलसी" का रस दे देकर खूब घोटो ।

इसके बाद उसमें २४ तोले बसलोचन और २४ तोले खैरसार पीसकर उसी बर्त्तन में डाल दो और ऊपर से तुलसी का रस डाल-डालकर आधे घण्टे तक घोटो । घुट जाने पर चने-बराबर गोलियाँ बना लो और छाया में सुखा लो ।

सन्ध्या-समय दो गोली खाओ । नमक, लालमिर्च, गुड और खटाई को छोड दो ।

इस रस के सेवन करने से उपदंश, गलित कुष्ट, घाव, विसर्प, विष्फोटक और फिरंग आदि रोग निश्चय ही जड से आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

वरादि गूगल।

(१०) हरड़, बहेड़ा, आमला, नीम की छाल, अर्जुन की छाल पीपलकी छाल, खैर की लकड़ी, विजयसार और अडूसेके पत्ते—इ सबको महीन पीस-छान कर चूर्ण कर लो और जितना चूर्ण हो उतन ही "शुद्ध गूगल" मिलाकर, छै छै माशे की गोलियाँ बना लो। इ गोलियों के सेवन करने से सब तरह की उपदंश, खून के विका और दुष्ट फोड़े और घाव नष्ट होते हैं।

नोट—एक कलईदार देगची में अन्दाज का पानी और त्रिफला भर दो और ऊ से एक कपड़ा बाँध कर उसी कपड़े पर गूगल का चूर्ण रखकर देगची को ढक्कन बन्द करके आग पर चढ़ाकर पकाओ। बस, इस तरह गूगल शुद्ध हो जायगी।

(११) परवल के पत्ते, नीम की छाल, त्रिफला और हरी गिलोय —इनका काढ़ा पीने से उपदंश रोग नाश हो जाता है। वृन्द

(१२) सुण्ठी और गिलोय बराबर बराबर लेकर कूट-पीस छान लो। इस चूर्ण को सन्ध्या-सवेरे चार-चार माशे की मात्रा से "शहद" में मिलाकर शीतल जल के साथ, बराबर, नियम-पूर्व्वक सेवन करने से उपदंश, वातरक्त, कोढ़ और पारे के विकार नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१३) सुण्ठी और उशबा दोनों का काढ़ा बनाकर और उसमें "शहद" डाल कर पीने से उपदंश, फिरंग और पारे के विकार नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—सुंठी और उशबे का अर्क भभके से खींच कर, दो तोले अर्क में ६ माशे शहद मिलाकर पीने से भी उपदंश आदि नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१४) कड़वे नीम की एक पाव छाल लाकर पानीसे धो लो और उसे एक मिट्टी के बर्त्तन में रख दो। ऊपर से खूब खौलता हुआ पानी एक सेर, उस पर डाल कर मुंह ढक दो और रात भर रखा

सामान्य-चिकित्सा ।

सिद्ध रसशेखर रस ।

(८) पारा १ तोले और अफीम १ तोले—इन दोनों को लोहे के बासन में रख कर, नीम के सोटे से "श्यामा तुलसीका स्वरस" डाल-डालकर कोई ८ घण्टे तक घोटो ।

इसके बाद उसमें १ तोला सुहागा डालकर, ऊपर से उसी श्यामा तुलसी का रस दे देकर २ घण्टों तक घोटो । इसके बाद अढाई तोले जाविती, अढाई तोले खुरासानी अजवायन, अढाई तोले जायफल और अढाई तोले अकरकरा लेकर, पीस-कूट कर महीन कर लो । बादमें इनको उसी बासनमें डाल कर, ऊपरसे "श्यामा तुलसी" का रस दे देकर खूब घोटो ।

इसके बाद उसमें २४ तोले बंसलोचन और २४ तोले खैरसार पीसकर उसी बर्त्तन में डाल दो और ऊपर से तुलसी का रस डाल-डालकर आधे घण्टे तक घोटो । घुट जाने पर चने-बराबर गोलियाँ बना लो और छाया में सुखा लो ।

सन्ध्या-समय दो गोली खाओ । नमक, लालमिर्च, गुड और खटाई को छोड दो ।

इस रस के सेवन करने से उपदंश, गलित कुष्ट, घाव, विसर्प, विष्फोटक और फिरंग आदि रोग निश्चय ही जड से आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

समान गोलियाँ बनालो। सवेरे शाम एक-एक गोली खाने से उपदंश रोग नाश होता है। इस पर नमक बिल्कुल न खाना चाहिये। केवल ज़रा सा घी और रोटी खानी चाहिये। एक सज्जन इसे अपना आज़माया हुआ कहते हैं।

(२०) अमलतास, नीम, हरड़, बहेड़ा, आमला और चिरायता —इनका काढा बनाकर, उस में "खैरसार और विजयसार" मिलाकर पीने अथवा "शुद्ध गूगल" डालकर पीने अथवा त्रिफला मिलाकर पीने से सब तरह के उपदंशरोग नाश होते हैं। परीक्षित है।

(२१) गिलोय के काढे में अरण्डी का तेल मिलाकर पीने से उपदंश आराम हो जाता है।

नोट—अगर व्रण या घाव हों, तो गिलोय के काढे में शुद्ध "गूगल" मिलाकर दो। अगर बिना व्रण के त्वचा के विकार हों, तो गिलोय के काढे में अरण्डी का तेल मिलाकर दो। कोढ़ रोग में गिलोय का काढा "कैशोर गूगल" के साथ सेवन कराना अच्छा है। गिलोय के काढेमें अरण्डी का तेल मिलाकर देनेसे दूषित मल निकल जाता और खून साफ हो जाता है। क्योंकि गिलोय खून को साफ करती तथा चमड़े के पुराने रोग नाश करती है। वातरक्त वग़ैर चमड़े के रोगों में गिलोय के समान और दवा नहीं है। गिलोय खून को साफ करती है, इसलिये उपदंश में खूब गुण करती है। गिलोय के काढ़े में एक या दो तोला अरण्डी का तेल मिलाकर पीने से आमवात, —गठिया भी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२२)	शुद्ध या उड़ाया हुआ रस कपूर—	४ माशे।
	शुद्ध सोमल या संखिया—	४ माशे।
	दालचिकना—	४ माशे।
	केशर—	४ माशे।
	छोटी इलायची के दाने—	४ माशे।

इन सब को एकत्र करके, खरल में डालकर, बकरी का दूध दे-देकर चार पहर या १२ घण्टे तक खरल करके एक गोला बनालो फिर उस को एक सराई में रख कर, ऊपर से दूसरी सराई रख दो। सराइयों के पेंदे घिस लेना, जिस से दोनों मिल जायें, साँस न रहे।

रहने दो। सवेरे ही उसमेंसे चार तोले पानी पीओ। इसी तरह साँझ को पीओ। लगातार १५ दिन तक इस तरह का बनाया जल पीने से उपदंश, बाघी, बद और चट्टे तथा प्रमेह रोग नाश हो जाते हैं। अनेक बार एक सप्ताह में आराम हो जाता है। इसको सेवन करते समय घी, चीनी और गेहूँ की रोटी के सिवा और कुछ भी न खाना चाहिये। परीक्षित है।

(१५) तरबूज़ का एक चौकोर टुकडा काटकर, उसमें पाव भर चीनी भर दो और उसको बन्द करके रातके समय ओस में रख दो। सवेरे ही उसका पानी पीने से लिंग के चट्टे, फुन्सी और पेशाब की जलन मिट जाती है।

(१६) त्रिफला, नीला-थोथा और उशबा बराबर-बराबर लेकर, एक सौ नीबू के रस में, लोहे के बासन में, खरल करो। जब गाढ़ा हो जाय, चने-समान गोली बनालो। एक गोली पानी के साथ रोज़ निगल जाने से उपदंश आराम हो जाती है।

नोट—साथ-साथ घावों को त्रिफले के काढे से धोओ। इसके बाद कनेर की जड़ घिस कर घावों पर लगा दो। निश्चय ही उपदंश नाश हो जायगा।

(१७) अगर उपदंशकी वजह से शरीर पर फुन्सी सी हो जायँ, तो सुण्डी, पित्तपापडा, उशबा और चिरायता वगैर के छै माशे लेकर भिगो दो और सवेरे ही छान कर मिश्री मिलाकर पीओ। अगर सरदी हो, तो इनका काढा करके पीओ। परीक्षित है।

(१८) मेहँदी के पत्तों का रस ४ तोले निकाल कर, उसमें २ तोले मिश्री मिलाकर १०।१२ दिन तक पीने से आतशक या गर्मी का दाह शान्त होता है। परीक्षित है।

(१९) सफेद कत्था १ तोले, पीपरामूल १ तोले और पीपर २ तोले—तीनों को जल में भिगो दो। पीछे तीनों को पानी से निकाल कर कूटो और उसी पानी के साथ खरल करो। इस के बाद उस में पके हुए पानों का रस डालकर घोटो। घुट जाने पर जङ्गली बेर के

इन सबको एकत्र पीस कर और आधा पाव पुराने गुड़में मिलाकर तीन दिन तक खूब घोटो। घुट जाने पर झड़बेर के समान गोलियाँ बना लो।

सेवन विधि—सवेरे १ गोली दूधकी मलाईमें रखकर खा जाओ। तैल, खटाई, लालमिर्च आदि से परहेज़ रखो। ईश्वर की कृपा से ८।१० दिन में उपदंश नाश हो जायगी।

नोट (१) श्रीमान् वैद्यवर शिवदयालजी, परतापगढ़, लिखते हैं, यह हमारा आजमाया हुआ नुसखा है।

नोट (२) जमालगोटा शोधने की विधि दूसरे भाग के ५७५ वें पृष्ठ में देखिये।

(२३) पोटाश आयोडिड	आधा ड्राम।
लाइकर डाइज़ाज परक्लो	एक औन्स।
एमन क्लोराइड	एक ड्राम।
स्पिरिटईक्लोफार्मेड	एक औन्स।

इन सबको एक जगह मिलाकर, एक शीशी में रख दो। दिनमें तीन बार, सवेरे दोपहर और शाम को, एक-एक ड्राम दवा सेवन करो। उपदंश के विष को नष्ट करने में यह अङ्गरेज़ी नुसखा रामबाण है। किसी अच्छे अङ्गरेजी दवाखाने से दाम देकर ले आना और सेवन कराना चाहिये।

(२४) कुनाइन सल्फ—	१७ ग्रेन।
पोटासियम आयोडाइड—	२२ ग्रेन।
पाउडर्ड क्यूबर्ब—	१६ ग्रेन।
लिकोरिस पाउडर—	४ ग्रेन।
एक्सट्रैक्ट सार्सापरेला—	१२ ग्रेन।
वर्डक—	१२ ग्रेन।
टराक्सकम—	१२ ग्रेन।

इन सब को अच्छी तरह से मिलाकर एक दिल करलो और इस को ३६ गोलियाँ बनालो। पूरे उम्रके जवानको दिनमें ३ गोली और

पीछे कपडा और पानी में भीगी मुल्तानी मिट्टी लहेस-लहेसकर चार पाँच तह चढा दो। इसके बाद गज़ भर गहरा और इतना ही लम्बा-चौडा खड्डा खोदकर, उस में नीचे-ऊपर दस सेर आरने कण्डे रख दो। कण्डो के बीच में वह कपरौटी किया सरावा रख दो और आग लगा दो। जब आग अपने-आप शीतल हो जाय, सरावे को निकाल कर, ऊपर से कपडे और मिट्टी को हटाकर, खोल लो। उस में जो दवा मिले, उसे शीशी में रख दो।

सेवन विधि—इसमेंसे १ चाँवल भर दवा मलाईमें रखकर उपदंश-रोगी को निगलवा दो। इस के सात या ग्यारह दिन सेवन करने से उपदंश निश्चयही चली जायगी। अधिक दिन खिलाना अच्छा नहीं।

पथ्य—जितना भी ज़ियादा असल गाय का घी रोगी खाय, उतना ही अच्छा। पुराने चाँवलों का भात, खीर, रोटी, दूध, घी आदि पदार्थ भी पथ्य हैं।

नोट—यह योग परीक्षित है, पर इसको बनाते समय बिना शोधा रसकपूर या संखिया न लेना चाहिये। अशुद्ध रसकपूर, पारा, गंधक सबही अतीव हानिकारक होते हैं। दवा की मात्रा १ चाँवल भर की ज़वान को है। रोगी कमजोर हो तो आध चाँवल भर देना उचित है। १ चाँवल भर से अधिक कभी न देना चाहिये। पथ्य के साथ यह दवा थोडी-थोडी खाने से अमृत है, जियादा खाने से विष है। हाँ, गरमी रोग पर बडी उपकारी है।

"रस कपूर" पारे का ही एक रूप है। पारे से ही वह बनाया जाता है। "भाव प्रकाश" में लिखा है, लौंग, चन्दन, कस्तूरी और केशर के साथ अगर "रसकपूर" खाया जाता है, तो फिरङ्ग नामक रोग तत्काल शान्त हो जाता है। "रस कपूर" अग्निदीपक, पुष्टिदायक, बल तथा वीर्य को बढ़ाने वाला है। रस कपूर सेवन करने वाला पुरुष १०० स्त्रियों को भोग सकता है। रस कपूर पारे का उड़ाया हुआ अच्छा होता है। यह उड़ाने से ऊपर की हाँडी में लगा पाया जाता है और कपूर के समान निर्मल पारा होता है। इस के बनाने की विधि चौथे भाग में लिखेंगे।

(२२) शुद्ध जमालगोटेकी गिरी ३ माशे, चोक ४ माशे, काले तिल ६ माशे, अजवायन खुरासानी ६ माशे, और कालीमिर्च २ रत्ती,—

लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने और खटाई तथा बादी पदार्थों से परहेज़ रखने से आतशक या गरमी अवश्य आराम हो जाती है। गरमी का दूषित मल निकल जाता है। परीक्षित है।

(२८) बन्दालके दो फल आध पाव जल में भिगो दो। सवेरे ही उसका नितरा हुआ साफ जल पीने से आतशक नाश हो जाती है।

(२६) तीन तोले ४ माशे कौंच की पत्तियाँ, १६ तोले ८ माशे जल में पीस छान कर, निहार मुँह, सवेरे ही, सात दिन पीने से आतशक नाश हो जाती है।

(३०) मदार की लकड़ी का कोयला ६ माशे पीस कर, उसमें उतनी ही शकर और तोले भर घी मिला कर, सात दिन, खाने से आतशक चली जाती है।

(३१) हरे रूसे की जड़ की छाल पानी के साथ पीस कर, जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली घी के साथ खाने से आतशक नाश हो जाती है।

(३२) अजवायन की भूसी २० माशे,सरसों २० माशे और काली मिर्च २० माशे—इनको पीस कूट,जलके साथ घोट,बेर समान गोलियाँ बना कर,खानेसे आतशक नाश हो जाती है। पथ्य-परहेज़ कुछ नहीं।

(३३) कचनार की छाल, इन्द्रायण की जड़, बबूल की फली, छोटी कटेरी जड़ और पत्ता समेत और पुराना गुड़ आध पाव —सब को ३ सेर पानीमें, मिट्टी की हाँडीमें औटाओ, चौथाई पानी रहने पर उतार कर छान लो और बोतल में रख दो और उस पर क़ागज़ के सात दाग लगा दो। सवेरे-शाम एक-एक माला खाओ। एक हकीम साहब कहते हैं,यह हमारा आज़माया हुआ नुसख़ा है। इससे न मुँह आता है और न परहेज़ करना पड़ता है। आतशक पर रामबाण है।

(३४) सिरसकी छाल,बबूलकी छाल और नीम की छाल,—तीनों सवा सेर लेकर, नौ सेर जल में, मिट्टी की हाँडीमें, औटाओ। जब

औरतों को २ गोली दें। बालकों को सोते समय १ गोली दें। इससे चमड़ेके सब रोग, खून के विकार, यकृत-सम्बन्धीरोग और खून के रोग निश्चय ही आराम होते हैं। उपदंशके बाद इसे सेवन करनेसे उपदंश का विष निकल जाता है। यह योग वलायत की एक फर्म का चलता हुआ नुसखा है। वह कम्पनी इस से खूब धन कमाती है।

(२५) पोटाश आयोडाइड—	१ ड्राम।
पोटाश बाईकार्ब—	½ ड्राम।
लाइकर आरसो निकालस—	½ ड्राम।
स्पिरिट क्लोरोफार्म—	½ ड्राम।
एक्सट्रैक्ट सारसा कम्पौण्ड—	२ औन्स।
साफ़ पानी—	८ औन्स।

इन सबको एकत्र मिलाकर, एक शीशेमें रख दो। इस मिक्सचर में से एक-एक चमच भर सवेरे, दोपहर और सन्ध्या को सेवन करने से खूनके सारे विकार नाश हो जाते हैं। सारे शरीर में गरमी फूट निकलने या और किसी वजहसे खून बिगड कर दाफड़ चकत्ते वगैरः हो जाने पर इसके देनेसे खूब लाभ होता है।

(२६) कुकरौंदे का रस २ तोला पीने और शरीर पर मलने से खून और पारे के दोष निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। जो लोग पारा फूट निकलने या गरमी फूटनेसे दुःख पाते हों, वे इसको सेवन करें। रामबाण है। परीक्षित है।

नोट—कुकरौंदे के दो तोले रस में जरासी मिश्री मिलाकर पीने से सोजाक चला जाता है। कुकरौंदेका रस ६ माशे और लाल चौराईका रस ६ माशे—दोनोंको मिला कर, कुछ दिन पीने से स्त्रियों का रक्तप्रदर आराम हो जाता है। बालकों की गुदापर भी इसके रस का लेप करनेसे चुन्ने कीड़ों की व्यथा मिट जाती है।

(२७) मदार की जड़ २० माशे और काली मिर्च १० माशे इनको कूट-छान कर, गुड़में मिला कर, ज्वारकी बराबर गोलियां बना

लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने और खटाई तथा बादी पदार्थों से परहेज़ रखने से आतशक या गरमी अवश्य आराम हो जाती है। गरमी का दूषित मल निकल जाता है। परीक्षित है।

(२८) बन्दालके दो फल आध पाव जल में भिगो दो। सवेरे ही उसका नितरा हुआ साफ जल पीने से आतशक नाश हो जाती है।

(२९) तीन तोले ४ माशे कौंच की पत्तियाँ, १६ तोले ८ माशे जल में पीस छान कर, निहार मुँह, सवेरे ही, सात दिन पीने से आतशक नाश हो जाती है।

(३०) मदार की लकड़ी का कोयला ६ माशे पीस कर, उसमें उतनी ही शक्कर और तोले भर घी मिला कर, सात दिन, खाने से आतशक चली जाती है।

(३१) हरे रूसे की जड़ की छाल पानी के साथ पीस कर, जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली घी के साथ खाने से आतशक नाश हो जाती है।

(३२) अजवायन की भूसी २० माशे,सरसों २० माशे और काली मिर्च २० माशे—इनको पीस कूट,जलके साथ घोट,बेर समान गोलियाँ बना कर,खानेसे आतशक नाश हो जाती है। पथ्य-परहेज़ कुछ नहीं।

(३३) कचनार की छाल, इन्द्रायण की जड़, बबूल की फली, छोटी कटेरी जड़ और पत्ता समेत और पुराना गुड़ आध पाव —सब को ३ सेर पानीमें, मिट्टी की हाँडीमें औटाओ, चौथाई पानी रहने पर उतार कर छान लो और बोतल में रख दो और उस पर कागज़ के सात दाग लगा दो। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाओ। एक हकीम साहब कहते हैं,यह हमारा आज़माया हुआ नुसखा है। इससे न मुँह आता है और न परहेज़ करना पड़ता है। आतशक पर रामबाण है।

(३४) सिरसकी छाल,बबूलकी छाल और नीम की छाल,—तीनों सवा सेर लेकर, नौ सेर जल में, मिट्टी की हाँडीमें, औटाओ। जब

औरतों को २ गोली दे। बालकों को सोते समय १ गोली दें। इससे चमड़ेके सब रोग, खून के विकार, यकृत-सम्बन्धीरोग और खून के रोग निश्चय ही आराम होते हैं। उपदंशके बाद इसे सेवन करने से उपदंश का विष निकल जाता है। यह योग वलायत की एक फर्म का चलता हुआ नुसखा है। वह कम्पनी इस से खूब धन कमाती है।

(२५) पोटाश आयोडाइड—	१ ड्राम।
पोटाश बाईकार्ब—	½ ड्राम।
लाइकर आरसो निकालस—	½ ड्राम।
स्पिरिट क्लोरोफार्म—	½ ड्राम।
एक्सट्रैक्ट सारसा कम्पौण्ड—	२ औन्स।
साफ पानी—	८ औन्स।

इन सबको एकत्र मिलाकर, एक शीशीमें रख दो। इस मिक्सचर में से एक-एक चमचा भर सवेरे, दोपहर और सन्ध्या को सेवन करने से खूनके सारे विकार नाश हो जाते हैं। सारे शरीर में गरमी फूट निकलने या और किसी वजहसे खून बिगड़ कर दाफड़ चकत्ते वगैरः हो जाने पर इसके देनेसे खूब लाभ होता है।

(२६) कुकरौंदे का रस २ तोला पीने और शरीर पर मलने से खून और पारे के दोष निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। जो लोग पारा फूट निकलने या गरमी फूटनेसे दुःख पाते हों, वे इसको सेवन करें। रामबाण है। परीक्षित है।

नोट—कुकरौंदे के दो तोले रस में जरासी मिश्री मिलाकर पीने से सोजाक चला जाता है। कुकरौंदेका रस ६ माशे और लाल चौराईका रस ६ माशे—दोनोंको मिला कर, कुछ दिन पीने से स्त्रियों का रक्तप्रदर आराम हो जाता है। बालकों की गुदापर भी इसके रस का लेप करनेसे चुन्ने कीड़ों की व्यथा मिट जाती है।

(२७) मदार की जड़ २० माशे और काली मिर्च १० माशे इनको कूट-छान कर, गुड़में मिला कर, ज्वारकी बराबर गोलियाँ बना

लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने और खटाई तथा बादी पदार्थों से परहेज़ रखने से आतशक या गरमी अवश्य आराम हो जाती है। गरमी का दूषित मल निकल जाता है। परीक्षित है।

(२८) बन्दालके दो फल आध पाव जल में भिगो दो। सवेरे ही उसका नितरा हुआ साफ जल पीने से आतशक नाश हो जाती है।

(२९) तीन तोले ४ माशे कौंच की पत्तियाँ, १६ तोले ८ माशे जल में पीस छान कर, निहार मुँह, सवेरे ही, सात दिन पीने से आतशक नाश हो जाती है।

(३०) मदार की लकड़ी का कोयला ६ माशे पीस कर, उसमें उतनी ही शक्कर और तोले भर घी मिला कर, सात दिन, खाने से आतशक चली जाती है।

(३१) हरे रूसे की जड़ की छाल पानी के साथ पीस कर, जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली घी के साथ खाने से आतशक नाश हो जाती है।

(३२) अजवायन की भूसी २० माशे,सरसों २० माशे और काली मिर्च २० माशे—इनको पीस कूट,जलके साथ घोट,बेर समान गोलियाँ बना कर,खानेसे आतशक नाश हो जाती है। पथ्य-परहेज़ कुछ नहीं।

(३३) कचनार की छाल, इन्द्रायण की जड़, बबूल की फली, छोटी कटेरी जड़ और पत्ता समेत और पुराना गुड़ आध पाव —सब को २ सेर पानीमें, मिट्टी की हाँडीमें औटाओ , चौथाई पानी रहने पर उतार कर छान लो और बोतल में रख दो और उस पर कागज़ के सात दाग लगा दो। सवेरे-शाम एक-एक माला खाओ। एक हकीम साहब कहते हैं,यह हमारा आज़माया हुआ नुसखा है। इससे न मुँह आता है और न परहेज़ करना पड़ता है। आतशक पर रामबाण है।

(३४) सिरसकी छाल,बबूलकी छाल और नीम की छाल,—तीनों सवा सेर लेकर, नौ सेर जल में, मिट्टी की हाँडीमें, औटाओ। जब

सवा सेर पानी रह जाय, उतार कर कपडे में छान लो और बोतल में भर दो। हर दिन आध पाव जल इस में से पीओ। सात दिन में आतशक नाश हो जायगी। पथ्य—चने की रोटी।

(३५) बड के पत्ते जला कर राख कर लो। इस में से दो कौडी भर राख पान में रख कर खाने से शेष रही हुई उपदंश आराम हो जाती है।

(३६) हुलहुल की पत्तियाँ सिल पर पानी के साथ पीस कर भाँग की तरह पीने और उसका फोग ज़खमों पर बाँधने से आतशक आराम हो जाती है।

(३७) कसौंधीकी पत्तियाँ २० माशे और काली मिर्च ४ माशे —दोनों को पीस कर पीने और अलोना भोजन करने से आतशक आराम हो जाती है।

(३८) करजकी की हरी पत्तियाँ और नीम की पत्तियाँ, पन्द्रह-पन्द्रह माशे तथा काली मिर्च ७॥ माशे ले लो। पहले दोनों तरह की पत्तियो के रस निकाल लो। पीछे उस रस में काली मिर्च पीस कर मिला दो। शेषमें, उस में चार माशे पिसी हुई "चोपचीनी" मिला कर पी जाओ। सात दिन इस नुसखे के सेवन करने से आतशक नाश हो जाती है। पथ्य—अलोना भोजन।

(३९) अच्छा पित्तपापडा, अमर बेल, सनाय, हरड, बहेडा, आमला और स्याह हरड—ये सब डेढ-डेढ तोले, गुलाब के फूल १ तोले, काबुली हरड के छिलके २॥ तोले, उशबा मगरबी ६ तोले और चोपचीनी ५ तोले—इन सब को कूट-पीस-छान कर, तीन गुने शहद में मिला कर अवलेह बना लो। दो तोले रोज़ खाने से उपदंश से बिगडा हुआ खून साफ होता है।

(४०) नीला थोथा, मुरदार संग, दक्खनी सुपारी और दूधिया खैर —ये सब एक-एक तोले लो। इनमें से नीला-थोथा, मुरदार संग और सुपारी को चार कण्डों पर जला लो। फिर चारों को खरल में

डाल, नीम के ऐसे डण्डे से घोटो, जिस के पेंदे में ताम्बा लगा हो। इसकी घुटाई ८६ घण्टों तक करो, तब यह दवा तैयार होगी।

सेवन विधि—एक पान में दूधिया कत्था और चूना लगा कर एक चाँवल भर दवा इस में से पान पर रख दो और दिन में तीन बार इस तरह के पान खाओ।

नीमके पत्तोंको जल में औटाकर उसी पानीसे घाव धोओ, फिर पोंछ कर, उन पर यही मलहम लगा दो। अगर घावों में कीड़े पड़ जायँ, तो "बेलपत्र" रविवारके दिन लाकर थोड़े जलमें पीस-छान कर पी जाओ। १५ मिनट में सब कीड़े गिर जायेंगे। इस उपाय से मनुष्य और पशु सबके कीड़े गिर जाते हैं, पर जानवरोंको दवा ज़ियादा देनी होती है।

नोट—प० हरिशङ्कर जी वैद्य, मऊशाजिद पुर दरभंगा इसे ३ पीढ़ी का आजमाया हुआ लिखते हैं और वैद्यों को इससे धन कमाने की कसम दिलाते हैं। पाठक परोपकारार्थ दें।

(४१) पारा शोधा हुआ और आमलासार गंधक शुद्ध,इन दोनों को एक-एक माशे लेकर, खरल में डाल कर घोटो। घुट जाने पर ४ रत्ती गेरू मिला दो। इसके बाद शुद्ध जमालगोटे की मींगी (हरी पत्ती निकाली हुई) उसी में मिला कर पानी के साथ घोटो। घुट जाने पर टिकियाँ बना लो। फिर उन टिकियों को एक बर्त्तन में रख कर, ऊपर से पानी भर दो और आग पर चढ़ा दो। जब सब पानी जल जाय, सूखी दवा रह जाय, निकाल कर रख लो। इसकी मात्रा १ से ३ रत्ती तक है। अनुपान दूध है। इस दवा के सेवनसे दस्त होते हैं और आतशक नाश हो जाती है। हकीमी नुसखा है। लिखा है, इसके सेवन से कष्ट नहीं होता और दूषित मल निकल जाता है।

नोट—पारा, गन्धक और जमालगोटा शोधने की विधि दूसरे भाग के अन्त में लिखी है।

सवा सेर पानी रह जाय, उतार कर कपड़े में छान लो और बोतल में भर दो। हर दिन आध पाव जल इस में से पीओ। सात दिन में आतशक नाश हो जायगी। पथ्य—चने की रोटी।

(३५) बड़ के पत्ते जला कर राख कर लो। इस में से दो कौडी भर राख पान में रख कर खाने से शेष रही हुई उपदंश आराम हो जाती है।

(३६) हुलहुल की पत्तियाँ सिल पर पानी के साथ पीस कर भाँग की तरह पीने और उसका फोग जखमों पर बाँधने से आतशक आराम हो जाती है।

(३७) कसौंधीकी पत्तियाँ २० माशे और काली मिर्च ४ माशे —दोनों को पीस कर पीने और अलोना भोजन करने से आतशक आराम हो जाती है।

(३८) करजकी की हरी पत्तियाँ और नीम की पत्तियाँ, पन्द्रह-पन्द्रह माशे तथा काली मिर्च ७॥ माशे ले लो। पहले दोनों तरह की पत्तियों के रस निकाल लो। पीछे उस रस में काली मिर्च पीस कर मिला दो। शेषमें, उस में चार माशे पिसी हुई "चोपचीनी" मिला कर पी जाओ। सात दिन इस नुसखे के सेवन करने से आतशक नाश हो जाती है। पथ्य—अलोना भोजन।

(३९) अच्छा पित्तपापड़ा, अमर बेल, सनाय, हरड़, बहेड़ा, आमला और स्याह हरड़—ये सब डेढ़-डेढ़ तोले, गुलाब के फूल १ तोले, काबुली हरड़ के छिलके २॥ तोले, उशबा मगरबी ६ तोले और चोपचीनी ५ तोले—इन सब को कूट-पीस छान कर, तीन गुने शहद में मिला कर अवलेह बना लो। दो तोले रोज खाने से उपदंश से बिगड़ा हुआ खून साफ होता है।

(४०) नीला थोथा, मुरदार सग, दक्खनी सुपारी और दूधिया खैर —ये सब एक-एक तोले लो। इनमें से नीला-थोथा, मुरदार सग और सुपारी को चार कण्डो पर जला लो। फिर चारों को खरल में

डाल, नीम के ऐसे डण्डे से घोटो, जिस के पेंदे में ताम्बा लगा हो। इसको घुटाई ९६ घण्टे तक करो, तब यह दवा तैयार होगी।

सेवन विधि—एक पान में दूधिया कत्था और चूना लगा कर एक चाँवल भर दवा इस में से पान पर रख दो और दिन में तीन बार इस तरह के पान खाओ।

नीमके पत्तोंको जल में औटाकर उसी पानीसे घाव धोओ, फिर पोंछ कर, उन पर यही मल्हम लगा दो। अगर घावों में कीड़े पड़ जायँ, तो "बेलपत्र" रविवारके दिन लाकर थोड़े जलमें पीस-छान कर पी जाओ। १५ मिनट में सब कीड़े गिर जायँगे। इस उपाय से मनुष्य और पशु सबके कीड़े गिर जाते हैं, पर जानवरोंको दवा ज़ियादा देनी होती है।

नोट—प० हरिशङ्कर जी वैद्य, मऊराजिद पुर दरभंगा इसे ३ पीढ़ीका आजमाया हुआ लिखते हैं और वैद्यों को इससे धन कमाने की कसम दिलाते हैं। पाठक परोपकारार्थ दें।

(४१) पारा शोधा हुआ और आमलासार गंधक शुद्ध,इन दोनों को एक-एक माशे लेकर, खरल में डाल कर घोटो। घुट जाने पर ४ रत्ती गेरू मिला दो। इसके बाद शुद्ध जमालगोटे की मींगी (हरी पत्ती निकाली हुई) उसी में मिला कर पानी के साथ घोटो। घुट जाने पर टिकियाँ बना लो। फिर उन टिकियों को एक बर्त्तन में रख कर, ऊपर से पानी भर दो और आग पर चढ़ा दो। जब सब पानी जल जाय, सूखी दवा रह जाय, निकाल कर रख लो। इसकी मात्रा १ से २ रत्ती तक है। अनुपान दूध है। इस दवा के सेवनसे दस्त होते हैं और आतशक नाश हो जाती है। हकीमी नुसखा है। लिखा है, इसके सेवन से कष्ट नहीं होता और दूषित मल निकल जाता है।

नोट—पारा, गन्धक और जमालगोटा शोधने की विधि दूसरे भाग के अन्त में लिखी है।

(४२) शुद्ध पारा ४ माशे, शुद्ध आमलासार गंधक ४ माशे, सुहागा १२ माशे, चीता १२ माशे, कालीमिर्च १२ माशे, सोंठ १२ माशे और शुद्ध जमालगोटे की गिरी ४४ माशे—इन सबको बासी जलके साथ, तीन घण्टे तक खरल करके रख लो। मात्रा २ चाँवल से २ रत्ती तक। अनुपान मिश्रीका शर्बत। इससे उपदंश या आतशक दस्त होकर आराम होती है। पहले गन्धक और पारे को खरल करना चाहिये। इसके बाद सब दवाएँ मिलाकर घोटनी चाहिएँ।

(४३) शोधी हुई गंधक, शोधा हुआ पारा, शोधा हुआ सुहागा, सोंठ, कालीमिर्च और शोधा हुआ जमालगोटा—सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस कर खरल में डालो और गायका दूध दे देकर घोटो और आधी-आधी रत्ती भर की गोलियाँ बनालो। सेवन विधि—एक गोली खाकर ऊपर से शीतल जल पीना चाहिये। ऊपर से जितना ही पानी पीओगे, उतना ही मल निकलेगा। पथ्य—दही चाँवल या दूध भात।

(४४) शाहतरे के पत्तों का शीरा ८ माशे, सौंफ ६ माशे और गुलकन्द २ तोले, तीनों को मिलाकर तीन दिन पीना चाहिये। फिर चौथे दिन "हुब्बुलनील" को भून कर और कूट छान कर तथा बराबर की चीनी मिलाकर तीन दिन खाना चाहिये।

इसके बाद दश माशे शुद्ध शिंगरफ महीन पीस कर, उसमें २० माशे अफीम मिला दो और सब की नौ टिकियाँ बनालो। इन में से एक टिकिया चिलम में तमाकू की तरह जमाकर, ऊपर से बेर की लकड़ीकी आग रख कर, मिट्टीके हुक्केमें नरकुलकी निगाली लगा कर पीओ। जब टिकिया जल जाय, उस जली हुई टिकिया और कोयलों को उसी हुक्के के भीतर डाल दो और तीन दिन उसी में पड़े रहने दो। इसी तरह फिर एक टिकिया दोपहर को और एक शाम को बेर की लकड़ी की आग रख कर पीओ। तीन दिन इस तरह इन टिकियों के हुक्के में पीने से उपदंश या आतशक नाश हो जाती है।

पथ्य—तीन दिन खाली भुने चने या चने की बिना घी की रोटी खाओ। चौथे दिन पतली खिचड़ी खाओ। पाँचवें दिन भी खिचड़ी ही खाओ। इसके बाद जो दिल चाहे सो खाओ।

नोट—यदि इस दवा से मुँह आ जाय, तो घबराओ मत। कचनार की छाल को पानीमें औटाकर, उसके पानी से बारम्बार कुल्ले करो। अथवा कचनार की छाल चमेली की पत्तियाँ, माजूफल और इल्पन्द को बराबर-बराबर लेकर काढ़ा बनालो और कुल्ले करो। इन से मुँह साफ हो जायगा।

(४५) इन्द्रायण की जड़ आध पाव कूट कर दो सेर जल में औटाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान कर आध सेर साफ अरण्डी के तेल में मिलाकर मन्दी आग से औटाओ। जब पानी जल कर तेल मात्र रह जाय, एक बोतल में रख दो। इस में से १०।१५ या २० माशे यही तेल सवेरे ही गाय के दूध में मिलाकर पीओ। दो तीन दिन में आतशक आराम हो जायगी। पथ्य—मूँग की खिचड़ी।

(४६) कस्तूरी १ तोले, कपूर हरिद्रा १ तोले, दारुहल्दी १ तोले, खैर १ तोले और शुद्धकुष्ट १ तोले—इन सबको पानीके साथ पीस कर लुगदी सी बना लो। फिर आध सेर तिलों के तेल और लुगदीको कलईदार बर्तन में चढाकर मन्दाग्नि से तेल बनालो।

सेवनविधि—इस में से १ माशे तेल, ६ माशे चौलाई के रस में मिलाकर पीने से उपदंश के घाव, फोड़े, फुन्सी चर्म रोग आदि नष्ट होते हैं।

नोट—यह नुसख़ा श्रीमती मोहना बाई लेडी डाकूर नैपाल का परीक्षित है।

(४७) बड़ी कची की २० माशे पत्तियाँ जलमें भिगो कर, उनका नितरा हुआ जल मात्र २१ दिन पीने से आतशक आराम हो जाती है।

(४८) मकोय की पत्ती, सनायकी पत्ती, सौंफ, मुनक्का, गुलाब के फूल और अमलताश,—ये सब बराबर-बराबर लेकर, आधसेर

पानी में औटाओ, जब आधा पानी रह जाय, मल छान कर पीओ। पहले-पहल तीन दिन तक यह दवा पीकर, पीछे कोई और दवा सेवन करने से उपदंश रोग जल्दी नाश होता है।

(४८) शुद्ध जमालगोटा एक तोले और आमले ४ तोले—इन दोनोंको कूट-पीस कर कपड़ेमें छान लो और खरलमें डालकर नीबूके रस में खरल करो। खरल हो जाने पर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली शीतल जल के साथ खाने से उपदंश रोग १५ दिन में आराम हो जाता है।

नोट—(१) ऊपरकी दवा नं० ४८ तीन दिन पीनेके बाद इस नं० ४६ की दवाको लेनेसे उपदंश निश्चय ही चली जाती है।

नोट—(२) पारा, गन्धक और जमालगोटा शोधनेकी विधि दूसरे भागके अन्त में लिखी है।

(५०) शुद्ध संखिया, सफेद कत्था, भाँगरा, अकरकरा और सफेद सुपारी—सब को बराबर-बराबर लेकर, पीस कूट कर, कपड़े में छान लो और पानी के साथ खरल करके, बाजरे-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली पानी के साथ खाने से, आठ दिन में घोर उपदंश नाश होता है।

(५१) आक की जड़ १ तोले ५ माशे और कालीमिर्च ४ तोले—दोनों को खरल में घोट और गुड़ में मिलाकर, मटर-समान गोली बनालो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से उपदंश रोग आराम हो जाता है।

(५२) कसौंधी की जड़ और पत्ती १ तोले ५ माशे और काली मिर्च ११ माशे—इन दोनों को सिल पर पीस कर और कपड़े में छानकर पीने से उपदंश-रोग जल्दी ही आराम हो जाता है।

(५३) शुद्ध सिंगरफ, नीम का गोंद, अकरकरा, माजूफल और सुहागा—इन सबको एक-एक तोले लेकर पीस कूट कर मिला लो। फिर इसके पाँच भाग करके एक भाग चिलम में रख कर, ऊपर से

बेर के कोयले रखकर, हुक्के पर पीने से उपदंश आराम हो जाती इसमें सशय नहीं ।

(५४) आक की लकड़ी जली हुई दो तोले और मिश्री तोले—इन दोनों को मिलाकर पीस लो। इसमे से ६ माशे सवे और ६ माशे शाम को खाने से गरमी या उपदंश आराम हो जाती है

(५५) शुद्ध सिंगरफ, माजूफल, आककी जड़ और भाँगरा—इ सब को बराबर-बराबर लेकर पीस कूट लो। इसमें से नौ मा चूर्ण चिलम में तमाखू की जगह रखकर, ऊपर से खैर की लक के कोयले रखकर, हुक्के द्वारा धूआँ पीनेसे सब तरह का घोर उपद रोग नाश हो जाता है। रामबाण दवा है। कभी फेल नहीं होती

(५६) शुद्ध संखिया १ तोले और पपड़िया कत्था २ तोले लेक खरल में डालो और ऊपर से १०० बँगला पानों का रस निकाल क डालो और ४८ घण्टे तक खरल करो। खरल होने पर, बाजरे समान गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली पानी के सा लेने से घोर उपदंश नाश होता है। पथ्य—दूध भात। अपथ्य— लालमिर्च, खटाई और दही।

नोट—पर ये गोली बाजरे से बड़ी मत बनाना और एक बार में एक से अधि मत लेना।

उपदंश नाशक लेप और मरहम आदि ।

खदिरादि मरहम ।

(५७) खैरसार ५ तोले, अफीम ६ माशे और देशी मोम १ तोले, इन सबको, सौ बार धुले, गायके पाँच तोले घीमें मिला कर,एक-दिल कर लो। इस मरहमके लगानेसे गरमीके घाव मिट जाते हैं। गुदा

पर लगाने से काँच निकलना बन्द हो जाता है। बवासीर के तेज़ दर्द करने वाले और लटकते हुए मस्सों पर इसके लगाने से मस्से सुकड़ जाते हैं। परीक्षित है।

उतारि मरहम।

(५८) सफेद कत्था २ तोले, कपूर १ तोले और सिन्दूर आधा तोले—इन तीनों को पीस-छान कर, १०० बार धुले घीमें मिला कर मरहम बना लो। इस मरहमके लगानेसे भयकर-से-भयंकर उपदंशके घाव मिट जाते हैं। जिन घावों से राध और खून बहते हों, उनपर इसका लगाना बहुत अच्छा है। इससे जलन मिटकर शान्ति आती है। रोता हुआ आदमी हँसने लगता है। उपदंशके घावों के सिवा, इसके लगाने से सब तरह के घाव, फूटे हुए फोड़े, आग से जलने के घाव, खुजली की पीली-पीली फुन्सियाँ ये सब नाश होते हैं। बवासीर के मस्सों पर लगाने से मस्सों की पीड़ा शान्त हो जाती है। इतने रोगों पर यह मरहम हमारी कम-से-कम २००० बारकी परीक्षित है।

उपदंशका ज़ोर होने से लिंग सूज जाता है, सुपारी ढक जाती है और भीतर से पीप आती है। इन्द्रिय न खुलने से दवा लग नहीं सकती। उस दशा में नीम के पत्ते औटाकर, उनका सुहाता-सुहाता जल रोगी की लिंगेन्द्रिय पर ढालो। इसके बाद त्रिफले का काढ़ा सुहाता-सुहाता ढालो और उसके भी बाद सफेद कत्थे का काढ़ा ढालो। अगर इतना न हो सके, तो कोई एकही काढ़ा ढालो और उससे धीरे-धीरे घावोंको धोओ। इन्द्रिय न खुले, तो उसे हाथसे न खोलो। काढ़े ढालकर पोंछ लो और ऊपर से यही मरहम गाढ़ा-गाढ़ा इन्द्रिय पर खूब लगादो। ऊपरसे हमारी "स्वास्थ्यरक्षा" के पृष्ठ ३२७ में लिखे "चर्म रोग नाशक" तेलमें एक कपड़ेकी साफ पट्टी तर करके, लिंगपर पोली पोली—कसकर नहीं—लपेट दो और कच्चा धागा भी ज़रा लपेट दो। सवेरे की पट्टी शामको उतार दो और उसी तरह काढ़े या काढ़ों से

धोकर, मरहम लगाकर, "चर्मरोग नाशक तेलकी" पट्टी चढादो। इस तरह हमने ऐसे-ऐसे रोगी आराम किये हैं, जिन्हें डाक्टरों ने हजारों रुपये खाकर, अन्त में असाध्य कहकर त्याग दिया या इन्द्रिय काट डालनेकी सलाह दी थी। इन दवाओंके लगानेके पहले दिन ही, रोगी को आराम हो जाने का विश्वास हो जाता है, पर जल्दी करना ठीक नहीं। बीस पचीस दिन या १ मास में रोगी की इन्द्रिय पूर्ववत् निर्दोष हो जायगी। जिन्हें यश और धन कमाना हो, हमारी लिखी विधि से काम करें। हमारी बात में फर्क नहीं हो सकता, पर साथ-ही साथ कोई उत्तम खाने की दवा भी खिलाते रहो और रोगी को पथ्य सेवन कराओ और अपथ्य से बचाओ।

नोट—(१) अगर सूजन जल्दी न उतरे, तो साफ सूखी भाग बिना धूएँकी आग पर डाल-डाल कर रोगीके लिंगको धूनी दो। धूनी देते समय चादर तान दो; जिस-से धूआँ इन्द्रिय को लगे। सूजन त्रिफले के काढ़े से उतर जाती है, पर कभी-कभी जरा देर होती है।

नोट—(२) कत्था बड़ा गुणकारी है। यह कत्थे की ही शक्ति है कि, केवल कत्था घी में मिलाकर लगाने से पीप बन्द होकर घाव मिटने लगता है। १ माशे पिसा कत्था फाँक कर, शीतल जल पीकर सो जानेसे स्वप्नदोष मिट जाता है। दो या तीन तोला कत्था पानी में पीसकर पिलाने से संखिये का जहर उतर जाता है। कत्था शहद में मिलाकर चाटने से दुःसाध्य अतिसार नाश हो जाता है। कत्था चूसने से मुँह के छाले, मसूड़ों का फूलना आराम हो जाता है। खाँसी भी आराम हो जाती है। लटका हुआ मुँहका कागलिया ठिकाने पर आजाता है। इसके काढ़े से घाव धोनेसे भयकर घाव मिट जाते हैं।

करञ्जाद्य घृत।

(५८) करञ्जके बीज, नीमके पत्ते, बिजयसार, शाल वृक्षकी छाल, जामुन की छाल, बड़की छाल, गूलर की छाल, पीपरकी छाल, पाकर की छाल और बेंत की छाल—इन दसों को समान-समान कुल एक सेर लेकर, सिल पर पानीके साथ पीसकर, कल्क या लुगदी बना लो।

इन्हीं दसों को फिर आठ सेर लेकर, ६४ सेर जल में काढ़ा बना लो। १६ सेर पानी रहने पर उतार लो। काढ़ा १६ सेर होना चाहिये। घी चार सेर ले लो। लुगदी, घी और काढ़े को आग पर चढ़ाकर घी पका लो। घी मात्र रहने पर उतार लो। इस घी के लगाने से उपदंश के घाव, दाह, जलन, राध या पीव आना वगैर, सब नाश हो जाते हैं। उपदंश रोग पर यह घी रामबाण है।

भूनिम्बाद्य घृत।

(६०) चिरायता, नीमकी छाल, त्रिफला, परवलके पत्ते, करञ्जके बीज, चमेली के पत्ते, खैर की लकड़ी और विजयसार—इन सबको मिलाकर एक सेर ले लो और सिल पर पीस कर लुगदी बना लो।

फिर इन्हीं आठोंको मिलाकर आठ सेर ले लो और ६४ सेर जल में काढ़ा पकाओ। १६ सेर जल रहने पर उतार लो। इसके बाद लुगदी,काढ़े और चार सेर घी को कड़ाही में रख, मन्दाग्नि से घी पका लो। इस घी के सेवन से सब तरह की उपदंश नाश होती है। बहुत उत्तम घी है।

भूनिम्बादि घृत।

(६१) चिरायता, नीमकी छाल, त्रिफला, परवलके पत्ते, करञ्ज, चमेली, खैर और विजयसार—इन सबको समान-समान लेकर, सिल पर पीसकर,लुगदी बना लो। इनको फिर समान-समान लेकर, काढ़ा बना लो। गाय का घी, कल्क या लुगदी और काढ़े को चढ़ाकर मन्दाग्नि से घी पका लो। इस "भूनिम्बादि घृत" से सब तरह की उपदंश नाश हो जाती हैं।

नोट—कल्क के लिए दवाओं को मिलाकर १ सेर लो। फिर काढ़े के लिये आठ सेर यही दवाएँ लेकर६४ सेर जलमें काढ़ा पकाकर,१६ सेर काढ़ा बनालो। घी ४ सेर, लुगदी या कल्क और १६ सेर काढ़े को आग पर चढ़ा कर घी पका लो।

गोजी तेल।

(६२) गोजिया, विडङ्ग, मुलेठी, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नाग-केशर, कंकोल, कुंकुम, अगर और लौंग—इन सब को १ सेर लेकर कल्क बना लो। इन्हीं सबको फिर ८ सेर लेकर, ६४ सेर जलमें काढ़ा बनाकर, १६ सेर जल रख लो। फिर ५ सेर तेल, लुगदी और काढ़ेको मिलाकर, आग पर चढ़ा तेल बना लो। यह तेल सब तरहकी उपदंश को आराम करता है।

आगार धूमाद्य तैल।

घर का धूआँसा १ भाग, हल्दी २ भाग और सुराकोट ३ भाग—इन की लुगदी बना कर, तेल पकाने और उसको लगाने से खुजली, सूजन की पीड़ा, उपदंश के घाव शुद्ध होकर भर जाते और आराम हो जाते हैं।

कोशात की तैल।

(६३) कड़वी तोरई के बीज, कड़वी तूम्बी के बीज और सोंठ—इन को पानी के साथ पीस कर लुगदी बना लो। पीछे लुगदी और तेल को आग पर चढ़ा कर, तेल पकाने की विधि से पका लो। इस तेलके लगाने से घोर उपदंशके घाव नाश हो जाते हैं। और तो क्या—अगर लिंग का मांस गल गया हो, फोते मात्र रह गये हों, तो वह उपदंश भी इस "कोशातकी तेल" से आराम हो जाती है। यह तेल उपदंश पर प्रसिद्ध है।

(६४) दारुहल्दी की छाल, शङ्ख की नाभि, रसौत, लाख, गोबर का रस, तेल, घी और दूध,—इनको बराबर-बराबर लेकर और पकव

पीस कर, उपदंश के ऊपर लेप करने से घाव, सूजन और जलन ये सब शान्त हो जाते हैं।

(६५) त्रिफले के काढ़े या भाँगरे के रस से उपदंश के घाव धोने से निश्चयही आराम होता है।

नोट—त्रिफले के काढ़े से घावों को धोओ और त्रिफले की राखको शहत में मिलाकर लगाओ, निश्चयही घाव आराम होंगे। उपदंशपर यह रामबाण और परीक्षित है।

(६६) अरणी के पत्ते, कनेर के पत्ते, आक के पत्ते और अमलताश के पत्ते—इनका काढ़ा बना-बना कर, अनुक्रमसे,घाव धोनेसे लिंगका पकना मिटता है।

(६७) नील-कमल, रात में खिलने वाला कमल, सफ़ेद कमल और लाल कमल—इनको पीस कर, गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से, उपदंश रोग जाता रहता है।

(६८) फिटकरी, पीलागेरू, नीला थोथा, हीराकसीस, सेंधानोन, लोध, रसौत, हरताल, मैनसिल, रेणुका और इलायची—इनको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस-छानकर, शहत में मिलाकर लेप करने से उपदंश रोग नष्ट हो जाता है।

(६९) लोध, रसौत, तगर, कचनार और नागकेसर—इनको पानी में पीसकर लेप करने से उपदंश नष्ट हो जाती है।

(७०) दुपहरिया के पत्तों का चूर्ण उपदंश के घावों पर लगाने से आराम हो जाता है।

(७१) सुपारी पीस कर लगाने से उपदंशके घाव नाश हो जाते हैं।

(७२) अनार की छाल पीसकर लगाने से उपदंश के घाव नाश हो जाते हैं।

(७३) मुण्डी के पत्तों का रस निकाल कर, शरीर के ऊपर मलने से पारे के दोष और उपदंश के विकार नष्ट हो जाते हैं। विशेष कर, उपदंश के घावों पर मुण्डी के पत्तों का स्वरस बहुत ही लाभदायक है।

(७४) मुण्डी का रस २० तोले, गाय का घी १० तोले, सिन्दूर १ तोले, गंधक १ तोले, राल १ तोले, कत्था १ तोले, नीम के फूल १ तोले और घरका धुआँसा १ तोले—इन सब को मन्दाग्नि से पकाओ। जब मुण्डीका रस जलकर, घी मात्र रह जाय, उतार कर कपडे में छान लो और शीशी में रख दो। इस घी को मरहम की तरह लगाने से कोढ, उपदंश, नासूर और सब तरह के दुष्ट घाव आराम होते हैं। परीक्षित है।

(७५) पारा १ तोला, गंधक १ तोला, तूतिया ६ माशे, कबीला १ तोला और सौ बार का धुला घी ५ तोले—सबको घोट कर, मरहम बना लो। इस मरहम के लगाने से बडे-से-बडे घाव आराम हो जाते हैं।

(७६) त्रिफला और उडद दोनों को बराबर-बराबर लेकर, कडाही में जलाकर राख कर लो। उस राख को शहद में मिलाकर लेप करने से उपदंश के घाव आराम हो जाते हैं।

(७७) साफ पपरिया कत्था ६ माशे, माजूफल २ नग और सफेद इलायची ४ नग,—इनको महीन पीस कर कपडे में छान लो। पहले उपदंश के घाव धोकर मक्खन लगाओ। इसके बाद ऊपर का छना हुआ चूर्ण लगाओ। एक घण्टे में आराम मालूम होगा और तीन दिन में घाव अच्छे हो जायँगे।

(७८) त्रिफले के काढे या भमीरा के रस से उपदंश के घावों को धोने से बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

(७९) चिकनी सुपारी को पानी में घिस कर लेप करने से उपदंश के घाव मिटते हैं।

(८०) त्रिफलेको कडाहीमें डाल कर, आग पर चढा कर, राखकर लो। फिर शहदमें मिलाकर घावों पर लेप करो। यह रामबाण लेप है। परीक्षित है।

(८१) सिरस की छाल पानी में घिस कर और रसौत मिलाकर

घावों पर लेप करने से उपदंश के घाव मिट जाते हैं। परीक्षित है।

(८२) हरड़ और रसौत पीसकर लेप करने से लिंगेन्द्रिय के घाव वगैरः सब रोग आराम हो जाते हैं।

(८३) मनुष्य के मस्तक की हड्डी, बबूल की छाल, अनार की छाल और चाँवल—सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर, उपदंशके घावों पर लेप करनेसे उपदंशके घाव फौरन नाश हो जाते हैं।

(८४) जयन्ती, चमेली, कनेर, आक और अमलतास के पत्तों का काढ़ा बनाकर, उसी से उपदंश के घाव धोने से उपदंश जल्दी आराम हो जाती है। वृन्द।

(८५) बबूलके पत्तोंका चूर्ण, पानीमें पीस कर घावों पर लेप करो अथवा अनार की छाल का चूर्ण पानी में पीस कर लेप करो अथवा आदमी के हाड को पानी में घिसकर लेप करो। इन में से किसी एक से उपदंश के घाव आराम हो जाते हैं। वृन्द।

(८६) मुर्दासंग १ तोले भर, राल एक तोले भर और घी चार तोले भर—इन सब को मिलाकर मरहम बनालो। इस मरहम से गरमी के घाव शीघ्र ही आराम हो जाते हैं।

(८७) भुना हुआ नीला थोथा ६ माशे और मोम १ तोले—इन दोनोंको मिलाकर आग पर तपा लो। जब एक-दिल हो जायँ, घाव पर लेप करो, इससे उपदंश के घाव नाश हो जाते हैं।

(८८) सफेद राल ६ माशे, रसकपूर ६ माशे और गुलाब का तेल २ माशे—इन सब को मिलाकर, ११० बार पानी से धोलो। इस मरहम के उपदंश के घावों पर लगाने से अवश्य लाभ होता है।

(८९) कोरा नौनी घी, काँसी की थाली में रख कर, १०० बार धो लो। इस घी के लगाने से उपदंश के घाव नाश हो जाते हैं।

(९०) कनेर की जड़ पानी के साथ साफ पत्थर पर घिस कर, उपदंश के घावों पर लगाने से उपदंश की असाध्य पीड़ा भी निश्चय ही मिट जाती है। परीक्षित है। लाख रुपये की दवा है।

नोट—सफेद कनेर की जड़ पीस कर पीने और उसी का लेप करने से साँप और बिच्छू का जहर भी उतर जाता है। रविवार के दिन, सफेद कनेर की जड़ कान पर बाँधने से सब तरह के ज्वर, खास कर विषमज्वर, नाश हो जाते हैं।

(८१) बड़ की कोंपल, अर्जुन की छाल, लोध, हरड़, जामुन की छाल और हल्दी—इन सब को पानी के साथ सिल पर पीस कर, उपदंश के घावों पर लेप करने से, सब तरह की उपदंश आराम हो जाती है।

नोट—इन सब औषधियों का काढ़ा बना कर, उसे घावों और इन्द्रिय पर डालने से औरभी जल्दी लाभ होता है। काढ़ा डाल कर और पोंछ कर, पीछे ऊपर का लेप करने से बड़ी जल्दी आराम होता है। परीक्षित है।

(८२) भाँगरे के रस से घावों को सींचना सब तरह की उपदंशों में अच्छा है। परीक्षित है।

(८३) बबूल के पत्तों का चूर्ण और अनार की छाल का चूर्ण मिला कर। उपदंश के घावों पर लगाने से उपदंश आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८४) सुपारी को उबाल कर, उस का लेप करने से, उपदंश के घाव मिट जाते हैं।

(८५) चिरमिटी की भस्म, हरताल और मैनसिल—इन तीनों को पीस कर उपदंश के घावों पर लगाने से फौरन आराम होता है।

(८६) त्रिफले को कड़ाही में जला कर राख कर लो। उसी में जटामासी पीस कर मिला दो। दोनों के चूर्ण में "शहद" मिला कर उपदंश के घावों पर लगाओ। फौरन आराम होगा। परीक्षित है।

(८७) रसौत और हरड़ को पीस कर, शहद में मिलाकर, उपदंश के घावों पर लेप करने से घाव मिट जाते हैं। परीक्षित है।

(८८) सिरस की छाल का चूर्ण, शहद में मिलाकर, उपदंश के घावों पर लगानेसे,घाव जल्दी ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९९) उपदंश के घाव अच्छी तरह धो कर, "कसीस का चूर्ण" बुरकने से फौरन आराम होते हैं। परीक्षित है।

(१००) करंज, साल वृक्ष की छाल, अर्जुन की छाल, नीमकी छाल, जामुन की छाल और वट वृक्ष की छाल—इन सब को पीस कर कल्क या लुगदी बना लो। फिर इन्हीं को और लेकर काढा बना लो। पीछे गाय का घी, लुगदी और काढ़ेको, आग पर, मन्दाग्नि से पका कर, घी तैयार कर लो। इस घी के उपदंश के घावों पर लगाने से दाह, पाक, स्राव और ललाई समेत घाव आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—ऊपर की छहों दवाओं को मिलाकर, एक सेर लो और सिल पर लुगदी बनालो। इन्हीं दवाओं को फिर ८ सेर लेकर, ६४ सेर जल में काढ़ा बनाओ और १६ सेर जल रहने पर उतार लो। पीछे चार सेर घी, लुगदी और काढे को आग पर चढ़ा कर, घी पका लो।

(१०१) शुद्ध गंधक, इलायची, गोल मिर्च, लौंग और शुद्ध पारा—इन सब को पीस कर, खरल में डाल कर, पानी के रस के साथ खरल करो। पीछे इस में "घी" मिला कर उपदंश के घावों पर लगाओ। इससे घाव निश्चयही मिट जायेंगे। परीक्षित है।

नोट—ऊपरके गन्धकादि चूर्ण को घी में भूँज कर, पानों के रस के साथ रत्ती या २ रत्ती की मात्रा से सेवन करने से, उपदंश नाश हो जाती है। पथ्य दूध भात। यह योग उत्तम हो सकता है, पर हमारा आजमूदा नहीं।

(१०२) रसौत और सिरस की छाल अथवा रसौत और हरड़ को पीस छान और "शहद" में मिला कर लेप करने से, सारे अंगों की उपदंश नष्ट हो जाती है।

(१०३) भारंगी की जड़, चिरचिरे की जड़ और चन्दन—इन को अच्छी तरह जलमें पीस कर, लेप करने से उपदंश तत्काल नाश हो जाती है।

(१०४) नीमके पत्तोंको घीमें भूँज कर और उस घीमें मोम मिला कर रख लो। यह मरहम बड़ी उत्तम है। पहले नीम के पानी से

घावों को धोकर, इस मरहम के लगाने से भयङ्कर कीड़े पड़े हुए घाव भी आराम हो जाते हैं।

नोट—नीम के पत्तों को, पानी डाल, हांडी में औटा लो। इस पानी से घाव धोने से वे घाव भी आराम हो जाते हैं, जिन में कीड़े बिलबिलाते हैं और जो सैकड़ों दवाओं से आराम नहीं होते। घाव को साफ और शुद्ध करने के लिये, नीम का औटाया जल संसार में अव्वल दर्जे की दवा है। जिन फोड़ों में भयानक दाह होता है, उन पर नीम के पत्ते पीस कर लगाने से फौरन चैन आजाता है। नीम के पत्तों को शहद के साथ पीस कर, घाव या फोड़े पर लगानेसे खराब रसी का आना बन्द हो जाता है।

(१०५) गोपीचन्दन और नीलाथोथा—इनको जल में पीस कर, कपड़े पर लगाकर, पट्टी रखने से, उपदंशके घाव नाश हो जाते हैं।

(१०६) रसकपूर, सफेद कत्था, मुरदासंग, शखजीरा, मोंथा और सुपारी की राख या त्रिफला की राख—इन सब को खरल करके, मलहम सी बनाकर, उपदंश की चांदी पर लगाने से उपदंश के घाव नाश हो जाते हैं।

(१०७) बावची १ माशे, गन्दाविरोजा १ माशे, गुग्गुल १ माशे, राल १ माशे, नीलाथोथा १ माशे, हिंगलू १ माशे, पारा १ माशे, घी ८ माशे और तिल का तेल ८ माशे—इन सब को खरल में डालकर, नीम के सोंटे से, १२ घण्टे तक घोटो, तब मलहम तैयार होगी। यह मलहम गरमी या उपदंश के लिये रामबाण है।

(१०८) त्रिफलेकी राख और सेंधानोन—इनको पीसकर और "शहद" में मिलाकर, उपदंशके घावों पर लगाने से, घाव नाश हो जाते हैं।

(१०९) नीलेथोथे का महीन छना हुआ चूर्ण उपदंश के घावों पर दाबने से घाव आराम हो जाते हैं।

(११०) नीलाथोथा और सफेद कत्था—इन दोनों का चूर्ण उपदंश के घावों पर दाबने से उपदंश आराम होती है।

(१११) रसकपूर १ भाग और पानी २००० भाग लेकर, पानी बना लो। इस जल से उपदंश के घाव धोने से खूब लाभ होता है।

(११२) त्रिफले का काढ़ा करके, उसी से उपदंश के घाव धोने से उपदंश में लाभ होता है।

(११३) रसकपूर ७ माशे, काशगरी सफेदा ७ माशे और छोटी इलायचीके दाने ३॥ माशे—इन सबको पीस-छान कर, घीमें मिलाकर, मरहम बना लो। इस मरहमके लगाने से गरमी के घाव मिट जाते हैं।

(११४) कत्था २ माशे, संगजराहत १ माशे, तूतिया १ चने-भर और जली सुपारी १ नग—इन सबको पीस-छानकर, सौ बार के धुले घीमें मिलाकर, मलहम बना लो। अगर इसमें पीली कौड़ी जलाकर मिला दो, तो बहुत ही अच्छा हो। इस मरहम से गरमी के घाव मिट जाते हैं। इस मरहम के उत्तम होने में, हमें ज़रा भी शक नहीं।

(११५) कत्था सफेद ४ तोले २ माशे, पुरानी सुपारी ॥ तोले २ माशे और जङ्गार २० माशे,—इन सब को २० माशे जल में पीस कर, कागज़ पर लहेस दो और सुखा लो। सूखने पर उस कागज़ को जलाओ और राख कर लो। इस राख को उपदंश के घावों पर छिड़कने से घाव मिट जाते हैं।

(११६) पीली हरड़, सुहागा और आमला,—इन सब को जलाकर और पीस कर घावों पर छिड़कनेसे, गरमी के घाव मिट जाते हैं।

(११७) कबीला ६ माशे, नीला थोथा ६ माशे, बड़ी हरड़ ६ माशे, मोम १ तोला और तिल का तेल ५ तोला लाकर रखो। पहले तेल को गरम करके, उसमें "मोम" मिला दो। इसके बाद कबीला, नीलाथोथा और हरड़ को महीन पीस और कपड़े में छान कर, इसी तेल और मोममें मिला दो। खूब मिल जाने पर, आग से उतार कर, साफ शीशी में भर दो। यह मरहम परीक्षित है। इससे उपदंश के पुराने घाव भी मिट जाते हैं।

(११८) खुरासानी अजवायन, २॥ माशे, सिंगरफ ५ माशे, तूतिया २ रत्ती, अकरकरा ५ माशे और मदार की छाल १० माशे,—इन को

कूट-छान कर, बेर की लकड़ी की आग पर रख कर, इसको धूनी लेने से गरमी रोग आराम होता है।

नोट—इन्हीं सब को चिलम में रखकर, ऊपर से बेर की लकड़ी के कोयले रख कर, धूआँ पीने से भी उपदंश नाश होती है।

(११८) शिङ्गरफ़, फिटकरी, सन्द और अजवायन चार-चार माशे लेकर पीस लो। इस में से २॥ माशे चूर्ण चिलम में रख कर, बेर की लकड़ी की आग से, तमाखू की तरह, सवेरे-शाम पीने से आतशक आराम हो जाती है। यह दवा ऐसी जगह में पीनी चाहिये, जहाँ हवा न हो। पथ्य—सूखी रोटी। अपथ्य तेल और नमक।

(१२०) कड़वे नीम के पत्ते घाव के लिये अकसीर दवा है। नीम के पत्ते १ पाव, दो सेर पानी में डालकर, एक कोरी हाँडी में औटाओ। जब डेढ़ सेर पानी रह जाय, उतार लो। शीतल होने पर इस पानी के उपदंश के घावों पर ढालने और धीरे-धीरे घाव धोने से घाव साफ होते और भर जाते हैं। उपदंश के घाव और सब तरह के घावों पर यह जल रामबाण है।

नोट—जो फोड़ा फूटकर बहता हो, उस पर कड़वे नीम के पत्ते पीसकर और उसमें "असली शहद" मिला कर लगाने से वह आराम हो जाता है।

बाघी या बद की चिकित्सा।

"बंगसेन" में लिखा है—अत्यन्त अभिष्यन्दि पदार्थ सेवन करने से, भारी अन्न खाने से, कच्चे पदार्थ खाने से, सूखे और बदबूदार तथा विशेष मांसादि खाने से, ज़ियादा खट्टे पदार्थ खाने से, वातादि दोष कुपित होकर, पेड़ू के नीचे और जाँघ के ऊपर, सूजन पैदा करते हैं। इस रोग में ज्वर, सूजन में दर्द और अंगों में अत्यन्त दाह—जलन होती है।

नोट—(१) बद के उपरोक्त कारणों के सिवा तेज़ चलना, नीचे-ऊँचे स्थान में पैर पड़ना या देह में फोड़ा या किसी तरह की चोट लगना भी है।

नोट—(२) और बद प्राय नहीं पकतीं, पर उपदश की बद पक जाती है ।

नोट— ३) कुरण्ड और इस बद में विशेष अन्तर नहीं । सिर्फ अन्तर यही है, कि कुरण्ड मे पीडा नही होती और बद में पीड़ा होती है ।

नोट— ४) बद बहुधा उपदश होने से होती है। वृन्दने लिखा है—

यस्य पूर्वं फिरङ्गाख्यो रोगो भूत्वा प्रशाम्यति ।
तस्य जन्तोर्व्रध्नरोग इत्युक्त श्रुतादिभि ॥

जिस मनुष्यके पहले फिरंग रोग होकर शान्त हो जाता है, उसके बद रोग पैदा हो जाता है पर फिरंग और उपदश में फर्क है। बद रोग उपदश रोग के होते भी होता है और आराम हो जाने पर भी होता है, ऐसा देखने में आता है। "वैद्य विनोद" में लिखा है।

गुर्वन्नसेवनात्कुद्धो दोपो वङ्क्षण सधिग ।
करोति ग्रन्थिवच्छोफ त वध्नेति समादिशेत् ।

भारी अन्न सेवन करने से, दोप कुपित होकर, वङ्क्षण की सन्धि मे जाकर, गांठ के समान सूजन उत्पन्न करता है, उसको "बद" कहते हैं। नीचे लिखे नुसखे बद आराम करने वाले है । मौका देखो, तो उसे ही बैठाने का उपाय करना । अगर पक गई हो या अधपकी हो, तो पका कर फोडना और घाव भरना ।

(१२१) केले की जड आदमी के पेशाब में पीस कर गरम करो और कपडे पर लगाकर, गुनगुनी-गुनगुनी बद पर बाँध दो । इससे अवश्य लाभ होगा ।

(१२२) पीपल के पत्ते गरम करके, सीधी तरफ से, बद पर बाँधने से बद नष्ट हो जाती है ।

(१२३) लिहसौडे के पत्ते गुनगुने करके बद पर बाँधो। बद आराम हो जायगी ।

(१२४) सँभालूकी पत्ती गुनगुनी करके, बद पर बाँधने से, बद बैठ जाती है ।

नोट—शुरू मे ही बद को गलाने या बैठाने का उपाय करना बहुत जरूरी है। जब बद पक जाती है, तब बड़ा दु ख देती है ।

(१२५) मेथी को डालों के साथ पीसकर, बद पर लेप करने से बद बैठ जाती है ।

(१२६) बिनौलो को खूब कूट कर टिकिया सी बना लो, फिर उसे गरम करके, बद पर बाँधो, बद बैठ जायगी।

(१२७) घीग्वारका पट्ठा लाकर दो टुकडे करो, फिर उस पर थोडी सी रसौत और हल्दी पीस कर रख दो और उसे आग पर गरम करके बद पर बाँधो। बद बैठ जायगी।

(१२८) आरम्भ में चूना और शहद मिलाकर, कपडे पर मरहम की तरह रखो और उसे बद पर बाँधो, बद बैठ जायगी। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई चूने में अण्डे की सफेदी मिलाकर, कपडे पर रखकर, बद पर लगाने की सलाह देते हैं।

(१२९) चने का आटा गूगल में मिला कर, टिकिया सी बना लो और बद पर रख दो। ऊपर से नीम की पत्तियां गरम करके रख दो और बाँध दो। बद आराम हो जायगी।

(१३०) केवल नीमके पत्ते गरम करके बद पर बाँधने से बद आराम हो जाती है।

(१३१) कुचले को चन्दन की तरह पानी के साथ घिस कर और काली मिर्च मिला कर, गुनगुना कर लो और बद पर लेप कर दो। आराम हो जायगा।

(१३२) प्याज़ को छुरी से काट कर, छोटे बच्चेके पेशाबमें पका कर, खूब गला लो। जब गल जाय, टिकिया बना कर बद पर बाँध दो। निश्चय ही बद नष्ट हो जायगी। परीक्षित है

नोट—तुलसी की पत्तियां और उसके बराबर अरण्ड की कोंपल लेकर, उन में खासा नमक मिला कर पीस लो और गुनगुना करके कानके पीछे की सूजन और गाल की सूजन कनफ़ेड़ी पर लेप कर दो, आराम हो जायगी।

(१३३) कौंच के बीज पानी में पीस कर, दिन में २।३ बार बद पर लेप करने से बद आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१३४) ककोडे की गाँठ, कडवी इन्द्रायण की जड और बडी इन्द्रायण की जड—इन तीनों को बारम्बार पानी के साथ पत्थर पर घिस कर, बद पर लगाने से बद आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—ककोड़े की बेल बरसात में जंगलों में या झाड़ अथवा बाढ़ के सहारे फैलती है। यह पाँच-पाँच या दस-दस हाथ लम्बी होती है। जमीन में इसकी गाँठ होती है। इसके फलों का रंग हरा होता है और ऊपर काँटे से होते हैं। इसका साग बना कर खाते हैं।

(१३५) करिहारी की गाँठ का लेप करने से बद, घाव, कंठमाला और अदीठ फोड़ा आराम होता है। परीक्षित है।

(१३६) अगर बद पकानी हो, तो प्याज़ को पीस कर, उसमें घी और हलदी मिला कर एवं गरम करके बद पर बाँध दो। यह सौम्य और उत्तम पुल्टिश है। इस के बारम्बार बाँधने से बद आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१३७) अगर बदको बहुत जल्दी फोड़ना हो, तो जङ्गली कासालू की गाँठ शीतल जल में पीस कर, बद पर टिपकियाँ लगा दो। तीन चार बार इसके लगाने से, बद में छेद होकर मवाद निकल जायगा। परीक्षित है।

(१३८) बदके ऊपर तुख्म बालंगाकी पुल्टिश या फाया लगाने से बद बैठ जाती है।

नोट—तुख्म बालंगाको पानी में भिगो कर, कपड़े पर बिछा कर, घाव पर लगाने से यह गोंद की तरह चिपक जाता है। घोर पीड़ावाले घाव पर भी इसके लगाने से घाव की पीड़ा जाती रहती है, रुधिर की सञ्चालन-क्रिया की वृद्धि होती है और दाह तत्काल शान्त होता है। इससे फोड़े की सूजन, लाली और दाह शान्त होता है और फोड़ा बैठ जाता है। जो फोड़े पक जाते हैं वे इस से फूट जाते हैं

(१३९) "बंगसेन" में लिखा है—एक बड़े कव्वे को लाकर, उसका पेट फाड़ कर, उसमें बद को घुसा दो और पलक मारते कव्वे को हटा दो। इस उपायसे बद रोग शान्त हो जाता है।

(१४०) जीरा, हाऊबेर, कूट, गेहूँ और बेर—इनको काँजी में पीसकर, लेप करने से बद रोग नाश हो जाता है।

(१४१) हरड़ और पीपर को पानी के साथ महीन पीसकर लुगदी

बनालो। इस लुगदी को शरएडी के तेल में भून कर और सेंधानोन मिलाकर खाओ। इससे बद का रोग निश्चय ही नाश हो जायगा। साथ ही "गोमूत्र में देवदारु" पीसकर और गरम करके बद पर लेप करो। इससे बद और उसकी पीड़ा नाश हो जाती है। हजार उपायों का उपाय है।

(१४२) बद उठते ही यानी पहली अवस्थामें, उस पर शीतल जल के तरड़े देने या बर्फ रखने से, जलन और पीड़ा कम हो जाती है। बढ़ने पर कोई लाभ नहीं होता।

(१४३) अगर बद या बाघी बैठानी हो तो नीचे लिखे उपाय करो —

(क) गन्देबिरोजेका शीरा, कपड़े पर लगा कर, बद पर चिपका दो। लगानेसे पहले वहां के बाल उस्तरे से साफ करवा दो। अगर बद आराम हो जाय और पट्टी छुटानेमें कष्ट हो, बाल टूटें, तो तेल लगा कर पट्टी उतार लो।

(ख) ३ माशे कलमी शोराको २ तोले जलमें मिला कर, उसी में कपड़ा तर करके, बद पर रख दो। दो-दो या तीन तीन घण्टे पर फिर ताज़ा पट्टी रखो। बद बैठ जायगी।

(ग) बड़का दूध बद पर लगा दो।

(घ) जहाँ तक हो, पहले वहाँका यानी बद-स्थान का खराब खून जोंकें लगवाकर निकलवा दो। पीछे नीमके पत्ते पीस कर बाँध दो।

(ङ) अगर बदमें बहुत वेदना हो, तो भेड़के दूधमें गेंहूँ पीस कर वहाँ लेप कर दो।

(च) नौसादर पानीमें घोल कर और कपड़ा तर करके बद पर रख दो, बद बैठ जायगी। वृन्दने कहा है—

अविक्षीरेण गोधूमकल्कं कुन्दुरुकस्य च।
प्रलेपने सुखोष्णं स्याद्भगशलटर परम्॥

(छ) गेंहूँ और कुन्दरूको पानीके साथ पीस कर और उसमें

भेडका दूध मिला कर,सुहाता-सुहाता गरम लेप करनेसे, बदकी भयानक पीडा शान्त हो जाती है।

नोट—ये छहों उपाय परीक्षित है।

(१४४) नागफनी का एक टुकडा लेकर, उसे बीच से चीर कर, उस में पिसी हुई आमाहल्दी भर दो। इस के बाद उस पर कपडमिट्टी करके, उसे आग में पकालो और बद पर बाँध दो। सवेरे-शाम ताजा दवा बाँधने से, तीन दिन में, बद आराम हो जाती है।

(१४५) आक के पत्तो को रेंडी के तेल से चुपड कर और आग पर तपा कर बद पर बाँधो। इस के बाद धतूरे के पत्ते गरम करके ऊपर से सेक करो। इस उपाय से बद आराम हो जाती है।

(१४६) मेथी, हल्दी और अरण्डी का तेल—इन तीनों को पीस कर और मिला कर बद पर बाँधो। इस से बद बहुत जल्दी आराम हो जाती है।

(१४७) अलसी को कूट-पीस कर और गरम करके बद पर बाँधने से बद शीघ्र ही बैठ जाती है।

नोट—अगर बद पकानी हो, तो अलसी की पुल्टिश बद पर बाँधो। पुल्टिश बनाने की तरकीब जाननी हो, तो दूसरे भाग का पृष्ठ २६७ और उसीका फुट-नोट देखिये।

(१४८) आमा हल्दी, अलसी, घीग्वार का गूदा और ईसब-गोल—इन सबको पीस कर, एकत्र कर लो और आग पर गरम करके बद पर बाँधो। इस से बद बहुत जल्दी आराम होती है।

(१४९) अलसी के चूर्णमें दूध या पानी डाल कर और ज़रा सी पिसी हुई हल्दी मिला कर, आग पर अच्छी तरह पकालो। जब गाढी लेई सी हो जाय, सुहाती-सुहाती गरम पुल्टिश बद पर रख कर, ऊपर पान रख कर, कपडे से बाँध दो। इस से बद और फोडे तथा गाँठ वगैर' सब फट जाते हैं। परीक्षित है।

(१५०) बद हो जाय, तो पहले जौंके लगवा कर खराब खून निकलवा दो और उस जगह नीम की पत्ती पीस कर बाँध दो दूसरे दिन पोस्त का काढ़ा बना कर, उसमें कपड़ा भिगो-भिगो कर सेक करो। तीन चार दिन ऐसा करने से, दर्द साफ मिट जायगा। परीक्षित है।

(१५१) उठती बद या गिल्टी पर चीते की जड़ पानी में घिस कर लेप करने से आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—नीबू के रस में चीते की जड़ घिस कर, बद पर लेप करने से बहुत जल्दी आराम होता है। परीक्षित है। यह बहुत बार का परीक्षित योग है।

(१५२) कुचले के पत्ते पीस कर लगाने से आमवात-गठिया नाश होती है। परीक्षित है।

(१५३) कुचले के पत्ते, सोंठ और साँभरका सींग,—इनको एकत्र पीस कर लेप करने से आमवात-गठिया, पक्षाघात, फालिज और चूहे का विष नष्ट होता है। परीक्षित है।

(१५४) रेंडी के बीज, हरड़, रेंडी का तेल और सिरका—सब को पीस कर एकत्र कर लो। फिर गरम करके बद पर बाँधो। इस से नयी बद बैठ जाती और पुरानी पक कर फूट जाती और शीघ्र ही आराम हो जाती है।

(१५५) आमाहल्दी १ तोले, नीला थोथा ६ माशे, राल १ तोले, गूगल ६ माशे और गुड़ १ तोला सब को एकत्र पीस कर और गरम करके बद पर बाँधने से बद फौरन ही फूट जाती है।

(१५६) आमाहल्दी, घर का धूआँ, चूना और गुड़—सब को बराबर-बराबर लेकर, पीस लो और बद पर लेप कर दो। इस से बद पक कर बहुत जल्दी फूट जाती और आराम हो जाती है।

(१५७) गेहूँ के आटे की पुलटिश सात आठ बार बद पर बाँधो। इस से बद पक कर फूट जायगी। फूटने पर हमारी उधर "सताबि मलहम" या "खदिरादि मरहम" लगाओ। ... चि

भेड़का दूध मिला कर,सुहाता-सुहाता गरम लेप करनेसे, बदकी भयानक पीड़ा शान्त हो जाती है।

नोट—ये छहों उपाय परीक्षित हैं।

(१४४) नागफनी का एक टुकड़ा लेकर, उसे बीच से चीर कर, उस में पिसी हुई आमाहल्दी भर दो। इस के बाद उस पर कपड़मिट्टी करके, उसे आग में पकालो और बद पर बाँध दो। सवेरे-शाम ताजा दवा बाँधने से, तीन दिन में, बद आराम हो जाती है।

(१४५) आक के पत्तों को रेंडी के तेल से चुपड़ कर और आग पर तपा कर बद पर बाँधो। इस के बाद धतूरे के पत्ते गरम करके ऊपर से सेक करो। इस उपाय से बद आराम हो जाती है।

(१४६) मेथी, हल्दी और अरण्डी का तेल—इन तीनों को पीस कर और मिला कर बद पर बाँधो। इस से बद बहुत जल्दी आराम हो जाती है।

(१४७) अलसी को कूट-पीस कर और गरम करके बद पर बाँधने से बद शीघ्र ही बैठ जाती है।

नोट—अगर बद पकानी हो, तो अलसी की पुल्टिस बद पर बाँधो। पुल्टिस बनाने की तरकीब जाननी हो, तो दूसरे भाग का पृष्ठ २६७ और उसीका फुट-नोट देखिये।

(१४८) आमा हल्दी, अलसी, घीग्वार का गूदा और ईसब-गोल—इन सबको पीस कर, एकत्र कर लो और आग पर गरम करके बद पर बाँधो। इस से बद बहुत जल्दी आराम होती है।

(१४९) अलसी के चूर्णमें दूध या पानी डाल कर और ज़रा सी पिसी हुई हल्दी मिला कर, आग पर अच्छी तरह पकालो। जब गाढ़ी लेई सी हो जाय, सुहाती-सुहाती गरम पुल्टिस बद पर रख कर, ऊपर पान रख कर, कपड़े से बाँध दो। इस से बद और फोड़े तथा गाँठ वगैर: सब फट जाते हैं। परीक्षित है।

(१५०) बद हो जाय, तो पहले जौंकें लगवा कर खराब खून निकलवा दो और उस जगह नीम की पत्ती पीस कर बाँध दो दूसरे दिन पोस्त का काढ़ा बना कर, उसमें कपड़ा भिगो-भिगो कर सेक करो। तीन चार दिन ऐसा करने से, दर्द साफ मिट जायगा। परीक्षित है।

(१५१) उठती बद या गिलटी पर चीते की जड़ पानी में घिस कर लेप करने से आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—नीबू के रस में चीते की जड़ घिस कर, बद पर लेप करने से बहुत जल्दी आराम होता है। परीक्षित है। यह बहुत बार का परीक्षित योग है।

(१५२) कुचले के पत्ते पीस कर लगाने से आमवात-गठिया नाश होती है। परीक्षित है।

(१५३) कुचले के पत्ते, सोंठ और साँभरका सींग,—इनको एकत्र पीस कर लेप करने से आमवात-गठिया, पक्षाघात, फालिज और चूहे का विष नष्ट होता है। परीक्षित है।

(१५४) रेंडी के बीज, हरड़, रेंडी का तेल और सिरका—सब को पीस कर एकत्र कर लो। फिर गरम करके बद पर बाँधो। इस से नयी बद बैठ जाती और पुरानी पक कर फूट जाती और शीघ्र ही आराम हो जाती है।

(१५५) आमाहल्दी १ तोले, नीला-थोथा ६ माशे, राल १ तोले, गूगल ६ माशे और गुड़ १ तोला सब को एकत्र पीस कर और गरम करके बद पर बाँधने से बद फौरन ही फूट जाती है।

(१५६) आमाहल्दी, घर का धूआँ, चूना और गुड़—सब को बराबर-बराबर लेकर, पीस लो और बद पर लेप कर दो। इस से बद पक कर बहुत जल्दी फूट जाती और आराम हो जाती है।

(१५७) गेहूँ के आटे की पुलटिस सात आठ बार बद पर बाँधो। इस से बद पक कर फूट जायगी। फूटने पर हमारी ऊपर लिखी "ख़तारि मलहम" या "ख़दिरादि मरहम" लगाओ। परीक्षित है।

(१५८) सेमल के नर्म कन्द को निकाल कर अच्छी तरह धो लो। पीछे उसके ऊपर की छाल खुरच कर कन्द को कूट लो। कूटने से जो गाढा-गाढा चिकना रस निकले, उसे बद पर लगा दो। इस के लगाने से बद की जलन फौरन शान्त हो जाती और बद शीघ्र ही पक जाती है। परीक्षित है।

नोट—छोटे से सफेद सेमल के वृक्ष की जड खोद कर, उस में से कन्द निकाल लो और उसे पीस कर सुखा दो। सूखने पर कूट कर चूर्ण बना लो।

हर रोज सवेरे, सफेद सेमल की छाल गाय के दूध में घिसो और फिर उस में ऊपर का सेमल के कन्द का सुखाया हुआ चूर्ण ६ माशे और मिश्री १ तोले मिला कर २१ दिन तक पीओ। इस दवा के सेवन करने और पथ्य से रहने से उपदंश के कारण से हुए सारे विकार नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है। मोचरस का चूर्ण ६ माशे और मिश्री चार तोले, गाय के पक्के पाव भर दूध में मिला कर पीने से वीर्य पुष्ट होता है। परीक्षित है।

सेमल की जड की छाल का चूर्ण शहत और चीनी के साथ खाने से शरीर और वीर्य एवं पुष्ट होते हैं। परीक्षित है।

पारा फूटने का इलाज।

(१५९) अगर शरीरसे पारा फूट निकला हो, तो करेले की जड पानी में पीस कर पीओ। निश्चय ही आराम हो जायगा।

(१६०) अगर मुँह आया हो, तो पीले कटशरैया के पत्ते, जामुन की छाल और आमले का काढा बना कर कुल्ले करो। परीक्षित है।

नोट—यह क्षुपवृक्ष ३।४ हाथ ऊँचा और काँटेदार होता है। इसकी सफेद नीली, लाल और पीली चार जाति होती हैं। फूलों में सुगन्ध नहीं होती।

(१६१) रालका तेल १० या १२ बूँद, दूधके साथ, सेवन करने से पारे के दोष मिट जाते हैं।

(१६२) शुद्ध गंधक तीन या चार रत्ती, घीके साथ, सेवन करनेसे पारे के दोष मिट जाते हैं।

(१६३) "स्वास्थ्यरक्षा"में लिखा "चर्म रोग नाशक तेल" शरीर पर मलनेसे, शरीर के दाग चकत्ते और फुन्सी वगैर मिट जाती है।

(१६४) मुँह आनेकी हालत में कचनार की छालका काढ़ा बना कर पीना लाभदायक है।

(१६५) "सोमराजी तेल" शरीर पर मलनेसे पारे से हुए चमड़े के दोष मिट जाते हैं। बनाने की विधि—सोमराजी के बीज, हलदी, दारु-हलदी, सफेद सरसों, कूट, करञ्ज के बीज, चकवड़ की जड़ और अमलताश के पत्ते,—इन सबको मिला कर आध सेर लो और पानी के साथ सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। सरसों का तेल आध सेर और साफ पानी आठ सेर तथा लुगदी—इन सब को मन्दाग्निसे पका कर, तेल मात्र रहने पर उतार लो। इस तेल से कोढ़, वातरक्त और पारे के दोष शान्त होते हैं।

(१६६) चमेलीके पत्ते, त्रिफला, जवासा, दारुहलदी, गिलोय और मुनक्का—इन के काढ़े मे शहद मिला कर कुल्ले करने से मुँह के घाव या छाले मिट जाते हैं।

गठिया की चिकित्सा।

(१६७) सौंफ, कासनी के बीज, मकोय, हँसराज, सौंफ की जड़, कासनी की जड़, मुलेठी और बबूल के फूल—इन सब को तीन-तीन माशे लेकर, ३२ तोले जलमें, मिट्टीकी हाँडीमें, काढ़ा बनाओ। चार-पाँच तोले जल रहने पर, उतार कर मल छान लो और पी लो। इस काढ़े से गठिया रोग नाश होता है। सवेरे-शाम पीना जरूरी है।

(१६८) सनाय २ तोले, सुरजान २ तोले, हरड़ १ तोले, सफेद निशोथ १० माशे, बादाम १० माशे, मकोयकी पत्ती ७ माशे और कुमर

४ माशे—इन सब को पीस-कूट कर छान लो। फिर जितना चू
का वजन हो, उतनी ही मिश्री मिला दो और अमृतबान या शीश
में रख लो। इसकी मात्रा १ तोले से २ तोले तक है। सवेरे ह
एक मात्रा फाँकने से गठिया नाश होती है।

(१६८) पोस्ते के डोडोका काढ़ा बनाकर पीने से गठिया आराम
हो जाती है। दो या तीन तोले डोडे कुचल कर आध सेर या डे
पाव जल मे भिगो दो। चौथाई जल रहने पर उतार कर और मल
छान कर पीओ।

(१७०) एक सेर गायके दूधमें एक पीपल और चार "शुद्ध" भिलावें
कतर कर डाल दो और दूधको औटाओ। जब चौथाई दूध रह जाय
उसमें मिश्री मिलाकर पीओ। इस दूध के पीने से आमवात—गठिया
रोग आराम होता है।

(१७१) आध सेर तमाकू के पत्ते लेकर अढाई सेर जलमें रात को
भिगो दो। सवेरे ही मलकर, पानी कपड़े में छान लो। इस पानी
को और एक सेर तिलोंके तेलको, कड़ाही में चढ़ाकर पकाओ। तेल
मात्र रहने पर उतार लो। इस तेलकी मालिश करने से गठिया और
जोड़ो का दर्द सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(१७२) मालकाँगनी २ तोले, कायफल १ तोले, बकायन १ तोले,
सोंठ १ तोले, कतीरा १ तोले, जायफल १ तोले, अकरकरा १ तोले,
इलायची १ तोले, लौंग १ तोले, समन्दरखार १ तोले, हल्दी १ तोले,
कुचला १ तोले, बादाम १ तोले, गिरी १ तोले, करंज १ तोले, सर्मार
एक तोले, कुलजन १ तोले, काला धतूरा १ तोले, मदार १ तोले, सहँ-
जना एक तोले, मोम १ तोले, मकोय १ तोले और भाँगरा १ तोले—
इन सब दवाओ को अधकचरा कर रात को नौ सेर जल में भिगो दो,
सवेरे ही सब दवाओ और पानी को आग पर पकाओ। जब आधा
पानी रह जाय, उतार कर पानी छान लो। फिर इस पानी को
कड़ाही में डालकर, आग पर चढ़ाओ। ऊपर से सरसों का तेल १

सेर, रेंडो का तेल आधसेर और तिलो का तेल १ सेर उसी कड़ाही में डालकर पकाओ। जब पानी जल कर तेल मात्र रह जाय, उतार कर तेल को नितार छानकर बोतलों में भर लो। इस तेलकी मालिश से गठिया और जोड़ों का दर्द सब आराम होते हैं।

(१७२) धतूरे के फूल, पत्ते, जड़ और फल सब डेढ़ पाव लेकर, सिल पर पानी के साथ पीस लो। फिर सरसों का तेल आधपाव, तिलो का तेल आधपाव और अरण्डी का तेल आधपाव और लुगदी को आग पर चढ़ाकर पकाओ। जब दवाइयाँ जल जायँ, तेलको उतार लो। इस तेलसे जोड़ोंका दर्द आराम हो जाता है।

माषादि तैल।



(१७३) उड़द १२८ तोले, दशमूलकी दसों दवाएँ २०० तोले, और बकरे का मांस १२० तोले—इन सबको १०२४ तोले पानी में पकाओ। जब पकते-पकते चौथाई पानी रह जाय, उसे उतार कर उसमें जीवनीयगण, मजीठ, चव्य, चीता, कायफल, सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, रास्ना, आमले, गोखरू, कौंच के बीज, अरण्ड, सोया, तीनों नमक, देवदारु, कूट, गिलोय, असगन्ध, बच और कचूर—इन में से प्रत्येक दवा का एक-एक तोले कल्क डालकर, फिर आग पर रखकर, मन्दाग्नि से पकाओ। जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर बोतलों में भर दो।

इस तेल की मालिश से पक्षाघात, फालिज, हनुग्रह—ठोडी रह जाना, कान की पीड़ा, मस्तक की पीड़ा, हाथ की जड़ता, सिर, गर्दन और कानों की मन्दता, कलायखञ्ज, पंगुता, गृध्रसी वगैर रोग आराम होते हैं। यह तेल हमारा अनेकों बार का परीक्षित है। इसके सेवनसे गठिया रोग अवश्य आराम होता है। अगर "नारायणतेल" से आराम न हो, तो इसे लगाना चाहिये। रामबाण है। परीक्षित है।

भागे—इन सब को पीस-कूट कर छान लो। फिर जितना चूर्ण का वजन हो, उतनी ही मिश्री मिला दो और अमृतबान या शीशी में रख लो। इसकी मात्रा १ तोले से २ तोले तक है। सवेरे ही एक मात्रा फाँकने से गठिया नाश होती है।

(१६८) पोस्ते के डोडोका काढ़ा बनाकर पीने से गठिया आराम हो जाती है। दो या तीन तोले डोडे कुचल कर आध सेर या डेढ़ पाव जल में भिगो दो। चौथाई जल रहने पर उतार कर और मल-छान कर पीओ।

(१७०) एक सेर गायके दूधमें एक पीपल और चार "शुद्ध" भिलावे कतर कर डाल दो और दूधको औटाओ। जब चौथाई दूध रह जाय, उसमें मिश्री मिलाकर पीओ। इस दूध के पीने से आमवात—गठिया रोग आराम होता है।

(१७१) आध सेर तमाकू के पत्ते लेकर गढ़ाई सेर जलमें रात को भिगो दो। सवेरे ही मलकर, पानी कपड़े में छान लो। इस पानी को और एक सेर तिलोंके तेलको, कड़ाही में चढ़ाकर पकाओ। तेल मात्र रहने पर उतार लो। इस तेलकी मालिश करने से गठिया और जोड़ों का दर्द सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(१७२) मालकांगनी २ तोले, कायफल १ तोले, बकायन १ तोले, सोंठ १ तोले, कतीरा १ तोले, जायफल १ तोले, अकरकरा १ तोले, इलायची १ तोले, लौंग १ तोले, समन्दरखार १ तोले, हल्दी १ तोले, कुचला १ तोले, बादाम १ तोले, गिरी १ तोले, करंज १ तोले, सम्भार एक तोले, कुलंजन १ तोले, काला धतूरा १ तोले, मदार १ तोले, सहँजना एक तोले, मोम १ तोले, मकोय १ तोले और भाँगरा १ तोले—इन सब दवाओं को अधकचरा कर रात को नौ सेर जल में भिगो दो, सवेरे ही सब दवाओं और पानी को आग पर पकाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार कर पानी छान लो। फिर इस पानी को कड़ाही में डालकर, आग पर चढ़ाओ। ऊपर से सरसों का तेल १

सेर, रेंडी का तेल आधसेर और तिली का तेल १ सेर उसी कड़ाही में डालकर पकाओ। जब पानी जल कर तेल मात्र रह जाय, उतार कर तेल को नितार छानकर बोतलों में भर लो। इस तेलकी मालिश से गठिया और जोड़ों का दर्द सब आराम होते हैं।

(१७२) धतूरे के फूल, पत्ते, जड़ और फल सब डेढ़ पाव लेकर, सिल पर पानी के साथ पीस लो। फिर सरसों का तेल आधपाव, तिली का तेल आधपाव और अरण्डी का तेल आधपाव और लुगदी को आग पर चढ़ाकर पकाओ। जब दवाइयाँ जल जायँ, तेलको उतार लो। इस तेलसे जोड़ोंका दर्द आराम हो जाता है।

माषादि तेल।

(१७३) उड़द १२८ तोले,दशमूलकी दसों दवाएँ २०० तोले,और बकरे का मांस १२० तोले—इन सबको १०२४ तोले पानी में पकाओ। जब पकते-पकते चौथाई पानी रह जाय, उसे उतार कर उसमें जीवनीयगण, मजीठ, चव्य, चीता, कायफल, सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, रास्ना, आमले, गोखरू, कौंच के बीज, अरण्ड, सोया, तीनों नमक, देवदारु, कूट, गिलोय, असगन्ध, बच और कचूर—इन में से प्रत्येक दवा का एक-एक तोले कल्क डालकर, फिर आग पर रखकर, मन्दाग्नि से पकाओ। जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर बोतलों में भर दो।

इस तेल की मालिश से पक्षाघात, फालिज, हनुग्रह—ठोड़ी रह जाना, कान की पीड़ा, मस्तक की पीड़ा, हाथ की जड़ता, सिर, गर्दन और कानों की मन्दता, कलायखज, पंगुता, गृध्रसी वगैर रोग आराम होते हैं। यह तेल हमारा अनेकों बार का परीक्षित है। इसके सेवनसे गठिया रोग अवश्य आराम होता है। अगर "नारायणतैल" से आराम न हो, तो इसे लगाना चाहिये। रामबाण है। परीक्षित है।

नोट—कितनेही ग्रन्थोंमें लिखा है,—चौथा भाग बाकी रहा काढ़ा आठवाँ भाग बाकी रहे काढे से भारी होता है। जो रोगी बड़ी देह और प्रदीप्त अग्नि वाला हो, वह चौथा भाग शेष रहा—सोलह तोले काढा पीवे। कुछ वैद्य कहते हैं, सोलह तोले काढे में से आधा छोड़ कर, आठ तोले पीवे। मध्य शरीर और मध्य अग्नि वाला चार तोले काढा पीवे।

आज-कलके रोगी पहले ही कमजोर होते हैं। अतः दो या अढाई तोले दवा ले कर,उसमें १६ गुना यानी ३२ या ४० तोले पानी मिलाकर काढ़ा बनाना चाहिये और आठवाँ भाग—चार तोले या पाँच तोले रहने पर पिला देना चाहिये। मतलब, किसी नुसखेमें ८ दवाएँ हों,तो प्रत्येकदवा तीन-तीन माशे लेनी चाहिये। इस तरह आठों दवाएँ मिला कर २४ माशे या दो तोले लेनी चाहियें। एक-एक दवा दो-दो तोले कभी न लेनी चाहिये।

अच्छी तरह बैठकर, मुँह, हृदय और नेत्रों को प्रसन्न करके, सोने, चाँदी या मिट्टी के बर्तन में काढा पीना चाहिये और काढे को पीकर बासन को उलट देना चाहिये। काढ़ा पीकर पानी से कुल्ले कर लेने चाहिएँ और ऊपर से पान या इलायची खा लेनी चाहिये।

नोट—काढेके सम्बन्धमें अधिक जानने के लिये "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ १२१—१२५ तक भी देख लीजिये।

हिम।

चार तोले औषधियों को जौकुट करके, उसमें २४ तोले पानी डालकर, रात के समय, मिट्टीके बासनमें, भिगो दो। सवेरे ही उसे मल-छान कर पी लो। यही "हिम" है। इसकी मात्रा ८ तोले की है। इसे "शीतकषाय" भी कहते हैं।

फाँट।

चार तोले दवा लेकर जौकुट कर लो। फिर उसे हाँडीमें डाल कर

ऊपर से १६ तोले गरम जल भर दो। थोड़ी देर बाद उन दवाओं को मसल कर मल-छान लो। इसको "चूर्णद्रव" या "फाँट" कहते हैं। इसकी मात्रा आठ तोले की है।

नोट—इसमें मिश्री, शहद या गुड़ प्रभृति पदार्थ डालने हो, तो क्वाथमें लिखे अनुसार डालो।

चूर्ण।

सूखी हुई दवाओं को खूब महीन कूटकर कपड़े में छान लो। इसीको "चूर्ण" कहते हैं। इसे "रज" और "क्षोद" भी कहते हैं।

अगर चूर्ण में गुड़ डालना हो, तो बराबर डालो, अगर चीनी डालनी हो, तो दूनी डालो। हींग डालनी हो, तो भूनकर डालो। हींग भूनकर डालने से जी नहीं मिचलाता। अगर घी आदि पतली चीज़ों में मिलाकर चूर्ण चाटना हो, तो उनको दूना मिलाओ। अगर चूर्ण घोल कर पीना हो, तो पतले पदार्थ चौगुने लो, क्योंकि जैसे जल में गिरा हुआ तेल क्षण भर में चारों ओर फैल जाता है, उसी तरह दवा अनुपान के बल से सारे शरीर में फैल जाती है।

अगर चूर्ण, गोली, अवलेह और कल्क के ऊपर गरम जल पीना हो, तो पित्तके रोगमें चार तोले, वायुके रोगमें आठ तोले और कफके रोगमें बारह तोले पीना चाहिये।

अवलेह।

क्वाथ आदि को फिर आग पर रखकर औटाने से जो गाढ़ा-गाढ़ा रस बनता है, उसे ही "अवलेह" या "लेह कहते" हैं। अवलेह की मात्रा चार तोले की है।

अवलेह में अगर चीनी डालनी हो, तो चूर्ण से चौगुनी डालो।

गुड़ डालना हो, तो दूना डालो। अगर कोई पतला पदार्थ मिलाना हो, तो चूर्ण से चौगुना डालो।

अवलेह के ऊपर दूध, ईखका रस, पञ्चमूलके कषाय का यूष, और अडूसेका काढ़ा—इनमें से जो उचित हो, वही अनुपान नियत करना चाहिये।

अवलेह में जब चाशनीके समान तार निकलने लगे, पानी में डालनेसे अवलेह डूब जाय, कड़ा हो जाय, अँगुलियोंसे दबानेसे उस पर अँगुलियों के निशान उठ आवें, गन्ध, वर्ण और रस अपूर्व हो जायें—तब समझो कि अवलेह ठीक बना।

गोली।

गोलियाँ सात तरह की होती हैं:—(१) गुटिका) (२) वटी, (३) मोदक, (४) वटिका, (५) पिण्डी, (६) गुड, और (७) वर्त्ति। गुटिका=गोली। वटी=वड़े। मोदक=लड्डू। वटिका=बड़ी। पिण्डी=मुठिया। गुड=गोला। वर्त्ति=बत्ती।

गोलियाँ आग पर अवलेह की तरह बनायी जाती हैं। गुड़ या चीनीको आग पर पका कर,उसमें चूर्णको डाल कर,फिर गोली बनाते हैं। किसी-किसी समय, बिना आग पर पकाये गूगल, शहद या और कोई पतली चीज़ चूर्ण में मिलाकर भी गोलियाँ बनाते हैं।

अगर बूरे की गोली बनानी हों, तो चूर्ण के वज़न से चौगुना बूरा लो। अगर गुड़की गोली बनानी हो, तो चूर्ण से दूना लो। अगर गूगल या शहद के साथ गोली बनानी हों, तो चूर्ण के वज़न के बराबर गूगल या शहद लेकर गोली बनाओ। अगर और किसी पतले पदार्थ से गोली बनानी हो, तो चूर्ण से दूना पतला पदार्थ लो।

गोली की मात्रा १ तोले की है, पर बल और समय देखकर जितनी उचित जँचे, उतनी ही मात्रा देनी चाहिये।

नोट—अनेक तरहकी गोलियाँ रत्ती या आधी रत्तीसे भी कम दी जाती हैं। अगर कोई' महाज्वरांकुश बटी"१ तोले रोगीको दे दे,तो रोगी फौरनही मर जायगा। ऊपर, साधारण काष्ठादिक औषधियोंसे बनी गोलियोंकी मात्रा १तोलेकी लिखी है। चिकित्सा में तर्क और विचार की बड़ी जरूरत है।

घृत और तेल।

घृत और तेल पकाने और उनमें कौन चीज़ कितनी लेनी वगैर बातें इसी भागके पृष्ठ १२५ के फुटनोट में विस्तार से लिखी हैं।

जितना कल्क का वज़न हो, उससे चौगुना घी या तेल लो। घी या तेल से चौगुना दूसरा पतला पदार्थ लो। जैसे १ सेर कल्क हो, तो चार सेर घी लो और सोलह सेर दवाओं का काढ़ा प्रभृति लो। कल्क, तेल या घी और काढ़ेको मिला कर आग पर चढ़ा दो। मन्दी-मन्दी आग से पकने दो। काढ़ा वगैर जल जाय, तेल या घी मात्र रह जाय, तब उतार लो। बस, यही घी या तेल बनाने की विधि है।

मन्थ।

शीतल जलमें चार तोले दवाका चूर्ण भिगो दो। जब भीग जाय, तब मिट्टी के बर्तनमें रईसे मथ लो। बस यही "मन्थ" है। इसकी मात्रा ८ तोले की है।

पुटपाक।

पुटपाक की विधि इसी भाग के ३१ वे पृष्ठ में लिखी है।

जिस चीज़ का पुटपाक करना हो, उसे सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। उस लुगदी पर कँभारी, बड़ या जामुन के पत्ते लपेट कर, उस पर दो-दो अङ्गुल मिट्टी चढ़ा दो। फिर उसे धूप में सुखाकर, आरने कण्डों की आग में पकाओ, जब वह गोला अङ्गारों के समान लाल हो जाय निकाल लो। इस के बाद शीतल होने पर, मिट्टी और पत्ते हटा कर, उसका रस निचोड़ लो। यही रस पुटपाक-रस है। इस रसकी मात्रा चार तोले की है।



अगर पुटपाक-रस मे शहद डालना हो तो १ तोले डालो। यदि इस मे कोई कल्क या चूर्ण या पतला पदार्थ डालना हो, तो आठ माशे डालो।

भावना ।

जितने पतले पदार्थ मे चूर्ण अच्छी तरह डूब जाय, उतने ही पतले पदार्थ से भावना देनी चाहिये।

गरम जल ।

पानी गरम करने से जब आठवॉ भाग (सेर का आध पाव), चौथा भाग (सेर का पाव भर), अथवा आधा (सेर का आधा सेर) रहे,तब समझो कि जल गरम हुआ। पानी यदि खूब उबल जाय, तो उसे भी गरम हुआ समझो।

कफ के रोग में आठवाँ भाग रहा, वात रोग मे चौथा भाग रहा और पित्त के रोग मे आधा रहा जल काम में लाना चाहिये।

रात में गरम जल पीने से कफ, आमवात, मेद, श्वास, खाँसी, और ज्वर रोग नाश हो जाते है। गरम जल वस्ति या मूत्राशय को शोधता और अग्नि दीपन करता है।

क्षीर पाक ।

औषधि जितनी हो, दूध उससे अठगुना लो और दूध से चौगुना पानी मिलाकर औटाओ। जब दूध मात्र रह जाय, उतार लो। इस दूध के पीने से आम के कारण से हुआ शूल नाश होता है। यदि कही "दुग्धपाक" का काम पड़े, तो इसी तरह दूध पकाओ।

आसव और अरिष्ट ।

कच्ची दवा और कच्चे पानी से जो मदिरा बनाई जाय, उसे "आसव" कहते है। जैसे, "कुमार्यासव'।

जो मदिरा काढा पकाकर बनाई जाती है, उसे "अरिष्ट" कहते हैं। अरिष्ट और आसव की मात्रा चार-चार तोले की है।

नोट—जहाँ अरिष्ट में डालने के पदार्थों की तोल न लिखी हो, वहाँ १०२४ तोले पतला पदार्थ, ४०० तोले गुड़, २०० तोले शहद और ४० तोले दवा लेनी चाहिये।

जो चीज़ें पतली चीज़ोंमें डालकर बहुत दिन तक रख छोडी जाती हैं, वह संधित या खट्टी हो जाती हैं। यह "आसव" और "अरिष्ट" नाम से दो तरह की होती हैं। अगर कच्चे पानी में कच्ची दवा डालकर रख छोडी जाती है,तो "आसव" कहलाती है। अगर काढा करके रक्खी जाती है, तो "अरिष्ट" कहलाती है।

नस्य ।

इसके लिये "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ २७१—२७२ देखिये। कम-से-कम नस्यका काम पड़ने पर तो ज़रूर ही देखिये। क्योंकि वहाँ नस्य के सम्बन्ध में बहुतसी काम की बातें लिखी हैं।



(१) नर्म दवा पकानी हो, तो चौगुना जल डालो। कड़ी दवा में आठ गुना जल और बहुत ही कड़ी में सोलह गुना पानी डालो। यह कषाय या काढे का नियम है।

(२) खैर आदि का सार लो। नीम आदि की छाल लो। अनार आदि के फल लो। परवल आदि के पत्ते लो। चीते की जड़, सूरनका कन्द, नीम और अडूसे के पत्ते, त्रिफले के फल, धायके फूल, कटेरीका सर्व्वाङ्ग, खैर का सार और दूधवाले वृक्षों की छाल लो। बेल का कच्चा फल और अमलतास का पका फल लो। बड की छाल, विजयसार का सार और तालीसपत्र के पत्ते लो।

(३) चूर्ण में दूनी मिश्री और बराबर गुड़ मिलाओ। लड्डुओं में चूर्ण से दूना गुड़ और चौगुनी मिश्री मिला दो।

(४) मधुर, अम्ल और लवण रस वायु को नाश करते हैं। तिक्त, कटु और कषाय रस कफको दूर करते हैं। कषाय, तिक्त और मधुर रस पित्त को नाश करते हैं।

तिक्त, कटु और कषाय रस वात को उत्पन्न करते हैं। मधुर, अम्ल और लवण कफ को पैदा करते हैं। अम्ल, लवण और कटु रस पित्त को करते हैं।

(५) सब रोगोंमें जहाँ तक हो नयी दवाएँ लो, पर वायबिडङ्ग, पीपल, गुड़, धनिया, घी और शहद पुराने लो। चाँवल पान और काँजीभी पुरानेही अच्छे होते हैं।

(६) गिलोय, कुड़ा, अडूसा, पेठा, शतावर, असगन्ध, सहचर, सोंफ और प्रसारिणी इनको सदा गीली लो, पर दूनी मत लो। नीम, परवल, केवड़ा, खिरेंटी, सोंठ, कन्द, इन्द्रवारुणी, नागरलो, गूगल ये भी गीली ही लो, पर दूनी न लो।

(७) सूखी और नयी दवा काम में लो और गीली दवा को दूनी लो।

(८) जहाँ औषधि खाने का समय न लिखा हो, वहाँ प्रातःकाल में दवा सेवन कराओ।

(९) जहाँ किसी दवा का अङ्ग न लिखा हो (जैसे जड़, छाल या पत्ते वगैर) वहाँ जड़ लो।

(१०) जहाँ औषधि का प्रमाण न लिखा हो कि, कितनी-कितनी लेनी चाहिए, वहाँ सब को बराबर-बराबर लो।

(११) जहाँ यह न लिखा हो कि, अमुक पात्रमें दवा पकाओ, वहाँ मिट्टीका बर्तन लेना चाहिये।

(१२) जहाँ गोली वगैर बनाने या अनुपान के पतले पदार्थ का नाम न लिखा हो, वहाँ जल लो। जहाँ यह न लिखा हो कि, अमुक चीज का तेल लो, वहाँ तिलों का तेल लो।

(१३) जहाँ एकही चीज दो बार लिखी हो, वहाँ उसे दूनी यानी दो बार ही लो।

(१४) चूर्ण दो महीने में निकम्मे हो जाते हैं। गोली और अवलेह १ वर्ष बाद खराब हो जाते हैं। आसव, धातु और रस जितने पुराने हों, उतने ही अच्छे।

(१५) जहाँ लवण लिखा हो, वहाँ सेंधानोन और चन्दन लिखा हो वहाँ लाल चन्दन लो। चूर्ण, आसव, अवलेह और तेल में सफेद चन्दन लो। क्वाथ और लेप में अधिकता से लाल चन्दन लो। घी दूध, लिखा हो वहाँ गाय का घी दूध लो। जहाँ मूत्र लिखा हो, वहाँ गोमूत्र लो।

(१६) अगर कोई औषधि न मिले, तो उसका बदल या प्रतिनिधि ले लो। किसके बदलेमें क्या लेना चाहिये, इसके लिये "चिकित्साचन्द्रोदय" पहला भागके ३०३—३०७ पृष्ठ देखिये।

(१७) कौन दवा अच्छी है, कौन बुरी, इस के जानने के लिये पहले भाग के ३०८—३११ पृष्ठ देखिये।

(१८) सुहागा, भिलावा, धतूरेके बीज, अफीम, कुचला, हींग, नौसादर, खपरिया, हिंगलु, गेरू, हरताल, फिटकरी, जमालगोटा, सींगिया, मैनसिल, कौड़ी, शङ्ख, समन्दर फेन, पारा और गन्धकके शोधने की विधि "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ ५७५—५८१ में लिखी है।

समाप्त।